सहामारतम्।

বিরাটপর্ব ৷

-upper the second

ম হ যি বৈ দ ব্যা স প্ৰ ণী ত ন্

শ্রীনীলক্ঠ বির্চিত্য়া 'ভারতভাবদীপ' সমাধ্যয়া টাক্য়ানুগ্রুগ্যু।

- winited interest

প্রাচীনার্য্য বিদ্যান্ত্রাধিণঃ স্থাবিখনত-চতুর্বী-বংশাবতং সস্য শ্রীযুক্ত হ্রিশ্চগ্রৈ দেব মহানুভাবস্থা অভ্যাধন্যা

<u> এীযুক্ত এই রচুড়ামণি ভট্টাচার্যোণ অনুবাদিতমু</u>

শ্রীযুক্ত উমেশচন্দ্র বিদ্যারত্ন ভট্টাচার্যোণ নংশের্থিতম্, প্রকাশিতম্

मर्द्धः शर्माहर्भाष्ट्र ७४०।

শ্রীরামপুর।

আল ফেড যন্তে

আবছ্নাথ বন্দ্যোপাধ্যায়েন প্রহন্তায়াজতম্।

म क्रांबाः ५९५५।

শ্রীপ্রীজগদীশ্বরো।

জয়তি।

-: :-

মহাভারতীয় বিরাটপর্বাণ

कृठीश <u>इ</u>म्

মূল হা

| প্রকরণ | | পৃষ্ঠায়াং | পতে ক্তা |
|--|-------|------------|----------|
| অজ্ঞতি বাসাথ মুগিষ্ঠিরী দীনাং মন্ত্রণা | | ۵ | 5 |
| (भी.भारमाध्यटनभादः) | | 2 @ | 2 |
| অক্ত সং স্থাপন্ম্ | | ₹ α: | ۵ |
| <u> ৰাহ্গ'তেখ্</u> ত | . , | ર જ | 25: |
| যুধিষ্ঠিরসা বিরাট ভবনে প্রবেশঃ | | ৩৪ | · 9 |
| डोम्मा अत्रक्षः | | 80 | 3 |
| (मेशकाः धारमः | | · 80 | io- |
| সহদেবস, প্রেব্ধঃ | | 8 br | 9 |
| ञञ्जूनमः श्राटमः | *** | a s | ٠ ع |
| बक्लमा প্राथ | *** | aa | 9 |
| जीम् ७ म) वसः | • • • | \$ · | 5 |
| (जोलनी की ठक मधानः | - | ৬৫ | 3 |
| দ্রোপদ্যাঃ সূর্ আহরণম্ | | 92 | 5 |

| প্রকরণ | | পঠায়াং | পত্ত ক |
|-------------------------------------|-------------|-------------|------------|
| কীচকেন জে:শীল্য অব্মানন | | ₹18 | 2.6 |
| ट्याপनी जैभ नचानः | • | ۲۵ | 9 |
| े के माँ २४३ | | 2.0 | 20 |
| উপকী 5 कमा दरः | | *558 | α |
| क) कमा म।इः | | 224 | \$ |
| ভূটিয়াধনমূম দেশ্চারগণীনাং গ্রভাগ গ | মনন্ | ১ ২२ | ۵ |
| কৰ্ণ হঃশাসন বক্তা | | 258 | 5 a |
| দ্রো সংক্তা | • | \$ 2 9 | 9 |
| ভী ঋসাবজ্ভা | | ४२५ | 22 |
| রুপা <i>ার্যান</i> িক ৃ ত | • | 300 | 2 |
| भ द मारकटन स्मामी मिल युक्त या बार् | | ५ ७ a | 2 |
| भ ९ मा ताजमा मभरतारन्य भः | | 20% | à . |
| স্থৰ্মণাসহ বিৱাটদা যুদ্ধং | | 585 | : २ |
| সুশ্শশে। বিএহেম্ | | 28% | ·a |
| বির্যুটস্য বিজয় ছোবন্য্ | | 2.0 | ৬ |
| উত্তরস্য আত্মন্থ। | | 200 | 28 |
| ্জাপদা রহ্ললাসারথা কথন্য | | 212 | ۶۹ , |
| উত্তরসাযুদ্ধ যাতা | | 3.93 | is . |
| কুৰুদৈনা দশনে উত্তরদা ভয়ম্ অৰ্জু | ८न न | | |
| অংশ সন্থ | | 3.6 8 | 9 |
| কৌরণ্নাং অআছুন বিষয়ক কে | श ्र | | |
| . কথিয়ে | | 292 | 20 |
| উত্তরং প্রতি অর্জ্জনসঃ সম্রগ্রহণাদে | . A | ১ 98 | 20 |
| উত্তরেণ অঠ্বাবেশপণম্ | , | 299 | > |
| উত্তরদা অ্স্রবিষয়ে প্রশন্ | | 299 | à |
| অর্কুনসঃ প্রভুত্তরম্ | • • • | Sve | ø |
| | | | |

---

| ଅବ୍ୟେଶ | প্রায়ণ | পড়িকা |
|--|----------|--------|
| উত্তরমা পাওব পরিচয় প্রাপ্তিঃ | 35-8 | 2 |
| ञर्ज्यमा युक्त श्रमम् | 35-9 | · b- |
| কৌরবানাং উংপাত দর্শনম্ | د ۱۵ ۰ ۰ | • 1 |
| ष्ट्रार्थापनमः वज्जूषां 🛀 💮 | \$19 | 6 |
| কৰ্পি। অভিনিধ্য | . 200 | • |
| রুপাচ,যাসা বক্তা | २०० ' | 201 |
| অশ্বব্য কৰ্মা উৎসন্ | 403 | Œ. |
| ভোগাল্য বজ্ তা | >,>8 | 22 |
| ভীখৰ হরচনা | 5.7 12 | 5 |
| গোধন প্রভাহরণা | 2 2 2 | ٥ د |
| অৰ্জুনেন সহ কৰ্ণ সংসং প্ৰামং পৰ্বালনঞ | १३ Œ | ٠ ٢ |
| অজ্ঞান মহকুপাগোল সংসং আমং দে- | | |
| বান: মাগমনং ক্লাস্যাপ্রান্থ | २७७ | 9 |
| দ্রোণসা যুদ্ধং পলায়নঞ | 445 | à |
| অশ্বত্য হৃদ্ধং | २०१ | 70 |
|)কণ্ স্য পুন্ যুদ্ধং প্লায়ন ং ং | २७० | α |
| छ्ऽ भागनामीनाः यु ष र | २ ७७ | 72 2 |
| नक्रून युष्तर | ₹9% | 2 |
| ভীশাসা সৃদ্ধং পল;য়নঞ | २९७ | 22 |
| ङ्रर्र (धनमा यूक्कः शन(श्र क्षः | ३ १४ | ١.৩ |
| युक्तमा छेभमः इ¦दः | २ ४४ | 2 a |
| অৰ্জুনো ভরয়ে: কথে প কথনং | २ ४ ४ | 20 |
| উত্তরস্য নগর প্রদেশঃ যুগিস্তির বিরাটকো | | |
| দুভি ক্রীড়া উত্তরং প্রভিড বিরুটেদ্যা | | |
| সময় বিষয়ক প্রশাক্ষ | २৯७ | |

| প্রকরণ | | পৃষ্ঠায়াং | পড়েক |
|------------------------|-----|------------|-------|
| বিরাটোত্র স্থাদঃ | ••• | ७०७ | 50 |
| পাত্ৰানাং আত্ম প্ৰকাশঃ | ••• | ৩ ৬ | ~ |
| উত্তরা বিবাহ প্রস্তাবঃ | ••• | 930 | 2 |
| উত্তরায়াঃ বিবাহঃ | *** | 35α | 2 |
| | | | |

স্থ কিবল । সুলম্ভ সম্পূর্ণং।

মহাভারতীয় নিজুটপ্রশ্বন: শুদিপ্রন্। -:::-

| | | | | মূৰ প্ৰ | |
|---|------------|-------|------------|------------------|-----------------------|
| | পৃষ্ঠায়াৎ | | পঙ্কো | वर्शकः | चिकिः |
| | ર | ••• | 9 | পিতামহ: | শিতামহা: |
| | 9 | ••• | , 2¢ | প্রভূ: | প্রভূ: |
| | 9 | ••• | 2 | নিয়ে (ংসান্তি | নিযোৎ স্যান্তি |
| | 6 | ••• | b | বর | বুরঃ |
| | \$8 | ••• | > | रमित्रिक् । | देनबदक् । |
| | 38 | ••• | ৬ | टेमित्रिक्री | रेमब्रक्की |
| | 25 | | 7 | বশ তিং | ব স তিং |
| | 92 | ••• | ۵ | বাহ | বাহু |
| | ৩৯ | ••• | 5 . | কৰিতা | কৰ্শিতা |
| ! | ۵۵ | ••• | ર | ক্রয়া | জ্ঞা : |
| | 89 | | 25 | ₹ | ছ |
| | 88 | ••• | S | নাশ্ৰদ্ধত | नवक्र |
| | to | ••• | 30 | ৰ্কদিতং | ৰ্মিদিতং |
| | ¢۶ | ••• | 9 | जीन ! | ত্ৰীণা ় |
| | 40 | ••• 1 | ર | য ুৰণে 1 | যুগপে! |
| | ৬৪ | ••• | 39 | কুৰ্মানাঃ | কুৰ্কানাঃ |
| | 69 | ••• | 2 | রম্ম্যণাঃ | রম্যামাণঃ |
| | 49 | ••• | 2 | देमज्ञाः। | टेमब्रक्कुरा |
| | 90 | ••• | 2 F* | रेमत्र क्रू । | रमत्रक्रुं, |

| পৃষ্ঠ । রাং | পঙ্কো | অশু দ্ধঃ | श ्व |
|----------------|------------|-----------------------|----------------------------|
| 95 | ą <i>*</i> | ক ত ু | কৰ্ত |
| ٠. · | b ** * | কংমীুন | কামান্ |
| 27,0 mg. 1 19. | 20 | সংহাযিতা | সংখ্যাধিতা; |
| : 45 | 22 | মহ'ভিঃ | মহ ডি |
| 3:5 ··· | ઢ | ভশাং | उत्पा र |
| 2001 | α | ষ্ৎস্যাব্ৰাহ | মংস্যান্ত |
| 202 | y | নিবীৰ্যান্ | নিৰ্বীৰ্য্যান্ |
| 300 | . २० | বেরাং | (যয়ং |
| २७० | ີລ | সানাগা ্ | সনগো |
| ₹9৮ | ৬ | र ू ग् | বভূ র |
| ₹8€ 4. | 28 | , প্রতিরক | প্রতি ন ংর জ |
| ₹8.5 | 58 | প্রকাশন্তে | প্রকাশন্তে |
| ૨ α૨ | 8 | ব্যশায়স্ত | ব্যস্য়ন্ত |
| ३७ ८ | 39 | नीमिष्ठ" | भीमां छ |
| २७१ | 22 | ভীম্বভি | ভীমা[ভ |
| २९७ | 5.5 | रमनाष्ट् | टमटन ह |
| ٠٠. ٢٠٠١ | 25 | অভূর | আ(হুয় |
| | > | প্ৰবিশৈ | প্রবিশ্যেব |
| voo | ২ | র্নরল∜ | রু হ রল1 |
| ຸ ວເວ | ? | মহেগুভিঃ | মহেযুভিঃ |
| ٠٠٠ دړه | 2 o | ম হ্য <i>া</i> | মভূষ্য |

সম্পূর্ণ—মূলস্য। শুদ্ধিপৃত্রস্।

अञ्जिकशतीश्वरता।

জয়তি।

-:::-

মহাভারতীয় বিরাটপর্ব টীকায়াঃ

শুৰি পত্ৰয়।

| • | | • | • | |
|------------|------|----------|--------------|-------------|
| পৃষ্ঠায়াং | | পঙ,কো | অশুদ্ধিঃ | ७कि: |
| > | •,•• | >5 | বদন | रमन् |
| 8 | 4** | • | শক | 4 |
| 6 | ••• | 2 | रस्रकः | বাস্থকেঃ |
| ٥٥ | 4++ | ર | অভি: | ত†ভিঃ |
| 20 | ••• | ~ | भानामीय् | मामामीन् |
| 78 | ••• | ર | লিকা | মতল্লিক। |
| 28 | ••• | ৩ | ইত্যেমতব | • ইভ্যেব |
| 59 | ••• | 3 | क् ष् | इंग् |
| | | | | |

| - | | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
|--------------|----------|-----------------|---------------------------------------|
| প্ৰভাৱাং | পঙ্কে | অশুদ্ধিঃ | শুদ্ধিঃ |
| \$ 'F | م مساوم | ্ৰেৰ শ্ব | (দ্দেব |
| ₹•4 | 8 | অন্স্য | অন্যা |
| 9 0 | 2 | আকাশাৎ | আকাশং |
| ٠٠٠ | 8 | पू उक् | মুক্তং |
| ٠٠. | 9 | বিবিধান্য | বিবিধান্য |
| ৩১ | 8 | भू त्नी | পুৰেৰ্ |
| હ૧ | રે | তা, দ | আৰ্দ্ধ |
| ა9 | ٩ | कृंटन | কুলে |
| ٠٠. | : 2 | ज गरर्था | এব† থ † |
| 6 5 | ৩ | ক্রগ: | জ্ঞাঃ |
| ו | Ů | ₹₩\ | যদ্ব। |
| 8F | 34 | नत्थञ् | ন েশ্বয়ু |
| , a c | ٠.5 | শতেতংক | শতেতাত্ত |
| es | ν. | পুতকে | পুস্তকে |
| %5 ~ | 9 | সূত্রবার্থ: | স এবার্থঃ |
| ७৮ | 30 | গজেতি | গজেতি |
| · ૧ ૨ | <u>ه</u> | বৰনা | ৰচন া |
| 95 | ৬ | ম ্বাচ্ছ | ম াগচ্ছ |
| | • | | |

| পৃষ্ঠায়াঃ | | পঙ্কো | অশুদ্ধিঃ | ग हिः |
|-------------|---------|----------|-----------------|------------------------|
| b -4 | ••• | 2 | | इ ठा <i>ट</i> ड |
| ٣ 9 | | 2 | ষ তীন{ং | যতীয়া 📥 |
| 69 | | ·a | मृश्चे । | मृक् १ |
| 25 | | \$ | অভ্যকীয়াঁড়: | অভ,কীৰ্মান্ত |
| పల | • • • | 2 | বেষের্ণ | <u>বের</u> শন |
| \$8 | | , α | इ ऋत्रः | ুষরং |
| ÷α | ••• | ર | কু শুী | <u>६</u> की |
| 222 | | 2 | <u>থিয়রাদং</u> | िल्ला नर |
| 25.9 | | b | ফু জে 1 | যু ক্ত |
| 300 | ••• | 20 | মং দরী | ম ৎসরী |
| ५७६ | ••• | ৩ | বিতে | বিভৌ |
| 349 | 1 * * | 30 | র†জ্ঞা | র†জ্ঞাৎ 🚦 |
| 292 | ••• | 2 | ছন্মন | छ्या न। |
| ১৬৭ | ••• | ২ | বহ্নিত | বহিং তি |
| ५ ४९ | ••• | 2 | হুদামি | ভুদামি |
| 360 | | 2.0 | সঙ্ল | • সঙ্গ |
| 412 | ••• | ৬ | ধুনৰী | धनाशी . |
| २२৫ | ••• | ৬ | রথ† সিংছ | • রথসিংহ |

| পৃষ্ঠায়াৎ | পঙ্কো | অত্তৰি: | শুদি: | |
|---------------|-------|----------------|-----------------|--|
| ₹85 ··· | | चीर 🚾 | मील | |
| 45 <i>6</i> " | 8 | अ। वि | 4 🖦 | |
| 908 ··· | ৩ | হর্ষোভূ | হর্ষো ভূ | |
| | , | | | |

শুদ্ধিপত্রম্। টীকায়াঃ সম্পূর্ণং। শ্ৰীশ্ৰীজগদীখারে। জয়তি

মহাভারত্য।

বিরাটপর্ব।

পাওব প্রবেশ পর্বা।

গ্ৰথমোহধায়ঃ (



ওঁনারাখাণং নমকৃত্য নরকৈব নরোজ্মদ্বা দেবীং সরস্বতীকৈব ততো জয় মুদীর্ষেং । ১॥

জ্নদেজয় উবাচ।
কথ- বিরাটনগরে মন প্র্রুপ্তিভামন্ত।
কজ্যভুব সমুবিতা তুর্যোধন এবান্দিতা: ॥ ২॥

প্তিত্রতা মহাভাগা সততং ব্রহ্মবাদিনী। ফৌপদী চ কথং ব্রহ্মাঞ্জাতা জুঃখিতাবসং॥ ৩॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

যথা বির টনগরে তব পূর্বেপিতানহং।
তাজাতবাসনুষিদাস্ত পুম নরাবিপ!॥৪॥
তথা তুম বরাল্লা ধর্দা * ধর্ম চুতায় বং।
বিষ্ণাশ্রমণ বাহ্ম বিভাগ আচথাে স্বিন্ধেব তথা ৫॥
কথ্যিয়া তু তথ সর্বং ব্রাহ্মণেড্যো যুধিনিরঃ।
করণীস্থিতিং তথৈ ব্রাহ্মণেড্যো যুধিনিরঃ।
ততে৷ যুধিনিরো রাজ। ধর্মপুল্রো মহামনাঃ।
† সন্নিবর্ত্যা ব্রুজান স্কানিতি খোবাচ ভারত॥৭॥
ছাদশেমানি ব্রাণি! রাজ্যবিপ্রোবিতা ব্যম্।
তথাদংশাহ্রং সম্প্রেপ্ত রুজ্বং প্রমত্বিসঃ॥৮॥

্ষা কথং উহিতাঃ বাসং কৃতবন্তঃ সমুস্থাতং নান্ধী দিতিবং কথাদিহা ছনতেরস্থ প্রারোগঃ বাস। মতি নমুসভং ॥ ২॥ অথাবাদিনী আরুঞ্চ কীতন শীলা। ৩॥ ৪। ৫। অরণী সহিতং অরণা মুনং অরণী নাহতং মন্থু নিচি পাঠে মন্থোনি নির্মথন দশুতং অরণীভাগে সহিতং বাক্ষণার নাবেদর দিতার্থঃ॥ ৬॥ সারিবর্তা একর আনীর অত্তবর্তিগতার্থঃ নাসপুনরাহতিত ইতাদি প্রোগা দর্শনাহ সারিক্যোতি পাঠেপি স্তাব্যথঃ॥ ৭॥ বিজ্ঞান সম্বাদ্য বিজ্ঞান স্থান বিজ্ঞান বিজ্

^{*} ধর্মাধ্যে তাত্র ধর্মাদ্ধর্মেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

[🕈] স্বিত্ত ইতাত্র সার্ব্ধ হৈ ত পাঠঃ ক পুত্তকে।

[্]রাজাবিশ্রোবভাবর্মিভাত্ত স্বরাক্রীৎপ্রোবিভাবর মিতি পাচ: ক পুতকে।

স সাধু কৌত্তের ইতে। বাসমর্জ্জন রোচ্য। সংবংরমিমং যত্র বদেমাবিদিতাঃ প্রৈঃ॥ ৯॥

.. मर्जे के विकास

তকৈব বরদানেন ধর্মন্ত মনুজাধিপ!।

অ্জাতা বিচরিখানো নরাণাং নাত্র সংশাঃ ॥ ১০ এ

তত্র শ্বাসায় রাষ্ট্রাণি কীর্ত্তিবিধানি কানিচিৎ।
রমণীবানি গুপুনি তেষাং কিঞ্চিৎ লা রোচয়। ১১ ॥

সন্তি রম্যা জনপদা বহুবরাঃ পরিতঃ কুরুন্।
পাঞ্চালাশ্চেদিমংস্তাশ্চ শ্রসেনাঃ পটকরাঃ ॥ ১২ ॥

দশার্ণা নবরাষ্ট্রশ্চ মলাঃ শালা যুগস্বারাঃ।

কুরিরাষ্ট্রগবিপুলং সুরাষ্ট্রাবন্তর্মস্তর্থা॥ ১৩ ॥

এতেষাং কতমো রাজন্ নিগসন্তব রোচতে।

বৎস্তামো যত্র রাজন্ত সংবহরমিনং ব্যন্॥ ১৪ ॥

মুধিটের উবাচ।

‡ প্রত্যেতন্মহাবাহো ! যথা স ভগবান্ প্রভূঃ। অব্রবীৎ সর্ব্যভূতেশস্তত্তথা ন তদন্যথা ॥ ১৫॥ অবশ্যমের বাসার্থং রমণীয়ং শিবং সূথ্য। সম্মন্ত্র্য সহিতৈঃ সইর্কিব্যুস্যকৃত্যেভধ্যঃ॥ ১৬॥

অবিদিতা ইতিছেদ: ॥৯॥ নরাণামজাতা ইতি সংস্কঃ ॥১০॥ ১১॥ ॥১২॥১৩ ॥১৪॥ প্রভুর্মঃ ঘদাপ স্বেন রূপেন চরিত্র ছৌমিমীং নবোধিজায়তে কশ্চিৎ ত্রিয় লোকেয়ু কশ্চনেতি অএবীং॥১৫॥ ঘদাপের্থ তথাপি কচিৎ প্রছের তয়া বস্তব্য মেবেডাছে অবশ্যং ব্রেবিভি॥১৬॥

^{*} ভত্তেত্যত্র কিন্তু ইতি পাঠ: ক গুন্তকে।

[†] কুভিরাউঞ্বিপুলামতাত কুভিরাউৎ স্থবিস্তীণ মিতি পাঠি ক পুস্তকে।

[🛨] চ্চতমিত্যত্ত এবমিতি পাঠঃ ক পুশুকে।

18

মৎক্যো বিরাটো বলবানভিরক্তে হৈথ পাগুবান।
ধর্মনীলো বদানাশ্চ কুল্বশ্চ সতত প্রিয়ঃ ॥ ২৭ ॥
বিরাটনগবে তাত সম্থান কিনি বিষয়ে ।
কুর্ন্ধান্ত কর্মান বিহরিষ্যাম ভারত ॥ ২৮ ॥
যানি যানি চ কর্মান তাত বক্যামহে ব্যস্ব
আসাদ্য মৎত্যং তথ কুর্মা প্রত্রত কুরুনন্দনাঃ ॥ ২৯ ॥
ভার্জুন উন্সচ।

নরদেব কথং তস্য রাষ্ট্রে কর্মা করিষ্যসি।
বিরাট নগরে সাধো রংসাসে ও কেন কর্মাণ ॥ ২০ ॥
মৃত্রুবদান্যো ইনিমাংশ ধার্গিকঃ † সতাবিক্রনিঃ।
রাজশন্ত্রমাপদাক্ষটঃ কিং করিষ্যসি পাওব ॥ ২১ ॥
ন জুংখমুচিতং কিঞ্চিজাজা বেদ যথা জনঃ।
স ইমামাপদং প্রাপ্য কথং ঘোরাং তরিষ্যসি॥ ২২ ॥
যুধিন্তর উংচে।

শূণ্ধং যথ করিষামি কর্মা বৈ কুরুনন্দনাঃ। বির:টমনুস-প্রাপ্য রাজানং পুরুষর্ষভাঃ॥২০॥ স্ভাস্তারো ভবিষামি তদা রাজো মহাত্মনঃ।

ককো নাম বিজো ভূত্বা মতাক্ষঃ প্রেয়দেবনঃ ॥ ২৪॥
॥ ১৭॥ ১৮॥ বক্ষামহে নির্বোচ্ছ শক্ষামহে ইতি বছেরিদং রূপং
থেকাত প্রতোক মিতিশেষঃ ॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥ সভাস্তারঃ
ক্ষভাঃ সভাসদঃ সভাস্তারা ইতামবঃ ক্ষোনামতঃ শক্ষত্ম বিজেখাতো
লোহ পৃষ্ঠে কৃতাংতয়ো রিতি বিশ্বকোষাধ্যতা কৃতান্ত স্কুরেন আতাবৈ
পুত্রনামাসীতি প্রতে স্তদননামাৎ তর্মামে। ধারণে মিখ্যা বাদিরং ন
তাব্যতীতিভাবঃ মতাক্ষঃ রহদশাৎ জ্ঞাতাক্ষ তথঃ প্রিয়দেবনঃ ক্রীড়াপ্রিয়ঃ
॥ ২৪॥ দাভাব্ গাল্ড ম্যান্দতঃ পর্বতি সাত্র তৎ স্বশান বা শারীন্

^{*} রংসাসেইভাত্ত বংসাসে ইভি পাঠঃ ক পুস্তকে। † সভাবিক্রমইভাত্ত সভাসদর ইভি পাঠঃ ক পুস্তকে।

বৈদুর্ঘ্যান কাঞ্চনান দান্তান কলৈক্যোতীরদৈঃ সহ।
রক্ষাক্ষান লোহিতাক্ষা শুচ নির্বাহন্যামি মনোরমান ॥ ২৫ ॥
বিরাটরাজং রমযন সামাত্যং মুহ্বান্ধবম্।
ন চ মাং বেৎস্যতে কশ্চিন্তোষ্যিষ্যে চ তং নৃপম্ ॥ ২৬ ॥
আন মুধিষ্ঠিরস্যাহন পুরা প্রাণসমঃ স্থা।
ইতি বক্ষ্যাম নৃপতিং যদি মাংসোহস্ব্যোক্ষ্যতে ॥ ২৭ ॥
ইতি বক্ষ্যাম নৃপতিং যদি মাংসোহস্ব্যোক্ষ্যতে ॥ ২৭ ॥
ইতি বিরাটেশ্বনি পাণ্ডবপ্রবেশ পর্বনি মুধিষ্ঠিরাদিন্দ্রিরাটেশ্বনি পাণ্ডবপ্রবেশ পর্বনি মুধিষ্ঠিরাদিন্দ্রেণ প্রথমোহধ্যায়ঃ ॥ ১ ॥

নির্ব্বংশ্যাম চাল্যিবান্ত্রি দতঃ সাত্নি কথাত ইতি বিশ্বঃ তানেব চতুর্বর্ণান্নাই বৈছুর্বান্ ইরিত মনিময়ান্ নীলান্ কাঞ্চনান্ সৌবর্ণান্ পীতান্ জ্যাত থবি চ রসাশ্চ জ্যোতীরসা তৈঃ সহজোতিঃ শব্দেনাত্র লোহিতং লক্ষাতে যদয়ে রোহিতং রূপ তেজস শুক্রপ মিতিঞ্চতেঃ জ্যোতীরূপাঃ লোহিতাঃ রসঃ পারঃ তেজপাঃ খেতাঃ তৈ কত্য়ে সহস্তর্গ সম্পত্তিঃ তথা কলৈঃ লারীস্থাপনার্থানি কোঠাকোনি কাঠাদি ময়ানি ফলকানি তৈঃ সহ তেবাং নির্বর্তনে করনমাই কৃঞ্চাকান্ কৃঞ্যঃ অক্ষাঃ পালাঃ যেয়ার চালনার্থ মিতি কৃঞ্চাকা শুন্ শারীনেব তথা লোহিতাক্ষ,নিতাপি ॥২৫॥॥ ২৬॥ যুধিপ্রিরখান্ত শারীর র যথা প্রাণ উত্থাপক শুর্দিকাল্যাপীতি প্রাণ সামেন যুধিপ্রাত্মের বিবক্ষিত ইতিভাবঃ অনুযোক্যতে প্রশ্বং করিখান্তিঃ॥ ২৭॥ ২৮॥

ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারতভাব দীপে প্রথমে ২খার ॥ ১॥

^{*} হেতুনাইত্যত্ত কর্মণা ইতি পাঠঃ ক গুস্তকে।

ভীম উবাচ।

পৌরোগবো কেবাণে ইংং বুলুবোনাম ভারত!।
উপ্রাক্তানি রাজানং বিরাসনিতি মে মতি:। ১॥
ইপনিতি করিষামি কুশলোহলি মহানসে।
কৃতপূর্বিণি ণ যান্যন্ত ব্যপ্তনানি স্থানিকতি । ২॥
ভান্যপ্রাভিভবিষ্যানি প্রীতি মঞ্জনযন্তন্ম।
আহরিষ্যানি দার্বাং নিচ্যান্মহতোহপি চ॥ ৩॥
যং প্রেক্ষ্য বিপুলং কর্মা রাজা । নংযোক্যতে সমান।
ভাষান্ম্যাণি কুর্বাণ স্তানি কর্ম্মাণি ভারত॥ ৪॥
রাজ্যন্ত পরিপ্রেলা মংসান্তে মাং যথা নুপন্।
ভক্ষ্যান্মসপানানাং ভবিষ্যানি তথেশ্বরং॥ ৫॥
বিপা বা বলিনো রাজন্ রুষভা বা মহবেলাঃ।
বিনিপ্রাহ্য যদি ম্যা নিপ্রহীষ্যানি তানপি॥ ৬॥

পোরোগবঃ পুরঃ পুরস্তাৎ গাবোরশ্বরো যন্ত সপুরোগুঃ বারুঃ পিতেৎ-পত্তে ছি প্রথমৎ রজে রেত্সোঃ ক,ল্ক রাগুরশ্মিভূতঃ প্রাণ আনির্ভবতি পশ্চাদিন্দ্রিয়ান্তরাণীত শাস্ত প্রদিদ্ধং ত্যা পুরঃ পৌরোগবঃ লোকেতু পৌরোগবো মহানস্থাক্ষঃ বল্লবঃ স্থাকারঃ এতদেব মমার্থই নাম ১১১২॥ ৩ পিও॥ ঈশ্বরঃ যথেটিং বিনিযোগ কর্তাহতএব নৃপো যথা তথা প্রিয়োহং লোকানাং ভবিষ্যামি ইত্যুক্তং॥ ৫॥ ৬॥ নিয়োহস্যামি নিহীনং

^{*} ভারতেতাত্র নামত ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† বান্যান্তাত্র যৈরস্যেতি পাঠঃ ক পুস্তকৈ।

কু সংযোক্ততেসমামিতাত্র প্রীভো ভবিষ্যতীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ষে চ কেচিন্নিযোৎস্থান্তি সমাজেষু নিযোধকাঃ।

" তানহং হি নিযোৎস্থানি ব্রতিৎ তুস্তা বিবর্দ্ধবন্ ॥ १ ॥
ন স্বেতান্ যুধামানান্ বৈ হনিষ্যামি কথকান।
তথৈতান্ পাত্যিয়ামি যথা যাস্থান্তি ন ক্ষমন্ ॥ ৮ ॥
আকালিকো গোবিকর্ত্তা স্থাকর্ত্তা নিযোধকঃ।
আমং যুধির্তিরস্থাহামতি বক্ষ্যামি প্ছেতঃ ॥ ৯ ॥
আলানমাল্পনা রক্ষং শ্চরিব্যামি বিশাস্পতে।
ইত্যেতৎ প্রতিজ্ঞান্মি বিহরিব্যামাহং যথা॥ ১০ ॥
ব্যথিতির উপ্তে।

যনমিত্র জিণো ভূজা সমাগজন্পার । দিধকুঃ খাওবং দাবং দাশাইস্হিতং পুরা॥ ১১॥

হথাসান্তথা মারণ বর্জং বােংজামি॥ ৭॥ তাদেবাছ নড়িতি॥ ৮॥ আরা ি,কােগো বিকর্তা ছপকর্তা নিয়েগক ইতি আরলাঃ মন্তর্গজাঃ তৈঃ সহ-ক্রীডিভিডান জয়তি বা আয়ালিকঃ জয়ালঃ কুটিলে সর্জয়ে বৈমন্ত দতিনীতি । বিশ্বঃ গােবিকর্তা গাবাং মহতাং বলাবৈর্গানামার্শ বিকর্তা দমনেন বিকৃতি জনকঃ র্যভন্ব। মহাবলানি এই বামী তাুপে ক্রমাৎ স্থাক । মুল্গালি বিকার কর্তা পক্ষে স্তরাং উপকর্তা ।ন্যােধ ঃ মার। বর্জং মন্ত্রাল্লকরা পক্ষে নিডরাং যােধকঃ বিষম শ্লোকী কৃতন্ত আয়ালিকঃ প্রকৃতীনাং গুল দােষ স্চবঃ হন্তি দমকোবা তথা বিক্রমাদিতাঃ আয়ালিবঃ হ্রনকো হন্তিনিং দমকন্তথেতি গাে বিকর্তা গাবাং বাচাং বিকর্তা গালা পালালে ভেলানিং প্রান্ত্রত কেনিজু আয়ালিকোর শাকী আহি স্থাকন্ত্রী তু শাক্রভ্রতী তলারং পাচতে যন্ত্র গাে বিকর্তা, স উন্নত ইত্রপ্লাহরন্তি তন্ত্র মূলং ক্রেন্থং ৯ ৪০০। ১১॥

^{*} তানহংহি নিয়েৎ স্যামীতাত্ত্ব ভানহং নিহনিবণ্মীতি প্রাচঃ ক পুতকে।

পঠরাখ্যায়িকাকৈব ঐভিবেন পুনঃ পুনঃ।
রম্ঘিষ্যে মহীপালমন্যাং শুল্ভঃপুরে জনান্ ॥ ২৮
গীতঃ নৃত্যং বিচিত্রঞ্জ বাদিত্রং বিবিধং তথা।
শিক্ষ্মিষ্যান্যহং রাজন্ধ বিরাট্যপুর স্ত্রিয়ঃ ॥ ২৯ ॥
প্রজানান সমুদাচারং বহু কর্মা রুতং বদন্।
ছাদ্যিষ্যানি কৌতের মান্যাল্লানমাল্লা॥ ৩৯ ॥
যুধ্তিরক্ত গেহে বৈ কৌপদাঃ পরিচারিকা।
উষ্তান্মীতি বক্ষামি পুটো রাজ্ঞা চ দ পাগুর।॥ ৩১ ॥
প্রতেন বিধিনাচ্ছরঃ ঠাতকেন যথানলঃ।
হিরিষ্যামি রাজেক্র ! বিরাটভবনে স্থেম্॥ ৩২ ॥
ইতি বিরাটপ্রেণি পাগুবপ্রস্থেম্॥ ২ ॥

বৈশাপারন উবাচ। । । ইত্যেবমুক্ত্যা পুরুষপ্রবীরস্তথ।জুনো ধর্মাভূত্যাহারিঠা। বাক্যাং তথাসৌ বিররমে ভূযো।

নূপোহপর আতিরমাবভাষে। ১॥
রিকা: পুর্বরাজ চরিতানি। ২৮॥ ২৯॥ সমুদাচারং সমীনীনং উংকৃষ্টতরং
মর্বাবদান্যথাদি রূপং অভি:কৃতং বহু কর্মচবদন্ মার্যা রূপট ক্লীববৈহেন
আত্মনং শরীরং আত্মনা বুদ্ধা। ৩০॥ পরিতঃ চার্য্রিতৃং শীলং যন্তাঃ
সাংপরিচারিনী সৈব পরিচারিকা ক্রেপিদাাঃ ভর্তেতি গুলোভিসন্ধিঃ পক্ষে
পরিচারিকাসেবাকত্রী। ৩১॥ ৩২॥

িইতি বিরাট পর্ব্ধ ণ নৈলক্তীয়ে ভারত ভাবদীপে বিভীয়োহধ্যায়॥ ২॥

हेट्डादर्ग । : ।

বিরাটদা পুরস্তিরইতাত্ত বিরাট ভবদেশ্রিয় ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 পৃত্তিবেতাত্ত ভারতেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ফুধিন্তির উবাচ।

কিং স্বং নকুল ! কুর্বাণস্তত্ত্ ভাত ! চরিষাসি। কর্মা উল্ভুশ সমাচক্ষ্রাজ্যে তথ্য মহীপতেঃ। স্থাকুমারক শ্রক দর্শনীয়ঃ স্থায়েতিতঃ ॥ ২॥

মকুল উবাচ।

শব্দে ভবিষ্যানি বিরাটনুপতেরহন্।
সর্বেথা জ্ঞানসম্পন্ধঃ কুশলঃ পরিরক্ষণে ॥ ৩॥
গ্রন্থিকো নাম নায়াছং কর্ম্মিতং স্কুপ্রিফ মৃন।
কুশলোহস্মাশ্রনিকাষাং তথৈবাশ্বচিকিৎসতে।
'প্রিষ্যান্ধ সততং মেহস্থাঃ কুরুরাজ ম্বথা তব ॥ ৪॥
সেম্মা শ মন্ত্রিষ্যান্তি বিরীটনগরে জনাঃ।
তেভাএবং প্রক্রান্মি বিহরিষ্যান্যহ্ যুবা।
প্রেন্ন পুরাতাত অশ্বেষ্ধিকুতঃ পুরা।
বিরাটনগরেজ্নশ্রেষ্যান্মি মহীপতে।॥ ৬॥

॥ ২॥ পরিরক্ষণে অশ্বানামিতি পেবঃ ॥ ৩॥ গ্রন্থান্ আনুর্বেদং স্থাহ্যান্
বঞ্বেত্তীতি প্রত্যাহশিলে। স্তরাং অবিন্যের দেবানাং ভিষজান বশ্বিনাবধ্যু । ৬ তিক্রতে: ॥ ৪॥ ৫॥ জনেই নান্তি শোষেবাং তেশ্রাঃ সমঙ্গে ভূণীকৃত প্রাণা স্তেম্ অধিকৃতোমুখাইতি গুঢ়াশয় পকে স্পটোর্থঃ॥ ৬॥

^{*}বেমামামন্ত্রিষাতি ইতাত প্রাক্তিত্তীশ্চ ভবিষাতাতা শি লোকন্তরং ক পুশুক্ত পাঠঃ যথা অভ্যাশ্চ ভবিষাতি কিশোরো ইডা। অপি ন চ ইফা ভবিষাতি প্রেষ্চ রথেষ্চ ॥ ১ ॥ যেচ মাং মন্ত্রিষাতি বির্টিনগারে জনাঃ প্রা মুধিটিরভাষ্য হংজো ভরতর্ত। ১ত্রেষ সংপ্রবক্ষামি বিহরিষামিহং হথা ॥ ই ॥ বিরাটনগারে ছলশ্চরিষামি মহীপতে ন চ মাং বেংভতে কশ্চিতোষ্বিষ্টেচ ২ নৃপান্ ॥ ৩ ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

স্তদেৰ কথং তহা সমীপে বিহরিষ্যাস। কিং বা ত্বং কর্মাণঃ প্রচ্ছেরো বিহরিষ্যাসি॥ १॥

नक्टमन छेत्रां ।

গোৰুসম্ব্যাতা ভবিষ্যামি বিরাটস্ত মহীপতেঃ।
প্রতিষেদ্ধা চ দেখো চ দ্ব্র্যানে কুশলো গবাম্॥ ৮।
তান্তপাল ‡ ইতিখ্যাতো নামাহং বিদিতস্ত্র্য।
নিপুণস্ত চরিষ্যামি গেতুতে মানসো জ্বঃ॥ ৯॥
অহং হি ক্র সতত্র গোরু সতত্র প্রহিতঃ পুরা।
তত্র যে কৌশল্প সর্বা মববুদ্ধং বিশাস্পতে॥ ১০॥
লক্ষণং চরিত্র চাপি গবাং যক্তাপে মঙ্গলম্।
তৎ সর্বাণ মে স্ববিদিতমন্যক্তাপি মহীপতে! ১১॥

॥ ৭ ॥ সংখ্যানে পরীক্ষারাং ॥ ৮ ॥ তত্তিপালঃ তত্তিবলী বদার্যাস্যাৎ
দীর্ঘস্থল রক্ষাং বিশিষ্ট রপৈ দাঁমভি বধ্যন্তে সাপ্রক্তোপ বোগিনী
গুঢ়াভিসক্ষাে তু তত্তিগাক্ তসাবাক্ তত্তিবামানি দামানীতিশ্রুতে বাক্ধ্রেলাক যুদ্ধান্তনার্থা স্থাতেতার্থঃ ॥ ১ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥

[†] কর্ম ইতার তাতেতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

† তন্তিপাল ইতাএ তদ্বিপাল ইতি পাটঃ ক গুন্তকৈ।

** সতত মিত্যুক্ত ভবতা ইতি পাঠঃ ক গুন্তকৈ।

ব্যক্তানপি জানামি রাজন পূজিতলক্ষণান্।
 যেবাং মূত্রমূপান্তায় অপি বন্ধ্যা প্রস্থয়তে ॥ ১২ ॥
 সোহহমেবং চরিষ্যামি প্রীতিরত্ত হি মে দা।
 ন চ মাং বেৎশুতে কশ্চিত্তোষ্যিষ্যে চ পার্থিবন্॥ ১ ৩ শা

যুধিষ্ঠির উনাচ।

ইবং হিনঃ প্রিরা ভার্য্যা প্রাণেভ্যোইপি গরীয়সী।
মাতেব পরিপাল্যা চ পূজা জ্যেঠেব চন্দ্রসা॥ ১৪ ॥
কেন আ দৌপদী কৃষ্ণা কর্মানা বিচরিব্যাভি।
ন হি কিঞ্ছিজানাতি কর্মা কর্জুং যথা স্তিষ্ণঃ॥ ১৫॥
স্কুমারী চ বালা চ রাজপুল্রী যশস্বিনী।
পতিব্রতা মহাভাগা কথন বিচরিব্যাতি॥ ১৬॥
মাল্যং গন্ধানলঙ্কারান্ বস্তানি বিবিধানি চ।
এভান্যেবাভিজান্যতি যতো জাতা হি ভাবিনী॥ ১৭॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ হীতি ইরংমাতা কুলর্তি: আদিভূমি: গৌর্বা মাতাগোগাদি জননি গো একাণানি ভূমির ইতি মেদিনী অনা-অগ্নিকা পার্মতীবং পূজা ইতার্থ: এমতে ক্রেভাগ: সহস্ম্রাং-বিক্যাতং জ্যুম্ব শর্মা অসাথেবিকাম্বাসেতিমন্ত্র ব্রাধাণদর্শনাং জানা গার্হপত্য: পুরোমাহার্মপেচন ইতি তদ্যা অপি দেবতাত্বন সংস্কৃত্রাং মাতা সদাবতী ভূমি ধেল্ল জ্যোক্ষমা ভবেদিতা প্রাদাক্রন্তি ॥ ১৪ ॥ ॥ ১৫ ॥ বালা নিভাল্লনা ॥ ১৬ ॥ যতোযমিন্ দিনে জাতা তত আরভামা লাদিম্ ভোগানেব বেভি নক্রেশা নিভার্থ: ॥ ১৭ ॥ সৈর্দ্ধীতি সীরং-প্রতি সীরান্তঃ পটঃ ব্রিয়ভেনয়া হুরােবেতি সীর্দ্ধা সৈর দৈর্দ্ধী স্বার্থিভিত্তঃ অভঃপুর প্রিচারিকা বাজভার্যা বা সৈর্দ্ধী প্রবেশ্ব

দ্রে প্রাবাচ।

সৈরিক্ষ্যে রক্ষিতা লোকে ভুক্সিফ্রাঃ সন্তি ভারত!।
নৈব্যুলাঃ স্ত্রিযো যাতি ইতি লোকতা নিশ্চযঃ।
লাহং ক্রবাণা সৈরিক্ষ্যী কুশলা কেশকর্মানি ॥ ১৮॥
যুধিন্টিরত্ত গেহে বৈ দ্রৌপদ্যাঃ পরিচারিকা।
ভবিতান্মীতি কক্ষ্যামি পৃষ্টা রাজ্ঞা চ ভারত!॥ ১৯॥
ভারত্তপ্রামি যামান বং পরিপৃক্ত্সি॥ ২০॥
স্থানেকাং প্রত্যুপস্থাতা রাজভার্য্যান যশ্বিনীম্!
সা রক্ষিষ্যতি মান প্রাপ্তান মা ভূত্তে তুঃখমীদৃশম্॥ ২১॥
নুধান্তর উবাচ।

কল্যান্থ ভাষদে কৃষ্ণে। কুলে জাতাসি ভামিনি।।
ন পাপমনুজানাসি সাধু সাধীব্ৰতে স্থিতা॥ ২২॥
যথা ন চুষ্ঠ দিঃ পাপা ভবন্তি সুখিনঃ পুন্ত।
কুর্যান্তথা স্বন্ধ কল্যানি। লক্ষ্যেযুর্ব তে যথা॥ ২০॥
ইতি বিরাটপর্বনি পাগুবপ্রবেশপর্বানি যুধিষ্ঠিরাদীনান
মন্ত্রনে তৃতীয়োহ্ধ্যায়ঃ॥ ৩॥

ষুধিছির উবাচ।

কর্মাণাক্তানি যুগাভির্যানি ঘানি করিঘাথ। म्य हालि यथावृद्धिक्रिहिका विभिनिभह्या । ।। পুরোহিতোহ্যমন্মাকমগ্লিছে:ত্রাণি রক্ষত্। * स्मार्शितांशिकः मार्काः क्रायम् नित्यमान ॥ २॥ हेलारमनावयरण्डाम तथानामाय रकवलान्। যান্ত দারবতীং শীঘ্রমিত মে বর্ত্তত মতিঃ ॥ ৩ ॥ हैमान्ड नार्या। ट्रिनेशनाः मर्कान्ड পরিচারিকাः ! भाक्षालात्नव शक्क स्वत्भोतागरेवः मह ॥ ४॥ সবৈরিপি চ বক্তব্যং ন প্রাক্তায়ন্ত পাপ্তবাঃ। গতা হাগানপাকীয়া মৰ্বে দ্বৈত্তবনাদিতি॥ ৫।

रेतनन्त्राह्म केवाह।

এবন্তেহন্যোন্যমামন্ত্র্য কর্মাণ্যক্ত্রা পৃথক পৃথক্। (धोमामामख्यामायः म ह जान् मख्यवदीर ॥ ७॥ (धीमा छेवात।

ৰিহিতং পাগুবাঃ সৰ্বাং ব্ৰাহ্মণেযু স্বন্ধু চ। যানে প্রছরণে চৈব তথৈবাগ্নিয় ভারত ! । १ ।

কর্মানীতি ॥ ১ ॥ অগ্নিছোত্রাণি অগ্নিছোত্র পাত্রাণ রণী সহিতানি ছোম. সাধন ভূতা ধেনুকা। । ২ । ৩ । ৪ । ন প্রাজারস্তেতিবথার্থমেব রহস্যেত্তি ৰ্মংস্য নেশেবস্তব্য মিতি মন্ত্ৰিতহাৎ ॥ ৫॥ ৬॥ বিহিতং শাল্পেকং বাৰ_ ণাদিয়ু উপস্থিতেয়ু পরিচ্ধাাদিকং পাশুবাঃ সর্বাং জানস্তাতি শেষঃ যানে ' বিজয়বাত্রায়াং প্রহরণে যুদ্ধে যদ্যপোবং তথাপি কিঞ্চিক্সমীতি ভাবঃ॥৭।

^{*} হদেতাত হতেতি পাঠঃ ক প্তকে।

ত্ববা রক্ষা বিধাতব্যা কৃষ্ণাযাঃ কাল্কনেন চ।
বিদিতেং বোল যথাসিবিং লোকর্ত্তমিদং † তব ॥ ৮ ॥
বিদিতে চাপি বক্তবাং সুক্তির্মুরাগতঃ।
এই-ধর্মিক কামক অর্থকাপি সনাতনঃ ॥ ৯ ॥
অতোহ্হমপি বক্ষামি হেতুমত্র নিবোধত।
হুল্ভেমাং রাজবৃস্তিং রাজপুত্রা † ব্রবীম্য হং ॥ ২০ ॥
যথা রাজকুল প্রাপ্য সর্বান্ দোষা স্তরিষ্যথ।
ত্বাসত্বেব কৌরব্য জানত। ** রাজবেশ্মনি ॥ ১১ ॥
অমানিতৈর্মানিতির্বি অজ্ঞাতেঃ পরিবংসরম্।
ততক্তুদ্ধে বর্ষে চরিষ্যথ যথাস্থখ্ ॥ ১২ ॥

তদেবাহ ব্য়েতি ব্য়ায়ুধিন্তিরেণ ইদংলোকরতং প্রাক্তজনশীলং
আরক্ষামাণাস্থ্রীয় সাধীষ্পি অন্যায্য কম্পনং, দতঃ কৃষ্ণা রক্ষারেত্যর্থঃ
॥ ৮॥ বিষাংসোপি স্থন্ধতিঃ প্রীত্যাবশ্যং বোধনীয়া এবেত্যাহ বিদিতে
চাপীতি এবং সৌহার্দপ্রদর্শনেন ধর্মাদরোহ শুসূতা ভবন্তীতি ভাবঃ ॥ ৯॥
হত্তে তাস্কম্পায়াং রাজবস্তিং রাজকুলেবাসং তদিধিমিতার্থঃ ॥ ১০॥
হ্র্মেণং দৃঃখেন বন্তং শক্যং ॥ ১১॥ ২২॥ দৃষ্টদ্বারঃ প্রতীহার দ্বারানি বেইদাব রাজানং ক্রফু নিচ্ছে মত্তনভ্জাত ইত্যর্থঃ দিষ্টেত্যপি পাঠঃ পাঠাতবেরহস্যের মন্ত্রকার্যেয়ন বিশ্ববেং সংম্তোম্মতি বৃদ্ধা তত্ত্বন গচ্ছেৎ
প্রাদিষ্পি অবিশ্বস্তাঃ রাজানোমন্ত্র বিপ্লব ভরাৎ সদ্যো মার্যেয়ু রিতি
ভাবঃ তদ্বেভি পরেণ সহবৈরং মাভূদিতি পরাসনং নাথিছেৎ

^{*} য থাসক্ষ্মিত্যত্ত যথান্যার মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† তবেত্যত্ত নৃপা ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

‡ ব্রিনীমাহ মিতাত্ত ব্রেনীমিব ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

* জানতা ইত্যত্ত জানতা মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

* দিউবারো লভেদ্ উ্ রহন্তের্ ন বিশ্বদেশ।
ভদেবাসনমন্তিভেদ্যতা † নাভিপতেৎ পরঃ ॥ ১০ ॥
যোন যান ন পর্যক্ষং ন পাঠং ন রথং গজম।
ভারোহেৎ সম্মতোহস্মীতি স রাজবস্তি ন ব্দেশ ॥ ১৪ ॥

য় যত্র যত্রনমাসীনং শক্ষেরন্ ছুইচারিণঃ।
ন ভত্রোপবিশেদ্যো বৈ স রাজবস্তিং ব্দেশ ॥ ১৫ ॥
ন চামুশিয্যাক্রাজানমপ্তভ্যং করাচন।
ভুকীব্রেনমুপাসীত কালে সমন্তিপ্রয়ন্ ॥ ১৬ ॥
অমুযন্তি হি রাজানো জনানন্ত্রাদিনঃ।
ভব্যের চারমন্তের মন্ত্রিশং বাদিনং মুরা ॥ ১৭ ॥

॥ ১০॥ যানং পরকীয় মিতি শেষঃ ॥ ১৪॥ ছফালিরিণো ছফলারাঃ যত্র
যত্ত দ্যতমদ্য বেশ্যাদি ছানের অনগরস্থ পরকীয় লারমণ্ডলে বা আসীনমেনং
দ্যতাদি প্রিয়েযং পরিমেদিতোযমিতি শংকেরন্ তরনোপ বিশেৎ
রাজগামি পেশুন্য ভ্রাদিতার্থঃ ॥ ১৫ ॥ নানু শিষ্যাং ইদমি খং কুর্বিজ্
নাজ্ঞাপরেং ভূফীং মৌনেন কালে পরাক্রম সময়ে সমভি পুরুরেং
ছুবীত ॥ ১৬ ॥ ছুভিরপ্য ভূতার্থা ন কর্তব্যভাছ অভ্যানীতি হ্যান্তীত্যর্থঃ
॥ ১৭ ॥ থেছতঃ প্রচরাযাংশ্চ রাজা ধেকি যেচ রাজ্ঞাহ্ছিতাঃ দেঞ্টারীতেঃ

^{• *} দিক্টবার ইতাস্য প্রাক্ পাওবায়িরয়ং লোকে সর্ব • শার্ময়োমহান্। তি ভর্তাগোপ্তান্ত বালাপুক্ব বিশ্রেইত্যেক লোকঃ ক প্রক্রা।

[🕇] মাভিপতেদিতাত্র মাভিয়ঞ্জেদিতি পাঠঃ ক পুস্তকৈ।

[্]য ব্যৱভাৱ অধ্যেতি পাঠি: ক পুত্তকে।

নৈষাং দারেষু কৃষ্ণতি দৈত্রী প্রাক্তঃ কদাচন।
আন্তঃপুরচরা যে চ ৰেন্টিযানহিতা দে যে ॥ ১৮॥
বিদিতে চাস্তা কৃষ্ণতি কার্য্যাণি স্বলম্ন্যপি।
এবং বিচরতো * রাজ্ঞিন ক্ষতিজ্ঞাষতে ক্ষ্তিং ॥ ১৯॥
গচ্ছমপি পরা প্রাক্তি ন ক্ষতিজ্ঞাষতে ক্ষ্তিং ॥ ১৯॥
গাড্মপি পরা প্রাক্তিয়ে ছানিয়ে জিতঃ।
জাত্বল্ল ইব মন্যেত ম্র্যাদামনু চিন্তয়ন্ ॥ ২০॥
ন হি পুত্রং ন নপ্তারং ন ভাতরমরিক্ষমাঃ।
সমতিজ্ঞান্তমর্যাদ প্রমন্তির নরাধিপাঃ॥ ২১॥
যত্নাচ্চোপচরেদেনমন্ত্রিক নরাধিপাঃ॥ ২১॥
যত্নাচ্চোপচরেদেনমন্ত্রিক হ।
আন্তেনোপচীর্নো হি হিংস্তাদেনমসংশ্রেষ্ ॥ ২২॥
যচভর্তি, কুমুঞ্জীত তদেবাভ্যন্ত্রর্ত্থে ।
প্রমাদমবলেপঞ্চ কোপঞ্চ পরিবর্জ্জিয়ে ॥ ২০॥

মধ্বিঃ সহমৈত্রীং কুর্যাং ॥ ১৮ ॥ রাজি রাজ সয়িধো বিচরতো বিচার
পূর্ববিং, বসঙো নক্ষতির্মানহানাদি জায়তে ॥ ১৯ ॥ গাল্ছমিতি পরাং
বৃৎস্কর্যাং ভূমি নিতাং গাল্ডন্ আসনার্থং প্রাপ্ত রাজা অপৃট্টোহ
সংজ্ঞাই ভূমি নিতাং গাল্ডন্ অসনার্থং প্রাপ্ত নাজপ্তে। জাতাক্সইব
বিংক্সান মুর্পান্ত মিবাল্লানং মন্যেত বাবদ্রাজা ন সংভারতে নাপ্যাসনং
দিশীত তাবং প্রতিক্ষেতি বেতার্থঃ ॥ ২০ ॥ অনুধা দোষমাহ নহীতি
॥ ২১ ॥ যত্না দিব্ত অতি সামিধাদায়িরবৃ রাজাদহাত অবজ্ঞানাম্বেইব
সের্বংহর ীতার্থং অনৃতেন কুটকার্যাপাণাদিনা উপচীর্ণ আরাধিতঃ হন্যাদেব
॥ ২২ ॥ ভর্তারাজা অনুমুক্তীত আজ্ঞাপারেং পুল্ছেলা অনুবর্তরেং কুর্ব্যাৎ
বদেশা প্রমাদং জ্ঞানবধানতং অর্কেলগং শৌহ্যাদিগার্কং ॥ ২০ ॥ সমর্থনাস্থ

^{*} রাজীক্তার রাজ ইতি প্.ঠ: ক,প্রেকে।

সমর্থনাম সর্বাম হিতঞ্চ প্রিষ্ঠানের চ।
সংবর্ণযেন্তদেবান্ত প্রিয়াদিপি হিতং বদেশ । ২৪ ॥
অমুকুলো ভবেচ্চান্ত সর্বাথেয় কথা হ চ।
অপ্রিয়ঞ্চাহিতং যথ ভাগে ভদলৈ নামুবর্ণযেশ । ২৫ ।
নাহমন্ত প্রিয়েশ্বীতি মন্তা সেবেত পশুতঃ।
অপ্রমন্তন্দ * সততং হিতং কুর্য্যাথ প্রিয়ঞ্চ যথ । ২৬ ॥
নান্তানিন্তানি সেবেত নাহিতঃ সহ সংবদেশ ।
সন্তানান্ন বিকল্পেত স রাজবশ্বতং বদেশ ॥ ২৭ ॥
দক্ষিণং বাথ বামং বা পাশ্ব মাসীত পশুতঃ!
রক্ষিণাশ হান্তশন্তানাশ স্থানশ পশ্চাদিধীয়তে । ২৮ ॥
নিত্যশ্বিতিষ্কিন্ত পুরস্তাদাসনং মত্য ।
ন চ সন্দর্শনে কিঞ্ছিৎ প্রস্তম্পা । সংক্ষরেৎ ॥ ২৯ ॥

কার্য্য কার্য্য পরী কান্ত হ্নিতং পরিণাম স্থং প্রিয়ং শুভিত্যধ্বকাদে উত্তরে।
সমুচ্চযাসংভবে প্রিয়াদিপি। ইতং ভবেং প্রিয়ংত্যক্তাপিযাজিতং ভবেতদেব
বদেরতুহিত বিরোধি প্রিয়ং বদেদিতার্থঃ ॥ ২৪ ॥ অস্য সর্বার্থের সর্বেম্বর্থ
সাধনের অভ্রুলোযত্ত্বান্ ভবেং নত্প্রাতি কূল্য মালস্যং বা ক্র্যাদিতার্থঃ ॥
২৫ ॥ পণ্ডিতঃ পরিহাসকঃ পণ্ডিতঃ সিল্লাকেকবাবিভিবিশ্বঃ শণ্ডিতঃ ইতি
পাঠে বিচ্ছিদ্য ন সেবেত কিন্তুবিচ্ছেদেনৈব সেবেতেভার্থঃ অপ্রমত্তোহন
বহিতঃ ॥ ২৬ ॥ ক্রানাং রাজদভার বিক্লেত্ত ন চলেং ॥ ২৭ ॥ পণ্ডিতী।
বিদ্যাবান্ রাজানং কথাতী রময়ন্ পার্যে তিঠেং রিল্যাং রাজ্যোগ্র্যু
স্থানং পৃষ্ঠতঃ ॥ ২৮ ॥ শূরেন পণ্ডিতেন বা প্রস্তাং আসনং উপ্রেক্ষাদিদানং
কর্ত্তব্য মিতার্থঃ রাজ্যাং সংদর্শনে সমক্ষং প্রক্রমণি ভক্তবৈত্নাদিদানং
আহং পুর্বিক্য়ানাকারিতঃসন্ ন সঞ্জাত স্বীক্রণং ॥ ২৯ ॥ এতকু ধার্টাঃ

^{*} সতত মিতাত যত্নাচ্ছেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† বদেদিত্যত বদেদিতি পাঠঃ ক গুস্তকে।

1 সংক্ষে দিতাত সংক্ষপে দিতি পাঠঃ ক পুত্তকে।

অপি ছেতদারিদ্রাণাং ব্যলীকং স্থানমৃত্তমন্।
ন মৃষাভিহিত * রাজ্ঞাং মমুব্যেষু প্রকাশবেং॥ ৩০॥
অমুযান্ত হি রাজানো জনানমৃত্বীদিন:।
তবৈশ্যেবিমনান্তে জনান পণ্ডিতমানিন:॥ ৩১॥
শ্রোহস্মীতি ন দৃশু: ভাৎ বৃদ্ধিমানিতি বা পুন:।
প্রিষ্মোবাচরনাজ্ঞ: প্রিষা ভবতি ভোগবান ॥ ৩২॥
প্রায়ান প্রাণ্য ছুম্পাপং প্রিষান্ত প্রাণান্ত ।।
অপ্রমন্তো ভবেদ্রাজ্ঞ: প্রিষান্ত মহাফল:।
কন্তক্তা মনসাপীজ্ঞেদনর্থং প্রাক্তসম্যত:॥ ৩৪॥
ন চৌষ্ঠেই ন ভুজৌ জামু ন চ বাচন সমাক্ষিপেৎ।
সদা বাতঞ্চ বাচঞ্চ জীবনঞ্চাহরেচ্ছনৈ:॥ ৩৫॥

দরিদ্রাশমণি ব্যলীক স্থানং অপ্রিয়ণদং কিমৃত্রাজ্ঞা মিতি ভাবঃ উত্তমং প্রমং নেতি রাজ্ঞোদিতমন্তং বহিন প্রকাশরেও॥ ৩০॥ হি যমাও অনৃত বাদিবে। নৃপান্ হি বাতানো রাজানোহস্থান্তি দোষ ব্রেন কীর্ত্তরান্ত তামাও আমিনেহকীর্ত্তিকরং ন বদে দিতার্থঃ অবমনাত্তে রাজান ইতি শেষঃ॥ ৩১॥ প্রিয়ে,ভোগবাংশ্চ ভবতীতি সম্বন্ধঃ॥ ৩২॥ ৩৩॥ ৩৪॥ নিচেতি জেগ্রচাপর্য়োঃ স্চকং ওঠাদীনাং সমাক্ষেপথ প্রালনং ক্রাণিতার্থঃ বাতং মুখ্রুং অধন্তনং বা শনৈরিত্রেণাজ্ঞাতং বর্থা ভবেত্রথা কুর্যাদিতার্থঃ॥ ৩৫॥ হাস্তেতি অন তা রাজদেবকতা ক্রাত্ত বস্তুর্ হাত্রাম্পাদের্ অযথান্তিতের্ উঞীবাদির্ বর্ত্তমানের্ নিমিতের্ তদীয়া বৈকলো না,ভগাতং ন প্রস্তাহে নাপিহদেৎ

^{*} রাজাং মিতাত্র রাজ ইতি পাঠ: ক প্রতক। † রাজত ইতাত্র ভারতেতি প্রাঠঃ ক প্রতকে।

হাক্সবস্তুমু চাপ্যক্ত বর্ত্তমানেমু কেমু চিং।
নাভিগাচং প্রহারেত ন চাপুাল্পভবদ্ধে ॥ ৩৬ ॥
ন চাতি ধৈর্যোণ চরেৎ শুরুতাং হি ব্রক্তেপা।
শ্বিভস্ত মৃত্পুর্বেশ দর্শয়েদপ্রমাদক্ষম ॥ ৩৭ ॥
লাভে ন হর্ষধেদ্বাস্ত্ত ন ব্যথেদেয়াহ্বমানিতঃ।
অসংমূচক্ত যো নিত্যং স রাজবস্তিং ব্যেপং ॥ ৩৮ ॥
রাক্ষানং রাজপুত্রং বা * সংবর্ণযতি যং সদা।
অমাত্যং পণ্ডিতো ভূত্বা স চিরং তিষ্ঠতে প্রিয়ং॥ ৩৯ ॥
প্রস্থাতক্ত যোহ্মাত্যো ক নিগৃহীতক্ত কার্বেণঃ।
ন নিক্তি টু চ রাক্ষানং লভতে সক্ষাদং পুনং॥ ৪০ ॥
প্রভাক্ষপ্র পরোক্ষণ্ড গুণবাদী বিচক্ষণঃ।
উপজীবী ভবেদ্যজ্ঞা বিষ্থে চাপি যো ভবেৎ॥ ৪১ ॥

তার্গতের রাজান এনং কুলং মন্ত ইতি ভাবঃ নচিবস্তুতে নিমিত্তে সতিবৈর্গে কার্চবং ক্রেমিত্যাহনাতীতি ॥ ৩৬॥ গুরুতাং জডতাং কিমপ্যয়ং ন জানাতীতিবদেয়ু রিতি ভাবঃ অতএব স্মিতং মৃহ্পূর্বাং কিমপ্যয়ং ন জানাতীতিবদেয়ু রিতি ভাবঃ অতএব স্মিতং মৃহ্পূর্বাং কিমিপ্যয়ং ন জানাতীতিবদেয়ু রিতি ভাবঃ অতএব স্মিতং মৃহ্পূর্বাং কিমিপ্রাভাগতে ॥ ৩৭ ॥ নহর্বারা এবেত্যাহরাজান মিতি সংবর্জরতীতি পাচেই স্মরতি তির্গতে প্রকাশতে ॥ ৩০ ॥ ন নির্গতিন নিন্দ্তি দ্রিত্তি পাচেই স্মরতি তির্গতে প্রকাশতে ॥ ৩০ ॥ ন নির্গতিন নিন্দ্তি দ্রিত্তি তির্গতি পারাজানং ন নিন্দেনিত্র্গাই ॥ ৪০ ॥ বিলাদ্যারাজা উপজীবী সরাজাে গুণবাদীতা দিতি সমৃদ্ধঃ ॥ ৪১ ॥ বলাদ্যাং ভোকাং কুটিনীকর্ত্থ যেনকেন

^{*} সংবর্ণর তীতাত্ত সংবর্তরতীর্তিপাঠঃ ক পুশুকে

† নিগৃহীভক্ষ কারনৈরিত্যত্ত নিগৃহীস্থকারনৈ রিতিপাঠঃ ধ পুশুকে।

1 নিক্ষতীতাত্ত নির্বদ তীতিপাঠঃ ধ পুশুকে।

जगारित हि वलास्तिक् शाकानः धार्थरप् यः।
न म जिल्लेकित चार्ने गर्मक थान्मर मयम्॥ ४२॥

(धारः महाइरना हृश्चे ।, श्रद त्र ज्ञा न मः वरह ।

विदेश वर्ष ताजानः रया गांज्यि मुम्म मद्या ॥ ४०॥

जन्ना वलवान् श्रम् । या गांज्यम् मद्या ॥ ४०॥

जन्ना वलवान् श्रम् । या गांज्यम् । ४०॥

जन्ना विदेश हे ।

जन्ना विदेश हे ।

जन्ना विदेश हे ।

जन्म विदेश है ।

जन्म

চিদ্বাজেন লোকান্ দশুয়েতি শিক্ষয়ন্ যঃ প্রার্থিকেৎ সরাজঃ প্রিয়োপি বহুজন বিরোধাৎ চিরং স্থানং পদং নতিছেৎ নাধিতিছেৎ অবশাং পদচাতে। ভবেদিতার্থঃ ভোক্ত মিতি ভুজকোটিলো ইতান্ত রূপং ॥ ৪২ ॥
প্রেয়ইতিরাজঃ সকাশাদাঘনঃ স্বত্য শ্রেয়েধন মানাদি লাভং দৃষ্ট্য পরং
আনাই দদা সর্বদা রাজ্ঞাসার্ত্যিং ন সংবদের স্থান্ত্যেৎ কিন্তু মহারাজ্ঞা ন
ভবা দৃশান্ মন্ত্রে লক্ষয়তীতের নোকে পরং দর্শয়েৎ (গিল্ডুমিয়ৢ য়ুদ্ধে
পাররাজ্ঞিকৈঃ সহ সংলাপে বা রাজানং বিশেষয়েৎ রাজ্ঞোপেক্ষয়া স্থীয়ং
শৌর্রাজ্ঞিকৈঃ সহ সংলাপে বা রাজানং বিশেষয়েৎ রাজ্ঞোপেক্ষয়া স্থীয়ং
শৌর্রাজ্ঞিকৈঃ বাহরিকং দর্শয়েৎ তেন রাজা প্রীয়ত ইতি ভাবঃ
শাহুত্য ॥ অয়ানঃ উৎসাহী বলবান্ ধী বলগুক্তঃ মৃহঃ অনিষ্ঠ্রঃ দাতো
ভিতিক্রিয়ঃ, স্থাক্ষিতোবা ॥ ৪৪ ॥ অন্যান্মিন্ পুংদি কন্ত চিৎ কার্যা য়ার্থে
প্রেষ্যমাণে এহি ইদং কুর্বিত্ জ্মানে সতি যন্তদা গমনাৎ পুর্বাং নতুণতে
ভৎকার্যাং কর্জ্থ সালী একারী রাজবসতিং বদেশ ॥ ৪৫ ॥ আভরে ধনদার
সংরক্ষনাদো বাহো সামন্তর্গয়ে আদিন্ত আজ্ঞের নৈবক্ষেত্ত নৈবসংশয়ং ভয়ং বা রুর্যাং অনিঃসংশব্য হার্ভ্যকে ভৎকার্থ- স্ক্র্যাফেনেতের থ
৪৬ ॥ প্রিয়াণাং প্রিয়াণি জ্ঞীপুরারপানাদি স্থানি ছংখেন প্রবাসাদিনা

যো-বৈ গৃহেভাঃ প্রবদন্ প্রিয়াণাপ নানুসংস্থারে ।

সুংখেন সুখমস্থিছেং দ রাজবদ্দিং নদে । ৪৭ ॥

সম বেশং ন কুর্বীত নাভাুটেচঃ দল্লিখো ও বদে ।

মন্তং ন বছধা কুর্যাদেবং রাজ্ঞঃ প্রিয়ো ভবেং ॥ ৪৮ ॥

ন কর্মাণি নিযুক্তঃ সন্ বনং কিঞ্চিদ্পি স্পূদেশ ।

প্রাপ্রোতি হি হরন্ দ্রবাং বন্ধনং যদি বা বধন্ ॥ ৪৯ ॥

যানং বন্ধনক্রাম যচান্যং সপ্রয়ন্ততি ।

তদেব ধার্যেলিভামেবং প্রিয়তরো ভবেং ॥ ৫০ ॥

এবং সংয্মাচিওানি যুক্তঃ পাতুনন্দনাঃ ।

† সংবংসর্মিমপ তাভত্থাশীলা বুভূবত ।

অথ স্বিষ্যং প্রাপ্য যথাকামপ করিরাথ ॥ ৫১ ॥

সুধিষ্ঠির উণাচ।

অপ্লুশিষ্টাঃ স্ম ভদ্রস্তে নৈতম্বক্তান্তি কশ্চন। কুন্তীমৃতে মাতরং নো বিচুর্গ বা মহামতিম্॥ ৫২॥

॥ ৪৭॥ সমবেষং বস্তালক্ষারাদিকং রাজাসমানং ন কুর্বাং উচ্চঃ অতিশয়েন বহুণা বহুপ্রকারং ন কুর্বাং ন ভিন্যা দিত্যর্থঃ ॥ ৪৮ ॥ ধনং উং—
কোচাদিন। প্রাপ্তং কিঞ্চিল্পি অত্যপ্প ন স্পৃত্যের ॥ ৪৯ ॥ ষংসংপ্রথাছতি
রাজা তদেব রাজভং যানাদিকং ধাররেং নকুতদন্তিমাদদ্যাদিতার্থ ॥ ৫০ ॥
সংযমা নিগৃহ্ইমং ত্রোদেশং সম্বংসরং হেতাত যুগিন্তির যুগং সর্বের্
ভ্রালীলাঃ যথোক্ত সর্ভাঃ সভ্যোবৃভূষত ঐশ্বাং প্রাপ্ত কিশ্হুত্ব
অথ অনন্তরং অবিষয়ং অদেশং প্রাপ্ত মথাকামং যথেকং ক্রিয়াথ ক্রীডা
মিতি শেইঃ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ অনন্তরং অনুপদং কার্যাং শান্তিকং পৌতিকঞ্

বদেদিত্যত্তহনোদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

[†] সম্বংসর মিডাস্থাক্ এবং সংঘ্যাচিপ্রানীতি চরণদ্বং ক পুস্তকে নান্তি।

যদেবানন্তর ন কার্যাং তন্তবান কর্তুমইতি
ভারণাযান্ত জুংখন্ত প্রস্থানায় ক্যাষ্চ ॥ ৫৩ !

হৈশল্যায়ন উবাচ ।
অধ্যুক্তিরতো রাজ্ঞা ধৌম্যোইথ দিলসন্তমঃ ।
ভাকরোদিধিবৎ সর্বান অদ্বানে যদিধীয়তে ॥ ৫৪ ॥
তেবাং সমিধ্য ভানগ্রীয়ান্তবন্ত জুহাব সঃ ।
সমৃদ্ধির্দ্ধিলাভাষ পৃথিবীবিজ্ঞায় চ ॥ ৫৫ ॥
তাগ্রং প্রদক্ষিণং কৃষ্ণা ব্রাহ্মণাংশ্চ তপোধনান্ ।
যাজ্ঞানীং পুরস্কৃতা যডেবাথ প্রব্রুজুঃ ॥ ৫৬ ॥
গতেষু তেষু বীরেষু ধৌম্যোইথ জপতায়রঃ ।
ভাগ্নিহোত্রাণুপোদায় পাঞ্চালানভাগচ্ছত ॥ ৫৭ ॥
ইন্তানেদ্যশৈচ্ব যথোক্তাঃ প্রাপ্য যাদবানু ।
রথানশ্বংশ্চ রক্ষন্তঃ স্বথ্যুয়ং সুসংর্তাঃ ॥ ৫৮ ॥

ইতি বিরাটপর্কানি পাগুবপ্রবেশপর্কানি ধৌম্যোপদেশে চতুর্থোহ্য্যাযঃ॥৪॥

অসা অজ্ঞাতবাস হংখ্যা তারণার প্রস্থানার শক্রন্ প্রতি যোদ্ধ গমনার জ্যোষ্ট বহু কর্ম প্রতবৃতি তৎকর্তুমইসি ॥ ৫৩ ॥ ৫৪ ॥ সমিধ্য উদ্ধীপ্য শাষ্টিক ক্রাভি সম্পতিঃ রাদ্ধি বিশেষঃ লাভো রাদ্ধানাব্ধরা অপি পৃথিন্যা বিজ্ঞানের বশীকরণার ॥ ৫৫ ॥ ষট্ট্রেপদ্যা সহিত্যঃ ॥ ৫৬ ॥ ৫৭ ॥ ৪৮ ॥

ইতি বিরাট পর্বনি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে চতুর্বেছিখায় ॥ ৪ ॥ বৈশন্ধাহন উবাচ।

তে বীরা বন্ধনিস্ত্রিংশাস্তথাবন্ধলারিনঃ *!
বন্ধগোলাঙ্গুলিত্রাণাঃ কালিন্দাসভিতো যয়ুঃ॥১॥
ততন্তে দক্ষিণ তীরমন্ত্রগজ্ঞর পদাত্যঃ।
† নির্ভা বনব সাঁহি স্বর্ত্ত্রং প্রেম্পবস্তদা॥
বসভো গিরিত্রগেষু বনত্রগেষু ধন্দিরঃ॥২॥
বিধ্যন্তো সগজাতানি সহেঘাদা সহাব াঃ।
উত্তরেণ দশার্ণাংশ্তে পঞ্চালান্ দ্কিনের তু॥ ০॥
অন্তরেণ যক্ত্রোমান্ শূরসেনাংশ্চ পাপ্তবাং।
লুকা ক্রবাণা মহস্তম্য বিষয়ন প্রাবিশ্বনাৎ॥৪॥
ধন্মিনো বন্ধনিস্ত্রিশা বিবর্ণাধ শাক্রবাং॥৪॥
ততো জনপদন প্রাপ্যা ক্রফা বাজানমত্রবাং॥৫॥
প্রের্গিদ্যা দৃশত্তে ক্রেলানি বিবিধানি দ।
ব্যক্তং দূরে বিরাটিয়া রাজধানী ভবিষ্যাতি।
বসামেহাপরাং রাজিন বল্বান্ মে পরিশ্রমঃ॥ ৬॥

তেবীরা ইতি নিজিংশং খড় নাং কলাপিন ভূণণতঃ ততা মুখেতি পাঠে সজীকৃত ধল্নং ততা মুধাশ্চতে কলাপিনশ্চেতি বিপ্ৰছঃ বন্ধং গোধাতল জাখাত বারণাধাং অপুলিতাণঞ্চ থৈ বন্ধাগাপুলতাণাঃ গোধাতল নিহাক্ষো বিতিমেদিনী ॥ ১ ॥ ২ ॥ ০ অভবেশ মধাতঃ মৎসাদাে ব ভেল্লুব্ধা বাধাঃ স্মাইতি ক্রবাণাঃ পক্ষে বাজাকাংকিশঃ লুব্ধু আকাজিকান বাধে ইতি মেদিনী বিষয়ং মৎসাদােব দেশং লুক্যাভিন্যার্থং বিবর্ণাঃ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ একপদাঃ ক্ষেত্রগামিনঃ ক্ষুদ্রমাগাঃ ॥ ৬ ॥

^{*} তথা^বদ্ধকৰাপিন ইভ,ত্তভাষুধ কলাপিন ইভি পাঠঃ ক পুস্তকে।

[🕇] নিব্ভাবন বামাদিতাত নিব্ভবন বামাহ ইতি পাঠঃ খ পুশুকে।

যুধিষ্ঠির উবাচ।

ধনপ্র সমুদ্যম্য পাঞ্চালীং বহ ভারত।
রাজধানাং নিবৎস্যামো বিমুক্তাশ্চ বনাদিতঃ ॥ ৭ ॥
বিশ্লপায়ন উপাচ।

তামাদাযাজ্জুনস্তূর্ণ দৌপদী গজরাডিব।

र পুলাপ্য নগরাভ্যাসমবতারয়দর্জ্জুনঃ ॥ ৮ ॥

স রাজধানীং সংপ্রাপ্য কৌতেষোহর্জুনমত্রবীং।
কাযুধান সমাসজ্য প্রবেক্যামঃ পুরং বয়ম্ । ৯ ॥

সাযুধান প্রমাসজ্য প্রবেক্যামঃ পুরং বয়ম্ । ৯ ॥

সাযুধান প্রবেক্যামো বয়ং তাত! পুরং যদি।

সমুদ্ধেগং জনস্যাস্য করিষ্যামো ন সংশ্যং ॥ ২০ ॥

গাণ্ডীবন্ধ মহদ্যাচং লোকে চ বিদিতং নৃণান্।

তচ্চেদাযুধমাদায় গজামো নগরং বয়ং ॥

কিপ্রমন্মান্ বিজানীযুর্মনুষ্যা নাত্র সংশ্যং ॥ ২১ ॥

ততো দ্বাদশ বর্ষানি * বস্তব্যানি বনে পুনং ।

একিম্মন্নিপি বিজ্ঞাতে প্রভিজ্ঞাত ছি নন্তথা ॥ ২২ ॥

অর্জুন উবাচ।

ইধং কুটে মনুষ্যেক্র ! গহনামহতী শমী ! ভীমশাখা তুরারোহা শ্মশানস্য সমীপতঃ ॥ ১৩ ॥ ন চাপি বিদ্যতে কশ্চিমনুষ্য ইতি মে মতিঃ।

ূু ব্য়েহসান্নিদৰতো দ্ৰফা ভবেচ্ছস্ত্ৰাণি পাপ্তব ! । ১৪ ॥ উৎপথে হি বনে জাতা মৃগবললনিষেবিতে। সমীপে চ শ্বাশানস্য গহনস্য বিশেষতঃ ॥ ১৫ ॥

ি । । । । । । । ১০ । ১১ ॥ ১২ ॥ কুটেইব কুটে উচ্চ প্রদেশে মারাজিশৃঙ্গরোঃ
বুট মিতি মোননী ভুরারোহা শাশানস্থাৎ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ উৎপথে মার্গাদহিভাবে ॥ ১১ ॥

^{*} বস্তব্যানীভাত্ত প্ৰবেক্টৰামিতি পাতঃ খ পুস্তকে।

 রুমাধায়ায়ৢধংশমাা৽ গছামো নগরং প্রতি। এবমত যথা 🕂 জোগং বিহরিষাাম ভারত। । ১৬ ॥ रेवभम्भायन छेनाह। এবম্বকু। স রাজানং ধর্মাত্মান মুধিষ্ঠিরম্। প্রচক্রমে নিধানায় শস্ত্রাণাং ভরত্র্যভ ! ॥ ১৭ ॥ (यन (नवाजानुष्या ० ४६ मर्लाः रे ४६ कत्र १६५ ३ इष्ट । ক্ষাতান্ জনপদানন্যানজযং কুরুপুঞ্চবং॥ ১৮॥ ততুদার মহাঘোষ সপ্রগণস্দন্য ৮ অপজামকরোৎ পার্থো গাণ্ডীবন স্বভ্যকর্ম্ ॥ ১৯ বেন বারঃ ক্রুকেত্রমভারক্ত পরমুপঃ। অমুঞ্জনুষস্তম্য জ্যামক্ষয্যার যুবিষ্ঠিরঃ॥ २०॥ পাঞ্চল।न् रयन मध्यारम जीमरमरना रुख्यः अजुः। প্রতাবেধছহুনেকঃ সূপত্রা ইশ্চব দিগ্জয়ে॥ ২১॥ निभाषा यमा विकातः विज्वविद्य त्रप्त भारत । পক্ষতদ্যের দীর্ণস্য বিক্ষোটসশ্নেরিব॥ ২২॥ সৈন্ধাৰং যেন রাজানং 🛊 প্র্যাস্থিত বান্থ। জ্যাপাশং ধনুষস্তস্থ ভীমসেনোইবভারষং ॥২০॥ অজয়ৎ পশ্চিমামাশাং ধনুষা যেন পাগুৰঃ। মাত্রীপুল্রো মহাবাহস্ত আন্তো মিত ভাষিতা ॥২৪॥

। ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ সম্পান বলানাং দেবারাধন প্রাপ্তবলঃ নাম স্থাদীন মিটিক স্কনং ॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ইুসক্ষাং জয়ক্রথং ॥ ২০॥ ২৪ ।

^{*} সমাধায়ায়্ধংশমামিতাত সমাসজাল্ধানাসামিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} জোগমিতাত জোখমিতি প্রাঠঃ ক প্রকে

^{*} পর্যায়্যিত ব্যন্থেতাত্র পর্যায়্যিত চান্য ইতি ক পুস্তুকে পাঠঃ।

ख्या भोकीयशाकर्यकृतः मःकानामा युषि।
कूटल गांत्रि मध्या क्राप्ता क्रिया क्रिया

विश्वातिम छे १५।

অথারশ,সন্নকুলং কুরীপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ।
আরুছেনাং শনাং বির! ধনুংবেতানি নিজিপ। ২৮॥
* তামুপারুহ নকুলোধনুংধি নিদধে স্বযন্।
যানি তহ্ছাবকশোনি দুচৰপাণ্যফনাত। ২৯॥
যত চাপশ্যত ল বৈ তিরো বর্ধাণি বর্বতি।
তত্র তানি দুটেঃ পাশোঃ স্থাচিং পর্যবন্ধার।
শরীরঞ্জাতইক্ত সমবপ্পত্ত পাত্রাঃ।
বিবর্জিযিয়ন্তি নরা দূরাদেব শনানিমান্॥ ৩১॥
আবন্ধং শবমত্রেতি গ্রামান্তায় পূতিকন্।
অশাতিশতবর্ধেং মাতান ইতি বাদিনঃ॥ ৩২॥

শংক্রেশন শক্তণামাক্রন্দন করঃ ॥২৫ ॥ অপার্জাং জার্বিইতং ॥ ২৬ ॥
বিপাচান্ বাণ বিশেষান্ তাদৃশান্ কুরধারাংশ্চ ॥ ২৭ ॥ অস্বণাসং আজাভিত্রেল্ ॥ ২৮ ॥ তদাাঃ শমাাঃ বকাশা নিভাগুরি মতেন অলোপঃ অববাণাধানি স্থার স্থানানি ॥ ২৯ ॥ বর্ষতিমেঘঃ তিরোবর্ষানি অসংমুখানি
বর্ষানি স্থাঃ যত্তাপশাত তত্ত্ব পর্যাবন্ধত পর্যাবন্ধার ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ পুতিকং
জিম্লেল্ অনীত্যধিক শত্র্যানোহস্যাকং ইরমিতি শ্বনির্নেণঃ পক্ষেণ্মী
আঙ্গুরক্ষকত্বাৎ মাত্রগ্রাক্ষ মিত্যভি সন্ধিঃ॥ ৩২ ॥

^{* ্}যায়পাৰ্কত্ত্তাস। প্ৰাক বৈশন্সায়ন উবাচ ইত্যেক শ্লোকঃ ক পুস্তকে

কুল্পর্যোহ্যনলাকং পূর্বৈরাচরিতোহপি চ।
সমাসজ্যাথ রুক্তেই সানিতি বৈ ব্যাহরতি তে ॥ ৩০॥
ভাগোপালাবিপালেভর আচক্ষাণাঃ পরন্তপাঃ।
আন্ত্রার্নগরাভ্যাশন পার্থাঃ শক্রনিবর্হণাঃ॥ ৩৪॥
ভাগো জয়তো বিভাগে। জয়ংসেনো জয়ন্তলাঃ।
ইতি গুহানি নামানি চক্রে তেয়ান যুধিষ্টিরঃ॥ ৩৫॥
ততো যথাপ্রতিজ্ঞাভিঃ প্রাবিশনগরং মহং।
অক্তাত্রগ্যাং বংস্থান্ডো রাষ্ট্রে বর্ষন ক্রমেনশন্॥ ৩৬॥

ইতি বিরাটপর্কাণি পাণ্ডবপ্রবেশপর্কাণি অস্ত্রসংস্থাপনে পঞ্চমোধ্যায়ঃ॥ ৫॥

বৈশস্পারন উবাচ।

বির্নির করে করমং গৈজমানো যুগিটির:।
অস্তবন্ধরীং ॥ ১ ॥
যশোদা গর্ভসম্ভাং নারায়ণ বর প্রিয়াম।
নন্দ্রোপকুলেজভোং মঞ্চলাং কুলবর্দ্ধিনীম॥ ২ ॥

কুলধর্মোরং ক্ষত্রধর্মোরং যদাবৃধ সংগোপন মিতি গুড আশয়ঃ পাকে; অয়ং মাতৃর্কি বন্ধনাধ্যং ॥৩০॥ ৩৪॥৩৫॥ বংস্টের। বসুমস্ভ ঃ ॥৩৬॥

> বিরাট পর্বাণ নৈলকণ্ট রে ভারতভাবদীপে পঞ্চমহিধ্যায়ঃ ॥ ৫ ॥

গচ্ছমানঃ গচ্ছন্ ত্রগাং ত্রগম সকট তারিবীং ॥ ১ ॥ নারায়ণেন দতাবেবরা উমেতি ভক্তকানীতি দেবাস্থাং পুরায়বান্তীত্যের মাদয়ে। বিশ্নু পুরাণাদো ভাচতান্তৎ প্রিয়াং মদলাং মদল প্রদাং ॥ ২ ॥ কংস, বিদ্যাবনকরী মস্ত্রাণাং ক্ষয়ংকরীং।
শিলাতি বিনিক্সিপ্তামান্ধাশং প্রতিগানিনী । ৩॥
বাস্ত্রেদ্বস্তা ভগিনীং দিব্যমালা বিভূষিতাং।
দিবীয়েরবরং দেবীং থড় গথেটক ধারিণী । ৪
ভারবিতরণেপুণ্যে যেম্মরতি সদা শিবাং।
তানু বৈ এররতে পাপ্তাং গক্ষেগানিবছর্কলা । ৫॥
স্ভোতু প্রচক্রনে ভূরো বিবিধঃ স্তোক্রমন্তরিং।
আমস্ত্রা দর্শনাকাজ্কী, রাজাদেবাং সহামুকঃ ॥ ৬॥
নমোস্ত বরদে কৃষ্ণে কুমারি ব্রন্ধারিণি।
বালার্ক সদৃশাকারে পূর্বিদ্রু নিভাননে ॥ ৭॥
চতুভূ ক্যে চতুর্বক্রে শীন জোনি প্রোধ্রে।
ময়র পিচ্ছবলরে কেযুরাঙ্গদ ধারিণি।
ভাসিদেবি যথাগ্রা নারায়ন পরিপ্রহ্ণ। ৮॥
অরশং ব্রন্ধার্যাঞ্জিনিশ তবথেট্রী।
কুক্ছেবিসমান্ধ্যান্ধান্ধান স্মাননা ॥ ৯॥

শিলাতটে কংসেনের বিনিক্ষিপ্ত: সতী আকাশং গতা তাং ॥ ৩॥ খেটকং

চর্মা ॥ ৪॥ ৫॥ গুড়ার্গমের সন্তর্গ উন্তরেশের নামাং বরদে ইত্যা
দীনাং তৈঃ আমন্ত্রা সম্বোধ্য গুড়ার্গ প্রক্রমে ইতি পূর্বেণ সহস্কঃ ॥ ৬॥

ক্ষেত্রক্ত ক্রমন্তরেশি । ৭॥ চতুত্বি চতুর্গক্তে ইতি িক্স ব্রন্তরপ । সূক্তং

মরুর বিক্ষাভানি, ইক্রনীলাদি মণিখতিওান বলরানি ষদ্যাত্রখা বিধে পদ্মা ।

লক্ষ্মীঃ অত্রব নারারণ পরিপ্রহো বিক্ষকাভা ॥ ৮ ॥ বল্লচ্যা মিতাননা

গামিরং দশিতং তেন লোকিক লক্ষ্মী ভোষাবৃত্তিঃ ক্ষক ব্রিনীল মেছ
শেষ্তন সমাকৃষ্ণ কৃষ্ণবর্গ ॥ ৯ ॥

বিজ্ঞতা বিপুলোবাছ শক্রম্বলসমুজ্নেরী।
পাত্রীচ পক্ষজী ঘণীক্রীবিশুদ্ধাচ্যাভূরি। ১০॥
পাশং ধরুর্মহাচক্রণ বিবিধান্যায়ুদ্ধানিচ।
কুণ্ডলাভ্যাং স্কুপ্রভ্যান কর্ণভ্যাঞ্চ বিভূবিতা॥ ১০॥
চন্দ্রবিস্পদ্ধিনাদের মুখেনছন বিরজেলে।
মুকুটেন বিচিত্রেণ কেশবস্থেন শোভিনা॥ ১৯॥
ভূজজা ভোগবাদেন জ্যোণ স্থ্রেণ রাজ্ঞা।
বিজ্ঞাজসেচাবদ্ধেন ভোগেনেবেহ্মন্দর্ভ। ১০॥
ধ্বজেন শিথিপিচ্ছানামুচ্ছিন্তেন বিরাজনে।
কৌমারণব্রত্নাস্থায় ত্রিদবং পাবিত্রভ্রা॥ ১৪॥
তেনজংস্থানে দেবিত্রিদশৈং পূলাদেপিচ।
তৈলোকা রক্ষনার্থায় মহিবাস্থা নাশিনি।
প্রমন্নানে স্কর্লোর্থায় ক্রুশিবাভব॥ ২৫॥
জ্যাত্বন ক্রাটের সংগ্রামে চ জয় প্রদা।
মমাপি বিজয়ং দেহি বর্ণাত্বপ্রসাম্প্রত্ন ১৬॥

অন্তর্জামার বিজ্ঞতি বিপ্লো বরাত্য প্রদায়ন উর্জিটেরিগার তত্ত্রকঃ পাত্রী পাত্রবান্ পঞ্চনী পদ্ধনান্য হটা ঘটাবান্ পঞ্চন। ১০॥ পানংগর মহাজ্ঞপ্ত বিজ্ঞতি পূর্বের্বারয়ঃ এতানোর বিবিধানা যুগ্রান্ত্র কুওল পূর্বে বেলা কর্নোভাজাই বিরাজিতা॥১১॥ কুলাইন্ধেন কর্মী রূপেন। ১২॥ বেলীই বর্মতি ভূলাইলি ভূলাই। ভোগেলাসেন সর্পারীরা কারেন বাসো বাসনাতেন তদাকার উপলক্ষাতে কটিছত্ত্বন সহরাজতার শোভ্যানেন কটিছত্ত্বা পরিল্লামান বা বেনোভার্থঃ ভোগেন ভূজাই কারা ভদ্বতা ভূলাকোর ভ্রাবিনা বিন্তার্থঃ ভোগেন ভূজাই কারা ভদ্বতা ভূলাকোর প্রামান বা বেনোভার্থঃ ভাগেন ভূজাই কারা ভদ্বতা ভূলাকোরতার্থঃ ভোগিনে বেতি যুক্ত প্রিটঃ॥১০॥১৪॥ শিবাকল্যান রূপা॥১৫॥১৬॥

বিন্ধোটেৰ নগশ্ৰেষ্ঠে তবস্থান হৈ শাশুতং। कालि कालि महाकालि मधुमारम পশুश्रिय ॥ ১३॥ ক্লতার্য্যতাভূতৈস্ত্র বরদাকামচারিনি। ভারেবিভারে যেচতাং সং অরিষাভিমানবাং ॥ ১৮ ॥ প্রথমন্তিচয়েত্বংং হিপ্রভাতেত্বনরাভূবি। নত্বোংছুল ভিং কিঞ্চিৎ পূত্ৰতোধনতোপিবা ॥ ১৯॥ ছুর্গান্তারয়দেছুর্গে তত্ত্বং ছুর্গাস্থ্র ভালনৈ ।। को छ। दिश्ववमञ्चानार माधाना क्षमञ्जि । २०॥ দস্তাভির্বানিরুদ্ধানাই ত্রুগতি । প্রমান্থাই। জলপ্রতরণে চৈব কান্তারেম্বট্রীমুচ। ২১॥ যেসার ক্রিমহাদেবিন চ্দীদক্তিতেন মাঃ। ত্বশ্কীর্ত্তিঃ শ্রী ধুৰ্ণতিঃ সিদ্ধিন্ত্রীবিদ্যাসন্ততিমন্তিঃ॥২২॥ সন্ধারে তিঃ প্রভানিকাজ্যে ৎস্কাকাতি : ক্রমান্যা : । দুণাঞ্চবজান মোহন পুত্রনাশং ধনকারং॥২৩॥ ব্যাধিং মৃত্যুং ভয়ুঞ্চৈব পুজিতানাশ্যিকাসি। সোহং রাজ্যাৎ পরিভ্রম্ভ : শরণং ত্বাপ প্রপন্নবান্ ॥ ২৪॥ প্রাণ্ড শ্চমথ। সূর্য্যা তবদেবিস্থরে শ্বরি॥ **ঁতাহিমাণ পদ্ম গ**তাফি মত্যেসভ্যাভবস্থন ঃ ২৫॥ ুশর**ণং ভবমেতুর্গে শ**রণ্যেভক্তবংদলে। 🕶 🖘 হ স্তাহিসাদেরী দর্শয় নাসহিপা ওবং ॥ ২৬ ॥

॥ ১৭॥ কৃতান্ন বাঁঝে। নিতামন্সূতা ভূতি ব শাদৈঃ প্রাচীনিঃ ॥ ১৮॥
॥ ১৯॥ কান্তারে মহারণাে ॥ ২০॥ কান্তারে দুর্গমমার্গে॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥
॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬

উপ্গম্যতুরাজানসিদং বচনমত্রবীৎ॥ দেবুয় বাচ।

শুগুরাজন মহাবাহো মদীয়ং বচনং প্রভো ॥ ২৭ ॥ ভবিষ্যত্যচিরাদেব সংগ্রামেবিজয়স্তব। মমপ্রসাদাল্লিজি তাহতা কৌরববাহিনীং ॥২৮॥ রাজ্যং নিদ্ধতিকং ক্লপ্তা ভোক্ষ্যমেদেনীং পুন:। ভ্রাতৃতিঃ সহিতোরাজন ঐীতিং প্রাপ্স্যাসপুষ্কলাও। ২৯%। মৎপ্রসাদাচ্চতেসৌধামারোগাঞ্চ ভবিষাতি। (यहम॰ कीर्ङ्सियां छि ला (किर्विभाग के कार्या ३ ००॥ তেষাংত্তী প্রদায়ামিরাজ্যমাযু র্বপুঃ স্থতং। প্রবাসে নগরেচাপি সংগ্রানে শক্রসঙ্কটে ॥ ৩১॥ ष्ठिवाः प्रशंकाखात्त नागत्त भहत्न शित्तो। যেক্সরিষ্যন্তিমাং রাজন্ যথাহং ভবতাক্ষ্তা॥ ৩২॥ নতেষা পুল ভাং কিঞ্চি দিয়ন্লোকে ভবিষ্যতি। ইদং স্তোত্তবর্ণ ভক্ত্যা শৃণুৱাদ্বা পঠেতবা। ৩৩। ত্যা স্বাণিকাৰ্যাণি সিদ্ধিং যাস্যন্তি পাণ্ডবা :! মৎ প্রসাদাক্ত বং সকান্ বিরাট নগরে স্থিতান্॥ ৩৪॥ নপ্রজ্ঞাস্যন্তি কুরবোনরাবাতলিবাসিনঃ ।

॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ সংকীর্ত্রিয়ারি মামিতি শেষ: ১১ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ॥ ৩০॥ ৩৪॥ ইত্যুক্ত্যাবরদাদেবীযুধিষ্ঠির মরিন্দম । রক্ষ্যাং কৃত্মাচ পাণ্ড্নাং ভবৈবান্তরধীয়ত ॥ ৩৫ ॥ ইতি শ্রীমহাভারতেবিরাট পর্বাণি পাণ্ডব প্রবেশ পর্বাণি তুর্গান্তবে ষঠোধ্যায় : ॥ ৬ ॥ এতদ্দেশীয় বছত্র পুস্তকে এতদধ্যানোনান্তি।

ুবৈশন্পায়ন উবাচ।
ততো বিরাটং প্রথমুং যুধিন্ঠিরো,
রাজা সভায়ামুপবিন্টমাব্রজং।
বৈদ্ধ্যরূপান্ প্রতিগৃহ্ন কাঞ্চনা,
নক্ষান্ স কক্ষে * পরিরভ্য রাসসা॥ ১॥
নরাধিপো রাষ্ট্রপতিং যশস্থিনং,
মহাযশাঃ কৌরববংশবর্জনঃ।
মহামুভাবো নররাজসংক্তো,
তুরাসদন্তীক্ষবিধো যথোরগঃ॥ ২॥

11 50 11

ইতি বিয়াট পৰ্কনি নৈলকগ্ৰায়ে ভাৰতভাবনীপে ছগান্তিৰঃ বৰ্জো২ধগায়ঃ॥ ৬॥

রৈদুর্যা রূপানু কাঞ্চনাংশ্চ শারীন্ ইদংখেতরক্ত শারীণাৎ শারিফলকন্ত । চোপলক্ষণং অক্ষান্ পাশাংশ্চ বাসসা প্রতিমূচ্য বধা কক্ষে পরিগৃহ আবজ দিতি সম্বন্ধঃ ॥১॥ ২॥

^{*} পরিরভ্যেতাত্ত পরিগৃহ্যেতি পাঠ: খ পুতকে।

বলেন ৰূপেণ নরর্ষভো * মহা, নথ স্বৰূপেণ যথামবস্তথা। মহার জালৈরিব সংর্তা রবি, র্যধানলো ভস্মরত ক বীর্যাবান ॥ ৩॥ তমাপততং প্রামীকা পারেবং, বিরাটরাডিন্তু মিবার্ সংরত্য। † সভাগতং পূর্ণশিপপ্রভাননং, 1 महाकुठारेतर्निहरतम मुख्यान ॥ 8 ॥• মন্ত্রিদিলান স্তম্থান্ বিশস্থা, যে চাপি কেচিৎ পরিতঃ সমাসতে। প্রপ্রজ্ঞ কে, হয়ং প্রথমণ সমীষ্টিবান, নুপোপমোহযং প্রদানীক্ষতে নভাগ। ৫॥ ন তু দ্বিজোহ্যুং ভ্বিতা নরোন্তমঃ, পতিঃ পৃথিব্যা ইতি মে মনোগ্ৰ**য্।** ন চাম্ভ * বাজী ন রথো ন কঞ্জর:, সমীপতে। ভাজতি চায্যিক্তবং॥ ৬॥

•॥৩। নচিরেণ শীএমেব॥৪॥বিশো বৈশাপন্॥৫॥ন ছুদ্ধিকারং টিজিকী বেষোপি রাজেব ভবিষাতীতার্থঃ॥৩॥

মহানথস্থরপেণেতার মহানপূর্বে রূপেণেতি পাচঃ খ পুস্তকে।

† সভাগতমিজার সমাগত মৈতিপাচঃ থ পুস্তকে।

‡ সহানুচারৈরিতার মহাভ্তাব মিতি পাচঃ খ পুস্তকে।

* বাজীতার দাসইতি পাচঃ খ পুস্তকে।

শরীরলিকৈরুপস্থাচিতো হাযং, মূর্দ্ধাভিধিক্তস্তি,তি মেহত্ত মানদম্। मनी भग्रां डिह स्म भंडवार्या, 'र्येथा शक्छ। मत्रभी १ मर्गा १ कहे ।। १ ॥ বিতর্কযন্ত্রজ নবর্ষভক্ষথা, মুধিষ্ঠিরোংভোতা 'বিরাটমব্রবীৎ। সমাডি,জানাত্মিছ জীবিভার্থিনং, বিন্ফস্বাস্থাগতং দ্বিজম্ ॥ ৮ । ইহাহমিচ্ছামি তব্নিঘান্তিকে, বস্তুং যথা কামচরস্তথা বিভো। তমব্রবীথ স্বাগ্রতমিত্যনন্তরং, * রাজা প্রহৃষ্টিঃ প্রতিসং গৃহান চ॥ ১॥ তং রাজিিংহ্ প্রতিগৃহ্য রাজা, প্রীতাত্মনা চৈনমিদ্দ বভাষে। কামেন তাতাভিবদামাহং ত্বাৎ, কস্যাসি রাজ্যে বিষয়।দিহাগতঃ ॥ ১০ ॥ গোত্রগ নামাপি চ শংসভত্ততঃ, কিঞাপি শিল্প তব বিদাতে কুতম্॥ ১১॥

দিনি কিন্তি আক্রান্ত্রালিভিঃ তামরসীৎপদিনীং এতেন স্বাভিভব-শঙ্কাদিশিতা । ৭॥ দ্বিজং ক্রৈবর্ণিক রাং ॥ ৮॥ কামদরঃ ত্রাদিচ্ছান্ত্বর্জী ॥ ৯॥ জীত্যাত্মনা জীতিমতা মনসা কামেন রাগেণ তাতেতি জ্রেষ্ঠ্যাং সংবোধ য়তি॥ ১০॥ শিপ্পং কোশলং কিং বিষয়ং তব ত্যাকৃতং সম্পাদিতং॥ ১১॥ • স্থিতির উরাচ।

মুধিতির ন্যাসমহং পুরা সখা

বৈষাপ্রপদাঃ পুনরন্মি বিপ্রঃ।

জাকান প্রযোক্ত্যুং কুশলোহন্মি দেবিতাং,

কন্দেতি নামান্মি বিরাট বিশ্রুতঃ॥ ১২॥

বিরাট উবাচ।

দদ মি তে হন্ত বরং যমিজ্ঞানি,
প্রশাধি মৎস্থান্ বশগোহস্মাহং তর।
প্রিয়া হি ধূর্ত্তা মৃম দেবিনঃ সদা,
ভবাংশ্চ দেবোপাম রাজ্যমন্তি ॥ ১৩ ॥

যুদ্ধিষ্ঠরস্থৈতি লোকে পক্ষে যুদ্ধিষ্ঠিরোহং তবসখাস্যাসংভূষাস মিতি সম্বন্ধঃ অস্তেরাণীলি ডিছান্দস আর্দ্ধাতুকরাভাবঃ তেন ভূভাবঃ মুদ্যোরিত্য লোপাভাব ন ভবতঃ সলোপা ভাবোশিক্ষান্দমঃ যুদ্ধিষ্ঠির ছাই মহংসধেতি পাঠেপি যুদ্ধিষ্ঠিরোহং মম সখাস্যাঃ ভব ইতি সম্বন্ধঃ ই মিতিতুপাদ পূরণাথো নিপাতঃ পক্ষে অহমই মিতি দিকক্তিঃ সার্ব্যভোগেই পর্বেরাই পির্যাধিতি চিত্তরা বৈভিত্য স্থাচিকা বৈরাম্ম পদ্যঃ ব্যাম্ম পাদ্যাকেতবঃ ব্যাম্মইবপততীতি ব্যাম্মপাদ্যমঃ তক্তরলে জাভঃ বৈরাম পদ্যঃ
কার্নাদিরাৎ যঞ্ যদ্যাবৈরাহং ব্যাম্মকর্ম তেন পরির্তোরখোপিবৈয়য়য়৽
স্থাব পদ্যং পাদক্রমণীয়ং বাহন মদ্যোতি বৈরাম্মপদ্যঃ করিরতো রথ
ইত্যধিক্ষতাদৈপ বৈরাম্বাদিত্যঞ্ বিপ্রঃ বিশেষেণ প্রাতি পূর্মতি আন্ধান্দিন ধনাদিভি রিতি বিপ্রঃ ধর্মস্ক্রাম্বা বিপ্রোহং অপ্নাণ ইতি পাঠেতু বন্ধা বিদিতি মুখ্যত্তবার্গো গৃহীতুং শক্ষঃ কংক ইতি কৃতান্ত নামেতি প্রাবেশক্ষং অক্ষান্ প্রযোজ্যুং কুণলঃ বৃহদম্ব শিব্যন্ধ ॥ ১২ ॥ দেবিনঃ দেবন শীলাঃ॥ ১৩॥

4

গুণিটের; উবাচ।
প্রাপ্তের বিবাদঃ প্রথম বিশাম্পতে,
ন বিদ্যতে কশ্চন সংস্থা হীনতঃ।
ন ক্রমে জিতঃ কশ্চন ধার্মেন্দ্রনং,
ব্রো মমৈধোহস্ত তব প্রসাদজঃ॥ ১৪॥ ব

নিরাট উন্ত।
হর্নীমবশ্যং যাদ তেহপ্রিয়ঞ্চরেং,
প্রাজয়েয়া বিষ্টাদ্দিল হৈওথা।
শৃগুস্ত মে জানপদাঃ সমাগতাঃ,
কল্পে যথাহা বিষয়ে প্রভুত্তথা॥ ১৫॥
সমানজয়তো

ভবিতাসি মে স্থা,
প্রভুত্বস্তো বছপানভোজনঃ।
পাশ্যন্ত্র্যান বিষ্টা স্কাদা,
ক্রন্ধ তে দ্বিম্পার্তং ম্যা । ১৬॥

প্রাপ্তের বিবাদ ইতি দ্যতিনাং মধ্যে ইতি পেবঃ দ্যত কৃতাং মধ্যে ইনিতঃ হীনাং প্রাজিতাং হংকঞ্চনমপি প্রথমং রাজানং রাজপুত্রথা মুখাং জয়বন্তং গ্রথম শব্দোত্র শ্রেচবাটী তং প্রতি বিবাদঃ গ্রাপ্তের ন বিদ্যতে ইতি ন সতা গন্ধরহিতেদ্যতে পরাজিতা জয়বন্তিঃ মহ নিতাং ক্রমং কুর্বেত্যে বেতার্থঃ হে বিশালাতে হেমংস্যাতি আদরার্থং দিঃ নিংবাধয়তি ম্মাদেবং তত্মাংকশ্চন কোপি মন্যা জিতো মে মদীয়ং ধনং ন ধারয়েং অহংকলহান্তিতঃ হমেব সভাঃ জারা মদীয়ং ধনং দাপ্যে দিতার্থঃ ॥ ১৪ ॥ তেতব অপ্রেয় মিতিছেদঃ যথাহং বিবয়ে দেশে প্রভূত্থা, কদ্যোপীতি যোজনা ॥ ১৫ ॥ অন্তর্থন দারাদীন্ বহিঃ সৈন্যা রামাদীন্ প্রোলোচয় অপায়্বতং অনায়তং ॥ ১৬ ॥

^{*} জাতইতাত্ত যান ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

যে, ত্বাসুবাদেযুরর্ত্তিকর্ষিতা,
ক্ররাশ্চ তেবাং বচনেন মাং সদা।
দাস্যানি সর্বাং তদহং ন সংশ্বাদ
ন তে ভ্রণ বিদ্যাতি সলিগো স্মান ১৭॥
বৈশাসন উপাচা
এবং স লক্ষ্য তু বরং সম্যাসমং,
বিরাটরাজেন নর্মভন্ত দা।
ভবাস বীরঃ
পরমার্চিতঃ স্বত্তী,
ন চাপি কন্চিচ্নেরিতং বুবোধতং ॥ ১৮॥
ইতি বিরাট শ্রাণি পা গুবপ্রবেশপর্বাধি বুণি তির্গ্রেশ

সপ্তমোহধ্যায়: ৭॥ ক্র

অনুবাদ্যেয়ুঃ পূর্বাং দেখী জ্বাজ্ঞা, দন্ত নিগ্ৰ ক্ষেত্ৰা রামাদেঃ প্রতিবর্ধাং গ্রাদেও হীতি রাজবচনং যদধিকারিনং প্রতি তদত্বাদন্তরিমিন্তং থেরাং প্রতি অগ্নুঃ প্রাপ্নেয়ুল্ডেয়াং বচনেন দদা ২নবসরে পিমাং ক্রয়াঃ ক্ষণমপি প্রাক্ষণ রাজ্ঞাঃ প্রতিবন্ধো- মাভুদিত্যাশরঃ ॥ ১৭ ॥ বরং শ্রেষ্ঠং স্বাগ্রমং প্রতিত ॥ ১৮ ॥ ইতি বিরাট পর্বাণি নৈল্কগীরে ভারত ভাগদীপে সপ্রমোহধ্যারঃ ॥ ৭ ॥

* বীরইত্যত্ত ধীরইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

रिवमान्याशम छेताह। অথাপরো ভীমবলঃ প্রিয়া জ্বল, न পাययो नि-इविनामविक्रमः। थणक मन्त्रीक करतन धातर्थ, মদিঞ্চ কালাঙ্গমকোশমত্রণম্ ॥ ১॥ গ স্থদৰূপঃ প্রমেণ বর্চদা, রবির্যথা লোকমিম< প্রকাশ্যন। স্থুকুষ্ণবাসা গিরিরাজ্যারবাং, স্তং মৎস্যরাজং দিমুপেত্য ভস্থিবান্॥ ২॥ তং প্রেক্য রাজা রময়য়ৢপাগতং, ততোহব্ৰীজ্জানপদান্ সমাগ্তান। সিংহোন্নতাংসোহ্যমতীৰ ৰূপৰান্, প্রদুশ্যতে কে। নু নর্ষভো যুবা॥ ৩। অদুউপূর্ব্ধঃ পুরুষো রবির্যথা, বিতর্ক্যরাস্য লভামি নিশ্চযম। তথাস্য চিত্ত^ হাপি সংবিতর্ক্যন্ নর্গভস্যাস্য ন যামি তত্ত্তঃ॥ ৪॥

, খজাং মন্ত্র দণ্ডং অজারাব ক্ষেপণং বা হস্ত্র কারং পিটেনিকার প্রমথনার্থং বা দণ্ডং এজামন্থ প্রহন্তরো রিতি বিশ্বঃ দর্বাং শাকাদি পরিবেষবার্থাং অসিং মাংসাদার কর্তনার্থং খজাং কালাদং কৃষ্ণায় সময়ং তীক্ষ্ণ
মিতার্থঃ অকোশং পিধান হীনং ॥ ১ ॥ গিরিরাজসারঃ মহামেকবং
কঠিন দেহঃ যদ্বা গিরিরাজ সারোলোহং তেন তদিকার রূপৎ পাত্র জাতং
লক্ষাতে ভক্ষা দ্রবা পাকার্থং স্বেহ পাকার্থং বা তদান্ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ তত্বতঃ
তবং নয়ামি দ্র প্রাপ্তামি ॥ ৪ ॥

^{*} তংপ্রেক্ষ্য রাজা রময়নু পাগত মিত্যত্ত তংপ্রেক্ষ্য রাজান মিবান্তিকা গতমিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

দুটেই ব চৈন । ব বিচার্যাম্য হে, গন্ধবিরাজো যদি বা পুরন্দরঃ। জানীত কোহয়ং সম দর্শনে স্থিতো, যদীপ্সিত তলভত পে মা চির ন। ৫। বিরাটবাক্যেন ছু তে † প্রচোদিতা, নরা বিরাটস্য স্থশীঘ্রগামিনঃ। উপেতা কৌত্তেষমথাক্রবংস্তদা, যথা স রাজাবদতচুচ্তানুজন্॥ ৬॥ ততো বিরাটং সমুপেত্য গাণ্ডবঃ, † সুদীনৰূপো বচনং মহামনাঃ। উবাচ স্থদোহন্মি নরেন্দ্র বল্লবো, ভজস্ব মাং ব্যঞ্জনকারমুভ্রম্ ॥ ৭ ॥ বিরাট উবাচ। ন স্থদতাং * মানদ! শ্রেদ্ধানি তে, সহস্রনেত্রপ্রতিমো বিরাজ্প। † শ্ৰিয়া চ ৰূপেণ চ বিক্ৰমেণ চ,

প্রভাসসে স্বং মূবরো নরেম্বি॥ ৮॥

॥ ৫॥ অবদতঃ উক্তবাৰ্ অচুতে। ধর্মঃ ফলমদহা ন চাৰত ইতি 'ধোগাতিস্যাত্ত্রং ॥ ৬॥ হৃদঃ পাককর্তা বল্লবো নামতঃ । ৭॥ ৮॥ 🗼

* নেতাত্ত বিতি পাঠঃ খ প্তকে।

া প্রতাত্ত নেতি পাঠঃ খ প্তকে।

ই স্থানিরপইতাত্ত ঘদীন রপ্ততি পাঠঃ খপ্তকে।

* মানদেতাত্ত বলংবতি পাঠঃ খ প্তকে।

া বিরাজনেইতাত্ত ছিদৃশানে ইতি পাঠঃ খ প্তকে॥

ভীম উবাচ ৷

নরেন্দ্র স্থদঃ পরিচারকোহন্মি তে,
জানুনি স্থান্ প্রথমং শ ন কেবলান্।
আমাদিতা যে নৃপতে পুরাভবন্,
যুধিন্ঠিরেণাপি নৃপেণ সর্বাশঃ॥ ৯॥
বলেন তুল্যান্চ ন বিদ্যতে, মযা,
নিযুদ্ধশীলন্দ সদৈব পার্থিব।
গজৈন্চ সিংহৈন্চ সুমী্যবানহং,
সদা করিষ্যামি ভবান্য প্রিযম্॥ ১০॥
বির্যাট উন্নাচ।

দদামি তৈ হন্ত বরান্ মহানদে,
তথা চ কুর্যাঃ কুশলো হি ভাষদে।
ন চৈব মন্যে তব কর্ম্ম যৎ সমং,
সমুদ্রনেমিং পৃথিবীং অমর্হাদ । ১১ ॥
† যথা হি কামন্তব তত্তথা ক্বত্তং।
মহানদে অং ভব মে পুরস্কৃতঃ।
নরাশ্চ যে তত্ত্র মমোচিতাঃ ! পুরা,
ভবাংশ্চ তেষামধিপো ম্যা ক্বতঃ ॥ ১২ ॥

ী ৯ ॥ ১০॥ তবকর্ম নটেব সমংমন্যে ইতর কর্মণেতি শেষঃ অতিমাস্ত্রং কর্ম বদসীত্যর্থঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥

^{*} নেভাত্র চেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

[†] যথাহিকামন্তবতএথা ক্ৰামন্তাত্ৰ যথাহিকামভবতন্তথা কৃত্মিতি পাঠা ধ পুত্ৰকে !

[্]ৰ মমোচিতাইত্যত্ত সমাহিতা ইতি পাঠঃ খ গুন্তকে।

বৈশন্দায়ন উবাচ।
তথা স ভীমো বিহিতো মহানসে,
বিরাটরাজ্যে দয়িতোহ ভবদ্দম।
উবাস রাজ্যেন চ তং পৃথগ্জনো;
বুবোধ তত্রানুচরাশ্চ কেচন। ১৩॥
ইতি বিরাট পর্বানি পাণ্ডবপ্রবেশপ্রবিনি ভীমপ্রবেশে
অফমোহধ্যার॥৮॥

বেশলায়ন উবাচ।
ততঃ কেশান্ সমুৎক্ষিপ্য বেলিভাগ্রাননিন্দিতান্।
কৃষ্ণান্ স্ক্রান্ মৃদূন দীর্ঘান্ সমুদ্যাথ্য শুচিম্মিতা॥ ३॥
জুগুহে দক্ষিণে পাশ্বে মৃদূনসিতলোচনা।
বাসশ্চ পরিধাবৈকং ক্রঞং শ স্থালিনং মহৎ॥ ২॥
† কৃষ্যা বেশং হি সৈরন্ধ্যাঃ ক্ষণা চ ব্যচরন্তদা।
তাং নরাঃ পরিধাবতী ত্রিঘশ্চ সমুপাদ্রবন্॥ ৩॥
অপৃচ্ছংশ্চেব তাং দৃষ্ট্যা কা স্থা কিঞ্চ চিকার্ষি।
সা তানুবাচ রাজেন্দ্র সৈরন্ধ্যহিমিহাগতা॥ ৪॥

॥ ১৩ ॥ ইতি বিরাট পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে অফ্টমে(২ধ্যায়ঃ ॥ ৮ ॥

বেলিভাগ্রান্ আকৃঞ্চিভাগ্রান্ সমুৎক্ষিপ্য বেণীকৃত্য• । ১॥ জুগ ছে গোপিভবভী॥ ২॥ ৩॥ ৪॥

* কৃষ্ণমিতাত কৃষ্ণেতি,পাঠঃ খ পুস্তকে
 † কৃষ্ণবেশং হিনৈরন্ধ্যাঃ কৃষ্ণাচ ব্যচর উদা ইত্যত কৃষ্ণবেষঞ্চ সৈরন্ধ্যা
শুতোব্যচরদার্ত্তবিদি তিপাঠঃ খ পুস্তকে॥

কর্ম চেচ্ছামাইং কর্ত্ তদ্য যো মাং * যুযুক্ষতি।
তদ্যা ৰূপেণ বেশেন শ্লক্ষ্যা চ তথা গিরা।
নাশ্রুদ্ধত তা দাদীমনহেতোরূপস্থিতাম্। ৫॥
বিরটিদা তু কৈকেয়া ভার্যা প্রমদ্মতা।
আলোকযন্তী দদৃশে প্রাসাদাদ্দ্রপদাল্লাম্॥ ৬।
সাদ্মীক্ষ্য তথা ৰূপামন্থামেকবাদ্যম্।
সমান্থাব্রবীভজে কা বং কিঞ্চ চিকীব দি॥ ৭।
সা তামুবাচ রাজেলু গৈরিজ্য হ্যুপাণতা।
কর্মা চেচ্ছাম্যহং কর্তুং তদ্য যো মাং পুপুক্ষতি॥ ৮॥
স্থানেশ্বাচ।

নৈবং ৰূপা ভবত্তোৰ যথা বদসি ভামিনি।
পেষযত্তী ব বৈ দাসীদাসাৎ চ বিবিধান্ বহুন্ ॥ ৯ ॥
† নে,চেগুল্ফা সং হতোরু স্ত্রিগন্তীরা ব ডুন্নতা।
রক্তা পঞ্চস্থ রক্তেষু হংসগলাদভাষিণী ॥ ১ • ॥
স্থাকেশী স্বস্থানী শ্যামা পীনশ্রোনিপ্যোধরা।
তেন তেনৈৰ সম্পন্না কাশ্মীরীৰ ভুরঙ্গনী ॥ ১১ ॥

যুযুক্ত বোজনিত মিক্ত পুপুষতীতি পাঠে পোষরিত মিক্ত ॥ ৫॥ ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ নৈং রপারমান কিন্ত দানান্ দাসীক্ত প্রেষয়ন্তীব বহুনাং স্থামনী স্বাসীতার্থঃ ॥ ১॥ নোচ্চো ন বহিনিগতো গুটো ইত্যর্থঃ নোচ্চো ওপাক পাদগ্রন্থী যসাাঃ সা তথা তিগন্তীরা তিয়ু শব্দ বুদ্ধিনাতিয়ু গ্রামাযুদ্ধতা 'রট্পুনাসিকাক্ষিয়া গ্রোক্রনখন্তল ক্রাটিকাস্থ উন্তানা প্রেম্পুল্লান্ত্র নেত্রাক্তালি তেয়ুরক্তাহংসবং গলাদংভাবিণী॥ ১০॥ তেন তেন লক্ষণেন মন্দ্র্যাতিয়্দিন। ॥ ১১॥

* যুষ্কতীতাত্র পুপুক্ষতীতি পাঠঃ ক পুস্তকে! † নোচচগুলে্ফতাত্র গুঢ়গুলে্ফতি পাঠঃ ক পুস্তকে! তারালগক্ষনযা বিষ্ণে তী তনুমধ্যমা।
কলুগ্রীবা গৃঢ় শিরা পূর্ণচন্দ্রনিভাননা ॥ ১২ ॥
শারদােৎ পলপত্রাক্ষা শারদােৎ পলগক্ষযা।
শারদােৎ পলদেবিন্যা কপেন সদৃশী শ্রিযা॥ ১৩ ॥
কা অংক্রহি যথা ভদ্রে নাসি দাসী কথকন।
ফলী বা যদি বা দেবী গল্পকী যদি বাপেরাঃ ॥ ১৪ ॥
দেবকন্যা ভুজজী বা নগরস্যাধিদেবতা।
বিদ্যাধনী কিন্তরী বা যদি বা রোহিণী খ্রুষ্ণ ॥ ১৫ ॥
তলস্থ্রা মিশ্রকেশী পুগুরীকাথ মালিনী।
ইন্দ্রাণী বারণা বা অং অ্টুর্ব ভুঃ প্রজাপভেঃ।
দেব্যা দেবেষু বিখ্যাভাস্তাসাং অং কত্রমা শুভে॥ ১৬ ॥
দেব্যা দেবেষু বিখ্যাভাস্তাসাং অং কত্রমা শুভে॥ ১৬ ॥
দেব্যা দেবেষু বিখ্যাভাস্থাসাং অং কত্রমা শুভে॥ ১৬ ॥

নাশ্মিদেবী ন গন্ধকৌ * ন যকী ন চ র ক্রমী।

দৈরিক্ষা তু ভূজিব্যাম্মি সভামেতজুবীমি ভে ॥ ১৭ ॥
কেশান জানমাহং কর্তুং পিংঘে সাধু বিলেপনম্।
মাল্লকোং পলপানাং চম্পকানাং তথা শুভে ॥ ১৮ ॥
প্রথাঘষ্যে বিচিত্রাশ্চ ভ্রজঃ পরমশোভনাঃ।
ভারারয়ং সত্যভামাং ক্রফ্যা মহিবাং প্রিয়াম্॥ ১৯ ॥

জরালে বক্তে কৃষ্ণে ব। পক্ষণীয় যোস্তাদৃশে নয়নে যদায়: দাতৃধীকস্ব প্রীরাশংখবং রেখাত্রয়। ক্ষিত্রীবা ওচশিরা গুপুনাডিকা॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥
॥ ১৬॥ দৈরস্থী ভূজিযাপেদে প্রাক্ষাতের ব্যাখ্যাতে॥ ১৭॥ কর্তুং সংস্কর্ত্ত্ব

^{*} ন যক্ষীতাত্ত্ৰ নাস্থ্যীতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

ক্ষণকে ভার্যাং পাণ্টুনাং কুরুনামেকস্থলরীয় । তত্ত্ব তত্ত্ব চরাম্যেবং * লভ্মানা স্থভোজনম্ ॥ ২০॥ বাসাংসি যাবচ্চ লভে তাবস্তাবদ্রমে তথা। গালিনীত্যেব মে নাম স্বর্য়ং দেবী চকার সা। সাহ্মভ্যাগতা দেবী স্থদেষ্টে স্বলিবেশনম্ ॥ ২১॥

মূর্দ্ধি আন বাস্থেবণ বৈ সংশ্যো মে ন বিদ্যুতে।
নচে দিচ্ছতি রাজা আং গচ্ছেৎ সর্বেণ চেত্রসা॥ ২২ ॥
প্রিযো রাজকুলে বাশ্চ যাশ্চেমা মম বেশানি।
প্রসক্তান্ত্যাং নির্নাক্ষন্তে পুমান্সং কন্দ মোহযেঃ॥ ২৩॥
রক্ষাংশ্চাবস্থিতান পাশ্য য ইমে মম বেশানি।
তেহিলি আং সন্নমন্ত্রীব পুমাংস্ক কন্দ মোহযেঃ॥ ২৪॥
রাজা বিরাটঃ স্থ্যোণি দৃষ্ট্রী বপুর্মানুষ্য।
বিহায মাং বরারোহে আন্ গ গচ্ছেৎ স্কৃতিত্রসা॥ ২৫॥
যং হি অমনবদ্যালি তর্লাযতলোচনে।
প্রসক্তমভিবীক্ষেথাঃ স কামবশ্যো ভবেৎ॥ ২৬॥
যশ্চ আং সততং পশ্যেৎ পুরুষশ্চারুহাসিনি।
এবন স্ক্রানবদ্যালি স্চানক্ষবশো ভবেৎ॥ ২৭॥

কুষাঞ্চ ভার্যাং পাণ্ডুন। মিতি স্বান্ত্রন। স্বন্যারাধনং সংভবতীতিনেরং

মুষোক্তিঃ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ রাজাবাংচের ইচ্ছতি তদাবাং মুর্ম্বিবাসরে পরস্ক্রাজাবাং সর্কো চেতসা গচ্ছেং স্পৃহয়ে দেবেতিশঙ্কে ॥ ২২ ॥ বং জীশামপি মোহকরী কিমুত পুং সামিত্যাহ জিয় ইতি ॥ ২৩ ॥ বৃক্ষানিতি রক্ষা
অপি বাং দৃষ্ট্রান্তরাঃ সভীত্যর্থঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ প্রসক্তং আ্বাক্তি যুক্তং
যথাস্যাত্তথা ॥ ২৬ ॥ এবমনে নৈবন্ত্রী রক্ষা দি শুরীতাব চিল্লেন ॥ ২৭ ॥

^{*} এবমিতাত্তএকা ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

কু বাংগক্ষেৎ সর্ব্বচেত্দেতাত্ত গচ্ছেৎসর্ব্বোচেত্তদে তিপাঠঃ খ পুস্তকে।

অধ্যারোহেদ্যথা রক্ষং বপায়ৈবাজনো নরঃ। রাজবেম্মনি তে স্কুজরোহিতং স্যান্তরা মন ॥ ২৮॥ যথা কর্কটকী গর্ভ্যাধতে মৃত্যুমালনঃ। তথাবিধ্নহং মন্যে বাসং তব শুর্চীস্মতে। ২৯॥ অগিপ্লান্ত।

নামি লভ্যা বিরা টেন ন চান্যেন কদাচন।
গল্পবাং পত্যো মহাৎ যুবানং পঞ্চ ভারিনি । ৩০॥
পূজা গল্পবিরাজস্য মহাসন্ত্রা কন্সচিত।
রক্ষতি তে চ মাং নিত্যং ছংখাচারা তথা হাহ্যু॥ ০১॥
যো নে ন দদ্যাছচ্ছিটাং ন চ পাদৌ প্রবাব্যেং।
প্রীণেরংস্তেন বালেন গল্পবা। পত্রো মম॥ ৩২॥
ধ্যা হি মাৎ পূরুষো গুল্যেদ্যথান্যাঃ প্রাকৃতাঃ প্রিয়ং।

ভানেব স ততো রাজিং প্রবিশেদপ্রাৎণ তনুসু॥ ৩০॥

॥ ২৮॥ কর্কটা বট্পাদবান্জন্তঃ ॥ ২৯॥ মহাংমম গদ্ধবি ইতি দেবতাং
শজ্বাদমান্ত্ৰইমাত্ৰং বিবন্ধিতং অভিমন্ত্ৰ কৰ্মাণ ইতাৰ্থঃ ॥ ৩০॥
গদ্ধবি তুলো বাজা গদ্ধবিগাজঃ পাণ্ডুন্তদ্যতি গুলোহতি দদ্ধিঃ চুংখা
ছুংখবতীতি ছুংখদা চাহং প্রপত্নীবাৎ আরু। দিংহীব দিংহী প্রৈরনা ক্রমগীয়া আরুঃ পুংসি তরোভেদে তথা কর্কট দংক্রিনে, রিভি মেনিনা আরুশকাদ দন্তবাৎ স্ত্রিয়াং টাপ্ স্বর্মেব তীক্ষরতা স্মীতিভাবঃ ছুংখাচারেতি
ক্রশকালোরং কিরান্ ম্যান্তীতি দশ্যাত ॥ ৩১॥ ৩২॥ প্রাং তইং
প্রবিশোভানেন প্রলোকং গাক্তেদেবেতুক্তিং ॥ ৩০॥ •

^{*} তামেৰ সততোৱাত্তিমিত্যত তামেৰ নিৰ**্স**স্থাত মিতি পাঠঃ খপুস্তকে!

[†] প্রবিশেদ পরাং তত্মিতাত্র প্রবিশাচ পরাংতই মিতিপাঠঃ খ প্রস্তকে।

ন চাপ্যহং চাল্যিতুং শুক্যা কেনচিদঙ্গনে। ছুংখশীলা হি গস্ক্রান্তে•চ মে বলবংপ্রিয়াঃ॥ ৩৪॥ প্রুছ্নাুক্ষাপি রক্ষন্তি তে মাণ নিত্যং শুচিসিতে। ছুদেশোর্চে।

এবং স্থাং বাসন্নিয়ামি যথা স্থান নিদ্নীচ্ছলী। ৩৫।
ন চপোদৌ নচোচ্ছিতং স্পুক্ষানি স্থা কথঞ্চন।

• বৈশক্ষান্ত উবাচ।

্এবং কুফা বির,টিম্য জার্যায়া পরিমান্তি,তা ॥ ৩৬॥
উবাস নগরে তলিন্ পতিধর্মবিতী সতী।
ন চৈনাৎ বেদ তত্ত্বান্যতত্ত্বেন জননেজয়॥ ৩৭॥
ইতি বিরাটপর্কানি পাণ্ডবপ্রবেশপর্কানি দ্রৌপদীপ্রবেশে॥
নবমোহধ্যায়ঃ ১৯॥

<

বৈশক্ষ্যারন উবাচ।

সহদেবাহিপি গোপানা কৃত্ব। বেশসনুত্তমন্ ॥
ভাষাকৈষা সমাস্থায় বিরাটং * নুপ্যাদথ ॥ ১ ॥
গোঠমাসাদ্য ভিষ্ঠতং ভবনস্য সমীপতঃ ॥
রাজাথ দৃষ্ট্ব। পুরুষান্ প্রাহিণোজ্জাতবিস্ময়ঃ ॥ ২ ॥

তুর্ণি তৃঃখদীলাঃ কেনচিন্নিমিত্তেন তৃঃখৎ সহতীতার্থঃ বলবন্তুশ্চতে প্রিয়াশ্চ ॥ ৩৪॥ হেনন্দিনি সুখদে॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥

ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীন্ত ভারতভাবদীপে নবমোহধ্যারঃ॥ ৯॥

উপরাৎ উপায়াৎ ॥ ১॥ २॥

* উপ্যাদ্থেত্যত্র সমুপ্রিয়ে ইতিপাঠঃ ক পুস্তকে।

ত্যাযান্তমভিপ্রেক্য ভাজমানং নর্বভয়। সমুপস্থায় বৈ রাজা পপ্রচ্ছ কুরুনন্দন্ম। ৩॥ কস্য বা বং কুতো বা বং কিং বা তাত চিকীৰ্মন। বহি মে দুউপুর্বস্তং তত্ত্বং নহি নর্বভ। ৪॥ সং প্রাপ্য রাজানমমিত্রতাপন. खर्णाश्ववीरमध्मरशेषांनः स्नः। বৈশ্যেহ শ্মি নামাহমরিউনেমি, গোদংখ্য আদং কুরুপুঙ্গনামু॥ ৫॥ वञ्चः प्रयोद्धात्रि विभाग वित्रष्ठं, তানাজিনংহান হি বেলি পার্থান্। ন শক্যতে জীবিহুমপ্যকৰ্মাৰা, ন চ স্বদন্যো মম রোচতে নূপ: ॥ ७ ॥ বিরাট উবাচ॥ হং ব্রাক্ষণো বা যদি বাসি ক্ষতিয়ঃ, সমুদ্রনেমীশ্বররপবানসি। আচক্ষ্ব মে তত্ত্বসমিত্রকর্ষন,

ন বৈশ্যকর্ম স্বয়ি বিদ্যতে ক্ষমম্ ॥ १ ॥

॥ ৩॥ ৪॥ বেশো রপান্তর প্রকাশনং কর্ম যদ্য দ্বিশাঃ স্মারিক্তনেমিঃ
অপ্রতিহত চক্রোমীতি গুটোভি দদ্ধিঃ কুরু পুদ্বানাং পাওবানাং মধ্যে
কোদংখাঃ গো ইতি ইন্দ্রির বাচিতাং পঞ্চানাং দংখা গোদংখাঃ
পঞ্চমংখাঃ পঞ্চম ইতার্থঃ ॥ ৫ ॥ তান্ রাজ দিংহান্ বর্তমানকালে
রাজমূদ্ধ ছান্ ন বেদ্মি নোপলভে স্বামিশ্ত ইতি বদিশেষনাদর্শনাদিশিষ্টা
দর্শন মুক্ত মিতা দোষঃ ॥ ৬ ॥ ৭॥

কদ্যাসি রাজ্ঞো বিষয়াদিহাগতঃ, কিঞাপি শিপ্পন তব বিদ্যতে কৃত্য। কথং ত্বমন্মাস্থ নিবৎস্যসে সদা, ধ্দপ্র কিঞাপি তবেহ বেতনম্। ৮॥

मक्टमन छेन्।

পঞ্চানং পাণ্ডুপুজানাং জোঠো ভাতা যুধিনিরঃ।
তদ্যাফশতদাহত্রা গরাং বর্গাং শতংশতা ॥ ৯ ॥
অপরে শশতদাহত্রা দ্বিস্তাবন্তম্বাপরে।
তেবা গোদভা আদং বৈ তন্তিপালেতি মা বিছুং ॥ ২০॥
ভূতং ভব্যং ভবিষ্যক্ষ যক্ত সন্ত্যাগতং গবাম।
ন মেহস্ত্যবিদিতং কিঞ্চিৎ সমস্তাদ্দশযোজনম্॥ ১১॥
ভাগাং স্থবিদিতা হ্যাদন্ মম তদ্য মহাত্মন:।
আদীচ্চ স ম্যা দৃষ্টং † কুরুরাজো যুধিনিরঃ॥ ১২॥
ক্রিএং হি গাবো বছলা ভবন্তি,
ন তাস্থ রোগো ভবতীহ কশ্চন!
তৈন্তৈরুপ বৈ বিদিতং মমৈত,
দেতানি শিশপানি ম্যা স্থিজিতলক্ষণান্।
আ্বভানপি জানামি রাজন্ পুজিতলক্ষণান্।

.।৮॥৯॥ গোসংখো গবাং পরীক্ষকঃ ডন্তিপালঃ বচন করঃ॥১০॥ সংখ্যাগতং পরীকায়ামবগতং ॥১১॥ ১২॥১৩॥ ১৪॥

যেষাং মৃত্তীমুপাড্রায় অপি বন্ধ্যা প্রস্থাতে॥ ১৪॥

^{*} শ ত জ দশেতিপাঠঃ ক গুন্তকে।

† দৃষ্টই াজ পুষ্টই তিপাঠঃ ক গুন্তকে।

বিরাট উবাচ।

শতং সহস্রাণি সমাহিতানি,

* সবর্ণ বর্ণস্য বিমিশ্রিতান্ গুণৈ:।
পশ্ন সপালান্ ভবতে দদাম্যহ্ন,
ত্বদার্রেয়া মে পশবো ভবস্তিহ ॥ ১৫ ॥
বৈশন্দায়ন উবাচ ।
তথা স রাজ্ঞোহবিদ্তো বিশাম্পতে,
ক্রবাস তবৈর স্থান নরেশ্বর:!
ন চৈনমন্যহপি বিচুং কথঞ্জন,
প্রাদান্ত তক্ষৈ ভরণন যথেপিস্তম্ ॥ ১৬ ॥
ইতি বিরাটপর্কণি পাপ্তব্রেবেশপর্কণি সহদেবপ্রত্বেশে।
দশমোহধ্যায়ঃ॥ ১০ ॥

সমানোবর্ণো যেবাং তে সর্বা: বর্ণসা বর্ণেন বিমিঞ্জিতাশ্চ পাটলাদয়: বিভক্তালোপ আর্ম: স্বর্ণাশ্চ বর্ণবিমিঞ্জিতাশ্চতান্ তত্তদ্গুণৈঃ উপলক্ষিতান্ ॥১৫ ॥ রাজে। রাজ্য কর্জু: বিশাম্পতে: প্রজাপালকসা ভরণং বেতনং ॥ ১৬ ॥

> , ইতি বিরাট পর্ত্তাণ নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে দশমো২ধায়ে: ॥ ১০॥

^{*} সবর্ণ বর্ণস্য বিমিশ্রিতান্ গুলৈরিতাত্ত্বর্গম্য বর্গস্য বর্গস্য বর্গনিকিতানীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

বৈশস্পায়ন উবাচ!

অথাপরোহদৃশাত ৰূপদৃম্পদা, खौग, मलका तथरता त्र्रभूमान्। ধাকারবপ্রে প্রতিমুচা কু গুলে, দীর্ঘেচ কম্বু পরিহাটকে শুভে। ১। * वृःह्ठ मीर्घा० मह विकोधा मूर्ककान, মহাভুজো † বার্ণমন্তবিক্রম:। গতে ভূমিন প্রতিকম্পর্ন স্তদা, বিরাটমাসাদ্য সভাসমীপতঃ ॥২ ॥ তং প্রেক্য রাজোপগতং স্ভাতলে, 🛨 সত্রপ্রতিচ্ছন্নমরিপ্রমাথিনফ। বিরাজমান প্রমেণ বর্চসা, স্থতং মহেন্দ্রস্য গজেন্দ্র বিক্রময়॥ ৩॥ नकान भुक्क मभी भारतिनः, * কুতোহ্যমায়।তি পুরা ন মে ক্রতঃ। न रेहनभूकृर्विषिष्ठ यहा नताः, স বিন্মিতো বাক্যমিদং নূপোহত্ত্রবীৎ ॥ ৪॥

অদৃশ্যত দৃষ্টঃ রূপদম্পদা উপলক্ষিতঃ প্রাকার বপ্রেস্থিতঃ তৎসমীপে বা স্থিতোহ দৃশাত দৃষ্টঃ প্রতিমুচা পরিধার দীর্ঘে কুগুলে তাডকে কন্ম নাং 'শংখানামুপরিহাটকে কনকময়েবলয়ে পরিমুচ্য । ১ । দীর্ঘান্ মুধ জান্ ' वाहू ह व्यविकीशं व्यमार्ग ॥२॥०॥॥॥

^{*} শেহুচ ইত্যত্ত বহুংশ্রেতি পাঠঃ ক পুস্তকে। ণ বারণ মত্তবিক্রম ইত্যত্ত বার্ণ তুল্য বিক্রম ইতিপাঠঃ খ পুস্তকে। ‡ মত্তেত্যব্যাজাদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে। স মীপচারিণ ইত্যত্ত সভাভ্চারিণ ইতি পাঠঃ খ প্রকে ৷

সত্ত্বোলপন্নঃ পুরুষো মরোপমঃ, 🏖 শ্যামো যুবা বারণ্মূথপোপমঃ। বিমুচ্য কন্ত্র পরিহাটকে শুভে, বিমুচ্য বেণীমপিনহ্য কুগুলে। ৫॥ অখী ণ স্থকেশী পরিধায় বাসসী, শোভস্ব ধন্বী কবচী শরী যথা। আরুহা যানং পরিধাবতা ও ভবান, স্থ তৈঃ সমো মে ভব বা ময়। সমঃ ॥ 🕸 ॥ র্দ্ধোহ্যহু বৈ পরিহারকাম, স্কান্ মৎস্যাপ স্তর্মাপাল্যস্থ। নৈবংবিধাঃ ক্লীবৰূপা ভবন্তি: কথঞ্চনেতি প্রতিভাতি মে মনং॥ १॥ অৰ্জুন উবাচ। গাযামি নৃত্যাম্যথ বাদ্যামি, ভদ্রোহিন্ম নৃত্যে কুশলোহিন্মি গীতে! ष्रमुखतारेय अनिमन्त्र ! मान त्रयः,

ভবামি দেব্যা নরদেব নর্ত্তকঃ॥৮॥

'॥ ৫॥ ৩॥ পরিহার কাম: অমাত্যের রাজ্যভারৎনাস্কাম: ॥ ৭॥ দেবা। উত্তরায়া: ॥ ৮॥

🖠 প্রদিশব্বেত্যত্ত পরিধৎস্বৈতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

শ মরোপম ইত্যত্ত মনোরম ইতি পাঠঃ ক পূগুকে।
 † অ্কেশীত্যত্ত অ্কেশঃ বাসদীত্যত্ত চাৰ্য্থা শোভন্যত্ত্যত্ত্ব অ্লোভেতি
 পাঠঃ ধ পুস্তকে।

ইদন্ত রূপং মম যেন কিন্তব,
প্রকীর্ত্তবিদ্ধা ভূশশেকবন্ধনিম্।
বৃহন্নলাং মাং নরদেব বিদ্ধি,
শুত্ত পুতা বা পিতৃমাতৃবিদ্ধিতাম্ ॥ ৯ ॥
বিষাট উবাচ।

দ্দামি তে হস্ত বর্থ বৃহন্নলে,
স্তাঞ্চ মে নর্ত্তি যাশ্চ তাদৃশী:।
ইদন্ত তে কর্ম স্মংন মে মত্ত্র,
সমুদ্রনেমিশ পৃথিবীং অমর্হসি॥ ১০॥
বৈশল্পাঘন উবাচ।
বৃহন্নলাং তামভিবীক্ষ্য মৎস্যুরাট্,
কলাস্থ নৃত্যেয়ু তথেব বাদিতে।
সংমন্ত্র্য রাজা বিবিধেং অমন্ত্রিভিং,
পরিক্ষ্য চৈনণ প্রমদাভিরাশু বৈ॥ ১১॥
অপুংস্ত্রমপ্যায়া নিশ্মা চ স্থিরণ,
ভতঃ কুমারীপুর মুৎসদর্জ তম্!
স শিক্ষ্যামাস চ গীতবাদিতং,
স্থতাং বিরাট্স্য ধনঞ্জয়ঃ প্রভুঃ॥ ১২॥
স্থীশ্চ তদ্যাং পরিচারিকান্ত্র্থা,

প্রিয়শ্চ ভাসাৎ স বভুব পাগুব: ॥ ১৩॥

যেন হেতুনা ইদং রূপং মমজাতং তংকীর্তনং তবনিকটে ব্যর্থং শোক কর্মঞ্চেত্যর্থ: । ১। তে সমং ঘদা কৃত্যা যুক্তং ন ইতি মে মমমতং । ১০। ১১। অ শুংবুং ক্লীব বুং নিশম্য আনোচ্য । ১২ । ১৬। তথা স সত্রেণ ধনপ্পয়োবসন্।
প্রিয়াণি কৃষ্ণন্ সহ তাভিরাত্মবান্।
তথা চ ত তত্র ন জন্জিরে জনা,
বহিন্দরা বাপ্যথ বাস্তরে চরাঃ । ১৪॥
ইতি বিরাটপর্ষণি পাপ্তবপ্রবেশপর্ষণি অর্জুনপ্রবেশে
একাদশোহধ্যায়ঃ॥ ১১॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

অথা পরোহদৃশ্যত পাগুবঃ প্রভু,
র্বিরাটরাজং তরসা সমেঘিবান।
তমাপতন্তং দদৃশে পৃথগ্জনো,
বিমুক্তমন্ত্রাদিব স্থ্যমগুলম্ ॥ > a
স বৈ হ্যানৈক্ষত তাংস্ততন্ততঃ,
সমীক্ষমানং সদদর্শ মহস্তরাট।
ততোহব্রীস্তাননুগান্তরেশ্বরঃ, *
কুতোহ্যমাযাতি নরোহ্মরপ্রভঃ ॥ ২ ॥

স্ত্রেণ কৈত্তবেন স্ত্রমাছাদনে যজ্ঞে সদাদানে চ কৈত্ত্বে ইতি বিশ্বঃ ন , জ্ঞাজেরে ন জ্ঞাতব্দঃ ॥১৪॥

> ইতি বিরাটপর্ঝণি নৈলকগীরে ভারতভাবদীপে• একাদশেহিধারঃ ॥ ১১॥

1 5 1 2 1

^{*} नद्रश्रंत दें ज अभिज्ञ राहा । भागा क भूखः ।।

আর হানীক্ষতি মামকান্দ্ চং,

দ্রবং হযজে। ভবিতা বিচক্ষণঃ
প্রবেশ্তামেষ সমীপমাশু মে,

বিভাতি বীরো হি ষথামরস্তথা ॥ ৩ ॥
সোহভোতা রাজানমমিত্রহাত্রবী,

ক্ষিযোহস্ত তে পার্থিব ভদ্রনস্তবং!।

হ্যেযু বুক্তো নৃপ্য স্মতঃ সদা,

তবাশ্বস্থতো নিপুণো ভ্রামাহম্॥ ৪ ॥

বিরাট উবাচ।

দদামি যানানি ধন নিবেশ্নং,
মমাশ্বস্থতো ভবিতু স্মইিন।
কুতোহিদি কভাদি কথং স্মাগতঃ,
প্রজাই শিশ্পং তব দিব্যতে চ যং ॥ ৫॥
নক্ল উবাচ।

পঞ্চানাং পাণ্ডুপুক্রাণাং জ্যেষ্ঠে ভ্রান্তা যুধিষ্ঠিরঃ।
তেনাহমশ্বেষু পুরা নিষুক্তঃ শত্রুকর্ষণ ॥ ৬ ॥
অশ্বানাং প্রকৃতি বৈদ্মি বিনযক্ষাপি সর্বাশঃ।
ছুফীলাং প্রতিপত্তিঞ্চ কুৎস্নং চৈব চিকিৎসিতম্॥ ৭ ॥
ন কাতর শুলাম জাতু বাহনং,

ন মেহস্তি চুন্টা বডবা কুতো হযাঃ। জনস্ত মামাহ স চাপি পাগুবো, যুধিষ্ঠিরো গ্রন্থিকমেব নামতঃ i ৮॥

॥৩॥ ৪॥৫॥७॥ প্রকৃতিং জাতিং বিনয়ং শিক্ষাং প্রতি পতিং দোষ নিরাকরণ প্রকারং চিকিৎসিতং ব্যাধ্যুপণমোপায়ং॥৭॥ কাতরং ভীক বডবা অস্থা অতএব প্রস্থিকং অস্থশাস্ত্রজং॥৮॥ विद्राहे छेवाह।

যদন্তি কিঞ্জিন্ম বাজিবাহনং,
তদস্ত সর্বাস্ত্রদধীনমদ্য বৈ ।
যে চাপি কেচিন্ম বাজিযোজকা
স্ত্রদাশ্রমঃ সার্থয়ণ্চ সন্ত মে॥ ৯ "
ইদং তবেইং যাদি বৈ স্থরোপম,
প্রক্রিই যতে প্রসমীক্ষিতং বসু।
ন তেইনুরূপং হযকর্ম বিদ্যুতে,
প্রভাসি রাজেব হি সম্মতো মম॥ ১০॥

যুধিন্ঠিরস্থেব হি দর্শনেন মে,
সমং তবেদং প্রিয়মত্র * দর্শনিম্।
কথস্ত ভূত্য়ঃ স বিনাক্ততো বনে,
বসত্যানিন্দ্যো রম্ভে চ পাপ্তবঃ ॥ ১১॥

হিবশস্পায়ন উবাচ।
তথা স গল্পবিবরোপমো যুবা,
বিরাটরাজ্ঞা মুদিতেন পুজিতঃ।

11 2 11 20 11 22 11 25 11

न रेहन मरनाश्रि विदुः कथ्यन,

প্রিয়াভিরামং বিচরন্তমন্তর। ॥ ১২ ॥

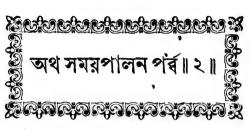
* প্রিয়মত্রেতার প্রিয়দর্শেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

এবং হি মংস্কোন্যবস্তু পাপ্তবা,

যথা প্রতিজ্ঞাভিরমোদদর্শনাঃ।
অজ্ঞাত্চুর্হণাৎ ব্যাচরন্ সমাহিতাঃ,
সমুদ্রমৌপতযোহতিছুঃখিতাঃ॥ ১০॥
ইতি বিরাটপর্কনি পাপ্তবপ্রবেশপর্কনি নকুলপ্রবেশে
ভাদশোহধ্যায়ঃ॥ ১২॥

সমাপ্তকেদং প্রবেশপর্র।

॥ ১৩ ॥ ইতি ঐবিরাটপর্কণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে নকুলপ্রবেশোনাম দ্বাদশোষ্ধ্যায়ঃ ॥ ১২ ॥



জনমেজর উবাচ।

এবং তে মৎস্থানগরে * বসন্তস্তত্ত্র পাগুবাঃ।*
অত উর্দ্ধৃ মহাবীর্য্যাঃ কিমকুব্বত বৈ দ্বিজ। ১ ।

বৈশপায়ন উবাচ। • ,

এবং তে মৎস্থানগরে প্রক্ষাঃ কুরুনন্দনাঃ।
আরাধ্বন্থা রাজানং যদকুর্বৃত তৎ শূণু॥ ২॥
তৃণবিন্দোঃ প্রসাদাচ্চ ধর্মস্ত চ মহান্মনঃ।
অক্তাতবাসমেবস্ত বিরাটনগরেহ্বসন্।। ৩॥
যুধিন্তিরঃ সভাস্তারো মৎস্থানামভবৎ প্রিয়ঃ।
তথৈব চ বিরাটস্ত সপুল্রস্ত বিশাম্পতে॥ ৪॥
স হাক্ষ্সদবক্তস্তান্ ক্রীডয়ামাস পাপ্তবঃ।
অক্তবত্যাং যথাকাম শ্রুবন্ধানিব দিক্রান্॥ ৫॥
শ্রুজাতঞ্চ বিরাটস্ত বিজিত্য বস্ত্র ধর্মরাট্।
ভাত্ত্যঃ পুরুষব্যাদ্রো যথাইং সংপ্রযক্ততি॥ ৬॥
ভীমসেনোহপি সাংসানি ভক্ষ্যাণি বিবিধানি চ।
অতিস্কীনি মৎস্তেন বিক্রানীতে যুধিন্তিরে॥ ৭॥,
বাসাংসি পরিজীণানি লক্ষ্যান্তঃ পুরেহর্জুনঃ।
বিক্রীণানশ্চ সর্বেভ্যঃ পাপ্তবেভ্যঃ প্রযক্তিত ॥ ৮॥
॥ ১॥ ২॥ ০॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ।

^{*} বসন্তন্ত্রপাও বা ইত্যত্র প্রচন্ধনা ইতি পাঠ: খ প্রতেক।

সহদেবোহপি গোপানা বেশমাস্থায পাওব:। দ্ধি ক্ষীরং ঘৃতধ্যৈব'পাগুবেভ্যঃ প্রয়ক্ষতি। ১॥ নকুলোহপি ধনং লকা ক্বতে কর্ম্মনি বাজিনাম। সুফেতি মিন্নরপতৌ পাওবেভ্যঃ প্রয়ছতি। ১০। কুষ্ণাপি সর্বান্ ভর্ত্ংস্তানিরীকতী তপান্বনী। যথা পুনরবিজ্ঞাতা তথা চরতি ভামিনী॥ ১১॥ प्यं मण्यानयंखरः जनारनाष्ट्रना० महात्र्याः । বির।টনগরে চেরুঃ পুনর্গর্ত্তে ধূতা ইব ॥ ১২ ॥ সাশকা ধার্ত্তরাষ্ট্রত ভ্যাৎ পাণ্ডুস্কু হাস্তদা। প্রেক্ষমাণান্তদা কুফামুযুশ্ছনা নরাধিপ ॥ ১৩ ॥ অথ মানে চতুর্থে তু ব্রহ্মণঃ স্কুমহোৎসবঃ। আদীৎ সমূদ্ধো মৎস্থেষু পুরুষাণাং স্থাসমতঃ ॥ ১৪॥ তত্র মল্লা: সমাপেতুর্দিগে্ভ্যা রাজনু সহস্রশঃ। সমাজে ব্রহ্মণো রাজন্ যথা পশুপতেরিব ॥ ১৫॥ মহাকাষা মহাবীষ্যাঃ কালকঞ্জা ইবাস্থরাঃ। বীর্য্যোন্মন্তা বলোদগ্রা রাজ্ঞা সমভিপুজিতা:॥ ১৬॥ সিংহক্ষকটিগ্রীবাঃ স্ববদাতা মনস্থিনঃ। षमकूलकालकाराख त्र भार्थितमित्रिक्षी ॥ >१॥

॥ ৯ ॥ ১ । ॥ ১ । সম্পাদয়ত্তেহিনামারাধয়ন্তঃ গর্ভপ্রতাইব প্রচ্ছয়রেন
সেবাশ্রমেণ্ড ছঃখিতা ইতার্থঃ ॥ ১২ ৭ ১৩ ॥ ব্রহ্মণ উৎসবঃ শরদি
নিবধানোগেলেরী, সর্বৈঃ ক্রিয়তে সচ দেশবিশেষে প্রাদিদ্ধঃ ॥ ১৪ ॥
অথাবহ্মণঃ সমাজে ব্রহ্মলোকে, কৈলাসে বা পশুপতেঃ সমাজে ইব
মৎসের্যু সমাপেতুরিতিসম্বন্ধঃ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ স্ববদাতাঃ অত্যন্ত নির্মালাঃ মনস্বিনঃ প্রতিমনসঃ। লক্ক্রক্ষাঃ প্রাপ্তবিজ্যাঃ ॥ ১৭ ॥

তেষামেকো মহানাদীৎ সর্বমল্লান্ সমাহ্ব धन्। আবল্গমান তং রঙ্গে নোপতিষ্ঠতি কশ্চন ॥ ১৮ ॥ যদা সধ্যে বিমনস স্তে মলা হতচেতসঃ। অথ ফুদেন তং মলং যোধযামাদ মৎস্তর ট ॥ ১৯॥ নোদ্যমানস্ততো ভীমো তুংখেচৈবাকরোক্তিম। ন হি শক্ষেতি বিরুতে প্রত্যাখ্যাতু নরাধিপ্যু॥ ২০ ততঃ স পুরুষব্যাঘ্রঃ শার্দ্দ লশিথিলশ্চরন্,। প্রবিবেশ মহারঙ্গং বিরাটমভিপুজয়ন॥২১॥ ববন্ধ কক্ষাং কৌন্তেযস্ততঃ সংহর্ষয়ন জনমুণ ততপ্ত রুত্রসন্ধাশং ভীমো মল্ল সমাহ্বয়ং॥ ২২॥ জীমূতং নাম তৎ তত্র মল্লৎ প্রখ্যাত্রিক্রমন। তারুভৌ স্থমহোৎসাহারুভৌতীব্রপরাক্রমৌ ॥ ২০ ॥ মন্ত্যবিব মহাকাথৌ বারণৌ ষ্টিহাযনৌ। ততক্তৌ নরশার্দ্দূলৌ বাছ্যুদ্ধং সমীয়তুঃ॥ ২৪॥ বীরৌ পরমসৎক্ষেবিন্যোন্যজয়কাজ্ফিন্টো। আদীৎ সুভীমঃ সংপাতো বজ্রপকাতযোরিব ॥ ২৫ ॥ উভৌ পরমসৎহুকৌ বলেনাতিবলাবুভৌ। অন্যোন্যস্তান্তরং প্রেশ্ব পরস্পরজযৈষিণৌ । ২৬॥

.॥ ১৮॥ স্বেন ভীমেন ॥ ১৯॥ ছঃখেনিব পারতন্ত্রাং প্রাকট্যভয়াদা ছঃখং নতুভদভয়াৎ বিরতে প্রকাশে,॥২০॥২১॥ কক্ষাংপরিকরং কচ্ছামিতি পাঠেপি, সত্তবার্থঃ যদা কক্ষাং রজ্জুং রজ্বাপাটনভয়ান্তর রক্ষ্লো বধান্ত ইতি প্রসিদ্ধেরস্থী বিদ্ধেতার্থঃ॥২২॥২০॥২৪॥২৫॥ ॥২৬॥

সহদেবোহপি গোপানা বেশমাস্থায পাওব:। দ্যি ক্ষীরং মৃতক্ষৈব'পাগুবেভ্যঃ প্রয়ক্তি॥ ১॥ নকুলোহপি ধনং লক্ষা ক্বতে কর্ম্মণি বাজিনাম। তুম্ফেতি সিন্নরপতৌ পাওবেভ্যঃ প্রযক্ষতি। ১০ ॥ क्षां मिकान् छई स्वानितीकसी उपित्री। যথা পুনরবিজ্ঞাতা তথা চরতি ভামিনী। ১১॥ এবং সম্পাদযভিত্তে তদান্যোহন্যৎ মহাব্রথা:। বিরাটনগরে চেরুঃ পুনর্গর্ত্তে ধৃতা ইব ॥ ১২ ॥ সাশক্ষা ধার্ত্তরাষ্ট্রশু ভ্যাৎ পাণ্ডুস্থতান্তদা। প্রেক্ষমাণান্তদা কুফামূযুশ্ছনা নরাধিপ ॥ ১৩ ॥ অথ মাদে চতুর্থে তু ব্রহ্মণঃ স্কুমহোৎসবঃ। আদীৎ সমূদ্ধো মৎস্থেষু পুরুষাণাং স্থসন্মত: ॥ ১৪॥ তত্র মল্লা: সমাপেতুর্দিগ্ভ্যো রাজনু সহস্রশঃ। সমাজে ব্রহ্মণো রাজন যথা পশুপতেরিব ॥ ১৫॥ মহাকাষা মহাবীষ্যাঃ কালকঞ্চা ইবাস্থরাঃ। বীর্যোশ্বতা বলোদগ্রা রাজ্ঞা সম্ভিপুজিতা: ॥ ১৬॥ সিংহস্কলকটিগ্রীবাঃ স্ববদাতা মনস্থিনঃ। अमकूलकाकारिङ त्र भार्थितम्बिरधो ॥ ১१ ॥

॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ সম্পাদয়য়োহনামারাধয়ন্তঃ গার্ভয়তাইব প্রচ্ছয় রেন
সেবাজ্রমেণ্ড ছঃখিতা ইতার্থঃ॥ ১২ ৭ ১০॥ একাণ উৎসবঃ শরদি
নৈবধানোৎপত্ত্বী, সর্কোঃ ক্রিয়তে সচ দেশবিশেষে প্রসিদ্ধঃ ॥ ১৪॥
বথাবেশ্বণঃ সমাজে বেশ্বলাকে, কৈলাসে বা পশুপতেঃ সমাজে ইব
মৎসের্যু সমাপেতুরিভিসম্বন্ধঃ ॥ ১৫॥ ১৬॥ স্ববদাতাঃ অত্যন্ত নির্মালাঃ মনস্বিনঃ প্রতিমনসঃ। লক্কাল্বাং প্রাপ্তবিজ্য়াঃ॥ ১৭॥

टिकारमरको महानानी**९ मर्खमलान् म**माञ्च धन् । আবল্গমান তং রক্ষে নোপতিষ্ঠতি কশ্চন। ১৮। যদা সক্ষে বিমনস স্তে মলা হতচেতসঃ। অথ ফুদেন তং মলং যোধযামাস মৎস্তর ট ॥ ১৯॥ নোদ্যমানস্ততো ভীমো তুংখেচৈবাকরোন্মতিম। ন হি শক্ষেত্তি বিরুত্তে প্রত্যাখ্যাতৃ । নরাধিপম্ ॥ ২০॥ ততঃ স পুরুষব্যাঘ্রঃ শার্দ্দি লশিথি**লশ্চ**রন্। প্রবিবেশ মহারঞ্চং বিরাট্যভিপুজয়ন ॥ ২১ ॥ ববন্ধ কক্ষাং কৌন্তেযস্ততঃ সংহর্ষয়ন জনমুণ ততন্ত রুত্রসঙ্কাশং ভীমো মল্ল সমাহ্বয়ং॥ ২২॥ জীমুতং নাম ত^ তত্ত্ৰ মল্ল^ প্ৰখ্যাত্ৰিক্ৰমন। তাবুভৌ স্থমহোৎদাহাবুভৌতীব্রপরাক্রমৌ ॥ ২৩ ॥ प्रख्यावित प्रशासकारयो वातरनो विधिश्यरनो। তততো নরশার্দ্নৌ বাহুযুদ্ধং সমীযতুঃ॥ ২৪॥ বীরৌ পরমসৎহৃষ্টাবন্যোন্যজয়কাজ্কিণী। আদীৎ সুভীমঃ সৎপাতো বজ্রপর্বতেযোরিব ॥ ২৫ ॥ উভৌ পরমসৎক্ষটো বলেনাতিবলাবুভৌ। অন্যোন্যস্থান্তরং প্রেশ্ব পরস্পরজবৈষিণৌ ১২৬॥

.॥ ১৮॥ স্লেন ভীমেন ॥ ১৯॥ ছঃথেনিব পারতক্রাৎ প্রাকটাভয়াঘা ছঃখং নতুভদভয়াৎ বিরতে প্রকাশে ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ কক্ষাংপরিকরং কচ্ছামিতি পাঠেপি, সত্তবার্থঃ যদা কক্ষাং রজ্জুং রজ্ঞাপাটনভয়ামটের রক্ষুল্যো বধান্ত ইতি প্রসিদ্ধেরস্থী বিদ্ধেতার্থঃ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ॥ ২৬ ॥ উভৌ পর মসং ক্ষোঁ মন্তাবিব মহাগজো।
ক্রন্তপ্রিক্তিকি বিক্রিজিজিজিক সুশঙ্কটৈঃ।
সন্নিপালাবধূতৈক প্রমাথোন্নথনৈতথা ॥ ২৭ ॥
ক্রেপালাবধূতিকৈ প্রমাথোন্নথনৈতথা ॥ ২৭ ॥
ক্রেপালাকিকিলাতৈক প্রস্কাভিস্তথিব চ ॥ ২৮ ॥
শ্লাকানথপাতৈক পাদোদ্ধিতক দারুলৈঃ।
জানুভিক্তাশানিষোঁষেং শিবোভিক্তাবঘট্টনৈঃ # ॥ ২৯ ॥
তদ্যুদ্ধমভবদ্যোর্মশস্ত্রশ বাহুতেজ্যা।
বলপ্রাণেন শূরাণাণ সমাজোৎসবসন্থিয়া ৩০ ॥

ক্রতং কচিদেশে নিপীতনং প্রতিক্রতং তসা মোচনং স্থ সঙ্গটিঃ মুক্টি
থাইনেন ক্রণীক্রতিঃ সকটকৈ বিভিপাচে সকবিঃ সকিনৈধ্যি কণিকো
বাহুচরণ কবচে কঠিনে কিনে ইতিবিশ্বঃ সন্নিপাতোহ সমংঘটনং অব্ভূতং
তেনৈব দ্বীকরণং প্রমাথান্য উক্তা মল্লশাস্ত্রেঃ নিপাতা পেষণং ভূমোপ্রমাথ ইতিকথাতে যকুখারাক্ষমথনং তত্বখন মুচাতে ॥ ২৭ ॥ ক্ষেপণং
কথাতে যকু স্থানাৎ প্রচাবনং হঠাৎ উভযো র্ভু জয়োমু কিকরোমধ্যে
নিপাতাতে মুক্টি বিভাচাতে তজ্জৈ মল্লবিদাবিশারদৈঃ অবাওমুখৎ
ক্ষমণতং ভামায়িয়া তথৈব যঃ ক্ষিপ্তদা শব্দঃ সভবেদ্বরাহোদ্ব্তনিঃ খনঃ
তলৈ ব্রুনিপাতিঃ ব্রুবহাটিকে ক্রেপটিঃ অপুলাঃ প্রস্তায়া স্তুতাঃ
প্রস্তা উদীরিতাঃ ॥ ২৮ ॥ ঋত্বী দ্চাক্যা ক্ষিপ্তাশলকে সালুলীল্যতা
তস্যানখপাতিঃ পাদোদ্ধ্তিঃ পাদপ্রসারনেনাক্ষেপিঃ জান্ত্রিঃ
নিরোভিশ্ব ক্রিব্রুবঘটনৈ রাক্ষালনে; অন্মনির্ঘোধ বিভ্যুভয় বিশেষণং
॥ ২৯ ॥ আশ্বংনিক্যাং যথোক্তং তত্ত্বির বাত্ত্র্দ্ধং হি মল্লানামশ্রে
ম্বিভিঃ স্মৃতং মৃত্যা তসা ন স্বর্গো যশো নেহাপি বিদ্যুত ইতি
বলপ্রান্ন বলেন শারীরবলেন প্রানেন মান্য বলেন ॥ ৩০ ॥

^{*} ঘউনৈরিতাত্র ঘটিতৈ বিতি পাঠঃ ক প্রস্ত:ক।

অর্জ্যুত জনঃ স্বাঃ সোৎকুফনিনদোথিতঃ। বলিনোঃ সশ্যুগে রাজন্ রত্রবাসক্ষেরির ॥ ৩১ ॥ व्यक्षंनाकर्षनियात् ज्ञाकर्विकर्षरैनः । আকর্ষত্মথান্যোন্যং জানুভিশ্চাবজন্মতুঃ॥ ৩২॥ ততঃ শব্দেন মহতা ভং সহত্যে পরস্পর্য। ব্যালেরস্কৌ দীর্ঘভুজৌ নিযুদ্ধকৃশলাবুভৌ। 🕟 বাছভিঃ সমসজ্যেতামায়সৈঃ পরিঘৈরিব ॥ 🖎 ॥ চকর্ষ দোর্ভ্যানুৎপাত্য * ভীমো মলম্মিত্রহা। বিনদন্ত মভিকোশন্ শাৰ্দিল ইব বারণম্। ৩৪॥ তমুদ্যম্য মহাবাহু গময়ামাস বীৰ্য্যবান্ : ততো মলাক্ষ মৎস্থাক বিস্মৃথ্ চঁক্রিরে পরস্। ৩৫। ভামযিত্বা শতুগুণং গতসত্ত্বমচেতনমু। প্রত্যপি শ্বন্মহাবান্তর্মল পুর্বি রুকোদরঃ। ৩৬॥ তিমান বিনিহতে † মলে জীমতে লোকবিঞতে। বিরাটঃ প্রম্প হর্ষমগচ্ছদান্ধারৈঃ সহ্॥ ৩৭ ॥ স হর্ষাৎ প্রামদৌ বিত্ত ৭ বহু রাজা মহামনাঃ ! वल्लवाय महात्रक्क यथा देवळावन्छथा॥ ७৮॥

সোৎকুষ্টনিনদঃ হীহীশব্দাচ্চারণেন যজ্জিত্য্য সমুত্থাপনং তৎসহিতঃ
॥ ৩১ ॥ আক্ষ্যক্রোজীকরণং প্রকর্ষণ মুদাহৃতং আকর্ষণং লালরৈব
সংমুখীকরণং স্মৃতং পুরঃ পশ্চাং পার্থয়োশ্চাভ্যাকর্ষো জ্রনং তথাপশ্চাং
প্রপাতনং বেগাদ্বিকর্ষণ মুদাহৃত্যং ॥ ৩২ ॥ ৩১ ॥ ৩৫ ॥ গতসত্বং
নক্ষর্ত্বিং অতএব অচেতনং শ্ব ভূতং ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ২৭ ॥ ৩৮ ॥

^{*} উৎপাতোতাত্র উৎপাটোতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

া মল ইতাত্র বীর ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

এবং স স্ববছূন্ মল্লান্ পুরুষা শচ মহাবলান। বিনিম্ন নৎস্তরাজ্য প্রীতিমাহরতুত্তমান্ ॥ ৩৯ ॥ যদাস্থ তুল্যঃ পুরুষো ন কশ্চিৎ # তত্রবিদ্যতে। তদা খ্যাইড্রশ্চ সিংইঃশ্চ দ্বিরদৈশ্চাপ্যযোধ্যথ॥ ৪০॥ পুনরন্তঃপুরগতঃ স্ত্রীণাং মধ্যে রকোদর:।। যোধ্যতে স বিরাটেন সিং হৈশ্মতৈ শ্রহাবলৈ। ৪১॥ বীভৎস্থরপি গীতেন স্বনুত্যেন চ পাগুবং। বিরাট^ তোষ্যামাস সর্বাশ্চান্তঃপুরে স্ত্রিয়ঃ ॥ ৪২ ॥ অশৈকিনীতৈ ৰুবলৈন্তত্ত্বতত্ত্ব সমাগতেঃ। তোষ্যামাস রাজানং নকুলো নূপসভ্রমণ্॥'৪৩॥ তকৈর প্রদেষং প্রায়ক্তৎ প্রীত্যে, রাজা ধনং বছ । বিনীতানুষভান দৃষ্ট্ৰ সহদেবস্থা † বা বিভো। ধনং দদে বহু বিধং বিরাট পুরুষর্যভঃ॥ ১৪॥ দৌপদী প্রেক্ষ্য তানু সর্বান্ ক্লিশ্বমানা আহারথান। নাতিপ্রীতমনা রাজন নিঃশ্ব।সপর্যাভবং ॥ ৪৫॥ এবং তে ন্যবসংস্তৃত্র প্রচ্ছন্ন। পুরুষর্বভাঃ। কর্মাণি তম্ম কুর্মাণাঃ বিরাটনূপতেস্তদা । ৪৬॥ ইতি বিরাটপর্কাণি সময়পালনপর্কাণ জীমূতবধে ज्**राप्रभा**र्थायः । ১०॥

॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪৩॥ ৪৪॥ ৪৫॥ ইতি শ্রী বির টপর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে কু গ্রয়োদশোহধ্যায়ঃ॥ ১৩॥

^{*} তত্র বিদ্যুত ইতাত্র প্রতাদৃশ্যতেতি পাঁঠঃ ক পুস্তকে। † বা বিস্তো ইত্যত্র চ্যুতিতঃ ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

বেশন্দানন উবান।

বসমানের পার্থের মহস্তম নগরে তদা।
মহারথের জ্ঞরের দশ মাসাঃ সমাযয়ঃ ॥ > ॥
যাজ্ঞনেনী স্থদেফান্ত শুক্রবন্তী বিশান্দাতে।
আবসহ পরিচারার্ধা স্থলুঃখং জ্নমেজ্য ॥ ২ ॥
তথা বসন্তী পাঞ্চালী স্থদেফারা নিবেশনে।
তাৎ দেবীং তোষমামাস তথা চান্তঃপুরে স্থিয়ঃ ॥ ৩ ॥
তালান বর্ষে গতপ্রায়ে কীচকস্ত মহাবলঃ।
নেনাপতির্বিরাট্স দদশ ক্রপদাল্লজান্ ॥ ৪ ॥
তাং দৃষ্ট্য দেবগর্জাভাং চরন্তীৎ দেবতামিব।
কীচকঃ কাম্যামাস কাম্বাণপ্রপীজিতঃ ॥ ৫ ॥
স তু কামাগ্রিসন্তপ্তঃ স্থদেফামভিপ্ন্য বৈ।
প্রহ্মনিব সেনানীরিদ্ধ বচন্মব্রবীং ॥ ৬ ॥
নেযং পুরা জাতু ম্যেহ দৃষ্টা,
কাক্রো বিরাট্সা নিবেশনে শুলা।

রাজ্ঞা বিরাটস্থ নিবেশনে শুভা।

ৰপেণ চোঝাদ্যতীব মাং ভূশণ

গল্পেন জাতা মদিরেব ভামিনী ॥ ৭ ॥

কা দেবৰূপা হৃদ্যঙ্গমা শুভে

আচক্ষ্ব মে কস্থা কুতোহত্তশোভীনে।

12 | 2 | 2 | 3 | 4 | 4 | 4 | 4 |

চিত্তং তি নির্দ্মথ্য করোতি মাং বশে, ন চান্যদতৌষধমন্তি ধে মত্য ॥ ৮॥ অহো ভূবেয়ে পরিচারিকা শুভা, প্রত্যপ্ররূপ। প্রতিভাতি মামিয়া। অযুক্তৰপং হি করেতি কর্ম তে, প্রশাস্ত মান যুদ্ধ মমান্তি কিঞ্চন ॥ ১ । প্রভুতনাগাশ্রথং সভাজনং, সমুদ্ধিযুক্তং বহুপান ভোজনম। মনোহর কাঞ্চনচিত্রভূষণং, গুহৎ মহচ্ছোভযতানিযং মম। :।। **७७: ऋरंप्रकामनुमन्ता** कीहक, ন্ততঃ সমভ্যেত্য নরাধিপাত্মজাম। উবাচ ক্লফামভিসাত্ত্বংস্তদা, মুগেক্তকন্যামিব জন্মুকো বনে॥ ১১॥ কা ত্বং * কস্থানি কল্যানি কুতো বা ত্ব॰ বরাননে। প্রাপ্তা বিরাটনগরং তত্ত্বমাচক্ষ্ শোভনে॥ ১২॥ ৰূপমগ্ৰাৎ তথা কান্তিঃ দৌকুমাৰ্য্যমনুত্ৰমণ্। কান্ত্যা বিভাতি বক্তুং তে শশাক্ষ ইব নিৰ্দ্মনম্॥ ১৩॥ নেত্রে স্থবিপুলে স্বক্ত পত্মপত্রনিভে শুভে। বাক্য ন্তে চারুনর্বাঞ্চি পরপুকরুতোপমং। ১৪॥ **এব-क्रशा मया नाती का** हिम्ना मही जला।

অনাদেবিধং এতাং বিনা ॥৮॥ প্রত্যগ্ররণা দিব্য রূপা॥৯॥১০॥ ১১॥১২॥১৩॥পর পুষ্ঠাং কোর্কিল: ॥১৪॥

^{*} গ্রু মৃত্যা প্রাকৃ কীচক উনাচ ইতি পাঠঃ ক পুত্রক।

न पृष्ठेश्वा ऋत्यानि यानुभी जमनिक्त् ॥ ३६॥ লক্ষীঃ পদ্মালয়া কাত্মথ ভূতিঃ স্থমধামে। হ্রীঃ শ্রীঃ কীর্ত্তিরখো কান্তি, রাসান কা ত্বং বরাননে ॥ ১৬॥ * অতীব ৰূপিণী কিন্তুমনঙ্গাঙ্গবিংগরিণী। অতীব ভ্রাজসে স্থক্ত প্রভেবেন্দোরমুক্তমা॥ ১৭। অপি চেক্ষণপক্ষণাং * স্মিতজ্যোৎস্নোপমং শুভম্। দিব্যাংশুরশ্মিভির্য ক্রং দিব্যকান্তিমনুত্তমম্ ॥ ১৮ ॥ নিরীক্ষা বক্তচক্রণ তে লক্ষ্যানুপময়া যুত্র। কুৎম্মে জগতি কো নেহ কামস্য বশগো ভবৈং । ১৯॥ हातानकात्राताराणी जु स्राती (हाट्डीसूर्गाड्टनी। স্ক্রজাতৌ সহিতৌ লক্ষ্যা পীনৌ রুস্তৌ নিরন্তরৌ ॥ २७ ॥ কুডালাম্বুরুহাকারে তব স্বন্ধ প্যোধরে। কামপ্রতোদাবিব মাং তুদতশ্চারুহাসিনি॥ ২১॥ বলীবিভঙ্গচতুরং স্তনভারাবনামিত্য। করাগ্রাসন্মিতং মধ্যং তবেদং তন্ত্রমধ্যমে ॥ ২২ ॥ দুক্তৈব চারু জঘনৎ সরিৎপুলিনসন্মিভম্।

॥ ১৫॥ ভূতিঃ ঈশ্বরী ঐশ্বর্গান্তি মানিনী দেবতা॥ ১৬॥ অনন্ধান্ধ রিহারিণী,
স্মরদেহেন ক্রীড়ন্তী রতী রিত্যর্থ:॥ ১৭॥ ঈশ্বণপ্রস্নাণাং নেত্রপক্ষাণাং
ক্রিডং ঈবছ্মীলনং তদেব জ্যোৎস্বোপমং মন্স আল্লাদকরং,
লক্ষাণ মিতি পাঠে বক্র চন্দ্র বিশেষণং॥ ১৮॥ ১৯॥ স্বজ্বাতৌতীয়তীে
নিরন্তরৌ পৃথুবাং সংশ্লিফৌ ॥ ২০॥ কুড়ালেতি মুকুলীভূত পদ্মাকারো
॥ ২১॥ করাগ্রং অনুষ্ঠাদি মধ্যমান্তো বিতন্তিঃ তেইনংমিতং কুশ্মি-ই,
তার্পঃ॥ ২২॥

^{*} অতীবেভাত্তরতীবেভি পাঠ: ক প্রকে।

ুণ পক্ষাণামিতাত্ত পক্ষাকমিভিপাঠ: কপুস্তকে।

কামব্যাধিরসাধ্যো মা # মপ্যাক্রামতি ভামিনি n ২৩ n कजानगि । मन्दर्भ मार्गावितिय निर्मयः। ত্বংসক্ষাভিসক্ষণেশা বিবৃদ্ধো মাং দহত্যযুগ ৷ ২৪ ৷ षाध्यमानवर्षन मक्रमारक्षाधरवन ह। শমযন্ত্র বরারোহে জ্বলন্তং মন্মধানলম্ ॥ ২৫ ॥ মচ্চিত্রোঝাদনকরা মক্সথস্য 🛊 শরোক্তমাঃ। বৃৎসঙ্গমাশানিশিতা, * স্তীব্রাঃ শশিনিভাননে! মহাং বিদার্যা হৃদয়মূদং নির্দ্দেযবেগিতাঃ ॥ ২৬ ॥ প্রবিষ্টাশ্চাসিতাপাঙ্গি প্রচণ্ডাশ্চ মুদারুণাঃ॥ অত্যুনাদসমারস্তাঃ † প্রত্যুন্দ করা মম। আত্মপ্রদানসম্ভোগান্মামুদ্ধর্তুং সমর্হদি ॥ ২৭ ॥ চিত্রমাল্যাম্বরধরা সর্ব্বাভরণ ভূষিতা। কাম প্রকাম সেবস্থ মধা সহবিলাসিনি। ২৮॥ নাৰ্দীহাস্থং বস্তং সুথাৰ্হা স্থাবৰ্জ্জিতা। প্রাপুত্রমুভ্রমং সৌধ্যং মন্তন্তং ! মন্তন্মিনি ॥ ২৯॥ স্বাদুন্যমূতকপোনি পানানি বিবিধানি চ।

২৩॥ অগ্নিদনো মদনাগ্নিঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ অভ্যাদিং মরণ কালীনং দারিপাতং সমারভতে তে অভ্যাদ সমারভাঃ ঘদলাতে- মরিবাামোবে-তিভাবঃ ॥ ২৭ ॥ কামংশারং প্রকামমতিশগ্নিতং ॥ ২৮ ॥ প্রাপ্ত লভক । ২৯ ॥

^{*} অপ্যক্তিমতীতাত্ত্ব বাধতে ২তীবেতি পাঠঃ কপুন্তকে।

† জন্মাল্টামীতাত্ত্ব জ্বালাবান দ্যেতি পাঠঃ কপুন্তকে।

‡শরোভমা ইতাত্ত্ব শরোৎকরা ইতি পাঠঃ থ পুন্তকে।

* তীবাইতাত্ত্ব পীতা ইতি পাঠঃ কপুন্তকে।

† প্রত্যাদ করামমেতাত্ত্ব সাক্ষাৎকার করামমেতি পাঠঃ কপুন্তকে

‡ মন্তেভাত্ত্ব গজেতি পাঠঃ কপুন্তকে।

পিরমানা মনোজ্ঞানি রমম্যনা যথা সুখ্য ॥ ৩ ॥
ভোগেপিচারান্ বিবিধান্ সৌভাগ্যঞ্পিয়নুত্তমন্।
পানং পির মহাভাগে ভোগৈরন্থপমৈঃ শুটভঃ॥ ৩২॥
ইদঞ্চন্ধপন প্রথমং তবানছে,
নিরপ্রকং কেবলমদ্য ভামিনি।
অধার্যামানা প্রগিবোস্তমা শুভা,
ন শোভদে সুন্দরি শোভনা সতী॥ ৩২॥
ত্যজামি দারান্ মম যে পুরাতনা,
ভবস্ত দাস্যস্তব চারুহাসিনি।
অহপ্র তে সুন্দরি দাসবৎ স্থিতঃ,
সদা ভবিষ্যে বশগো বরাননে॥ ৩৩॥
ভৌপত্রাবাচ।

অপ্রার্থনীযামিই মাণ্ স্থতপুত্রাভিমন্তে।
নিহীনবর্ণাণ সৈরক্ষ্মীং বীভৎসাং কেশকারিণীমু॥ ৩৪॥
পরদারাম্মি ভদ্রং তে ন যুক্তং দ্বরি সাম্প্রভিম্ব।
দ্যিতাঃ প্রাণিনাণ দারা ধর্মাং দ্বমকুচিন্তর॥ ৩৫॥
পরদারে ন তে বুদ্ধিজাতু কার্য্য কথঞ্চন!
বিবর্জনং হ্যকার্যাণামেতৎ সৎপুরুষব্রতম্॥ ৩৬॥
মিথ্যাভিগ্নো হি নরঃ পাপাল্মা মোইমান্থিতঃ।
অয়শঃ প্রাপ্নুযাদেবরেশ মহদ্বা প্রাপ্নুযাদ্রযম্॥ ৩৭॥

বৈশন্পায়ন উবাচ।
এবমুক্তস্তু সৈরন্ধ্যা কীচকঃকামমোহিতঃ।

॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ অভিমন্যদে কাময়দে ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬॥ মিথা-ভিগ্ধ: বিতথাভিনিৰেশী মহন্তরং মৃত্যুৎ । ৩৭ ॥

জনেলপি সূত্র্কৃদিঃ প্রদারাভিম্বণে ॥ ৩৮ ॥ मायान् वहून थान्हतान् गर्वालाकविशहिकान्। প্রোচেদৃং স্বছ্র দিন্তে পদীমজিতে ক্রিয়া ॥ ৩৯ ॥ भाईरिमाव वर्तातार श्रीजाशाक् वर्तानरन। মা- মন্মথদমাবিউ- ত্বংক্তে চারুহাসিনি ॥ ৪০॥ প্রত্যাখ্যায় হি মাং ভীরু বশ্রণ প্রিয়বাদিনম্॥ মূন প্রমসি তীপাঞ্চি পশ্চান্তাপ করিয়াসি ॥ ৪১॥ অহ৲ হিস্তুক্ত রাজ্যস্য কুৎস্বস্যাস্য স্থ্যধ্যমে। প্রভুবাস্যিতা চাম্মি বীর্য্যে চাপ্রতিমঃ ক্ষিতৌ ॥ ৪২ ॥ পৃথিব্যাং মৎসমো নাস্তি ক্শ্চিদন্যঃ পুমানিই। ৰূপযৌৰনসৌভাগৈতে গৈশ্চানুত্তমৈ শুভি:॥৪০॥ সর্বকামসমূদ্ধেষ্ ভোগেম্বরুপমেম্বিই। ভোক্ত ব্যেষু হিকল্যাণি কমাদান্যে রতা হাসি ॥ ৪৪ ॥ ় মধা দত্তমিদং রাজ্যং স্থামিন্যাস্মিন্ বরাননে। ভজন্ব মাং বরারোহে ভূজ্ফু ভোগাননুত্তমান্ ॥ ৪৫॥ এবমুক্তা তু সা সাধী কীচকেনাশুভৎ বচঃ। কীচকং প্রাক্তুবাচেদং গর্হযন্ত্যস্য তদ্বচঃ ॥ ৪৬ ॥

সৈৰস্বা বাচ।
মা স্তপুত্ৰ মুহাস্থ মাদ্য ত্যক্ষাস্থ জীবিতম্।
জানীাহ পঞ্চিৰ্ঘেবিরনিত্য মামভিরক্ষিতাম্॥ ৪৭॥
ন চাপ্যাং স্থা লভ্যা গন্ধবাঃ পৃত্যো মম।
তে স্থা নিহনুঃ * কুপিতাঃ সাধাল মা ব্যনীনশঃ। ৪৮॥
তাশক্যৰপ পুৰুষৈরধ্বানং গন্ধমিচ্ছিস।

^{*} কুপিত। ইতাত্র সংক্রেছা ইতিপাঠঃ কগুস্তকে।

যথা নিশ্চেতনো বালঃ কুলস্থঃ কুলমুক্তরম্। তর্ত্ত্রিচ্ছতি মন্দাত্মা তথা বং কত্তমিচ্ছদিশ ৪৯॥ षर्खेर्मा शैर वा यनि वार्क्त्र गूर्शरकः, সমুদ্রপার মদি বা প্রধাবসি। তথাপি তেভাো ন বিমোক্ষমইসি, প্রমাথিনো দেইস্কুতা হি থেচরাং ॥ ৫০ ॥ ত্বং কালরাত্রীমিব কশ্চিদাভরঃ, किः মार पृष्टः व्यार्थयः प्रश्ना कीवक ॥ কিং মাতুরক্ষে শ্যিতো যথা শিশু, শ্চন্দ্রণ জিঘুকুনিব মন্যাদে হি মাম্। ৫১। 🕸 তেষাং !এয়াং প্রার্থয়তো নভেভ্বি গত্বাদিবং বা শাঁরণণ ভবিষ্যতি। নবর্ত্তকৌচক তে দুশাশুভং, याट जनमः की वनमर्था स्टमा॥ ० ॥ ইতি বিরাটপর্বানি কীতকবধপর্বানি কীচকরুঞাসংবাদে চতুৰ্দ্বশোহধ্যয়ঃ ৷ ১৪॥

॥ ৪৯॥ ৫০॥ মনাদেলিপাসে শিশোশতন্ত্রবদহৎ তবহুলভাগীতিভাবঃ
॥ ৫১॥ তেবাং প্রিয়মিতি তেবাং প্রান্ধানাং গন্ধবানাং প্রিয়ং প্রার্থয়ত স্তেত্র সুবিগ্রা দিবং বা গরাশরণং ত্রাতাকশ্রিমভবিষ্যতি অতএব
হে কীচক তেত্র কামান্ধসা সাদৃশানৃষ্ঠির্বুদ্ধি রিতিষ্যাবং যা শুভং
স্বীয়ং অর্থয়েত কামরেত শুভেচ্ছারপা ত্রনান্তীতার্থঃ তেনচ শুভেন
পরদার নির্ভিন্নপেন কামিতেন সং জীবনং ভ্রতীতি শেষঃ
অনাধা মরিষাসীতার্থঃ নমে সুবীতিপাঠে তেবাং প্রিয়াং প্রার্থয়তা
"মেমম কোপি জাতা নভবিষ্যতীতি দৃশার্দ্ধিন্তর নান্তীতি সম্বন্ধঃ।
ফাভেচসংজীবন মর্থয়ন্ত মিতিপাঠেতু যানৃষ্ঠিন্তেত্র সংজীবনঞ্চ ভ্রতি
কীদৃশং সংজীবনং অর্থয়ন্তং বিস্থানিং তথাভিত্রপাতিনিবেশিন স্তে
ভীবনং নান্তীতার্থঃ॥ ৫২॥

স্থাত বিরাট পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবনীপে চতুর্দশো ২ধ্যায়ঃ ॥ 38 ॥

^{*} তেগ্ৰামতোকঃ শ্লোক্য ক পুস্তকে নাস্তি।

বৈশস্থায়ন উষাচ।

প্রত্যাখ্যাতো রাজপুঁজ্যা স্থদেষ্ণাং কীচকোই এবী ং ।

অমর্যাদেন কামেন ঘোরেণাভিপরিপ্রভঃ ॥ ১ ॥

মুখা ও কৈকেযি সৈর্স্কুণি সমেয়ান্ত দ্বিধীয়তাম্।

যেনোপায়েন সৈর্স্কুণি ভজেমাং গজগামিনী !

ত স্থদেষে পরীক্ষাস্থ প্রাণান্মেশিহাৎ প্রহাসিষম্ ॥ ২ ॥

বিশক্ষায়ন উবাচ।

তস্য সা বছশঃ শ্রুণু বাচং বিলপতস্তন।
বিরাটনহিন্নী দেশী কুপাঞ্চক্রে মনস্থিনী ॥ ৩॥
স্বাক্তমভিসন্ধার তস্যার্থনিস্থানন্তা চ।
উদ্যোগুঞ্চিব কুঞ্যাঃ স্থানেক্য স্থানন্তার ।
কুপরিনি তাং সমুদ্দিশ্য স্থানান্ত্র কারয়।
তবৈনাং প্রের্ঘিয়ামি স্থান্তারী তবান্তিকম্॥ ৫॥
তব্র সংপ্রেনিতামেনা বিজনে নিরবপ্রাহ্।
সাস্থ্যেথা ম্থাকাম সাস্থানানা রমেদ্যদি॥ ৬॥

বৈশপারন উবাচ। এবসুক্তঃ স নিষ্কুম্য ভবিন্যা ‡ ভবনাত্তদা। স্থরামাহারযামাস রাজার্ছাং স্থপরিষ্কৃতঃমু॥ ৭॥

॥ ১॥ সমেরাৎ মাংউপগাদেৎ মাউহাদিতিছেনঃ উহাৎ বিতর্গতং
তপারং যুক্তাপেরীপ্রশে নিয়েজ্যংপ্রাণান্ মাপ্রহাদিধমিতিচ॥ ২॥
॥ ৩॥ কৃষ্ণারাঃ প্রাপ্তার্থে উন্নোগং উদামং চাহ্রচিন্ত্যেতি যোজ্যং॥ ৪॥
পর্ব্রনি মদ্যপায়িনাং উৎসবকালে চতুর্দশ্যাদৌ সমুদ্দিশা অদ্যাহং স্থাদেকার্থ মরাদিকং ক্রেয়ামীতি কীর্ত্রিহা॥ ৫॥ বিজনে একাত্তে নিরবগ্রেহে নিজ্পুতিবদ্ধে॥ ৬॥ ৭॥

 ^{*} যথা কৈকেরীতাস্য প্রাক্ কীচক উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 † পর্বনীতাস্য প্রাক্ স্থানেকোবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 া ভবনাদিতার ববনাদিতিপাঠঃ কপুস্তকে।

* ভক্ষা শত বিবিধাকারান্ বহুং শেচাচ্চাবচাং স্তদা।
করিয়ামাস কুশলৈ রন্ধ পানঞ্চ শোভিন্য ॥ ৮॥
তিম্মিন্ কৃতে ভদা দেবী কীচকেনোপমন্তিতা।
স্থদেফা প্রেষ্যামাস সৈরক্ষ্মিং কীচঁকালয়ম্॥ ৯॥
স্থদেফা বাচ।

উত্তিষ্ঠ গচ্ছ সৈরন্ধি কীচকস্য নিবেশনম্। পানমান্য কল্যাণি পিপাসা মাৎ প্রবাধতে । ১০॥ সৈরন্ধার্যান্

ন গচ্ছেয়মহং তস্য রাজপুল্লি নিবেশনম্।
ত্বমেব রাজ্ঞি জানাসি যথা স নিরপত্রপঃ ॥ ১১॥
ন চাহমনবদ্যাঙ্গি তবু বেশানি ভামিনি।
কামর্ত্তা ভবিষ্যামি পতীনাৎ ব্যভিচারিণী ॥ ১২॥
ত্বব্যুক্তব দেবি জানাসি যথা স সময়ঃ কৃতঃ।
প্রবিশন্ত্যা ময়া পূর্বাৎ তব বেশানি ভামিনি॥ ১৩॥
কীচকশ্চ স্থাকেশান্তে মূঢে। মদনদর্পিতঃ।
সোহবমংস্যতি মাৎ দৃষ্ট্যান যাস্যে তত্র শোভনে॥ ১৪॥
সন্তি বহ্বান্তব প্রেষ্যা রাজপুল্লি বশানুগাঃ।
অন্যাৎ প্রেষ্য় ভদ্রন্তে স হি মামব্যৎস্যতে॥ ১৫॥
স্থান্তি বিষ্যান্তর্যার প্রার্থিত বশানুগাঃ।

নৈব ত্বাপ জাতু হিপ্ন্যাৎ স ইতঃ সপ্প্রেষিতা ম্যা। ইত্যুক্ত্যা প্রদদৌ পাত্রং স্পিধানং ছিরণায়্য। ১৬ ৰ

॥ ৮॥ উপমক্ত্রিত। প্রাথিত। ॥ ৯॥ পানং মদ্যং অরামনং চেত্রাপক্তমাৎ।
তিম্যের পিপানা পাত্মিক্তা ॥ ১০॥ ১১॥ ১২। ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥

^{*} ভক্ষাংশ্চবিবিধাকারান্ বহুংশ্চোচ্চা বঁচাং স্তদেতাত্ত্ব আজেরিজঞ্ স্কুশংবক্ংশ্চো চ্চা বচা মুগানিতি পাঠিঃ ক পুস্তকে।

সা শক্ষমানা রুদ্রী দৈবৎ শরণমীযুষী।
প্রাভিষ্ঠত সুরাহারী কীচ্ক্সা নিবেশনম্॥ ১৭ ॥

কৈরন্ধ্য বাচ।

যথাইমন্ত্রং পাণ্ডুভ্যো নাভিজানামি কঞ্চন।
তেন সত্যেন মাং প্রাপ্তং মা কুর্যাং কীচকো বশে॥ ১৮॥

কেশপায়ন উবাচ।
উপাতিষ্ঠত সা সূর্যাৎ মুহুর্জমবলা ততঃ।
স তস্যাস্তরুমধ্যায়াঃ স্বাং স্থায়োহববুদ্ধবান্॥ ১৯॥
ভাস্ত ভিত্ত ভাস্থা রক্ষো রক্ষার্থমাদিশং।
তক্ষিনাং নাজহান্তর স্বাবিস্থাস্থনিন্দিতাম্॥ ২০॥
ভাগ মৃগীমিব সন্ত্রতাং দৃষ্ট্য রুষ্ণাং সমীপগাম্।
উদ্ভিষ্ঠামুদা স্থতো নাবৎ লগ্নেব্রপারগঃ॥ ২০॥

ইতি বিরাটপ্রিনি কীচক্যধ্পর্মনি দ্রৌপদীস্করাহ্রনে
প্রাণ্ডিধ্যায়ঃ॥ ১৫॥

কীচক উবাচ।
স্থাগতং তে স্থকেশান্তে স্থবাফী রজনী মম।
স্থামিনী স্থমন্ত্র প্রাপ্তা প্রকুরন্ধ মম প্রিয়ম্॥ ১॥
স্থবর্ণমালাঃ কন্ধুংশ্চ কুগুলে পরিহাটকে।
নিনাপ্তরেকে শুলে মণিরতুঞ্চ শোভনম্॥ ২॥

। ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

বিরক্ট পর্বান নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপো

পঞ্চদশো্ প্রায়ঃ ॥ ১৫ ॥

॥ ১॥ পরিতে হিটকে মরোতে পরিহাটকে কুগুলে ভাডকে ইতার্থ । २॥

* আহরস্কৃচ বস্ত্রাণি কৌশিকান্য জিনানি চ।
অন্তি নে শ্যনং দিব্যং ত্বদর্থমুপকল্পিত্র ।
এহি তত্র ম্যা সার্জংপিবস্থ মধুমাধ্বীন্ ॥ ৩॥
জৌপত্নান্চ।

অথৈৰীদ্ৰাজপুত্ৰী নাং স্থ্ৰাহারীং তবান্তিকম।
পানমান্য মে ক্ষিপ্ৰং পিপাসা মেহতি চাত্ৰবীৎ। ৪॥
কীচক উবাচ।

খন্যা ভক্তে নরিষ্যন্তি রাজপুজ্ঞাঃ প্রতিশৃত্ব। ইত্যেনাং দক্ষিণে পাণো স্থতপুজঃ পরাম্যং॥ ৫॥ ক্রেপিছাব্চ।

ষথৈবাহং নাভিচরে কদাচিৎ,
পতীন্ মদাদৈ মনদাপিজাতু।
তিনৈব সত্যান বশীক্ত্ত্ ব্বং,
দ্বীশ্মি পাপ পরিক্ষ্যমাণম্॥ ৬॥
বৈশন্ধায়ন উপাচ।

† স তামনুপ্রেক্ষ্য বিশালনেত্রাং,
জিঘুক্ষমাণঃ পরিভর্ৎস্যন্তীং।
জগ্রাহ তামুন্তরবস্ত্রদেশে,
স কীচকস্তাং সহসাক্ষিপন্তীম্ ॥ ৭॥

মধুমাধবীং মরুপুষ্পজাং মদিরাং ॥ ৩ ॥ হ্রাছারীং হ্রামাহর্কামাং পিপানামেতি মেমম অতি পিপান। ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ १ ॥

^{*} আহ্রন্তচ বন্ত্রাণীতাত্ত আহরদৈর বন্ত্রাণীতি পাঠঃক পুস্তকে।

† সভামিতাস্য প্রাক্'বৈশম্পায়ন উবাচেতি পাঠঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

প্রগৃহ্যমাণা তু মহাজবেন, মুহুর্বিনিশ্বস্য চরাজপুত্রী। ত্যা * সমাক্ষিপ্ততমুঃ স পাপঃ, , স্বপদ্ত শাখীব নিক্কন্তমূলঃ ॥ ৮ ॥ সা গৃহীতা বিধুম্বানা ভূমাবাক্ষিপ্য কীচকম। সভাং † শরণমাগচ্চন্ত্রে রাজা যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৯ ॥ তাং কীচকঃ প্রথিবস্তীৎ কেশপাশে পরামূষ্ৎ। অথৈনাং পশ্যতো রাজ্ঞঃ পাত্যিত্বা পদাব্ধী । ১০॥ তস্যা যোহসৌ তথাকেঁণ রাক্ষসঃ সন্নিয়েজিতঃ। স কীচকমপোবাহ বাতবেগেন ভারত॥ ১১'॥ স পপাত তদা ভূমৌ রক্ষোবলস্মাহতঃ। বিঘূর্বমানো নিশ্চেডাশ্ছিরমূল ইব ক্রমঃ॥ ১২॥ তাঞাদীনৌ দদৃশতুর্ভীমদের-যুধিষ্ঠিরৌ। অমৃষ্যমানৌ কুফাষাঃ কীচকেন ! পরাভব্ম ॥ ১৩ ॥ তম্য ভীমো বধং প্রেপ্সুঃ কীচক্স্য ছুরাত্মনঃ। परेखर्पखारखना त्रायां निष्टित्य महामनाः ॥ ১८ ॥ ধূমচ্ছায়ামভজতাং নেত্রে চোচ্ছি তপক্ষণী। সম্বেদা জকুটী চোগ্রা ললাটে সমবর্ত্ত ॥ ১৫ ॥ ॥৮॥ বিধুবানাকপামান। ॥৯॥১০ ॥ অপোবাহ দুরীচকার ॥ ১১ ॥ 🃭 ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ধুমজ্বারাঃ কর্মনেত্রে কর্তৃনী অভজতাং চ্ছায়া মিত্যেক বচনান্তঃ পাঠঃ,**স্বচ্ছঃ** ॥ ১৫ ॥

^{্ *} তয়েত্যস্য প্রাক্ চিকেপ তংগাত মম্বামাণা প্রবেপমানাতিক্ষা-শুভাঙ্গীতিশ্লোকার্দ্ধি ক প্রতকে অধিকোবর্ততে।

শ শরণ মাগাচ্ছ দিত্যতা শরিণমাধাবদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

া পরাভব মিতাতা পদাবধ মিতি পাঠঃ ক পুস্তক।

ছরেন মমুদে চৈব ললাটং পরবীরহা।
ভূযণ স্বরিত কুন্ধ: সহসোপাতৃ মৈজ্ত ॥ ১৬॥

* অথাবমূদ্রাদস্ত মসু ঠেন যুধিন্তির:।
প্রবোধনভবান্তীমংরাজা তং প্রতাবৈধ্যং॥ ১৭॥
তং মন্তামিব মাতস্বং বীক্ষমাণং বনস্পতিম্।
স তমাবার্যামাস ভীমদেনং যুধিন্তির:॥ ১৮॥
আলোক্যসি কিং রুক্ষং স্থাদ দারুক্তেন বৈ ।
বাদি তে দারুভি: কৃত্য বহির্ক্ ক্ষান্তিগৃহ্যতাম্॥ ১৯॥
সা সভাষার্মাসাদ্য রুদ্তী মংল্যমত্রবীং।
অবেক্ষমানা স্থানালী পতীংস্তান্ দীনচেত্স:॥ ২০॥
আকার্মভিরক্ষন্তী প্রতিজ্ঞাধর্মসংহিতা ।
দহ্যমানেব রৌদ্রেণ চক্ষা দ্রুপদান্মজা॥ ২২॥
দেশ্যাবাহ।

যেযাং বৈরী ন স্বর্পিতি ষঠেছপি বিষয়ে বসন্। তেষাং মাং মানিনীং ভার্য্যাং স্থতপুত্রঃ পদাবধীৎ ॥ ২২ ॥ যে দত্ত্যর্ক চ যাচেযুত্র ক্ষণ্যাঃ সত্যবাদিনঃ।

তেষাং মাং মানুনীং ভার্যাং স্তপুক্তঃ পদাবধীৎ ॥ ২৩ ॥
॥ ১৬ ॥ অন্ধৃষ্ঠং অনুষ্ঠেন হস্তান্ধুষ্ঠেন আচারা দেবং জ্ঞেরং
॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ অভিরক্ষতী গৃহমানা ধর্মণংহিতা ধর্মবদ্ধা ॥ ২১ ॥
য়চ্চে বিষয়ে দেশপঞ্চক ব্যবধানে শিনস্থাপিতি তেষাং সার্কভৌম্বাং
য়দ্ধা বাহোল্রির প্রাহ্য পঞ্চবিষরাপেক্ষরা মঠে মনোমুার প্রাহ্যে
স্থেমনোর্থাদি রূপেপিবিষয়েন ম্লাপিতি ভ্রাদ্ভিঃ সন্কিমৃত লোকেন
স্থাপিতীত্যর্থঃ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥

^{*} অথাব মৃদ্দিক্ষমস্থেন যুধিন্তির ইত্যত্ত অথাস্কুষ্ঠেনবিমৃদ্রক্ষিং তস্যধর্ম রাডি তিপাচঃ ক প্সতেক।

া সংহিতেতাত্ত সংশ্রম দিতি পাচঃ ক পুস্তকে।

(यवा - क्रुन्कु जिनिहर्या दिवा जारिया यह वागर छ निभम । তেষাং মাং মানিনী জার্ষাা স্তপুত্রঃ পদাবধীৎ ॥ ২৪ ॥ যে চ তেজস্বিনো দান্তা বলবন্তোহভিমানিনঃ। তেষাং মাপ মানিনী ভার্য্যাং স্থতপুত্রঃ পদাবধীৎ । ২৫॥ সর্বলোক্ষিমং হ্নুর্ধেশ্বপাশাসিতাস্ত যে। তেষা মাং মানিনী ভার্যাং স্থতপুত্রঃ পদাবধী । ২৬॥ শর্ণং যে প্রপন্নীনাং ভবত্তি শর্ণার্থিনাম। চরন্তি লোকে প্রচ্ছনাঃ क सू তেহদ্য মহারথাঃ ॥ २ ॥ কথং তে স্থতপুর্জ্রেণ বধ্যমানাং প্রিয়াৎ সতীম্। মৰ্ঘন্তি যথা ক্লীবা বলবন্তো হুমিতৌজসঃ । ২৮॥ क जु (खबाममर्बन्ध वीर्याटखनन्ध वर्वट । ন পরীপান্তি যে ভার্যাৎ বধানানাং ছুরাত্মনা। ২৯॥ भयाज भन्गः किक्कर्जूः विदाखे धर्माम्यदक्। যঃ পশ্যনা । মধ্যতি বধ্যমানামনাগ্যম্। ৩০॥ ন রাজন্নাজ্বৎ কিঞ্চিৎ সমাচরতি কীচকে। দস্থানামিব ধর্মান্তে ন হি সৎসদি শোভতে॥ ৩১॥ নাহমেতেন যুক্তং বৈ হন্তং মৎস্য তবান্তিকে। সভাসদশ্চ পশ্যন্ত কীচকস্য ব্যক্তিক্রমম্। ৩২॥ न की हक र धर्म (उक्त। न ह महम्रः कर्थक्षन। সভাসদোহপ্যধর্মজ্ঞা য ইমৎ পর্যুপাসতে ॥ ৩০ ॥ देवनाम्यासून छेवाह ।

এবন বিধৈক্ষ্রেভিঃ সা তদা ক্ষণ শ্রুলোচনা। উপালভূত রাজানং মৎস্যানাং বরবর্ণিনী॥ ৩১॥

॥२८॥२०॥ भिज्दाः नक्ताः ॥२७॥ २९॥२৮॥ २०॥७० ॥७১॥ ७२॥ ॥७०॥७८॥

বিরাট উবাচ।

পারোক্ষং নাভিজান।মি বিগ্রাহং যুবয়ে,রহন্। অর্থ তত্ত্বসবিজ্ঞায় কিং সুস্যাৎ কৌশলং মম। ৩৫। বৈশপালন উল্টি।

ততন্ত্র সভ্যা বিজ্ঞায় ক্ষাং ভূষে হভাপূল্যন্। সাধু মাধিতি চাপ্যান্থঃ কীচকঞ্চ ব্যগাধ্যন্॥ ৩৬॥ সভ্যা উচঃ

यरमायक्षाक्रमर्वाक्षी ভাষা। मानायर जन्ने। পরো লাভ क তদ্য महात्र म শোচেৎ কথক্ষন । ৩२ ॥ ন हो नृभी मनुरवाषु स्नुलं उत्तर्वानी। नाती मर्वानयनाक्षी (नवी॰ मनुरामेट वसम्॥ ७৮॥ देवभन्नायन छेत्राह।

এবং সংপূত্রত্বি আ ক্রফাং প্রেক্ষ্য সভাসদঃ।

মুধিন্তিরিন্য কোপোতুললাটে স্থেদ আগমং॥ ৩৯॥

অথাত্রবীদ্রাজপুত্রীং কৌরব্যাে মহিন্ধাং প্রিয়াম্।

গচ্চ দৈরক্ষি, মাত্রস্থাঃ স্থদেফাষা নিবেশনন্॥ ৪০॥
ভর্তারনমুরুক্ষান্তাঃ ক্রিশ্যন্ত্যে বীরপত্রয়ঃ।
ভর্তারনমুরুক্ষান্তাঃ ক্রিশ্যন্ত্যে বীরপত্রয়ঃ।
ভর্তারনমুরুক্ষান্তাঃ ক্রিশ্যন্ত্যে বীরপত্রয়ঃ।

শত্রেষষা ক্রিশ্যমানাঃ পতিলোকং জযস্তাত॥ ৪১॥

মন্যেন কালং ক্রোধন্য পশান্তি পত্রস্তব।

যেন ত্বাং নাভিধাবন্তি গক্ষারেঃ স্থ্যুবর্চ্চনঃ॥ ৪২॥

অকালজ্ঞানি দৈরক্ষি, শৈলুষীব বিরোদিষি।

বিশ্বং করোসি মংস্যানাং শীব্যতাং রাজসংসদি॥ ৪০॥

কৌশলং সাধসাধুনির্নাতশেবঃ কিংলুকুখংলু ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ॥ ৩৯ ॥ শাত্রস্থাঃ অত্তমাস্থাঃ মাতিষ্ঠ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ শৈলুধীব নটাব নির্লজ্জা ॥ ৪৩ ॥

b •

গচ্ছ দৈরন্ধি, গন্ধার্কাঃ করিষ্যন্তি তব প্রিয়ম্। ব্যপনেষ্যন্তি তে ছুঃখং যেন তে বিপ্রিয়ম ক্তুম্॥ ৪৪॥

टेमब्रज्जु, ग्वाइ।

তিবাং স্থানা মর্থেই হং ধর্মচারিণী।

তদ্য তদ্যৈব তে বধ্যা যেষাং জ্যোষ্ঠোইক্ষাদৈবিতা॥ ৪৫॥

বৈশ্লপায়ন উবাচ।

हेजुङ्गा श्राप्तवें कृष्ण स्रतिशाया नित्नमम्। किनान् मूङ्गा ज् स्राधानौ मः तस्राह्माहित्वका।॥ ४७॥ खिख्य वनन केमा क्रमसाः स्रहितः वन।। भिष्यान्याविनिर्द्याङ्कः मिनीक मानिम खनम्॥ ४२॥

क्रानाक्ष्रकात्र।

কস্তাবধীদ্বারোহে কন্মাদোদিদি শোভনে। কন্মানু ছংখং তে ভদ্রে কেন তে বিপ্রিয়ং ক্রুয় ॥ ৪৮॥

ट्योभश्चात्राह।

কীচকো মাবধীন্তত্ত্ব স্থুরাহারীং গতাং তবা। সভাষাং পশ্যতো রাজ্ঞো যথৈব বিজনে তথা॥ ৪৯॥ স্থদেকোবাচ।

ঘাত্যামি স্থকেশান্তে কীচকং যদি মন্যানে। যোহসৌ ত্বাং কামসন্মত্তো তুর্লভামবমন্যতে । ৫০॥

ছি:খং ছ:খিয়ভারংব্যপনেব্যন্তি জীবিতা দিভিশেষ ॥ ৪৪ ॥ ছবিনাং তিষামর্থে দ্যাবিতাং তস্য তস্য সর্ক্রিয়ব্তবেধ্যাঃস্থাঃ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ । ৪৮ ॥ পাশ্যতোরাজ্ঞ ইত্যনাদরেষ্ঠী রাজানং লক্ষীক্ত্যেত্যর্থঃ ॥ ৪৯ ॥ ॥ ৫০ ॥

শ অতীব তেবাঁং য়নিনামর্থেই ছংধর্মচারিনীতাক অতীবতেবাং য়নিনাং
মন্মেছংধর্মচারিনী তি পাঠঃ ক প্রতকে।

জেপিছাবাচ।

আন্যে তং বৈ বিধিষ্ঠি যেষামাগঃ কুরোতি সং।
মন্যে চালৈর স্থব্যক্ত পরলোক গমিষ্ঠি ॥ ৫১॥
ইতি বিরাটপর্কণি কীচকবধপ্রিণি দৌপদীপ্রিভবে ।
বৈডিশোহধ্যায়॥ ১৬॥

रिवमन्त्राशास खेताह।

मा इडा ऋडणूटल ताकल की अध्यासिनी।
वर क्ष्मा लिती श्री कि शिला की कि श्री लिती श्री श्री कि श्री लिती श्री श्री कि श्री श्री श्री श्री श्री कि श्री श्री श्री कि श्री श्री श्री कि श्री श्री श्री है श्री श्री है श्री श्री श्री है श्री श्री श्री है श्री श्री श्री है श्री है श्री श्री है श्री

H C 5 H

ুইতি বিরাটপর্কাণ ব্রেলকচীয়ে ভারত ভাবদীপে বোড়দোহধ্যায় ॥ ১৬।

(मनानाक्ता (मनानाटः की हक्ता ॥) ॥ २॥ ० ॥ ८॥ ७ ॥ ७॥

* রাজপত্নীত্যত্র রাজপুত্রীতি পাঠ: 🖚 পুস্তকে।

Ŗ

ু দৈরস্বাহাত।

ছুংখেন মহতা যুক্তা সান্দেন মনশ্বিনী। ভাগান্ জীবতি পাপিঠে সেনাবাছে মম দ্বিবি॥ १॥ তৎ কৰ্ম । কুতবানদ্য কথং নিদ্ৰাণ নিষেবদে।

रेवनम्भात्रम छेवाऽ।

এবমুকুৰি তাং শালাৎ প্ৰবিবেশ মনস্থিনী ॥ ৮ ॥
যাসুনে ভীমন্তনা শোতে মুগরাজ ইব শ্বসন্।
তদ্যা ৰূপেণ সাঁ শালা ভীমস্য চ মহাত্মনঃ ॥ ৯ ॥
সংমুক্তি তৈব কৌরব্য প্রজন্মলাতিতেজসা।
দা বৈ মহানসংপ্রমুপ্য ভীমসেনং শুচিন্মিতা ॥ ১০ ॥
সংবিশ্বতেব মাহেরী বনে জাতা ত্রিহাবনী।
উপাতিষ্ঠত পাঞ্চালী বাসিতেব † বর্ষভম্ ॥ ১১ ॥

यः उदकर्म भना देखि क्रभः कृत्वन्तिम् कीवित । १ ॥ ৮ ॥ २ ॥ मश्मू क्र-তেব বৃদ্ধিং শোভারপাং প্রাপ্তেব প্রজন্ধান অংশাভত॥ ১০॥ সর্বাষ্থেতে বেভি পাঞ্চালী জৌপদী বর্ষ ছং বরণীয়ং পাত্তং শ্রেষ্ঠং ভীমদেনং উপলম্ব্য ব্যাসিতের পুষ্পিনীবেন কামান্তুরের উপাতিষ্ঠত সমীপে স্থিতবতী বস্তুতো ন কামাতুরা কিন্তু দেঘাতুরৈ বেতিভাব: তত্রদুঞ্চীন্ডদয়ং ইবশক: কাকান্দিৰ হুভয়ত্ৰ সম্বাধাতে সৰ্ব্ব স্বেতেৰ পাহেয়ী বলেতি সৰ্ব্ব স্বেতাৰকী যথা কামাতুরা বর্ষভং পতি মিতি একঃ তদাাং কামাতুরত্বে হেতুঃ বনেজাতেতি জলেজাতা তেন জল সামীপোন লব্ধাহারহেন উল্তুত্থ মুচাতে তথা মাহেয়ী গৌঃদাপি বাদিতাসতী বর্ষভং দাওং বলীবর্দং ভদ্যা অপিবাদিভাৱে বিশেষণং ত্রিহারণীতি ত্রিবর্ষাহি গৌ যৌবনারতা কামাতুরাচ ভবতি অন্যেতু প্রেতঃ সিতেরাজহংসে কৈলাণে দীপ ভূপরো বিতি কোশমুদা ছতা সর্ব্ব স্বেতা হংসীতি ব্যাচক্ষতে তত্র সর্ব্ব পদং ব্যর্থং হংসস্য লোভ্তি লোচনাস্য বরণহাৎ প্রতিকূলঞ্ যন্যপ্রি ত্রিছায়ণী ত্রিক-र्वारभी द्वित् ह क्लामार जिल्लाभी भरमदेन रभीन छ। एक उपाणि उरका-भाजूत्व ज्ञानिनार्थ मूनको ११ महित्यम ममर्गकः नमा उक्रमार्थक अत्विज्ञ भ वार्थ विद्यायन वं जाता वाविवान अकाताः मर्यास्तिव त्यारमा अखा हेक्रा (अक्टिंश १ २२ ॥

^{*} কুতবানদ্যেতাত্ত কুতবভাদ্যেতি পাচঃ ক পুস্তকে। শু বর্ষত মিতাত্ত্ব মহারুষ মিতি পাচঃ ক পুস্তকে।

না লতেব মহাশাল কুলং গোমতি তীর্জম্।
পরিষ্কত পাঞ্চালী মধামং পাণ্ড্ন দন্ম ॥ ১২॥
বাহুত্যাং পরির ত্যুক্ত প্রবোধ্যদনি লিতা।
দি হ কুপ্তং বনে তুর্বে মুগরাজবর্ধরিব ॥ ১৩॥
ভীমসেন মুগালিষা হস্তিনীব মহাগজ্ম।
বীনেব শ মধুরালাপা গালারং সাধু মুর্ক্তী †।
অভ্যতা্যত পাঞ্চালী ভীমদেনমনি লিতা ॥ ১৪॥
উত্তিঠোতিঠ কিং শেবে ভীমসেন যথা মুতঃ।
নামুত্রস্য হি পাপীযান্ ভার্য্যা মালভ্য জীবিছি ॥ ১৫॥
স স প্রহায় শ্যনং রাজপুল্র্যা প্রবোধিত।
টু উপাতিঠ ভমেঘাভঃ পর্যাস্কে, সোপস প্রতে ॥ ১৬॥
অথাত্রবীদ্রাজপুল্রীং কৌরব্যো মহিষীং প্রিয়ান্।
কেন্যাসার্থেন সংপ্রাপ্তা প্রিতেব শমান্তিকম্॥ ১৭॥
ন তে প্রকৃতিমান্ বর্ণঃ কুশা পাণ্ড্র্ন্ড লক্ষ্যসে।
ভাচক্ষ্ব পরিশেষেণ সর্বাৎ বিদ্যামহং যথা॥ ১৮॥

মধ্যমং পাণ্ডুনন্দনং ভীমদেনং বমরোঃ সহজাতত্বেন পে কাপর্বাণ ভাবারে কিনিচাবের মুধিচিরো জ্যেষ্ঠএর মধ্যমত্বং ভীমার্জ্কনরোরের বিজ্ঞাত্তং ভারাপি অত্তপ্রকরণাং অর্জ্কন্সা সংগ্রতি পুংস্থা ভাবাচ্চ মধ্যমত্বং ভীম- 'দেনে এব মুখ্য মিত্যাশয়ে নৈবৈত হক্তং পরিষক্ষতপর্বাষ্ণত আলি'লিভ বতী ৷ ১২ ৷৷ ১৬ ৷৷ গান্ধারং স্বর্গবিশেষং মুক্ত তী মুদ্ধ রন্তী ৷৷ ১৪ ৷৷ ১৫ ৷ টি
সোপসংগ্রহে সভূলিকে ৷৷ ১৬ ৷৷ ১৭ ৷৷ বিদ্যাং জীনীয়াং ৷৷ ১৮ ৷৷

^{*} মধুরালাপেতার মর্রাভাষেতি পাঠ: ক প্রক্তকে।

† মৃক্ত তীত্তার মৃক্তি তা ইন্দ্র পাঠ: ক প্রক্তকে।

‡ উপাতিষ্ঠত মেঘাভইতার উপাতিষ্ঠশ্বহাবাহ ব্রিতি পাঠ: ধ
প্রক্তিন।

স্থাং বা যদি বা ছ্থাং বেষ্যং বা যদি বা প্রিয়ণ।

যথাবং সর্ব্যাচক প্রান্ত সামি দ যং ক্ষমন্ ॥ ১৯॥

আহমেব, হি তে ক্লে বিশ্বাসাঃ সর্ব্বকর্মস্থ।

আহমাপংস্থ চাপি ত্বাং মোক্ষ্যামি পুনঃ পুনঃ ॥ ২০॥

শীভ্রমুক্তা যথাকামং যতে কার্যাং বিবক্ষিত্র ।

গচ্চ বৈ শ্বনাব্যেব † যাবদন্যো ন ব্ধ্যতে ॥ ২১॥

ইতি বিরাটপ্রিনি, কীচকবধপ্রবিনি দ্রৌপদীভীমসংবাদে

সপ্তাদশোহ্যায়ঃ ॥ ১৭॥

জৌপুছাবাচ॥

অশোচ্যত্বং কৃতন্তক্যা যক্ষা ভর্তা যুধিষ্ঠিরঃ।
জানন্ দক্ষাণি ছুঃধানি কিং মাং ত্ব^ পরিপৃক্ষানি ॥ ১ ॥
যক্ষাণ দাসীপ্রবাদেন প্রাতিধামী তদানষ্ৎ।

াু সভা পরিষদোমধ্যে তন্মাণ দহতি ভারত ॥ ২ ॥

জ্ঞাস্যামি উপায়ং চিম্বরিষ্যামি ক্ষমং ষোগ্যং॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥
ইতি বিরাট পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে
সপুদদোহধ্যায়ঃ॥ ১৭॥

^{ি ॥} ১ ॥ সভাশালা তস্যাৎ পরিষৎ জনসমাজঃ তস্য মধ্যে তদাদ্যতকালে ॥ ২ ॥

^{*} জাস্যামীতাত্ত ধাস্যামীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† বাবদন্য ইতাত্ত পুরানান্যে ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

‡ সভাপারিষদোমধ্য ইতাত্ত সভারাং পরিষমধ্যে ইতি পাঠঃ ক
ধুস্তকে।

পাৰ্থিবদা স্থতা নাম কা নু জীবতি মাদুশী। অনুভূষে দৃশং দুখ * মতান্তং দ্রৌপদীমূতে ॥ ৩॥ বনবাসগতায়াশ্চ সৈন্ধবেন ছুরাত্মনা। † পরামর্যং দ্বিতীয়ঞ্ সোচ মুৎসহতে নু কা॥ । ॥ মৎস্যরাজ্ঞঃ সমক্ষত্তস্য ধূর্ত্তস্য পশ্যতঃ। কীচকেন পরা মৃষ্টা কা রু জীবতি মাদৃশী। ৫॥ এব বছবিথৈ ক্লেশেঃ ক্লিশ্যমানাথ্য ভারত। ন মান জানাসি কৌন্তেয কিং ফলং জীবিতেন মে। ৬॥ যে হয়ং রাজ্জো বিরাট্স্য কীচকো নাম ভারত। সেনানীঃ পুরুষব্যাঘ্র শ্যালঃ পরমত্বর্মতিঃ॥ १॥ म गाः रेमतक्ति वरमन वमछीः ताजरम्भानि । নিত্যমেবাহ ছুফীত্মা ভাষ্যা ভব মমেতি বৈ॥৮। (ज्याभाष्यक्रामानाश्चा वशार्द्ध मेर्नेष्ट्रन्। कारलरेनव कला शक्र क्रमा र पितीयार ॥ २ । ভ্রাতরঞ্বি বিগইস্ব জ্যেষ্ঠ ছুর্দ্দু ্যতদেবিনম্। বস্যান্দি কর্মণা প্রাপ্তা ছু:খমেতদনম্ভকম্ ॥ ১ ।। কো হি রাজ্যং পরিত্যজ্য সর্বাস্থ চাত্মনা সহ। প্রব্রজ্যারৈর দীব্যেত বিনা ছুদুর্গুড়ে বিনয় ॥ ১১॥ यनि निक्रमहरव्यन यक्तानार मात्रवन्तनम् । मात्रः প্রতিরদেবিষ্যদিপি সম্বংসরান্ বহুন্ ॥ ১২ ॥

। ও॥ দৈশ্ববেন জয়ক্তথেন । ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ১॥ ১০॥ প্রক্রাং প্রেক্তনং রজ্মজ্যে ক্তিন্যে প্রক্রায়॥ ১১॥ নিষ্কঃ স্বর্ণ পদং। তেখাং সহক্রেণ॥ ১২॥

^{*} অত্যন্তং ক্রৌপদীয়তে ইত্যত্র অন্যত্র ক্রৌপদীংপ্রত্যে ইতি পাঠঃ খ গস্তকে।

[🕇] পরামর্যং দিতীরঞ্চ ইত্যত্র পরামর্গোদিতীরে।বৈ ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে

জতদর্শ সহাপ্রাক্তং জীবিতার্থেহন্যসশস্থিতম্।

দৃষ্ট্যা কস্য ন ছুংখন স্যান্ধর্গাল্পানং যুধিন্তির্য্ ॥ ৩১ ॥

উপাত্তে, স্ম সভায়াং যং কুৎস্পা বীর বস্থক্ষরা।

তর্পানীনমপ্যন্যং পশ্য ভারত ভারতম্ ॥ ৩২ ॥

এবং বছবিধৈছু থেং পীড্যমানামনাথবং।

শোকসাগরমধ্যস্থাং কিং মাং ভীম ন পশ্যসি ॥ ৩০ ॥

ইতি বিরাটপ্রবিণি জৌপদীভীমস্থাদে

অ্কীদ্শে,হ্যায়ঃ ॥ ১৮ ॥

त्योशश्चानात्र।

ইদন্ত ও মহদুংখং যৎ প্রবক্ষাম ভারত।
না মেহভাস্থা কর্ত্ব্যা ছংখাদেতদু বীম্যহম্॥ ১॥
স্থানকর্মানি হীনে অমসমে ভর্মতর্মভ।
ক্রেবন বলবজাতীয়ং কস্য সোকং নবর্দ্ধয়েঃ॥ ২॥
স্থানারং বিরাটসা বল্লবং ডাং বিক্লম্নাঃ।
প্রেয্যত্বং সমন্ত্রপাপ্তং ততো ছংখতরং মু কিম্॥ ৩॥
যদা মহানসে সিদ্ধে বিরাটমুপতি ঠিসি।
ক্রেবাণে! বল্লবং স্থান্ডরা স্থানতি মে মনঃ॥ ৪॥
যদা প্রক্রমঃ সম্যুট্ আং সংযোধ্যতি কুঞ্জরৈঃ।
হসন্ত্যন্তঃপুরে নার্য্যো মম ভূম্বজতে মনঃ॥ ৫॥

100 100 100 1

ইতি বিবাট পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে অফাদশ্যেখ্যায়ঃ ॥ ১৮ ॥

1 3 ॥ शित्म नीटा व्यमस्य विसस्य ॥२॥ ७॥ ८॥ ८॥

मार्फ लिर्फ्याइरियः मिश्टेह्यां गांद्य युश्वाटम यहा । কৈকেষাঃ প্রেক্ষমাণায়া স্তদা মে কশ্বলোভবেং॥ ৬॥ ততউত্থায়কৈকেয়ীসব্বাস্তাঃ প্রত্যভারত। প্রেক্ষাঃ সম্পিতাশ্চাপি কৈকেয়ীং তাঃ ক্রিয়োহক্রবন॥ ৭॥ প্রেক্ষ্য মামনবদ্যাক্ষীং কশ্মলোপহতামিক। সেহাৎ * সমাসজান্ধর্মাৎ স্থদমেষা শুচিমাতা।। ৮॥ (याधामानः महावीर्यामिमः ममसुर्भावि । কল্যাণৰূপা সৈরস্থী বল্লবশ্চাতিস্থন্দরঃ ॥ ১ ॥ স্ত্রীণাঞ্চ চিত্তং ছুজেরং যুক্তরূপৌ চ মে মতৌ। দৈরস্বী প্রিয়ম্মানাং নিত্যং করুণবাদিনী। > ।। व्यानाजकुटल (हत्यो जुलाकालनियां प्रित्नो ॥ ইতি ক্রবাণা বাক্যানি সা মাণ নিতামতজ্বং ॥ ১১॥ কুৰন্তীং মাঞ্চ সংগ্ৰেক্ষ্য সমশঙ্কত মাণ অযি। ত্ৰসাং তথা ক্ৰবন্তান্ত জুঃখং মাণ মহদাবিশৎ॥ ১২॥ স্বয়েবং নিরয়ং প্রাপ্তে ভীমে ভীমপরাক্রমে। শোকে যৌধিষ্ঠিরে মগ্না নাহং জীবিভুমুৎসহে॥ ১৩॥ यः मामवान मञ्चगाः म मर्वाः रेम्ठकत्राया ३ जत्र । সোহযং রাজ্যে বিরাটিশ্য কন্যানাং নর্ত্তকো যুবা । ১৪ ॥ যোহতর্পরদমেযাক্স। থাওবে জাতবেদসম্। সোহস্কঃপুরগতঃ পার্থঃ কুপেহয়িরিব দেশ্রতঃ। ১৫॥ ॥ ७॥ १॥ ৮॥ ৯॥ প্রিয় সংবাদাং 'প্রিয়ন্য ভীমদেনন্য সংবাদঃ সহবাদঃ 'সম্বন্ধ ত্ৰান্হস্তা দিভিঃ সহ গেধামানে সতি কফণ বাদিনী भीनवामिनी खर्गाठ ॥ ১० ॥ मश्याम भाषा श्रामिति ॥ ১১ ॥ ১१ ॥ निवसः प्रदेश । २० ॥ ३८ ॥ ३० ॥

^{*} সম্বাদ্য বাদিতাত সম্বাদজ বান্যে ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

यनाक्ष्यमिळागां न महेनव शुक्रवर्ष छ। । স লোকপরিভূতেন বেশেনাত্তে ধনপ্রয়ং ম ১৬ এ যদ্য জ্যাক্ষেপক**ঠিনৌ বাহু পরিঘদনিভৌ।** স সভাপরিপূর্ণভাাং শেচিন্নাত্তে ধনঞ্জয়ঃ ॥ ১৭٠॥ যদ্য জ্যাতলনির্ঘোৎ সমকম্পন্ত শত্রব:। স্ত্রিয়ো গীতস্বনং তদ্য মুদিতাঃ পর্য্যপাদতে । ১৮ ॥ কিরীটং স্থাসঙ্কাশং যতা মুর্ননাশোভত। বেণীবিক্লতকেশাস্তঃ সোহ্যমদ্য ধনপ্লয়ঃ ॥ ১৯॥ ত বেণীকুতকেশাস্তং ভীমধন্বানমৰ্জ্জুনম। কন্যাপরিবৃতং দৃষ্টা ভীম সীদতি মে মনঃ॥ ২০॥ যশ্মিনসাণি দিব্যানি সমস্তানি মহাত্মন। আধারঃ সর্ববিদ্যানাং সধারয়তি কুণ্ডলে॥ ২১॥ * স্প্রাজসহত্রাণি তেঞ্চলাপ্রতিমানিবৈ। সমরে নাভ্যবর্ত্তন্ত বেলামিব মহার্ণবঃ ॥ ২২ । সোহ্য~ রাজ্যে বিরাট্স্য কন্যানাং নর্ত্তকো যুবা। আন্তে বেশপরিজ্ঞ: কন্যানাৎ পরিচারক: ॥ ২০॥ যন্য স্ম রথঘোষেণ সমকম্পত মেদিনী। সপ্রতিবনা ভীম সহ স্থাবরজঙ্গনা॥ ২৪॥ যশ্মন জাতে মহাভাগে কুন্তাঃ শোকো বানশাত। স শোচ্যতি মামদ্য ভীমসেন তবারুকঃ॥ ২৫॥ ভূষিতং তথলক্ষারৈঃ কুগুলৈঃ পরিহাটকৈঃ। ক স্থাণিন মাযান্ত পুন্তী। সীদতি মে মনঃ॥ ২৬॥ লোকে পরিভূতেন নিন্দিতেন ॥ ১৬ ॥ শংখপরিপূর্ণভাগে বাহতাাং ॥ ১१ ॥ ১৯ ॥ ১৯ ॥ २० ॥ २১ ॥ च्छी है । जाक तरिष्ट्र य मिन (नवः यत्मा. डालि পहित्व जञ्ची पाना जिल्हा । २२ ॥ २० ॥ २८ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २५ ॥ # প্রাত্ত যদে। তিপা ঠঃ ক : ভকে।

যদ্য নাস্তি দমো বীর্য্যে কল্চিতুর্ব্যান ধনুর্দ্ধর:। সোখন্য কন্যাপরিরতো গায়লান্তে ধন্প্রয়ং ॥ ২৭ ॥ ধর্মে শৌর্যোচ সভোচ জীবলোকসা সন্মত্য। স্ত্রীবেশবিক্বত পার্থ দৃষ্ট্র সীদতি মে মন: ॥ ২৮॥ যদা হ্যোনং পরিবৃতং কন্যাভিদ্দেবরূপিণস্। প্রভিন্নমিব মাতঙ্গং পরিকীর্ণং করেণু ভিঃ ॥ ২৯ ॥ মৎন্যমর্থপতিং পার্থং বিরাট সমুপস্থিতম্ 🕯 পশ্যামি ভূৰ্য্যমধ্যস্থং দিশো নশ্যন্তি মে তদা॥ ৩০॥ নুনমার্যা নজানাতিকুক্ত ং প্রাপ্তং ধনপ্রয়ম্ । অজাতশতুং কৌরব্যং মগ্রং ছুদ্বিতদেবিনম্॥ ৩১॥ তথাদৃষ্ট্যা য়বীর ংদণ সহদেবন গবান পতিং। * গোষুগোবেশম।যান্তং পাণুভূতামি ভারত।। ৩২।। गहरम्वमा बृङानि हिनुयन्ती श्रूनः श्रुः। ন নিজামধিপজ্ঞামি ভীমদেন কুতো রতিম্।। ৩০॥ ন বিন্দামি মহাবাহো সহদেবস্য তুষ্কৃত্য ! যন্মিন্নেবং বিধপ্তঃখপ প্রাপ্সাথ সভ্যবিক্রমঃ॥ ৩३॥ দূযামি ভরতশ্রেষ্ঠ দৃষ্ট্র তে ভ্রান্তরং প্রিয়ম। त्शासू त्रात्वमका मः यहरमानाजिनित्वम् छम्। ७०॥ गः इकः दक्तान्याः तानानानाः भूतान्यम् । বিরাটমভিনন্দন্তমথ মে ভব্তি জ্বর:॥ ৩৬॥

॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ দিশোনশান্তি, শোকেন আদ্ধামারাতীতার্থঃ ॥ ৩০ ॥
• আর্থা শ্বক্রঃ ॥ ৩১ ॥ গোবেশং মহোক সদৃশং ॥ ৩২ ॥ ৩০ ॥ ৩৪ ॥ দ্যামি
খেদং প্রাপ্তেমামি ॥ ৩৫ ॥ রক্ত নেপথ্যং রক্তং গৈরিকা দি ধাতুম্বং ৄ্রীনেপথ্য
মলং কারোস্যাতং ॥ ৩৬ ॥

^{*} গোযু গোবেশমিতাত গোপালবেশ মিতি পাঠঃ ক পুতকে।

সহদেবং ুহি মে বীরং নিত্যমার্য্যা প্রশংসতি। মহাভিজনসম্পন্নঃ শীলবান রুত্তবানিতি॥ ৩৭ ॥ ত্রীনিবেবো মধুরবাগ্ধার্মিকশ্চ প্রিয়শ্চ মে। স তেহরণােষু বােচবাাে যাজ্ঞসেনি ক্ষপাস্থপি ॥ ৩৮ ॥ সুক্মার্শ্চ শূর্শ্চ রাজানগাপানুব্রত:। জ্যেষ্ঠাপচাযিনং বীরং স্বয়~ পাঞ্চালি ভোজয়ে: ॥ ৩৯ u ইত্যুবাচ হি মান কুন্তী রুদতী পুত্রগুদ্ধিনী। প্রব্রজন্তং মহারণ্যং তৎ পরিষ্বজ্য তিষ্ঠতী ॥ ৪০ ॥ তং मुख्री वाष्ट्रकः र्वाषु वर्मम्बद्धान्यम् । সহদেবং যুধান শ্রেষ্ঠন কিন্নু জীবামি পাণ্ডব ॥ ৪১ ॥ যক্তিভিনিত্যসম্পন্নো ৰূপেণাস্ত্রেণ মেধয়।। সোহশ্বস্থো বিরাটস্য পশ্য কালস্য পর্যায্য ॥ ৪২ ॥ অভাকীর্যান্ত বৃন্দানি দামগ্রন্তিমুদীক্ষ্য তম্। বিনযন্ত জবেনাখান মহারাজন্য পশাতঃ ॥ ৪০॥ অপশ্যমেনং জীমন্তং মৎস্যুৎ ভাজিফুমুন্তমম । বিরাটমুপতিষ্ঠত্ত দর্শযন্তঞ্চ বাজিনঃ ॥ ৪৪ ॥ কিন্ন মান মন্যদে পার্থ স্থথিতেতি পরন্তপ। এবং জুঃখশতাবিষ্টা যুধিষ্ঠিরনিমিত্ততঃ॥ ৪৫॥ অতঃ প্রতিবিশিষ্টানি তুঃখান্যন্যানি ভারত। বৰ্ত্তত্তে ময়ি কৌত্তেয বক্ষ্যামি শুণু তান্যপি॥ ৪৬॥

॥৩৭॥৩৮॥ জেষ্ঠাপচায়িনৎ জেষ্ঠ, পূজকং ॥৩৯॥ ৪০॥ বংস চর্মনি-ক্ষপায়াংশেতে ইতি তং বংসচ্মক্ষপাশয়ং ॥৪১॥ ৪২॥ অভ্যকীর্যন্ত্র্যাশীর্যন্ত কৃদ্ধানি শত্রণা মিতি শেষঃ দামগ্রন্থিং অভ্যকং ॥৪০॥ এনং লক্ষ্ণং বাজিনোহ্যান্ দর্শয়ন্তং বিরাটং বিরাটায়॥ ৪৪॥ ৪৫॥ ৪৬॥

যুধ্যমণে বুজংখানি বিবিধান্তত।
শোন্যতি শারীর পমে কিন্তুংখনতঃ প্রমান ৪ ।
ইতি বিরাটপর্কণি কীচকবধপর্কণি দৌপদীভীনক্ষাদে

একোনবিংশোহধারিঃ ॥ ১৯॥

ক্রেপিছাবাত।

অহং সৈরন্ধি বেশেন চরন্থী রাজবেশ্মনি।
শৌচদাশ্মি * সুদেষ্টায়া অক্ষর্ত্তিস্য কার্ণাং॥ ১॥
বিক্রিয়াণ পশ্য মে তীব্রাং রাজপুজ্যাঃ পরন্তপ।
† আত্ম কালমুদীক্তি সর্বেছঃখং কিলান্তবং॥ ২॥
অনিত্যা কিলমত্যানামর্থসিদ্ধির্জ রাষ্টো।
ইতি কৃত্বা প্রতীক্ষামি ভত্বিমুদ্ধণ পুনঃ॥ ৩॥
‡ চক্রবং পরিবর্ত্তিকু হার্থান্চ ব্যুগনানি চ।
ইতিকৃত্বাপ্রতীক্ষামিভত্বিমুদ্ধংপুনঃ॥ ৪॥

ধ্রিমানের জীবৎস্ক ॥ ৪৭ ॥
ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে
একোনবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ১২ ॥

সৈরস্ক্রাবেষেণ সৈরস্ক্রীবেশেণ শেচিদা মুজ্জলাদি শৌচদাধন প্রাদা

^{*} শৌচদান্মীত্যত্ত বশগান্দী তিপাঠঃ ক পুস্তকে।

^{&#}x27; ' পাত্মকাল মুদিক্ষত্তি সর্কে ছঃএং কেলান্তব দিতাত্ত আদেকাল মুক্তি- ' ক্ষন্তী সর্কং ছ্থং কিলান্তব দিতি পাঠঃ ক⁄াস্তকে।

^{়া} চক্রবৎ পরিবর্ত্তন্ত ইত্যত্ত চক্রবৎ কিলমর্ত্যানা ীমতি পাঠঃ ক প্রতকে।

य अव रहर्ज्डि शूक्षमा खरावहः।

शताकार ह रहर् म हे जि ह श्राज्ञिशाला ।

किः सार न श्राज्ञिनी रव जीसमन मृग्निय ॥ १ ॥

मंद्री याँ हि श्रुक्ष ह्या वैधा छ हाशात ।

शाज्यि छ हा शाज्य श्राप्त हा विधा छ हाशात ।

शाज्य छ हा शाज्य श्राप्त हा विधा छ हा शाज्य ।

स्वमा जिज्ञा ह शाज्य श्राप्त हि हा स्वा हि विधा छ ।

हे जि हा शाजि से हुर्या देव मा शाज्य छ हि शाच ।

श्रिष्ठः श्रुद्धः कनः युव श्रुक्ष छ हि ।

हे जि श्राप्य सिष्ठि श्री श्री हि हि स्वा विश्व हि ।

देव रहि श्री । विश्व हि ।

পুক্ষস্য ভূষ্ণোধনাদেঃ যঃ ক,লঃ সএব কাল এব প্রতি পালয়ে কাল মিতি শেষঃ॥ ৫॥ কাল এব সর্বাং বিপরীতং করোতীতাছে দহেতি যেম্বাং দাতার স্ত এব কালেন দরিদ্রাঃ নস্তো যাচকা ভবস্তীতার্থঃ তথাজনান্ হয় পরৈরপি বধান্তি বধান্তে পাতয়িরা জন্যান্ তএবানাঃ পাত্যত ইতি॥ ৬॥ অভিভারো ভূম্বরং দৈবস্য কিমপি নাস্তি॥ জস্যদৈবস্য জ,তবর্তনং অতিক্রমণঞ্চ নাস্তি কেন চিংকৃত মিতি শেষঃ দৈবস্য প্রাধান্য প্রতিপাদক মাধামং প্রতিপালয়ে মানয়ে দৈবাধীনাম্বীতিময়া ন শোচামীতার্থঃ॥ ৭॥ স্থিতমিতি যথারিক্তং সরঃ পুনঃ কালেন পুর্যাত এবং অহমপি পুনঃ ক্রিয়ং প্রপ্রামেটবৈতি নিশ্বমেন পর্যায়িং কাল বৈপরীতাং ইচ্ছনী॥ ৮॥ যস্য প্রসাধোনেতি নিশ্বমেন বিপদাতে নশ্যতি তেন দৈবসৈর আগমে আতৃক্লো, যত্নঃ কার্যাঃ গ্রাহাণীয়াই কার্যারাই কার্যারাই তার্থঃ॥ ১॥ যার্যারাই কার্যারাই কার্যারাই তার্থঃ॥ ১॥ যানুহ কার্যাঃ দিবারস্থারাই পুনর্জ্বপ হোমাদিনা আহর্তব্য ইত্যর্থঃ॥ ১॥

শুগাচ্ছতীতাত্র তিষ্ঠতীতি পাঠঃ ক পুস্তকে। ক প্রতীকে উদয় মিততে প্রতীকা মাদয়মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে। যতু মে কথিতস্যাস্য বচনসা প্রয়োজনম্।
পূচ্চ মাং ছং থিতান্তত্ত্বমপূকী বা ব্রবীমিতে। ১০॥
মহিনী পাণ্ডুপুজানাং ছুহিতা দ্রুপদ্যা চ।
ইমামবস্থাং সংপ্রাপ্তা কা মদন্যা জিজীবিষে॥ ১১॥
কুরন্ পরিভবেৎ সর্বান্ পাঞ্চালানপি ভারত।
পাণ্ডবেষা ক সংপ্রাপ্তো মম ক্লেশা ছরিন্দম॥ ১২।
ভাতৃভিঃ শ্বস্তবিঃ পুলুর্কিছভিঃ পরিবারিতা।
এবং সমুদিতা নারী কা অন্যা ছংথিতা ভ্বেৎ॥ ১০॥
মূনং হি বাল্যা ধাতুর্ম্মা বৈ বিপ্রিয়ং কৃত্ত্।
যাস্য প্রসাদ্দ্রীতং প্রাপ্তামি ওর্ত্বভ ॥ ১৪॥
বর্ণাবকাশমপি মে পশ্ব পাশ্বর তাদৃশ্য।
যাদৃশো মেন ত্রাসীৎ ছংথে পরমকে তদা॥ ১৫॥
অ্যেব ভীম জানাসি যুদ্মে পার্থস্থা পুরা।
সাহং দাসীজ্বাপ্রান সান্তিমবশা লভে॥ ১৬॥

॥ ১০॥ ১১॥ কুর্রনিতি মম মং সম্বন্ধী মরিমিত্তকঃ কচপ্রাহালিঃ আরং ক্লেণঃ পাঞ্বান্ পাঞ্জাঃ প্রান্ সুন্ধান্ প্রাপ্তঃ সন্ , কুরন্ ভীমাদীন্ পাঞ্চালান্ ক্রপানাইশ্চ পরিভাবেং নাণায়েদিভার্থঃ ॥ ১২ ॥ সমুদিতা সমাগুদয়বতাপি এবং কানা হুঃখিতা ভবেরকাপি । আমতামাপানো ন দৃষ্টাএব মমতু দৃষ্টা ইতি মহদাশ্চ্যা মিতি ভাবঃ ॥ ১৩ ॥ বালয়া নভুপ্রে,ঢ়য়া তং বালেয় রুড মপরাধং নশারামি যদ্য প্রশাদাদিদং তুর্নিতং হরবস্থাং প্রাপ্তাশিম ॥ ১৪ ॥ বর্ণাবিকাশো দীপ্তি সংক্রেচঃ বন্যার । কুলিং হরবস্থাং প্রাপ্তাশিম ॥ ১৪ ॥ বর্ণাবিকাশো দীপ্তি সংক্রেচঃ বন্যার । কুলিং ভাবঃ তত্ত্বনে ইদানীং যথাদীপ্তি সংকোলোক্তি ন তথা বনে আদী দিত গ্রুঃ ॥ ১৫ ॥ অবশা পর্যানা ॥ ১৬ ॥

ন দৈবিকমিদং মন্যে যত্র পার্থে। ধনপ্রয়ঃ। ভীমধ্যা মহাবাছরাত্তে শান্ত ইব্নেলঃ ॥ ১৭ ॥ ष्मका। तिक्रि शार्थ आ विनाः ते शिव्तितः। বিনিপাতামমং মন্যে যুয়াকমবিচিন্তিতম্॥ ১৮॥ यमा। यय स्थार शका। युर्या तस्म माः मन।। সা প্রেকে সুখ্মন্যেষামবরাণা বরা সতী॥ ১৯॥ পশ্য পাগুৰ মেহৰম্খা যথা ন। হামি ৰৈ তথা। যুগ্নাস্কৃথি যমাতে যুপালা কালস্য পর্যায় ॥ ২०॥ যগ্যাঃ সাগরপর্যান্তা পুথিবী বশবর্ত্তিনী। আদীৎ সাদ্য সুদেঞ্যা ভীকাহং বশবর্তিনী ॥ ২১ ॥ যান্যাঃ পুরঃমরা হ্যামন্ পৃষ্ঠত শর্মাঘিনঃ। সাহ্মদ্য স্থাদেকারাঃ পুরঃ পশ্চাচ্চ গামিনী ॥ ২২ ॥ इन्छ प्रथः कोट्य भगागरी निर्वाध एए। যা ন জাতুসমুং পিংষে গাতোদ্বর্তনমাত্মনঃ। অন্যত্র কুন্তা। ভদ্র- তে সা পিনম্বাদ্য চন্দন্ম । ২৩॥ পশা কৌত্তেষ মে পাণী যৌ নৈবাৎ ভূহ্তিং পুরা। ইত্যসা দর্শযামাস কিণবন্তৌ করাবুতৌ ॥ ২৪ ॥ বিভেমি কুন্তা। যা নাহং যুগ্মাকং বা কদাচন। সাদ্যাপ্রতো বিরাট্স্য ভীতা তিষ্ঠামি কিন্ধরা । ২৫ ॥ ¹ কিং নু বক্ষ্যতি সম্রাট্ মাং বর্ণকঃ স্থক্তো ন বা। নান্যপিউ হ মৎসাস্য চন্দ্রণ কিলুরোচতে ॥ ২৬ ॥

প্রাদৈবিকং ন কিন্তু দৈবিকমেব ॥ ১৭ । বিনিপাতং পরাভবং ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ পুরাকিণবন্তো নৈবাভূতাং কিন্তুদানীমেব জাতা বিভার্থ: ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ বর্ণকো বিলেপনং বর্ণকালালে জ্রীভূচন্দ্রের বিলেপনে ইতি মেদিনী বর্ণকোজ্রী বিলেপন মিতামরঃ ॥ ২৬ ॥

বৈশন্দায়ন উবাচ

সা কীর্ত্যন্তী ছুংখানি ভীমদেনস্য ভামিনী।
ক্রুরোদ শনকৈঃ কুঞা ভীমদেনমুদীক তী॥ ২৭॥

সাবাস্পকলবা বাচা নিশ্বসন্তী পুনঃ খুনঃ।

হুদয়ং ভীমদেনস্য ঘট্টযন্তীদমন্ত্রবীৎ ॥ ২৮॥

* নাল্পং কৃত্ত ম্যা ভীম দেবনাং † বিপ্রিয়া পুরা॥
অভাগ্যা যকু জীবামি কর্ত্তব্য সতি পাণ্ডব॥ ২৯॥

বৈশ্লায়ন উবাচ

ততন্তন্যাঃ করো স্থক্ষো কিণবন্তো রুকোদরঃ।
মুখমানীয় বৈ পজ্ঞা রুরোদ পরবীরহা। ৩০।
তৌ গৃহীত্বা চ কৌত্তেয়ো বাস্পামুৎস্ক্য বীর্যাবান।
ততঃ পরমত্ব খার্ভ ইদ্প বচনমন্ত্রনীৎ। ৬১।
ইতি বিরাটপর্কাণি কীচকবধপ্রকাণি ফৌপদীভীমসম্বাদে
বিংশোহধ্যায়ঃ। ২০।

ভীম উবাচ।
ধিগস্ত মে বাস্তবলং গান্তীবং ফাল্গেনস্য চ।
যতে রক্তো পুরা ভূত্বা পাণী কুতাকিণাবিমৌ ॥ ১ ॥
॥২৭ ॥ বাষ্পকলরা বাষ্পেণ গ্রকাদরা মঞ্জুলয়া বা ঘউরভী কম্পারতীব ॥২৮ ॥
কর্তব্যে মর্তব্যে কু হিংসারা মিতাস্য রূপং ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥
ইতি বিরাট পর্কাণ নৈলক্তীয়ে ভারত ভাবদীপুে
বিংশোধ্যারঃ ॥ ২০ ॥

112 11

^{*} নাম্পমিতাস্য প্রাক্রোপন্থা বাচেতি পাঠঃ ক প্রতকে।
ক বিপ্রিয় মিতা ত কিল্বিষ্মিত পাঠঃ ক প্রতে ।

সভায় স্ত বিভাটিশ্য ক্রোমি কদনং মহৎ। তত্রমে কারণং ভাতি কৌতেয়ে যং প্রভীক্ষতে। ২। অথবা কীচকস্যাহ্ পোথ্যামি পদা শিরঃ। ঐশ্বর্যামদমন্ত্রদা জীড়ারিব মহাদিপঃ॥ ৩॥ অপশ্যুৎ যাং যদা ক্লুফেকীচকেন পদাহতান্। **उद्वितः इर हिकी्र्धामि मर्ट्यानां ० कन् । ४ ॥** তত্র মাণ ধর্মারাজস্ত কটাক্ষেণ ন্যবার্ষং। তদহং তস্য বিজ্ঞায় স্থিত এবাস্মি ভাবিনি॥ ৫॥ যচ্চ রাফী ব্রহাবনং কুর্ণামবধশ্চ যঃ। स्रुर्याधनमा कर्नमा भक्रानः स्मोवनमा **छ ॥** ७ ॥ তুঃশাস্থ্য পাপ্স্য যুদ্ধান হাত্ শিরঃ। ত্যে দৃহতি গাত্ৰাণি হৃদি শলামিকার্পি ত্যু। মা ধর্মাং জহি সুভোগি ক্রোধং জহি মহামতে॥ १ ॥ ইমঞ্চ মুপালন্তং ছতো রাজা যুধিষ্ঠিরঃ। भृप्याम्बनि कलाानि * जून॰ कशा प म जीविडम् ॥ ৮ ॥ ধনঞ্জয়ো বা স্কুশ্রোণি যমৌ বা তনুমধ্যমে। লোকভেরগতেষেয়ু নাহং শক্ষ্যামি জীবিভুন্॥ ৯॥ পুরা স্থকন্যা † মার্য্যাতী ভার্মবং চ্যবনং বনে। বল্মীকভূতং শাম্যুমম্পদাত ভাবিনী ॥ ১০॥

সভায়া মিতি,কারণং প্রাকটাং মাভূদিতি হেডুঃ প্রতীক্ষতে তদেব স্থচয়ন্ মামবেক্ষতে অন্যথা তদানীমের কদনং করোমি কৃতংস্যা দিত্যর্থঃ ॥ ২ ॥ পে,থগ্রামি চূর্ণীকরোমি ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ নাহ্বতং ছিম্বা নানীতং ॥ ৭ ॥ । ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ স্বর্থদাত অনুমূত্রতী ॥ ১০ ॥

^{*} বুনমিতাত কং সমিতিপাঠঃ খ পুস্তকে ।

† ব্য ১১০ ত ভাষ্যতেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

নারাষণী চেন্দ্রদেনা ব্রপেন যদি তে শ্রুতা।
পতিমন্ত্রন্ধৃদ্ধং পুরা বর্ষসহব্রিণ্য। ১১॥
ছহিতা জনকস্যাপি বৈদেহী যদি তে শ্রুতা।
পতিমন্তর্গু দীতা মহারণানিবাসিন্য। ১২॥
রক্ষমো নিগ্রহ্ণ প্রাপা রামস্য মহিনী প্রিয়া।
ক্রিশ্যমানাপি স্কুশ্রোণী রামমেবান্তপদ্যত ॥ ১৩॥
লোপামুদ্রা তথা ভীক্ষ ব্যোরপস্মান্ত্রা।
ভাগস্ত্যমন্ত্রাদ্ধিন্তা কামান স্ক্রান্যান্ত্রান্ ১৪॥
ছ্যমণ্ডেনন্স্তং বীরং সত্যবন্তমনিন্দিতা।
তথা জ্মান্তাবিরণা যনলোকং মন্স্রিনী ॥ ১৫॥
যথৈতাঃ কীর্ত্তিতা নার্য্যো রূপ্রতাঃ পতির্তাঃ।
তথা জ্মপি কল্যানি সর্কোং সম্যান্তা গুণৈঃ ॥ ১৬॥
মান্রিং ক্ষম কালং জ্বণ * মাস্যর্ক্ষণ সাম্যাত্র্য।
পূর্বে ত্র্যোদ্র্যে বর্ষে রাজ্ঞা ভবিষ্যাসি॥ ১৭॥
স্থান্ত্রান্ত্রা

আর্তিয়তন্ত্রা ভীম ক্তং বাস্প্রিমাক্ষণম্।
অপার্যন্ত্রা তুংখানি ন রাজানমুপালতে ॥ ১৮॥
কিমুক্তেন ব্যতীতেন ভীমসেন মহাবল।
প্রভ্যুপস্থিতকালস্য কার্য্যস্যানন্তরে ভব॥ ১৯॥
মমেহ ভীম কৈকেরী ক্রপাভিভবশক্ষরা।
নিত্যমুদ্ধিজতে রাজা কথং নেয়াদিমানিতি॥ ২০॥।

[॥] ১১॥ ১২॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫॥ ১৬ ॥ মাদীবাং অনীবাং অম্পামতার্থঃ
স্প্রপেতি সমাসঃ ক্ষম ক্ষমত্ব মাসার্কক্ষেতি সারিং মাস মিতার্থঃ॥ ১৭॥ ।
॥ ১৮ ॥ অন্তরঃ আ্সারঃ সরদ্ধেত্ব, ইতি বাবং ॥ ১৯॥ কৈকেয়ী
স্থানেকাংনিয়াৎ ন গাছেং॥ ২০॥

^{*} মাসমৰ্দ্ধপদীয়ত মিতাত্ত মাস মধাৰ্দ্ধদীয়ত মিতি পাচঃ ক পুস্তকে।

তস্যা বিদিয়া তং ভাবং স্বয়ং চান্তদর্শনঃ। কীচকোইয়ং সুতুষ্টাত্মা,সদা প্রার্থয়তে হি মাম্॥ ২১॥ তমহং কুপিতা ভীম পুনঃ কোপৎ নিষ্ম্য চ! অব্রুবর্ণ কামসমূচমাত্মাত্মানং রক্ষ কীচক ॥ ২২ ॥ গন্ধার্বাণামহ তার্যা পঞ্চানা মহিষী প্রিয়া। তে ত্রাং নিহ্ন্যুঃ কুপিতাঃ শূরাঃ সাহ্সকারিণঃ * ॥ ২৩ ॥ এবসুক্তংস দুর্ফীত্মা কীচকঃ প্রভাবাচ হ। নাহং বিভেমি দৈর্ফ্সি গন্ধর্বাণাং শুচিস্মিতে ॥ ২৪ ॥ শতং শতসহস্রাণি গন্ধর্বাণামহং রণে। সমাগতং হনিধ্যামি স্বং ভীক্ল কুরুমে ক্ষণম্ ॥২৫ ॥ ইত্যক্তে চাক্রবং † স্থতৎ কামাতুরমহং পুন:। न युः প্রতিবলস্তেষাং গন্ধবাণাং যশস্থিনাম্॥ ২৬॥ ধর্মেন্ট্রামি সতত^ কুলশীলসম্বিতা ৷ নেচ্ছামি কঞ্চিদ্বধান্তং তেন জীবসি কীচক ॥ ২৭॥ এবমুক্তঃ স তুউাত্মা প্রাহ্মৎ স্থনবন্তদা ! অথ মান তত্র কৈকেয়ী প্রৈষয়ৎ প্রণয়েন তু॥ ২৮॥ তেনৈৰ চোদিত। 🛨 পূৰ্বাং ভ্ৰাতৃপ্ৰিয় চিকীৰ্যয়া। স্থরামানয় * দৈরন্ধি কীচকস্য নিবেসনাৎ॥২৯॥ তং ভাবং রাজাহস্যাং কীচক স্কতায়াং বিরক্তঃ স্যাদিত্যেবং রূপমভি প্রায়ং ॥२১ ॥२२ ॥२० ॥२৪॥ ক্ষণং স্বীকারং ॥२৫ ॥२७॥ বধান্তং ' वधामानः ॥ २९ ॥ २৮ ॥ २৯ ॥

^{*} সাহসকারিণ ইত্যত্ত সাহসকারিণ মিতিপাঠঃ ক প্রস্তকে।

 [†] স্তমিতাত্ত মৃদ্রমিতিপাঠঃ খ পুস্তকে।
 া গোদিতেতাত্ত দেশিতেতিপাঠঃ খ পুস্তকে।

^{*} দৈরদ্ধীত্যত্ত কল্যাণীতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

স্তপুত্ৰস্ত তাং দৃষ্টা মহৎ সান্ত্ৰস্বৰ্ত্যং।

সাত্ত্বে প্রতিহতে কুদ্ধঃ পরামর্শমনাভব্ত ॥ ৩०॥ বিদিত্বা ত্রস্য সঙ্কপেং কীচক্স্য ছুরাত্মনঃ : তথাহং রাজশরণ্ জবেনৈব প্রধার্বিতা। ৩১। সন্দর্শনে হু মাপ রাজ্ঞ স্তপুত্রঃ পরামূশৎ। পাত্যিত্বা সহুষ্টাত্মা পদাহং তেন তাডিতা॥ ৩২॥ প্রেক্ষতে আ বিরাটস্ত কক্ষণ্ড বহুবো জনাঃ। র্থিনঃ পীঠমর্দ্ধাশ্চ হস্ত্যারোহাশ্চ নৈগমাঃ॥ ৩০॥ উপালকো ময়া রাজা কক্ষণাপি পুনঃ পুনঃ । ততো ন বারিতো রাজ্ঞা ন তদ্যাবিনয়ঃ ক্বত ॥ ৩৪ ॥ त्यार्थि ताख्वा विताष्ट्रिंग कीहरका नाम मात्रिं। ত্যক্তধর্মা নৃশংসশ্চ নরস্ত্রীসন্মতঃ প্রিয়। ৩৫॥ শূরোহভিমানী পাপাত্ম! সর্বার্থেষ্ট মুগ্ধবান। দারামধী মহাভাগ লভতেহথান বহুনপি॥ ৩৬॥ হরেদপি চ বিস্তানি পরেষাং ক্রোশতামপি! ন তিষ্ঠতি আ সম্মার্গেন চ ধর্মাৎ * বুভূষতি ॥ ৩৭॥ অবর্ত্তরৎ কৃতবান সাত্তং প্রিয়বাদং ॥ ৩০ ॥ রাজশরণং রাজাধিটিতৎ স্থানং ॥৩১॥ সন্দর্শনে প্রত্যক্ষং ॥৩২॥ পীচমর্দাঃ রাজপ্রিয়াঃ পীচমর্দ্ধেতি। धूरकेमा। बार्या । व्यवस्थित कि समिती निर्मा । नाम्बा निर्माण নৈগমংস্যাত্রপনিষদ্বানিজোর্নাগরেপিচেতি মেদিনী ॥৩৩॥তত্ত্র কীচক্ষ্যাঃ বিনয়ঃ ন কৃতঃ ন নাশিতঃ ॥ ৩৪ ॥ সার্থি যুদ্ধে সহায়ঃ নরস্করাজঃ ক্রিয়ঃ স্থানে কারাক্ত সংমতঃ সম্বন্ধিবাৎ । ৩৫ ॥ তর্হিকথং ভ্রোরিপ্রিয়ং ভদ্বধেন

শিক্ষতি॥ ৩৭॥

' কর্ত্তব্য মিত্যাশক্ষ্যাক শূর ইতি মুগ্ধবান্ মৌচ্যং গাতবান্ দারমণী তবৈব ', স্ত্রিয়ং মাং স্পৃষ্টবান্ ॥ ৩৬ ॥ তিষ্ঠতে ,স্থিরো ভবতি বৃতু্ধতি প্রাপ্ত

^{*} বৃত্ধতীত্যত্ৰ চিকীৰ্ষতীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

পাপারা পাপভাবশ্চ কামবান্বশারুগঃ। অবিনীতশ্চ ছুফীরে প্রাগ্রাতঃ পুনঃ পুনঃ ॥ ৩৮ ॥ पर्मात पर्मात इन्याखिया कशाश कीविज्य। তদ্ধে যত্মানানা মহান্ধৰ্মো নশিষ্যতি ॥ ৩৯॥ সময় রক্ষমাণানাং ভাষা। বোন ভবিষাতি। ভার্যাবাং রক্ষ্যমাণ্যাশ প্রজা ভবতি রক্ষিতা ॥ ৪০ ॥ প্রজায়ান রক্ষামাণায়ান আত্মা ভবতি রক্ষিতঃ। আবা হি জায়তে ত্যাং তে জায়াং বিছুধাধাং ॥ ৪১॥ ভর্ত্তা তু ভাষ্যযাত্মক্যঃ কথং জারান্মদেরে। বদতাপ বর্ণধর্ম ব্রাহ্মণানামিতি প্রতঃ ৫ ৪২॥ कि खिराना निमा थएकी नानाः भक्त निवई वार। পশ্যতো ধর্মরাজস্য কীচকো মাৎ পদাবধীং॥ ৪৩॥ তব চৈব সমক্ষে বৈ ভীমকেন মহাবল। স্বা হাহ্ পরিত্রাতা তত্মাদেবার।জ্জটাস্থরাৎ ॥ ১৪ ॥ জযদ্রথং তথৈব স্বমজৈষীর্ভাতৃতিঃ সহ। জহীমমপি পাপিষ্ঠং যোহয় মামবমন্তে ॥ ৪৫॥ কীচকো রাজবালভ্যাচ্ছোক্রন্মম ভারত। তমেবণ কামন্মত্তণ ভিন্ধি কুন্তুমিবাশ্মনি ॥ ৪৬ ॥

॥ ৩৮ ॥ দশনে দশনে প্রতি দশনং সএবং রাজবল্লভঃ কামাআচ যদি মাং
হন্যা তাড়ায়েং তোডনভয়াদা হহং যদি জীবিতং জহাাং তত্ত হি ধর্মে
যতমানানাং ভবতাং ধর্মো ন শিষ্যতি শৌর্ষং ব্যর্থং স্যাদিতার্থঃ ॥ ৩৯ ॥ ।
এতদেবাহ ধময় মিতি সময়ং ময়্যাদাং ত্রেয়াদশ বর্ষরপাং ভার্য্যাপোষণীয়া
ন ভবিষ্যাতি ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ জায়াং আবিভ্রেৎ বদতাং কথয়তাং ব্রাহ্মণানাং
মুখারে বর্ণ ধর্মান্ট গ্রুতঃ ॥ ৪২ ॥ ৪০ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥

যো নিমিন্তমনর্থনাং বহুনাং মম ভারত।
তিপেক্জীবন্তমাদিতাঃ প্রাতিরভুদিযিয়তি ॥ ৪৭ ॥
বিষমালোজা পাদ্যামি মা কীচকবশং গ্রম্!
শ্রেযো হি মরণং মহুং ভীমদেন তবাপ্রতঃ ॥ ৪৮ ॥
বৈশলালন উপত।
ইত্যুক্ত্বা প্রাক্তদং কৃষ্ণা ভীমদ্যোরঃ সমাজিতা।
ভীমশ্চ তাং পরিষ্ক্র্য মহুং সান্ত্ব প্রযুক্ত্য চ ॥ ৪৯ ॥
আখাস্যিত্বা বহুশো ভূশমার্ভা স্থমধ্যমান্থ!
হেতৃতন্ত্বার্থসং যুক্তৈর্শ্বিচাভি ক্রপদান্ত্রামান্ধ।
শ্রম্জ্য বদনং তস্টাঃ পানিনাক্রস্মাকুলম্।
কীচকং মনসাগচ্ছং স্ক্রনী পরিসংলিহন্।
উবাচ চৈনাং ছুংখার্ভাং ভীমঃ ক্রোধ্বশংগতঃ ॥ ৫১ ॥

বিংশতিতমোহধ্যার ॥ ২১ ॥

ভীমদেন উপাচ তথা ভাদ্রে করিষ্যামি যথা ত্বং ভীকু ভাষ্দে। অন্য তং স্থদ্যিষ্যামি কীচক^ সহবান্ধবমু॥ ১॥

অভুদেরিয়তি অভুদেষাতি ॥ ৪৭ ॥ কীচকবশং মাগমং ন গচ্ছেরং ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ হেতু ভি মুক্তিভিং ভত্তাথৈ ইথাৰ্থ ভূতিশ্চাথেঃ সংযুক্তা- । নিতিঃ ॥ ৫০ ॥ আগচ্ছেৎ স্মৃতবান্ স্কিনী গল্যো রভান্তরে প্রিন্থলিছন্ জিহ্বরা প্রামৃশন্ ॥ ৫১ ॥

ইতি বিশ্বাট পৰ্ব্যনি নৈলকণ্ঠীয়ে ভাৰত ভাবদী প্ৰ একবিংগোহধ্যায়ঃ ॥ ২১ ॥

অস্যাঃ প্রদোধে শর্ক্ষ্যাঃ কুরুত্বানেন সঞ্চন্। ছৃঃখং শোকঞ্ নিধু য় যাজ্ঞ সেনি শুচি সিতে । ২। যৈষা ন্র্রনশালেহ মৎস্যরাজেন কারিত।। দিবার্ত্র কন্যা নৃত্যন্তি রাত্রৌ যান্তি যথাগৃহম্ ॥ ৩॥ তত্রান্তি শয়নং দিবাং দুঢ়াঙ্গং স্কুপ্রতিষ্ঠিতম্'। তত্রাক্ত দর্শাযধ্যামি পূর্বব্রেতান পিতামহান্। ৪॥ यंशा ह जार नं शरभायुः कूर्वानारसन मिष्टम् । कूर्याञ्चर। च्र- कलाानि गर्भा मिनिहिट्डा ভবে ॥ ८ বৈশস্থায়ন উবাচ। অথা তৌ কথ্যিত্ব। তুব।স্পাযুৎস্ঞ্য দুঃখিডৌ ॥ রাজিশ্বেং তমত্যপ্রশ ধার্যামাসতুক্দি। ৬॥ তস্যাৎ রাজ্যাং ব্যতীতায়াং প্রাতরুপায় কীচকঃ। शञ् ताककूलारेयव रहोलहीसम्मखवी १॥ १॥ সভারাৎ পশাতো রাজ্ঞঃ পাত্যিত্বা পদাহহনম। ন চৈবালভদেত্রাণমভিপনা বলীয়দা। ৮॥ প্রবাদেনেহ .মৎস্যানাপ রাজা নামায্যুচাতে। অহমেব হি মৎস্যানা । রাজা বৈ বাহিনীপতিঃ ॥ ৯ ॥ মাং স্থুখং প্রতিপদাস্থ দাসো ভীরু ভবামি তে। অহায় তব সুশ্রোণি শতং নিষ্কান্দাম্যহম্॥ ১০॥ রথং চাশ্তরীযুক্তমস্ত নৌ ভ্রীক্র সঙ্গমঃ ॥ ১১ ॥

প্রদোষে রজনী মুখে সংগতং সংভাষণং নির্ধ অপ্রকাশ্য ॥ ২॥ ৩॥ দৃঢাক কান্ত র্ফলক্ষয়ং ॥ ৪॥ ৫॥ ৩॥ ৭॥ অহনং হতবান্ ॥ ৮॥ ৯॥ ॥ ১০॥ নৌতাবয়েঃ ॥ ১১॥

জেপিছালাত।

এবং মে সমযন্ত্রনা প্রতিপান্তর কীচ্ক।
ন ত্বাং সথা বা ভ্রাতা বা জানীয়াৎ সঙ্গতং মযা॥ ১২॥
শ অববোধান্ধি ভীতান্মি গন্ধর্নবাণা যশন্ত্রনাম্।
এবং মে প্রতিজানীহি ততোহহং বশগা তব॥ ১৩॥
কীচক উবাচ।

এবনেতৎ করিষ্যামি যথা সুশ্রোণি ভাষদে।

একো ভক্তে গমিষ্যামি শূন্যমাবস্থৎ ত্ব ॥ ১৪ ॥

সমাগমার্থং রস্তোর ত্বা মদনমোহিতঃ । ।

যথা ত্বং † নাবভোৎস্যতি গ্রাক্ষি: সুর্যাবর্চসঃ ॥ ১৫ ॥

ক্রেপ্রাব্চ।

যদেতন্ত্রশাগারং সংসারাজেন কারিতম।
দিবাত্রকন্যা নৃত্যন্তি রাত্রৌ যাক্তি যথাপৃহম্॥ ১৬॥
তমিত্রে তত্র গচ্ছেখা গন্ধবিধ্যেন জানতে।
তত্র দোষঃ পরিক্ষতো ভবিষ্যতি ন সংশ্যঃ॥ ১৭॥
বিশাপাধন উরাচ।

তমর্থং প্রতিজপন্তাঃ ক্ষাবাঃ কীচকেন হ।
দিবসার্দ্ধি সমভবন্ মাদেনৈব সমং নূপ ॥ ১৮॥
† কীচকোহথ গৃহং গত্বা ভূশং হর্ষসান্ধিতঃ।
দৈরক্ষীক্রপিণ মূঢ়ো মৃত্যুণ তং নাববুদ্ধবান্॥ ১৯॥

সময়ং সংকেতং প্রতিপদাস্থীকুৰু॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ দিবসার্দ্ধং অহোরাতার্দ্ধং দিনং 'এক মাপি মাদেন সমং ওৎ ক্তাদভূৎ । ১৮ ॥ ১৯ ॥

* অববোধা দ্বিভীতান্দীতাত্ত্ব অনুপ্রবাদান্ত্রীতান্দীতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

ক ন্যবভোগন ত্তীতাত্ত্ব নৈবপলোয়ুরিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কীসকো ২থগৃহংবারা ইত্যাস্য প্রাকৃ ততঃ সাভীম্যেনস্য তম্বং প্রত্য বেদম্দিতি পাঠঃ ক পুস্তকে অধিকো মুর্ততে। शका खत्र गारला यु ता मिक्तः म विरम्प कः । অলঞ্জে তদাস্থানং সম্বরঃ কামমোহিতঃ ৷ ২০ ৷ उमा उर क्रांचः कर्म कार्ला मीर्च हेरा बरर 1 অনুচিন্তয় হৃশ্চাপি তামেবায় হলোচনায়॥ ২১॥ আসীদভাধিকা চাপি ত্রীঃ প্রিয়ং প্রাযুক্ষতঃ। নির্ব্বাণকালে দীপদ্য বন্তীমিব দিধকতঃ ॥ ২২ ॥ क्रुडमः প্রভাষস্থদায় कीहतः कामरमाहिडः। নাজানাদিবদ< যানুং•চিত্যানঃ স্মাগ্ম্য । ২৩ k ততস্ত্র জৌপদী গন্ধ তদা ভীমং মহানসে। উপাতিষ্ঠত কল্যাণী কৌরব্যুৎ পতিমন্তিকং ॥ ২৪॥ তমুবাচ স্থাকেশান্তা কীচকস্য মর্যা কুতং। 🌣 সঙ্কেতো নর্ত্তনাগ রে যথাবোচঃ পরস্তপ ॥ ২৫॥ শূন্যং সন্ত্রাগার্মাগ্মিধ্যতি কীচকঃ ! . একো নিশি মহাবাহো কীচকং তং নিস্থদ্য ॥ ২৬ ॥ তং স্থতপুত্র ে কৌন্তেষ কীচকং মদদর্পিত্য। গত্বা তন্নর্তনাগারং নিজ্জীবং কুরু পাণ্ডব॥২৭॥ দর্পাচ্চ স্থতপুত্রোহনৌ গল্পকানব্যন্তে। ত্ত ত্বং প্রাহরতাং শ্রেষ্ঠ হ্রদা লাগ মিবোদ্ধর †॥ ২৮॥ অফ্র ছঃখাভিভূতায়। মমমার্জ স্ব পাণ্ডব। আত্মনশৈচৰ ভদ্ৰু তে কুরু মানং কুল্ম্য চ ॥ ২৯॥

1 ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ কৃতসংগ্রতারঃ কৃতবিশ্বাসঃ নাজানাৎ ন জ্ঞাতবান্ । ১০ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ক্রনাৎ ব্যুনা ক্রদাৎ নাগং কালিরং ক্ষো যথা উদ্ভবান্ তথ্য মেনমিছ লোকাকুরে পাত্রেতি ভাবঃ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥

^{*} সঙ্কেত ইতাত্ত সন্ধম ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
হ্রদারাগা মিবোদ্ধরেতাত কলং নাগাই গোদ্ধরেত পাঠঃ ক পুস্তকে।

जीम छेराह।

স্বাগতন্তে বরারোহে যন্নাং বেদযদে প্রিয়ন।
ন হান্যং কিঞ্জিদিজ্ঞানি সহায়ণ বরবর্ণনি ॥ ৩০ ॥
যা মে প্রীতিস্ত্বাখ্যাতা কীচকস্য সমাগমে।
হত্বা হিডিয়ং সা'প্রীতির্মাসীদ্বরবর্ণনি ॥ ৩১ ॥
সতাং জ্রাতৃংশ্চ ধর্মঞ্চ পুরস্কৃতা ত্রবীনি তে।
কীচকং নিহনিষ্যামি রুতং দেবপতির্মথা ॥ ৩২ ॥
ত> গহ্বরে প্রকাশে বা পোথ্যিষ্যামি, কীচকম্ ।
অথ চেদপি যোৎস্যন্তি হিংসে মংস্যানপিশ্রেবন্ ॥ ৩০ ॥
ততো তুর্যোধনং হত্বা প্রতিপৎস্যে বস্তম্বর্যে ।
কামং মংস্যমুপাস্তাশ হি কুত্তীপুজ্রো যু্ধিন্টিরং ॥ ৩৪ ॥
ক্রোপহান্ত।

যথা ন সংভাজেখাস্ত্রুৎ সতাং বৈ মৎকৃতে বিভো। নিগুল্ফুং তথা বীর কীচকং তং নিস্তুদয় ॥ ৩৫ । ভীম উবাচ ।

এবমেতৎ করিষ্যামি য থা ত্বং ভীক্স ভাষতে।
অন্যতং স্থানিষ্যামি কীচক শহরাক্সবম্ ॥ ৩৬ ॥
অনুশ্যমানস্তম্যান্য তমস্থিন্যামনিন্দিতে।
নাগো বিল্লমিবাক্রম্য পোথ্যিষ্যাম্যহং শিরঃ।
তলভ্যামিচ্ছতস্তম্য কীচক্স্য ছুরাত্মনঃ॥ ৩৭ ॥

বৈশম্পান্ন উব্যাহ

ভীমোহথ প্রথমং গত্বা রাত্রী চ্ছন্ন উপাবিশং। মূগং হরিরিবাদৃশ্যঃ প্রভ্যকাশকত কীচকম্॥ ৩৮॥

। ৩০ । ৩১ । ৩২ । ৩৩ । ৩৪ । ৩৫ । ৩৬ । তদ্য তেনা দুশাম্নঃ নাগো হন্তী অলভ্যাং স্থা ৩৭ । ৩৮ ।

কীচক শ্চাপ্যলক্ত্য যথাকামমুপাগমং। তা ে বেলাং নর্তুনাগারং, পাঞ্চালীসঙ্গমাশ্যা। ৩৯। মন্যানঃ, স সক্ষেত্যাগারং প্রাবিশক্ততং। প্রবিশ্য'চ স তদ্বেশ্য তমসা সংরুতং মহৎ ॥ ৪০ ॥ পূর্বাগতং গতস্তত ভীমমপ্রতিমৌজশন্। একাস্তাবস্থিত টেনমাসসাদ স্বত্ন্যতিঃ ॥ ৪১ ॥ শ্বানং শ্বনে তত্ত্র * মৃত্যং সূত্রঃ প্রাম্ধং। † জাজ्বল্যমান । কেপ্রেন কুঞ্চাধর্ষনজেন হ ॥ ৪২ ॥ উপস্পাম্য চৈবৈনং কীচকঃ কামমোহিত:। হর্ষোনাথিতচিত্তাত্মা স্বাধানোহভাভাষত। ৪০॥ প্রাপিতং তে ম্যা বিত্তং বছরপ্রনন্তকম্। যৎক্রতং ধনরত্নাত্য দাসীশতপরিচ্ছদম্॥ ৪৪॥ ৰূপল।বণ্যযুক্ত।ভিৰ্য বতীভিরণক্ষ তম্। গৃহণ চান্তঃপুরণ সুক্র ক্রীডারভিবিরাজিত্য। তৎ সর্কাণ সমুদ্দিশ্য সহসা সমুপাগতঃ॥ ६৫॥ অক্ষাঝাং প্রশৎসন্তি সদা গৃহগতাঃ ব্রিয়ং। স্বাসা দর্শনীয়ক নান্যোহন্তি ত্বাদৃশঃ পুমান্॥ ৪৬॥

॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪০॥ সংকৃতং যদজিত ধনাদি তংসর্কাথ তে উভাং প্রাপিতং দত্ত মিতি সম্বন্ধঃ ॥ ৪৪॥ অতঃপরং বাং সমুদ্দিশ্যাহং অতাগতোমি ॥ ৪৫॥ প্রশংসন্তি বৃষ্ঠীত হেতোরিভাভি প্রান্ধঃ ॥ ৪৬॥

^{*} মৃত্যাং হাউ: পরাম্যদিতাত ক্তপুল্র: পরাম্য দিতি পাঠ: ক পুস্তকে।

া জাত্বলামান মিত্যাল প্রাক্ পতকঃ পাত্রকং দীন্তং সিংহং কুত্র পশুব্যোতি পাঠ: ক পুস্তকে।

ভীম উবাচ।

দিন্ট্যা ত্রং দর্শনীযোহসি দিন্ট্যাত্মানং প্রশাস সি।
সদৃশস্ত ত্রা স্পর্শঃ পৃন্ধপুর্বো ন-কর্ছিচিৎ ॥ ১৭ ॥
স্পর্শং বেৎসি বিদগ্ধস্তৃং কামংর্শ্ম বিচক্ষণঃ।
স্ত্রীণাৎ প্রতিকরো নান্ত্রংসমঃ পুরুষস্তিত্ব ॥ ১৮ ॥
বৈশস্পায়ন উবাচ।

ইত্যুক্তা তং মহাব ছভীমো ভীমপরাক্রমঃ। महरमार्थका कोर्छमः व्यक्रमाममुबाह हू ॥ ४३ ॥ । षाना पार जिनी भाभिरक्षामान् मया जूरिं। দ্রক্ষাতেহদ্রিপ্রতীকাশ্র সিংহেনের মহারিপম্। ৫০॥ নিরাবাধা ত্রি হতে দৈরক্ষী বিচরিষ্যতি। সুথমেব চরিষ্যন্তি দৈরক্ষ্যাঃ পত্যংসদা ॥ ৫১ ॥ ততো জগ্রাচ কেশেষু মাল্যবৎস্ক সহাবলঃ। म (कर स्यू लेश मृत्ये। यत्न विना श्वः ॥ ६२ ॥ আক্ষিপ্য কেশান বেগেন বাহেব। গ্রাছ পাওবম্। বাছযুদ্ধ^ তথোৱাদীৎ ক্রুদ্ধগোর্মর/সশহযোগ্য ৫০ ৷ वगरस वानिভाद्दि । स्वानिक निष्कर वानि । কীচকানাস্ত মুখ্যস্য নরাণামূত্রমস্য চ ॥৫৪॥ বালিস্থ জীবযোর্জালোঃ পুরেব কপিসিংহযোঃ। व्यत्तामात्रामा अन्दर्भा श्राम्य तकरेष वित्यो ॥ देव ॥ * ততঃ সংপ্রেক্ষ্য মুদিতৌ পৃঞ্চশীর্ষাবিবোরগৌ। নখদ প্রাভিরন্যোন্যং জন্ম হুঃ ক্রোধমূর্চ্চিতৌ ॥ ৫৬ ॥

। ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫৬ ॥ বিশ্বিতাছেওতা ইন্তিনী নিমিত্তং ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ ৫৬ ॥

^{*} ততঃ সংপ্রেক্যে দিতাবিতাৰ ততঃ সরুদ্দা ভুজাবিতি পাঠঃ খ পুত্তকে।

(वर्णनाजिल्हा जीमः कीहरकन वलीयमा । স্থিরপ্রতিজঃ স রণে পুদার চলিতঃ পদ্ম ॥ ৫: ॥ তাবন্যোনা সমাশ্লিষা প্রকর্ষতৌ পরস্পারম। উভাবিপি প্রকাশেতে প্রক্ষৌ রুষভাবিব॥ ৫৮॥ তযোরাদীৎ সুতুমুল: সম্প্রহার: সুদারুণ: i নখদপ্রায়ুধবভোল্য।ঘ্রযোরিব দুগুযো: ॥ ৫৯ ॥ অভিপত্যাথ বাছভাংে প্রত্যুদ্দমধিতः। মাতক ইব মাতকণ্ প্রভিন্করটামুখ্য ॥ ৬০ । স চাপ্যেনং তলা ভীমঃ প্রতিজ্ঞাহ বীর্যবান । তমাক্ষিপৎ কীচকোহথ বলেন বলিনায়র ।। ৬১॥ তযোতু জবিনিপোশাতু ভযোর্বালনো হল।। শकः नमভवरम्बादता दवन एका छे गरमा मूर्वि ॥ ७२ ॥ অথৈনমাক্ষিপ্য বলাকা, श्रमध्या ब्रकानतः। धृनयामाम र्वरागन वायुम्ह ७ देव क्रमम् । ७०॥ म छोरमन পরाমৃखो इतिता विनन तत्। প্রাম্পনত যথা প্রাণং বিচকর্ষ চ পা ওবম । ৬৪ । क्षेत्रमा शिल करेक्षव (कायाक्रलभार क्रिका)। কীচকো বলবানু ভীমং জানুভ্যামাক্ষিপদ্ধবি ॥ ১৫ ঃ পাতিতো ভূবি ভীমস্ত কীচকেন বলীয়সা। উৎপপাতাথ বেগেন দ্রেগাণিরিবাস্তকঃ॥ ৬৬॥ স্পৰ্দ্ধয় চ বলোন্নতৌ তাবুভৌ সূত্ৰপাণ্ডবৌ। निभौएथ পर्याक र्षे छ। विलित्नो निष्क्रत ऋल ॥ ७। ॥

॥ ৫৭ ॥ ৫৮ ॥ ৫৯॥ করটামুখং গ্রন্থকছং মদনির্গম ছানং করটো গজগত্তেদ্যা দিতি মেদিনী ॥৬০॥৬১॥৬২॥॥৬০॥৬৪॥আকলিতং আফোছং ক্রতপ্রং চদিত ছান্থ্যধাদ্যা তথাছিতং ॥৬৫॥৬৬॥৬৭॥

ততস্তুবনশ্রেষ্ঠং প্রাকম্পত হুত্র্যান্ত। বলবচ্চাপি দংকুদ্ধাবন্যোগ্যং প্রতিগর্জ্জতঃ। ৬৮॥ তল। गाः म वृ जीत्मन वक्षमा जिल्ला वली। কীচকো রোষসন্তপ্তঃ পদান চলিতঃ পদম্ । ৬৯ ॥ মুহ্বন্ত স তে বেগ্ন সহিত্বা ভূবি ছুঃসহম্। বলাদহায়ত তদা সূতো ভীমবলাদিতঃ ৷ ৭০ ৷ ७१ शियमानः विकाय जीमतमतना महावलः। वक्तमानीय (वर्धन ममरेक्रनः विरह्णमम्॥ ५०॥ (काथाविक्छ। विनिश्वमा श्रूनरेक्टन त्रुकामतः। জগ্রাহ জয়তাং শ্রেষ্ঠঃ কেশেম্বের তদ। ভূশন্॥ १२॥ গৃহীত্বা কীচকং ভামো বিররাজ মহাবল:। শাৰ্দ্দুলঃ পিশিতকোজ্জী স্থীক্তেব মহামৃগ্য॥৭৩॥ তত এনং পরিশান্তমুপ্লভা রুকেদিরঃ। যেতি যু: মান বাছভাাং পশুং রশন্যা যথা ॥ ৭৪ ॥ नम्बद्धः गहानामः ভिन्न छतीममञ्जनम् । ভামিষামান স্চির্শ বিক্ষারস্থতেত্**নম্। ৭৫**॥ প্রাপুদ্য ভরসা দে।ভাগে কঁঠাং ভদা রুকোদরঃ। অপাত্যত কুঞ্ব,তনা কোপোপশান্তযে। ৭৬।

॥ ৬৮ ॥ ৬৯ ॥ সহিত্বা সোচ্বাবলাদহীরত বলহীনোতৃং ॥ ৭০ ॥বক্ষসি আনীর আনতং ভূমং ক্রা তল্লাভিনা তল্ভিরঃ সংযোজ্যেতার্বঃ ॥ ৭১॥ ॥ ৭২॥ গৃহীতা চেতি পাঠে ইবার্থে চ ॥ ৭৬॥ যোক্তারামাস বংদ্ধ রশনর। রম্বা ॥ ৭৪॥ ৭৫॥ দোর্ভ্যাং পাণিত্যাং ॥ ৭৬॥

ष्ठाशं डः अध्यवस्था अः द्राविक्रमश्चा स्वरं व्याक्तमा ह क्षिप्तरम ज्ञासूना कीहकाधमम्। অপীড়মত বাহ্চভ্যাং পশুসারমমার্যং॥ १२॥ उर वियोष ख्या छ। य की हकर शालू नम्मनः। ভূতলে ভামিষামান বাক্যকেদমুবাচ হ। ৭৮। वनग्रहमनुत्वा जुश खातुर्धाया। शहातिवय । भाष्टिः लकान्यि প्रमार इचा टेम्ब्रिक् क्लेक्स् ॥ १० ॥ ইত্যেব कुल পুরুষ: এবীর স্তং কচিকং ক্রোধসরাগনেতঃ। অব্রস্তবন্তা ভরণং ক্রান্তমুদ্র ভিনেত্রণ ব্রস্তুমুহ্দসর্জ ॥ ৮০ ॥ নিাষ্ঠায় পাণিনা পাণিং সন্দক্ষৌষ্ঠপুটংবলী। सभाजीम ह मर्जू का बर्लन यनिना वतः ॥ ५० ॥ তস্য পাণীচ পাদৌচ শিরে প্রাবাঞ্চ সর্বিশঃ। कारमञ्जादनमामाम शर्मातिव शिनाक श्रुक् ॥ ४२ ॥ তং সন্মাথ সমকাঙ্গং মাং সপিত্তা পানং কুত্র। * রুঞায়া দর্শ্যমাস ভীমসেনে! মহাবলঃ ॥৮৩॥ উবাচ চ মহাতেজা দ্রৌ পদীং † পাণ্ডুনন্দনঃ। পरेनानमहि পाक्षानि काम्रकाश्या-पेयपाक् छः॥ ৮४॥

ব্যাবিদ্ধে অতিপীডনাৎ অধঃ ক্ষিপ্তে নয়নে নয়ন গোলকে অম্বরং বক্সঞ্চ যস্য নয়নাকাশোনা পশুনারং পশুং মার্রায়িছে বেলি যজ্ঞিয় পশুবদিত, র্থঃ

॥ ৭৭ ॥ ৭৮ ॥ সৈর্দ্ধি ক টকং ক্সম্বরং সমাস নিমিত্তং ॥ ৭৯ ॥ ৮০ ॥ ৮১ ॥

ভস্যপাদে চিতি কায়ে দেহ মধ্যভাগে তত্ত্তির্গম মার্গেটো বাঙ্গানাতঃ

প্রেবেশ্য যো অবৈ রেগার স্থানাতি নোমং নির্বত্ত্বী মহাবা তং দ্বাতাতি

ক্ষতে মার্ট্যে নিধনি মেতদেব ক্ষেত্রং রেবান্ ধনবান্ নিধনিং নিক্ষ্যা

স্থাপনং ॥ ৮২ ॥ কৃঞ্যাঃ। ক্ষেপি দা ॥ ৮০ ॥ ৮৪ ॥

^{*} কৃষ্ণার। ইতাত্ত কৃষ্ণাটে ইতি পাঠঃ ক গুন্তকে। † পাণুনন্দন ইতাত্ত থোবিতাং বরাষ্থিতি পাঠঃ খ গুয়েতক।

এবমুক্তা মহারাজ ভীমো ভীমপরাক্রমঃ। পাদেন পীড্যামাস তদ্য কাষ্ তুরাজ্মনঃ। ৮৫। ডতোহগিং তত্র প্রজাল্য দর্শযিত্বা চু কীচকম্। পাঞ্চালীং স তদা বীর ইদে বচনমত্রবীং ॥ ৮৬॥ आर्थवित्र स्टूरकर्नात्य (य जार भीनक्षणात्रिजाम। এবং তে ভীকুবধান্তে কীচকঃ শেভেতে যথা॥ ৮৭॥ তৎ রুত্বা তুষ্করং কর্ম্ম রুষ্ণায়াঃ প্রিয়মুত্তমন্। তথা স কীচক । হ্বা গ্রা রোষদ্য বৈ শুমন । ৮৮। व्यामला छिनिमीः कृष्णः किथ्यमायां गहानम् । কীচকংঘাত য়িত্বাষ্ট্র দ্রৌপদী যোগিতাম্বরা। প্রহৃষ্টা গতসন্তাপা সভাপালগরুবাচ হ॥ ৮৯॥ কীচকোহয়ণ হতঃ শেতে গন্ধাৰ্কৈঃ পতিভিৰ্ম্ম। প্রস্ত্রীকামসমান্তঃ সমাগচ্চত পশাত ॥ ১০॥ ভচ্ছ বা ভাষিতং তদা। নর্তনাগারর্কিণঃ। সহসৈব সমাজগা রাদায়োক্কা: সহস্রশ: ॥ ৯১॥ ততো গত্বাৰ্থ তদ্বেশ্ম কীচকং বিনিপাতিত। গতাস্ত্রং দদশুভূমৌ রুণিরেণ সমুক্ষিত । ১২॥ পাণিপাদবিহীনন্ত দুষ্টা চ ব্যথিতাভবন্। নিরীক্ষন্তি ততঃ সর্বে পর্ব বিষয়মাগতাঃ॥ ৯৩॥

। ৮৫ ॥ ৮৬ ॥ অকেশতে অন্ত কেটিলোন বিরাজমানাঃ কেশানা। বিরাজমানা। বিরাজমানা।

অমানুষ^ ক্লত^ কর্ম্ম তেং দৃষ্ট্যা বিনিপাতিত্য। ক্লাস্য গ্রীবা ক্ল চরণৌ ক্লুপাণী ক্ল শিরস্তদা। ইতি স্ম ডং পারীক্ষন্তে গল্পধ্বেণ হতং তদা। ৯৪,॥ ইতি বিরাটপর্বিণি কীচক্বধে দ্বাবিংশোহধ্যায়ঃ॥ ২২॥

তিষান কালে সমাগমা সর্বে তত্তাসা বান্ধবাঃ।
ক্রুত্বঃ কীচকং দৃষ্ট্য পরিবার্যা সমন্ততঃ॥ ১॥
সর্বে সং ক্র্টরোমাণঃ সন্তত্তাঃ প্রেক্ষা কীচকন্
তথা সন্তিরসর্বাঞ্জন কুর্মাং ক্লইবোদ্ধ্রতর্না ২॥
পোথিতং ভীমসেনেন ভমিদ্রেশ্বে দানবন্।
সং ক্ষার্যিভূমিছন্তো বহির্নেভূম প্রচক্রমুঃ॥ ৩॥
দদ্শুন্তে তদা ক্রফাং স্তপুর্বাঃ সমাগতাঃ।
অদ্রাদনবদাঙ্গীং স্তর্মালিঙ্গা তিষ্ঠতীন্॥ ৪॥
সমবেতেযু * স্তেরু তামূচুরুপকীচকাঃ।
হন্যতাং শীঘ্রমণতী বংক্তে কীচকো হতঃ॥ ৫॥
অথ বা নেহ হস্তবাা দহ্যতাং কামিনা সহ।
মৃতস্যাপি প্রিরম্কুন্তে কীচকোহ্সাঃ ক্রতে হতঃ।
সহানেনাদ্য দহ্যেম তদমুজ্ঞাতুমইনি॥ ৭॥

1 86 H

ইতি বিরাট পর্ব্ধনি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বাবিংশোষ্ধ্যায়ঃ॥২২॥

131210181010191

🛎 হুতেৰিত ত্ৰ সংঝ দিতি পাচঃ গ্ৰ গুন্তকে।

পরাক্রমন্ত স্থানাং মত্মারাজান্তমোদত।

সৈরক্যাঃ স্থতপুজেন সহ দাহং বিশালপতে ॥ ৮ ॥
তাং সমাসাদ্য বিজ্ঞতাং ক্ষণাং কমল-লোচনাম্।
মোমুহামানাং তে তত্র জগৃহঃ কীচকা ভূশম্॥ ১ ॥
ততন্ত তাং সমারোপ্য নিবধ্য চ স্থমধ্যমাম।
জগারুদ্যম্য তে সর্বের শ্বামানভিমুখান্তদা ॥ > ॥
ক্রিয়মানা তু সা রাজন্ স্তপুজেরনিন্দিতা।
প্রাক্রোশরাথনিচ্ছন্তী ক্ষণানাথবতী সতী॥ >> ॥
ক্রোপ্রাব্চ।

জয়ো জয়তো বিভাষো জয়ৎসেনো জয়ত্বল: ! তৈ মে বাচং বিজানস্ত সূতপুত্রা নয়তি মান্ ॥ ১২ ॥ । বেষাং জ্যাতলনিষ্ঠাবো বিক্যুক্তিতমিবাশনেঃ । ব্যক্তাত মহাযুদ্ধে ভীমঘোষস্তরন্তিনান্ । ১০ ॥ রথঘোষশ্চ বলবান্ গস্তাবিলাং যশ্যিনান্ । তে মে বাচং বিজানস্ত স্তপুত্রা নয়ন্তি মান্ ॥ ১৪ ॥ বৈশ্পায়ন উবাচ।

তন্যান্তাঃ ক্লপণা বাচঃ ক্ষ্ণাযাঃ পরিদেবিতাঃ। শ্রুত্বা চৈবাপতন্তীমঃ শ্যনাদ্বিচার্থন্য ১৫॥ ভীম উবাচ।

ষহং শূণোমি তে বাচং স্বয়া সৈরক্ষ্রিভাষিতাম্ । তন্মান্তে স্থতপুত্রেভ্যোন ভয়ং ভীরু বিদ্যুতে । ১৬ ॥ বৈশশ্যায়ন উবাচা

ইত্যুক্তনা স মহাবাছকিজজ ডে জিঘাংস্থা। ততঃ সব্যাযতং কৃত্বা বেশং বিপরিবর্ত্য চ ॥ ১৭ ॥ ° ॥৮॥৯॥১০॥১১॥১২॥১৩॥১৪॥১৫॥১৬॥ব্যায়তং ব্যাপারং যত্রং কৃত্বা বেশঞ্চ বিপরিবর্ত্য গদ্ধকি বেশ সদৃশং কৃত্বা॥১৭॥

व्यवादत्वी जावकना निर्द्धना । ন ভীমদেনঃ প্রাকারমারুহ্য তর্মা 4 ক্রত্যু ॥ ১৮॥ শ্মশানাভিমুখঃ প্রায়াৎ যত্র তে কীচকা গতাঃ। স লজ্জবিত্বা প্রাকারণ নিংস্তা চ পুরোত্তমাৎ। জবেন পতিতো ভীমঃ স্কানামগ্রতন্তদা॥ ১৯ ॥ চিতাসমীপে গল স তত্রাপশ্যদ্দনস্পতিমৃ। ত!লমাত্রং মহাকক্ষণমূর্ক,শুদ্ধং বিশাস্পতে॥ ২ । ॥ ত শাগবতুপক্ষম্য বাছ গ্যাং পরিরভা চ। ककार्यात्वात्रयायां प्रमेयायः श्रवस्थः॥२)॥ স ত^ রক্ষং দশব্যাম^ সক্ষক্ষবিটপং বলী ৮ প্রগুহ্যাল্যদ্রবৎ স্থতান্ দগুপানিরিবান্তকঃ ॥ ২২ ॥ উক্লবেগেন তস্যাথ ন্যগ্রোধাশ্বর্থাকং শুকাঃ। ভূমৌ নিপতিতা রুক্ষাঃ সং**ঘশস্তত শে**রতে॥২৩॥ ত^ गिংহমিব স॰কুদ্ধ॰ দৃষ্ট্য গন্ধর্মাগর্ভম্। বিত্রেস্থঃ সর্ব্বশঃ স্থতা বিষাদভ্যকম্পিতাঃ ॥ ২৪॥ গন্ধবো † বলবানেতি কুদ্ধ উদাস্য পাদপ্য। সৈরস্থী মুচ্যতাং শীঘ্রং যতো নো ভ্যমাগ্রম্॥ ২৫॥

অভ্যব ক্ষন্য নিপতা ক্র'মং আক্ষা ততশ্চ ক্রোপদী নয়ন প্রদেশৎ
দৃষ্টে,তার্থঃ ॥ ১৮॥ ১৯॥ মূর্ধ্নিজ্ফ মিতি শোষণোলা, খাইন অতিপ্রকৃত্বং
! স্থাতে॥ ২০॥ পরিরভা উপক্রমা উৎপাটনার্থং যত্রং ক্র্যা উৎপাটভঞ্চ ,
তং ক্ষন্তে আরোপয়া মাস বামিং প্রুদারিত য়োর্বাহ্বোরন্তরং॥ ২১॥ ২২॥
॥ ২৩॥ ২৪॥ ২৫॥

বিবাদ ভয়কম্পিতাঃ ইত্যেকশ্লেকঃ ক পুস্তকন্ত্র।

 ^{*} ক্রতমিত্যত্ত ক্রমঝিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 † গন্ধর্কো বলবানেতীতাসা প্লাক্ তমন্তক মিবায়ান্তং গন্ধর্কং প্রেক্ষ্য তেতদা নিধক্ষত স্তদাজ্যেষ্ঠৎ ভাতরং ত্রাপকীচকাঃ প্রস্পারমধোচুন্তে

তে তু দৃষ্টা তদাবিদ্ধ ভীমদেনেন পাদপ্য।
বিমৃচ্য দৌপদীং তত্ৰ প্ৰাদ্ৰবন্ধরং প্রতি ॥ ২৬ ॥
দ্বতন্তাংস্ত সংপ্রেক্ষ্য স বজুী দানবানিব।
শত পঞ্চাবিকং ভীমঃ প্রাহিণোদ্মমনাদন্য॥ ২৭ ॥
রক্ষেণ তেন রাজেন্দ্র প্রভঞ্জনস্থতো বলী।
তত আশ্বাস্থাং ক্ষা প্রবিমৃচ্য বিশাম্পতে ॥ ২৮ ॥
উবাচ চ মহাবাছঃ পাঞ্চালীং * পাভুনন্দনঃ।
ভক্রপূর্ণমুখী দীনাং ছ্র্দ্মিইং স রকোদরঃ ॥ ২৯ ॥
এবং তে ভীক্ষ বধান্তে যে ত্বাং ক্লিশ্যন্ত্যানাগ্যম্য।
প্রৈহি ত্ব নগরং ক্লেফে ন ভ্যাং ক্লিশ্যন্ত তব ॥ ৩০ ॥
ভান্যেনাহ্ গমিয্যামি বিরাটিদ্য মহানস্য ॥ ৩১ ॥
বিশ্লোবন উবাচ।

পঞ্চাধিকং শতং তত্ত্ব নিহতং তেন ভারত।
মহাবনমিব চ্ছিন্নং শিশ্যে বিগলিতদ্রুমন্॥ ৩২॥
এবং তে নিহতা রাজন্ শতং পঞ্চ চ কীচকাঃ।
স চ সেনাপতিঃ পূর্ব্বমিত্যেতং সূত্যট্শতম্॥ ৩০॥
তদ্যু মহদাশ্চ্যাং নরা নার্যাশ্চ সংগতাঃ।
বিস্ময় পরমং গড়া নোচুঃ কিঞ্চন ভারত। ৩৪॥
ইতি বিরাটপ্রবৃণি কীচক্বধ প্রবৃণি

॥ ২৬ ॥ ২৭॥ প্রবিষ্কা মার্করির । এ৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ অন্যেন মার্কের ॥ ৩১ ॥ শিব্যে শরিতং ॥ ৩২ ॥ ষট্শতং বৃত্তধিকং শতং ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে । ত্রোবিংশোহধ্যারঃ ॥ ২৩ ॥

ত্রোবিংশতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৩॥

^{*} পাণ্ডুনন্দন ইত্যত্ৰ তত্ৰদোপদী মিতি পাঠঃ ধ পুস্তকে

देवनामायम खेदाह। তে দৃষ্টা নিহতান সূতান্ রাজ্যে গত্বা ন্যবেদ্যন্ 🖟 গন্ধবৈনিহত। রাজন্ প্রতপুত্রা মহাবলাঃ॥ ১॥ যথা বজ্ঞেণ বৈ দীর্ণ- পর্ব্বত্যা মহচ্ছির:। বিনিকীর্ণা: প্রদুশ্যন্তে তথা স্থতা মহীতলে॥ ২॥ দৈরক্ষী চ বিমুক্তাদৌ পুনরাযাতি তে গুহ্ম। থিকং সংশ্বিত্ বাজন নগরং তে ভবিষাতি। ৩ n यथा बार्भा हि रेमत्रकी शक्तां का महावलाः। পুংসামিखन विश्व त्या रेमथुनाय न जः नयः ॥ ८॥ যথা দৈরস্থীদোষেণ ন তে রাজন্মিদং পুরুর। বিনাশমেতি বৈ ক্ষিপ্রণ তথানীতির্বিধিযতা ॥ ৫॥ তেষা তত্বচনং শ্রুষা বিরাটো বাহিনীপতি:। অব্রবীৎ ক্রিযতামেষাং স্থতানা । চরমক্রিয়া ॥ ৬ ॥ এক স্মিনেব তে সর্বো স্থসমিদ্ধে ছতাশনে। দহান্তাং কীচকাঃ শীঘ্রং রুত্রৈগরেশ্চ সর্বাশঃ॥ १॥ स्रु (मयाक्षां विवीमांका महियो - जाउमाध्मः। দৈরজ্বীমাগতা অবা মমৈব বচনাদিদ্য । ৮ । গচ্ছ সৈরক্ষি ভদ্রং ৫ত যথাকামং বরাননে। বিভেতি রাজা সুশ্রোণি গন্ধর্বেভ্যঃ পরাভবাৎ ॥ ৯ । ন ভাষুৎসহতে বক্তা প্ৰয়ং গন্ধবিক্ষিত যি। ব্ৰিষাস্থানে কিয়াং বকুমতস্থাং প্ৰব্ৰতীমাহ্ন॥ ১০ বৈশাপায়ন উবাচ।

অথ মুক্তা ভ্যাৎ কৃষ্ণা স্থতপুত্রামিরদা চ।

মোক্ষিতা ভীমদেনৈন জগাম নগর পপ্রতি॥ ১১॥
ত্রাদিতের মৃগী বালা শার্দ্দুলেন মনস্বিনী।
গাত্রাণি বাদনী চৈব প্রকাল্য সলিলেন সা॥ ২২॥
তাং দৃষ্ট্যা পুরুষা রাজন্ প্রাদ্রবন্ধ দিশো দৃশ।
গল্পর্বাণাং ভ্যত্রস্তাঃ কেচিদ্দুষ্টা নামীল্যন্॥ ১৩॥
তত্রো মহানসন্ধারি ভীমদেনমবস্থিত্য।
দদর্শ রাজন্ পাঞ্চালী যথা মন্তঃ মহান্বিপন্॥ ১৪॥
তং বিস্মযন্তী শনকৈঃ সপজ্ঞাভিরিদমন্ত্রনীও।
গল্পর্বারাজ্যে নমো যেনান্মি পরিম্নিক্তা॥ ১৫॥

যে পুরা বিচরন্তী,হ পুরুষা বশবর্ত্তনঃ। তস্যান্তে বচনং গ্রুছা অনুণা কিহরন্ত্যতঃ॥১৬॥

ন হিছা মিতি হিহাং হাতুং যোগাাং কুত্যার্থে তবৈকেন্কে নাইন ইতি হন্ জহাতে শেতি হিহং অংকালা মিপি জ্বান্দেই পিলোভি ক্ষেত্তালি বং হাং সৈরস্কুীং হিহাং তাক্তৃং যোগামিপি অহং রাজা গজেতি বক্তৃং নাংসহে স্তিয়ান্ত স্নেকালা তব তাং প্রতি এতছক্তৃং অদোষ ইতি রাজ্ব বাকাান্তবাদঃ যক্ষাদেবং রাজা মাং আজ্বাপিতবান্ তক্ষাদেত, দেবং হাং প্রতি প্রবিমান্ত মিতি স্থাদেকা বচনং ॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১০॥ ১৯॥ ১৫॥ প্রকা যদাাঃ বশবন্তিন আজ্বাকারিলঃ ইছ বিরাট প্রে প্রা বর্ষমান্তং করে তিহুরন্তি তে তদাাঃ বচনং গর্মের্ধ রাজাল, নম ইত্যাদি রূপণ শ্রুবাং প্রং অনুনান্তদাজা সম্পাদনেন অজ্বাতবাদ সমাপ্তা বা কৃত কৃত্যাঃ সন্তো বিহরন্ত । ১৬॥

ভীম উবাচ।

रिनम्भायन छेल्ह।

ততঃ সা নর্ত্রনাগারে ধনপ্রথমপশ্যত।
রাজ্ঞঃ কন্যা বিরাটস্য নৃত্রানং মহাভুজন্॥ ২৭॥
ততন্তা নর্ত্রনাগারাছিনিক ম্য সহার্জ্বাঃ।
কন্যা দদৃশুরাযান্তীং কুফাং ক্লিফামনাগস্ম ৫ ১৮॥
কন্যা উচ্ছঃ।

দিন্ট্যা সৈর্ক্ষি মুক্তাসি দিন্ট্যাসি পুনরাগতা। দিন্ট্যা বিনিহ্তাঃ স্কৃতা যে রাশ ক্লিশ্যন্ত্যনাগসন্॥ ১৯॥

গ্রহন্দোশ্য

কথং সৈরক্ষি মুক্তাসি কথং পাপাশ্চ তে হতাঃ। ইচ্ছানি বৈ তব শ্রোতুং সর্বায়েতদ্বথাতথন্॥২০॥

रमदक्षाद्वाहर

রুছ্নলে কিন্তু তব সৈরজান কার্য্যন বৈ।
যা দং বসসি কল্যাণি সদা কন্যাপুরে স্থান ॥ ২১॥
ন ছি তুঃখনবাপ্রোষি সৈরজা যতুপাশ্বতে।
তেন মাণ তুঃকিতামেবং পুচ্চদে প্রহ্যানব॥ ২২॥

त्रश्वरलावाऽ।

র্হরলাপি কল্যাণি ছুংখমাপ্লোত্যন্ত্রমন্।
তিহানেগ্যানিগতা বালে ন চৈনামবর্ধ্যসে ॥ ২৩॥
ব্যা সংহাবিতা চান্মি ত্রঞ্ সর্কৈঃ সংহাবিতা।

ক্লিশ্যন্তাংশ দ্বি স্বশ্রেণি কোহত ছুংখণ ন চিন্তবেৎ ॥ ২৪॥ ন ভুকিনিচিদ্ভান্তণ ক্সাচিদ্দ্দ্ধং ক্রচিং।

विन्जूर भकारक छट्ड रचन मान नावनुवारम । २०।

॥ २৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ প্রহদ র বেতি পূর্বাং সংক্ষারাৎ পুংলিদ প্রয়োগঃ প্রহদন্তী বেতার্থঃ ॥ ২২॥ তীর্যাক্নী ছে ব্লীবহং তন্মরা যোনিঃ শ্রীবং তত্ত্বপতা ॥ ২৩॥ ২৪॥ ২৫॥ বৈশস্পায়ন উনাচ। .
ততঃ সকৈব কন্যাভিডো পিদী রাজবেশ্ম তং।
প্রবিবেশ স্থাদেক্যায়ঃ সমীপামুপাগামিনী ॥ ২৬॥
তামব্রবীদ্রাজপত্নী বিরাটবচনাদিদম্।
দৈরন্ধি গম্যতাং শীদ্রশ যত্র কাম্যসে গতিম্ ॥ ২৭॥
রাজা বিভেতি ভদ্রতে গন্ধর্মেত্যঃ পরাভ্রাং।
ত্রক্ষাপি তরুণী স্কুক্ষ কপোন্সাতিমা ভূবি।
পুংসামিকীশ্চ বিষ্যো গন্ধ্যাশ্চাতিকোপানাঃ ॥ ২৮॥

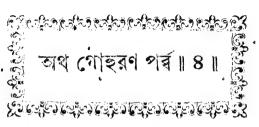
रेमद्रक् ावाह।

ত্ররোদশাহ্মাত্রং মে রাজা ক্ষামাতু ভামিনি। কুতক্কত্যা ভবিষাত্তি গন্ধকান্তে ন সংশয়ঃ॥ ২৯॥ তত্যে মামুপনেষ্যন্তি করিষ্যন্তি চ তে প্রিযন্। ধ্রুবঞ্চ শ্রেষ্যা রাজা•যোক্ষ্যতে সহ বান্ধবৈঃ॥ ৩০॥

ইতি বিরাটপর্কানি কীচকবধপর্কানি কীচকদাহে চতুর্বিংশতি তমোহধ্যায়ঃ॥২৪॥

সমাপ্তঞ্চ কীচকবধপর্ব।

॥২৬॥২৭॥ তে জং সম্বন্ধিভাঃ গন্ধকিভাঃ ॥২৮॥২৯॥৩०॥ ইতি বিরাট পর্ব্বলি নৈলকগ্রীয়ে ভারত ভাবদীপে• চতুর্বিংশোহধায়েঃ ॥২৪॥



বৈশস্পায়ন উবাচ 1

কীচনসা তু ঘাতিন সামুজস্য বিশাস্পতে।
অত্যাহিতং চিত্যিত্বা ব্যেম্যত পূপগ্জনাঃ॥১॥
তিম্মিন্ পূরে জনপদে সং জপেশিংভূচ্চ সর্বাশঃ।
শৌগ্যাদি বল্লভো রাজ্যে মুহাসভ্জুন্চ কীচকঃ॥২॥
আন্দিং প্রহর্তা চ নৃগাং দারান্যা চ ছুর্ম্মতিঃ।
ন হতঃ খলু পাপালা গলকৈছ্ কিপুরুষঃ॥৩॥
ইত্যজপেশাহারাজ পরানীক্রিনাশন্য।
দেশে দেশে মন্ত্যাঃ স্মাকীচকং ছুপ্পার্থণ্য॥৪॥
অথ বৈ ধার্ত্রাপ্রেণ প্রযুক্তা যে বহিশ্চরাঃ।
মুগ্যিঃ। বহুন্ গ্রামান্ রাষ্ট্রাণি নগরাণি চ॥৫॥
সংবিধাম ম্থাদিন্টং ম্থাদেশপ্রদর্শনন্।
কুত্রুত্যা ন্যবর্ত্তি শিচরা নাগপুরং প্রতি॥৬॥
তত্র দৃন্ধী তু রাজানং কৌরবং প্রতরাষ্ট্রজন্য।
দেশেবর্ণক্রপৈঃ সার্দ্ধি ভীম্মেণ চ মহাজ্যা॥৭॥

অত্যাহিতং মহাভীতিঃ কমাজীবানপুঞ্চি চেতামরঃ ॥১॥২॥৩॥৪॥ ১॥৫॥কৃত ক্বত্যাঃ কীচক ব্যজ্ঞানেনাত্ত্রিব পাওবান্থ বাসং ব্যয়মেব 'ধাতরাফ্রাঃ অহুমানতো জ্ঞাসাতীত্যাশয়ঃ ॥৬॥৭॥

^{*} আনাংশ্রহতা চ নৃণামিতাত্র আসীংশ্রহতা সৈন্যানা মিতি পাচঃ
খ পুস্তকে।
ক চরান্য পুয়ং প্র ভীতাত্র ভেচরা ন্যারং প্রভীতি পাচঃ খ পুস্তকে।

সঙ্গতং ভ্রাতৃতিশ্চ পি ত্রিগর্তিশ্চ মহার থৈঃ।
ছুর্য্যোধন শভামধ্যে আফীনমিদমক্বন্ ॥ ৮ ॥
চরা উচঃ।

ক্রতোহকাভিঃ পরো যতু স্তেষামন্বর্ধণে সদা। পাণ্ডবানাং মনুষ্যেক্ত তিমামহতি কাননে॥ ৯॥ निर्कात मुशमकीर्ग नानाक्रमल जात्र । লতাপ্রতানবছলে নানাগুলসমারতে॥ ১০॥ • ন চ বিছো গভা যেন পার্থাঃ স্কুদু বিক্রমাঃ। মার্সমাণাঃ পদন্যাস্ তেষু তেষু তথা তথানা ১১॥ গিরিকুটেষু * ছুর্রেষ্ট্র নানা জনপদেষু চ। জनाकौर्व्यु प्रतम्यु † कडेरक्यु शेरत्यु ह ॥ ১२ । নরেক্র বহুশোহরিষ্টা নৈব বিল্লন্ড পাওবান্। অত্যন্তভারং নফীত্তে ভদ্রং ভুভান নর্ধভ। ১৩॥ रज्ञात्ववामाना देव 'त्रियना द्र त्र्यमखम ॥ ন হি বিছে। গতিং তেষা প্রাসং হি নরসভ্য ॥ ১৪ ॥ কঞ্চিৎ কাল শনুষোক্র স্তানামনুগা বয়ন। মুগরিস্বা মথান্যায় প্রিদিতার্থাঃ স্ম তন্ত । ১৫॥ প্রাপ্তা দ্বারবতীং স্থতা বিনা পার্থিঃ পরন্তপ। া নতত্র পাণ্ডবা রাজন্ কুফা বাপি পতিব্রতা ॥ ১৬ ॥

•॥৮॥৯॥১०॥ যেন মার্গেণ ॥১১॥ গৈরিকটের গিরিশিখরেয় ॥১২॥ ॥১৩॥১৪॥ স্তানাং পাতিবীয়্না শিক্রদেনাদীনাং ॥১৫॥১৬॥

ছুর্নেয়ু ইত্যত্ত তুদ্দেরু ইতি পাচঃ খ পুস্তকে।

কৃষ্টকেরুপরেয়ুচ ইত্যত্ত খর্কটেয়ু পুরেয়ুচ ইতি পাচঃ খ পুস্তকে।

কৃষ্টকের পাণ্ডবা রাজন কৃষ্টাবাপি পাতিরতৈ তাত্ত নতত্ত্ব কৃষ্টা রাজেন্দ্র পাণ্ডবাশ্চ মহারতাঃ ইতি পাচঃ খ পুস্তকে। সর্বাং বিপ্রনাটান্তে নমন্তে ভরতর্বভ।
নহি বিজ্ঞা গভিং তেষ্ণং বাসং বাপি মহাত্মনাম্। ১৭।
পাশুবানাং প্রবৃত্তিপ বিজ্ঞা কর্মাপি বা কৃত্য।
স নঃ পাধি মনুষোক্র অত উর্জুং বিশাম্পতে। ১৮।
অন্থেবণে পাশুবানাং ভূরঃ কিং করবামহে।
ইমাঞ্চ নপ্রিয়াণ বীর বাচণ ভদ্রবতীণ শূর্ণ। ১৯।
বেন ত্রিগর্তা নিহতা বলেন মহতা নূপ।
স্থতেন রাজ্যে মংসাস্য কীচকেন ও পুনঃপুনঃ। ২০।
স হতঃ পতিতঃ শৈতে গন্ধাকৈর্মিনি ভারত।
অদৃশ্যমানোত্রকীল্মা সহজ্ঞাকৃভিরচ্যুত † বি ২১।
প্রিয়মেতত্বপক্রত্য শক্ত্রণাঞ্চ পাল্লভব্য।
কৃতকৃত্যান্চ কৌর্য্য বিধৎস্ব সদনন্তরম্। ২২।
ইতি বিরাটপর্বিণি গোহরণপ্রেণি চারপ্রত্যাগমনে
পঞ্চিণিশ্বিভিত্যমাহধ্যায়ঃ । ২৫।

বৈশস্থায়ন উবাচ। ততো তুর্যোধনো রাজা শ্রুত্বা তেবাং বচস্তদা। চিরমন্তর্মনা ভূত্বা প্রাকৃত্বাচ সভাসদঃ ॥ ১॥

॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥
- ইতি বিরুটে পর্ব্বনি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে
- পঞ্চবিংশোহধ্যায়ঃ॥ ২৫॥

11 2 11

^{*} পুনঃ পুনঃ ইত্যত্ত বলীযদা ইতিপাঠঃ খ পুস্তকে।
ক অচ্যতে তাত্ৰ সোদারৈ বিভি পাঠঃ খ পুস্তকে।

সুতুঃখা খলু কার্যাণাং গতির্বিজ্ঞাতুমন্তঃ । তক্ষাৎ সর্বের নিরীক্ষধং কু মু তে পাওবা গতাঃ। ২ ॥ অপ্পাৰশিষ্টং কালস্য গতং ভূষিষ্ঠমন্ততঃ। তেষাসজ্ঞাতচর্য্যাণামস্মিন্ বর্ষে ক্রয়োদশে ; ৩॥ 🐡 অস্য বর্ষস্য শেষপ্রেদ্বাতীযুরিহ পাওবাং। নির্ভ্রসম্যান্তে হি স্তাত্রতপরায়ণাঃ॥ ৪॥ করন্ত ইব নাগেন্দ্রাঃ দর্বের আশীবিষোপমাঃ। তুঃখা ভবেষুঃ সংরক্ষাঃ কৌরবান প্রতি তে ধ্রুবন্ । ৫॥ * অঠাকৃ কলেস্য বিজ্ঞাতাঃ কুষ্ঠ্ৰূপধরাস্থি 🙌 । প্রবিশেযুর্জ্জিতকোধাস্তাবদেব পুনর্বনম্। ৬। তন্মাৎ ক্ষিপ্রং বুভূষধং † প্রতিকর্ত্তবামস্যায়ৎ। রাজা । নির্দি মব্যগ্রং নিস্সপত্র স্থিরং ভবেং ॥ १॥ অথাত্রবীপ্ততঃ কর্ণঃ ক্লিপ্রং গছর ভারত। অন্যে ধূর্ত্তানরা দক্ষা নিভূতাঃ সাধুকারিণঃ ॥ ৮॥ চরন্ত দেশান স্থীতাঃ ক্ষীতান্ জনপদাকুলান্ (তত্র গোষ্ঠীযু রম্যাস্থ সিদ্ধপ্রব্রজিতেযু চ ॥ ৯ ॥

॥२॥ ৩॥ ৪॥ ছঃখরিতারঃ সংরদ্ধাঃ কুপিতাঃ ॥ ৫ ॥ যথাতে পুন-র্বনং প্রবিশেষুস্তথা বুভূষধং তান্ প্রাপ্তঃ ইক্ততেতার্থঃ তংফলঞাহ অত্যন্ত মিতা। দিনা॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ জনপদা কুলান্ জন ব্যাপ্তান্ ভবেজ্জন ই পদো জানপদোপি জনদেশয়ে বিভি মেদিনী গোটীর বিদং সভাস্থ সিদ্ধানাং প্রবিজতং গমনং যেয়ুতের মুনীনামাশ্রমেয়ু॥ ১॥

^{*} অর্থাক্ কালদ্য বিজ্ঞাতা ইত্যত্র সর্প্রেকালদ্যবেক্তার ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

[†] প্রতি কর্ত্তব্য মদ্য যদিতাত্র মথাতে ২তান্ত মব্যর মিতি পাঠিঃ খ প্রস্তকে।

পরিচারেষু তীর্থেষু,বিবিথেম্বাকরেষু চ। বিজ্ঞাতব্যা মন্তুষ্যৈকৈ স্তৰ্কথা স্থ্ৰিনীত্যা ॥ ১০ ॥ বিবিধৈন্তং পরিঃ সমাকৃ তজ্জৈর্নিপুণ সণ্রুতৈঃ। অবেষ্টব্যাঃ স্থুনিপুলেঃ পাগুবাশ্ছনবাসিনঃ॥ ১১॥ ननीकु दक्षमु जीर्थि मु आरम मु न न दि मु ह ! আশ্রমেষু চ রম্যেষু পর্বতেষু গুহাস্থ চ। ১২॥ র্তথাগ্রজানন্তরজঃ পাপভাবানুরাগবান্। জ্যেষ্ঠং ছুঃশাননন্তর ভাতা ভাতরমত্রবীং ॥ ১০ ॥ বেষু নঃ প্রত্যবোঁ রাজন্ চারেষু মনু জাধিপ ৷ তে যান্ত দত্তদেয়া বৈ ভূষস্তান পরিমার্গিভূম্॥ ১৪॥ এতচ্চ কর্ণো যথ প্রাহ্ব সর্বমীক্ষামহে বয় । যথোদিষ্টে চরাঃ সর্বের মূগরস্ত ততন্ততঃ ॥ ১৫॥ এতে চান্যে চ ভূষা দেশ দৈশাদ্দেশং যুথাবিধি। ন তু তেষাৎ গতিকাসঃ প্রবৃত্তিশ্চোপলভ্যতে। ১৬॥ শৃত্যাহিত
 ব' গূঢ়ান্তে পারং বোর্শ্মিমতো গতাঃ। বাল্যৈকাপি মহারণ্যে ভক্ষিতাঃ শূরমানিনঃ 1 ১৭॥

পরিত আগতা চরস্তোর্ তে পরিগরিঃ রাজপুরাণি তেয়ু তর্কয়া কাজ্ফরা তর্কঃ কাজ্ফা বিতর্কোছে ইতি মেদিনী॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ অগ্রজানন্তরজঃ দ্বিতীয়ো জাতা॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ উর্মিমতঃ সিদ্ধোঃ॥ ১৭॥

^{*} অত্যাহিতং বা গাূচান্তে ইতাত্র অত্যন্তং বা নিগ্রুচান্তে ইতি পাঠঃ খ পুত্তক।

অথবা বিষমং প্রাপ্য বিনশীঃ শাশ্বতীঃ স্মাঃ।
তথ্যানান্দ্রব্যথং কুত্বা ত্ব কুরুনন্দ্র,।
কুরু কার্য্য মহোৎ সাহ্ব মন্যদে মনুরাধিপ ॥ ১৮ ॥ .
ইতি বিরাটপর্বিণি গোহরণপর্বাণ কণ্ডুঃশাসনবাক্যে

বড় বিশ্বতিত্যোহ্ধ্যায়ঃ ॥ ২৬ ॥

বৈশ্পাবন উপাচ।
তথা, ব্ৰবীলাহাবীযোঁ জোণস্থ প্ৰাণিকান্।
ন তাদৃশাবিনশান্ত নাপি বাতি প্ৰাভবন ॥ ।
শ্বাশ্চ কৃতবিদ্যাশ্চ বুজিমন্তো জিতেলিবাং।
ধর্মজাশ্চ কৃতজাশ্চ ধর্মরাজমন্ত্রতাং॥ ২
নীতিধর্মার্থতত্ত্বজাং পিতৃবচ্চ সমাহিতাং।
ধর্মে হিতং সত্যপ্রতিশ চ্চোষ্ঠং ক্রোষ্ঠানুযাবিনাং। এ॥
অনুব্রতা মহাআনং ভ্রাতর্শ ভ্রাতরো নূপ।
অলাতশত্ত্বং ধামতশ সর্বভান্থ নাত্রে স্বাত্রান্থ।
তিবাশ তথাবিধেয়ানাশ নিভ্তানাং মহাম্মনাম্।
কিমর্থং নীতিমান্ পার্থং শ্রেয়ো নৈষাশ করিষ্যতি॥ ৫॥
তথাদ্যত্বাৎ প্রতীক্তে কালস্যোদ্য্যাগ্রম্।
ন হি তে নাশ্যুছের্মিতি পশ্যাম্যহং বিষ্যা॥ ৬॥

11 200 11

ইতি বিয়াট পৰ্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভাৱত ভাবদীপে বড়ুবিংশোহধান্য়ঃ॥ ২ ৬॥

। ১॥ ২॥ ৩॥ ৪ বিধেয়ানাং কিল্পাণাং নিভ্তানাং অভ্যন্তা বহিতানাং ॥ ৫॥ ৩॥

নাত্র তথ্বে যং কার্যং তচ্চ ক্ষিপ্রমকালিকন্।
ক্রিয়তাং সাধু সঞ্চিন্তা,বাসকৈচনং প্রচিন্তাতান্॥ ৭॥
যথাবে পাণ্ডুপুল্রাণান স্কার্থের প্রতাল্পনান্।
ছুজে যাং খলু শ্রান্তে ত্বপাপান্তপসার্তাং॥ ৮॥
বুদ্ধিনান্ গুণবান্ পার্থং সত্যবানীতিমান্ গুচি।
তেজোরাশিরসংখ্যেযো গৃহ্লীযাদিপি চক্ষা॥ ৯॥
বিজ্ঞায় জিয়তান তথ্যাদ্বেশ্চ মৃগ্যামহে।
ভাক্ষেণিশ্চারণৈং শ সিকৈর্যেচান্যে ত্তিদো জনাং॥ ১০॥
ইতি বির্টিপর্বণি গোহ্রণপর্বণি ফ্রোণবাক্যে
সপ্তবিশ্লতিত্নোহ্যায়ং॥ ২৭॥

বৈশল্পায়ন উবাচ।
ততঃ সাস্তনবো ভীয়ো ভারতানাং পিতামহঃ।
গ্রুতবান্ দেশকালজ্ঞস্তত্ত্বজ্ঞঃসর্ব্ধর্মাবিৎ ॥ ১॥
আচার্যাবাক্যোপরমে তথাক্যমভিসন্দ্ধং।
হিতার্থিং স উবাচেমাৎ ভারতীং ভারতান্ প্রতি । ২॥

অকালিকং বিলম্বাসহং ॥ १ ॥ ৮ ॥ গৃত্বীয়াদপি চ কুষা প্রত্যক্ষ দৃষ্টোপি মোহয়ে দেবেত্যর্থঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥

ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দপ্তবিংশোহধ্যায়ঃ॥২৭॥

॥ ১। অভিসংদধৎ তদ্বাক্যান্ন গুণমের বদন্ ভারতীং ভরত বংশীয়
পাশুর বিষয়ালিবং বাচং ভারতান্ কৌরবান্ উবাচেতি সম্বন্ধঃ ॥ ২ ॥

^{*} চারূণৈ রিভাত্ত চারকৈ রিভিপাঠঃ থ গুন্তকে।

যুধিষ্ঠিরে সমাসক্তাং ধর্মাজ্ঞে ধর্মাসং বুতান্।। অসৎস্থ ছল ভাং নিত্য শতাঞ্চাভিমতা শদা 🛮 🤊 ॥ ভীন্ন: সমবদন্তত গির্প সাধুভিরচ্চিতাম। যথৈষ ত্রাহ্মাঃ প্রাহ দ্রোণঃ সর্বার্থতজ্ব বিং ॥ ।। मर्तलकाशम्लाः माध्यज्ञमात्रिजाः । ঞ্চত্রতোপপন্নাশ্চ নানাশ্রুতিসমন্থিতাঃ। ৫॥ র্দ্ধান্ত্রে † লগ্নঃ সভ্যব্রভপরায়ণাঃ ৷ मगयः मगयकारः भानगरः एकित्रहाः ॥ ७॥ ফত্রধর্মপরা নিত্যং কেশবানুগতাঃ সদা। ^{*} थवीव शुक्रवार छ देव महाज्ञारना, महावलाः। नावमीनिज्यईखिः উषक्षः भठाः धूत्रम्॥ १॥ ধর্মতদৈর গুপ্তাত্তে স্ববীর্যোণ চ পাওবা:। ন-নাশমধিগচ্ছেযুৱিতি মে ধীঘতে মতিং॥ ৮॥ তত বুছি 🔭 প্রেষ্যানি পাওবান্ প্রতি ভারত। ন তুনাতিঃ স্থনীত্র্যাশকাতেহ্ছেষ্টিত্ং পরৈঃ॥ ১॥ যতু সকামিহামাভিস্তান্ বৈ সঞ্চিন্তা পাওবান্। বুদ্ধা প্রযুক্ত ন দোহাং প্রবক্ষানি নিবেধে ভং॥ ১० ।

॥ ৩॥ সমং বদৎ সমং পক্ষপাত শুনাং বদৎ বদন সমভাবআবা: ॥ ৪॥
আচঙং শাস্ত্রং নানাআচতিরনেকা আখ্যারিকা ॥ ৫॥ ৬॥ মহাস্থান উদরে
চিত্তাঃ সাহ বুরং ধর্মং ॥ ৭॥ ৮॥ পরেঃ আনী,ত বরেঃ সমঘেষিত্রং
আস্পান্তং ॥ ৯॥ যতু প্রযুক্তং প্রয়োগঃ শক্যং জাতুং ধ্যাগা তাদব
বক্ষামি নতু ভবভাং দ্বোহাং ॥ ১০॥

* সক্ষণকা শশারাঃ ইতাস্য প্রাকৃত্যাকা মতিনকামি ন্মেন্ত ত বিচ্রি । বা ইতি পাঠঃ ক প্রতকে।

> † লগ্না ইও জ মুক্তা ইতি পাঠ ধ পুস্তকে। ‡ প্রনেষ্যাম তাত্র প্রক্রামীতি পাঠঃ ধ পুস্তকে।

ন বিষণ মাদুশৈনতিক্তস্য বাচ্যা কথকন।
সা বিষণ সাধু বক্তব্যা ন খুনীতিঃ কদাচন ॥ ১১ ॥
বৃদ্ধান্ত্ৰস্থাসনে ভাত ভিষ্ঠতা সত্যশীলিনা।
অবশ্যং হিহধীরেশ সতাশমধ্যে বিবক্ষতা। ১২ ॥
যথার্থমিহ বক্তব্যশ সর্ব্বথা ধর্মালিক্সযা।
তত্র, নাহং তথা ,মন্যে খথায্যমিত্রো জনং । ১৩।
নিবাসং ধর্মাজস্য বর্ম হাক্সিং স্র্যোদশে।
তত্র তাত ন তেষাশ হি রাজ্ঞাং ভাষামসাক্ষত্রম্ ॥ ১৪ ॥
পুরে জনপদে বাপি যত্র রাজা যুষিষ্ঠিরঃ।
দানশীলো বদানাশ্য নিভ্তো হীনিষেবকং ।
জনো জনপদে ভাব্যো যত্র রাজা যুষিষ্ঠিরঃ ॥ ১৫ ॥
প্রিয়বাদী সদাদান্তো ভব্যং সত্য পরো জনং ।
হুষ্টং পুষ্টং শুচিদক্ষো যত্র রাজা যুষিষ্ঠিরং ॥ ১৬ ॥
নাস্থাকো ন চাপীষুর্মাভিমান ন মৎসরী।
ভবিষ্যতি জনস্তত্র স্বণ স্থং ধর্মামসুব্রতঃ ॥ ১৭ ॥

নাথিতি তদ্য ছৰ্জনদা থাদৃশদ্যেতি গুটোতি সন্ধিঃ দাতু তু শক্ষোছেরর্থে দাহিবতঃ নীতি রিঃং দাধুনাচ্যাদাধুদের বক্তব্যাহতোহদাধৌ থাছিনৈ বৈধাবক্ত ব্যেতার্থঃ অতীতিস্ত কথকন দাধুদ দাধুর বা ন বক্ত ব্যেতার্থঃ

১১৯ তিন্ঠতা বক্তব্য মিতি সম্বন্ধঃ ॥১২ ॥ তক্ত বক্তব্যে দক্তি যথা ইত রোজনঃ পাণ্ডবানাং নিবাসং লোক সাধারণং মনাতে তথাছং ন মনোইতি যোজনা ॥১৩ ॥ অসাধারণা মেবাছ ত্তেতি তত্ত্ব প্রাদেশ অসাক্ষাতং ঘ্যুক্তার্থাং ॥১৪ ॥ বদান্যঃ প্রিরবাদী বদান্যে দানশীলেচ চাক বাদিনী বিচ্তঃ নিয়তেন্দ্রিয়ঃ ভাবাঃ অবশান্তারী ঔ কাবশাকে ইতি হে ॥১৫ ॥ ভবেটা ভবিতা॥১৬ ॥ অস্বকঃ প্রক্তান্ত্র দোষারোপকঃ কর্ত্তা তক্ত ব্যাহ কর্মণারের কর্তা প্রেরাং কর্মণার্থাকঃ অভিযানী আত্মসংভাবিতঃ মংসরী প্রচ্ছোছ কর্তা তক্ত বৃদ্ধিক ইতাত্ত্ব ক্ষাতে ॥১৭ ॥

अकारपायां क ज्यारिकः भूगी छ्**डा छ रेश**व छ ! क डवण्ड ভविषाञ्चि ভূषांश्टमा ভূরিদক্ষিণাঃ । ১৮ । সদা চ তত্ৰ পজ ন্যঃ সম্যুষ্ধী নদংশ্যঃ। শম্পন্নস্যা চ মহী নিরাভক্ষা ভবিষাতি ॥ ১৯॥ * कलवां ह धांनानि तनवाह कलानि ह। গস্ববন্তি চ মাল্যানি শুভশন্ধ। চ ভারতী ॥ २०। বাযুশ্চ সুখসংস্পর্শো নিম্প্রতীপঞ্ল দর্শনম্। ভষং নাভ্যাবিশেক্তত্র যত্র রাজা যুধিষ্ঠিরঃ 🛭 ২১ ॥ গাবশ্চ বছলান্তত ন কুশা নচ ছুৰ্বলাং। প্যাংসি দ্ধিস্পীংষি রস্বন্তি ছিতানি চ । ২২ ॥ গুণবস্থিচ পেয়ানি ভোজ্যানি রসবন্তি চ। তত্র দেশে ভবিষান্তি যত্র রাজা যুধিষ্ঠির: ॥ ২৩॥ तमाः स्थान शकाम्य मद्यामानि खनाबिकाः। দৃশ্যানি চ প্রসন্নানি যত্র রাজা যুধিষ্ঠির: ॥ ২৬ ॥ ধর্মাশ্চ তত্র সর্কৈস্ত সেবিতাশ্চ দিজাতিতিঃ। देश्वरेश्वर्श्वराक्ष्म मन्युक्ता अस्मिन् वर्ष ब्रायानस्य ॥ २०॥ দেশে তিমান ভবিষান্তি তাত পাগুৰসম্যুতে। সংপ্রীতিমানু জনন্তত্ত সম্ভুষ্টঃ শুচিরব্যথঃ॥ ২৬॥ দেবতাতিথি পূজাস্ক সর্বভাবারুরাগবান। ইউদানো মহোৎসাহঃ শশুদ্রগপরাষণঃ ॥ ২৭ ॥

॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ দর্শনং ধর্ম ব্রহ্ম স্বরূপা বেক্ষণং নিজ্যু তীপং পাষ্ণ্য মার্গ বর্জিতং ॥ ২১ ॥ ২০ ॥ দৃশ্যানি রূপাণি ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ সর্বেজাবেন স্কাজনাহত্রাগবান্ ॥ ২৭ ॥

^{*} ফলবনীতাত্র গুণবন্তী তি পাঠ: এ পুস্তকে।

অশুভিছিই শুভপ্রেশ্ন্ # বিভাযজ্ঞঃ শুভব্রতঃ।
ভবিষাতি জনস্তর যর রাজা যুধিষ্ঠিরঃ॥ ২৮॥
ভাক্তবাক্যানৃতস্তাত শুভক্ল্যান্মঙ্গলঃ।
শুভার্থেশ্যু: শুভমতির্য়র রাজা যুধিষ্ঠিরঃ॥ ২৯॥
ভবিষাতি জনস্তর নিভাঞ্জেইপ্রিয়বতঃ।
ধর্মাত্মা শক্তে জ্ঞাতুং নাপি তাত দ্বিজাভিভিঃ॥ ৩০॥
কিং পুনঃ প্রাকৃতৈস্তাত পার্থো বিজ্ঞায়তে ক্রচিং।
যামন্দত্যং প্রতিদান্য পরা শান্তিপ্রবা ক্রমা॥ ৩১॥
জৌঃ শ্রীঃ কীর্ত্তিঃ গরং তেজ আনুশংস্যমথার্জবম।
তমান্তর নিবাসন্ত ছরং যজেন ধীনতঃ।
গতিঞ্জ গরমাং তত্র নোৎসহে ধক্ত্মন্যুথা॥ ৩২॥
এবমেত্রুসঞ্জিন্ত্য যৎ ক্রতে মন্যুদে হিতম্।
তৎ ক্ষিপ্রং কুক্র কৌরব্য যাদ্যবং শ্রুদ্ধানি মে॥ ৩৩॥
ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণপ্রবণি চারপ্রত্যাচারে
ভীষ্যবাক্য অন্টাবিংশতিত্যে।২ধ্যায়ঃ॥ ২৮॥

শশুভাং অশুভং তাক্তা ॥২৮॥ইটং যাগাদি প্রিরং পরস্থদঞ্চ বতং পাদনীয়ং যদা এব স্তুত্যা হজেরির মপ্যাই ধর্মাজেতি ॥৩০॥৩১॥ তথা দিতি ধীমতঃ পাশুবদা বাদং চ্ছরং তত্ত্ব বিদ্ধীতি শেষং পরমাং গতিং বামনঞ্চ তত্ত্ব স্বকীয়ং কুরু এতচ্চাহং অনাথ। বিপরীতং বচোবকুং নোংসহে বৃত্তবাং পাশুবেষু দেষদা ধর্ম এপ্রাচ্চেতি ভাবঃ॥৩২॥৩৩॥ ইতি বিরাট পর্কাণ নৈলক্তীয়ে ভারত ভাবনীপে

व्यक्तीविश्तांश्यातः ॥ २৮॥

^{*} নিতোতাত্ত ইফেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

रेगमण्यासम छेराह । ততঃ শারন্বতো বাক্যমিত্যুবাচ কুপস্তদা। যুক্তং প্রাপ্তঞ্চ রুদ্ধেন পাগুবান্ প্রতিভাষিত্য ॥ ১ । . ধর্মার্থসহিতং শ্লুক্ষং তত্ত্বত্ত সহেতৃকম্। ভক্রানুরপংভীরোন মমাপ্যত্র গিরং শুণু ॥ ২ ॥ তেষ। ক্ষৈব গভিন্তীর্থৈর্নাসকৈষাং প্রচিন্ত্যভাম। নীতিৰ্বিধীয় ভাঞ্চাপি সাম্প্ৰতং যা হিতা ভবেৎ॥ ৩॥ নাবজ্ঞেয়ে রিপুস্তাত প্রাক্তে। হপি বুভুরতা। কিং পুনঃ পাণ্ডবাস্তাত সব্বাস্ত্রকুশলা রণে 🕯 ८ ॥ তন্মাৎ সত্ৰং প্ৰবিষ্টেষু পা ওবেষু, মহাত্মস্থ। পুতভাবেষু ছল্লেষু কালে চোদধ্যগতে॥ ৫॥ শ্বরাষ্ট্রে পররাষ্ট্রে চ জ্ঞাতব্যং বলমাত্মনঃ। উদयः পাঙ্পুত্রাণাং প্রাপ্তকালে ন সংশयः ॥ ७ ॥ নির্ভসময়াঃ পার্থাঃ মহাত্মানো মহাবলাঃ। মহোৎসাহা ভবিষ্যন্তি পাওবা হামিতৌজসঃ॥ १॥ তত্মাদ্বলঞ্চ কোষশ্চ নীতিশ্চাপি বিধীয়তাম। यथा कांत्नामर्य आरश्च ममाकृ किः मन्मधामरह ॥ ৮॥

যুক্তং যুক্তিমৎ প্রাপ্তং প্রাপ্তকালং ॥১॥ তব্তশ্চ সহ্তেকং যুক্তা।
ভাসহীনং ॥২॥ তীর্থা: চারঃ॥৩॥৪॥সত্তং কৈতবং বেশান্তর রূপং
স্থানের গুপ্তেম্ব উদয়ং উদামনং প্রতিজ্ঞাতেকালে উৎক্রান্তে দাতি সামীপার
দ্বান্তান কালেপাবশিকে সতীত্যর্থ: ॥৫॥ পররাক্রেম্ব মিত্ররাক্টেম্ব চ
স্বান্তান সৈনাং সামর্থাঞ্চ যক্তর্মাত্রীং ॥৬॥१॥ নীতি উক্তবেত্রন
দান চার প্রব্রাদিকা তথা বিধায়তাং হথা যেন প্রকারেণ তৈঃ সহ সং
দধামহে সরাদি সন্ধানং কুর্মাহে যদা বল কোশয়োরপ্রতং স্বান্ত পর্মা
বক্তরং নীতির্বথা প্রতিজ্ঞাং সামরূপা বিধায়তাং হথা তৈঃ সহ সং দধামহে
দ্বাহ কুর্মাহে ইতি কালেদ্যে হৃত্যুদ্য রূপে যুদ্ধ প্রাপ্তে সতি তথাং
বিধায়ত ইতি পাঠে তেষাং কাল্তঃ উদয়ে প্রাপ্তে সতি যথা সম্যান্ত্রি

তাত বুধ্যামি তৎ সর্বং বুধ্যস্থ বলমান্তনঃ।
নিয়তং সর্বমিতের বলবংশ্ব বলেষু চ ॥ ৯ ॥
উচ্চাবচং বলং জ্ঞান্তা মধ্যস্থাপি ভারত।
প্রাক্তিম প্রাক্তিঞ্চ সন্দ্র্যামস্তথা পরেঃ ॥ ১ > ॥
সাঙ্গা ভেদেন দণ্ডেন দানেন বলিকর্মা।।
ন্যায়েনাক্রম্য চ পরান্ বলাচ্চানম্য তুর্বলোন ॥ ১ > ॥
ধাস্ত্রিন্তা তু মিক্রানি বলক্ষাভাষাতাং স্থাম্।
সক্রেব্যলান বলভিররিভিঃ প্রত্যুপস্থিতঃ।
তান্যস্ত্রু পাপ্তবৈর্বাপি হীনেংশ্ব বলবাহনৈঃ॥ ১০ ॥
এবং দর্বং বিনিশ্চিত্য ব্যবসাম্ন স্বর্ধ্মতঃ।
যথাকালং মনুষ্যাক্র চিরং স্থামবার্শ্যাসি॥ ১৪ ॥
ইতি বিরাট পর্বনি গোহরণ পর্বনি চারপ্রত্যাচারে
কুপবাক্যে একোনকিংশোহ্ধ্যায়ঃ॥ ২৯ ॥

নিয়ত মচঞ্চলং নিয়মেন বুকান্দ ॥ ৯॥ বেগ্রুক্ সাহ উচ্চেতি উচ্চানি ভেনেন ত্রিবিধমপি প্রছন্তং বাজাতব্যং উচ্চং দমং বা অবলং অপ্রস্কৃত্রিং প্রজন্তবলঃ শক্রভিঃ দহ দং দধাম দল্লিং করণম বিপর তিঞ্চেনপি সংদধাম শরানিতি শেংঃ সন্ধনীয় মিতি পাঠেপি ওদেবার্থ দ্বয়ং জ্বেরং আতোধাওো রিভা লোপঃ অনীর প্রভাৱে পরে ভবতি সন্ধানীয় মিতিতু যুক্তঃ পাঠঃ ॥ ১০॥ সাম্যে সামভেনৌ অপরসা ধিক্যে দানং অস্যা ধিক্যে দণ্ডঃ যুক্ষে নিপাতনং বা বলি কর্ম বা করাদানাখ্যং ইতি বল জ্ঞান কলং ॥ ১১॥ বলং অসৈনাং স্থাং যথাসারেখা আভাষাতাং প্রীতি বানেন ভক্ত বেতন মানদা নেন দংমন্ত্রণীয় মিতার্থঃ সিদ্ধিং জ্বাং॥ ১০ ॥ ব্যবসায়ং অকর্ত্রাং॥ ১৪ ॥ ইতি বিরাট পর্মনি নৈ নক্ষ্ঠায়ে ভারত ভাবদীপে প্রত্যান ত্রিংলাট পর্মনি নি নক্ষ্ঠায়ে ভারত ভাবদীপে প্রত্যান ত্রিংলাট পর্মনি নি নক্ষ্ঠায়ে ভারত ভাবদীপে

বৈশস্পায়ন উবাচ। অথ রাজা ত্রিগর্তানাৎ সুশর্মা রথম্থপ:। প্রাপ্তকালমিদ বাক্যমুবাচ ছরিতো ব্লী॥ > ॥ অসক্ষরিকৃতঃ পূর্বাং মৎস্তাশাল্বেষকৈঃ প্রভো স্থতেন চৈব মৎস্থা কীচকেন পুনঃ পুন॥২॥ বাধিতো বন্ধুভি: সার্দ্ধং বলাগ্বলবতাং বিভৌ। স কর্ণমভাগীক্ষ্যাথ ছুর্য্যোধনমভাষত ॥ ৩॥ অসক্রন্থস্তরাজ্ঞা মে রাষ্ট্রং বাধিতমোক্ষমা। প্রণেতা কীচকশ্চাম্ত বলবানভবৎ পুরা॥ ৪॥ ক্রুরে। হুমর্থী স্বত্ন ই জালা ভূবি বিখ্যাত বিক্রমঃ। निश्वः म कु शक्तरेकः भाभकर्मा नुभः मवान्॥ ६॥ তিমাপন্ত নিহতে রাজা হীনদর্পো নিরাভাষঃ। ভবিষ্যতি নিরুৎদাহে। বিরাট ইতি নৈ মতিঃ ॥ ৬॥ তত্র যাত্রা মম মতা যদি তে রোচতেইনঘ! কৌরবাণাঞ্চ সর্ক্ষেষাং কর্ণভাচ মহাত্মনঃ॥ ৭॥ এতৎ প্রাপ্তমহং মন্যে কার্যামাত্যযিকং হি নং। রাষ্ট্র তথ্যাভিষাখ্যামো বছধানা সমাকুলমু ॥ ৮ ॥ আদদামোহস্থা রুত্রানি বিবিধানি বস্থানি চ। প্রামান্যষ্ট্রাণি বা তক্ত হরিষ্যামে। বিভাগশং ॥ ৯ ॥ ণ অথ বা গো, সহস্রাণি শু ভানি চ বহুনি চ। বিবিধানি হরিষামেঃ প্রতিপীড়া পুর্ বলাও । ১০ ।

॥ ১ ॥ বাক্যমুবাচেতাত হেজুমাহ অসক্দিতি নিক্তাঃ বঞ্চিতাত্তি বার্তাঃ ইতি শেষঃ প্রভা হেজনটমজয়ঃ ॥ ২ ॥ বাধিতঃ স্থান্ধা বলবতাং কের-যানাং বিভে স্থামিনী ভীমে স্থীপে স্তি কর্মণ উদীক্ষ্য ভূর্য্যোধনং অভাষ্ত ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৩ এ ব ॥ ৮ ॥ ১ ॥ ১ ॥

কৌরবৈঃ সহ # সক্ষমা ত্রিগত্তি 🕫 বিশাম্পতে। গাস্তভাপ্রহর।মোহদাসহ সর্কৈ: সুসঙ্গতাঃ 🕆 ॥ ১১ ॥ া সন্ধিশ বা তেন কুত্বা তু নি প্লীমোহস্থা পৌরুষগ্। इञ्चा वाख्य हमूर क्रथ्यार वर्गामवानयामरह ॥ १२ ॥ खः वर्षा नागिकः क्रवा स्थः वरुषा मरह वयम्। ভবতাং বলরুদ্ধি**ক্ত** ভবিষাতি ন সংশয়ঃ ॥ ১৩ ॥ ভচ্ছত্বা বচনং ভক্ত কর্ণো রাজ্যনমন্ত্রবীৎ। সূক্তং সুশর্মণা বাল্যং প্রাপ্তকালং হিতঞ ন:॥ :৪॥ তশ্ম. ৎ ক্ষিপ্র- বিনির্বামে যোজ্যিত্ব। বর্মধিনীয়। विज्ञा हार्यानीकानि यथा या मनारमश्रम ॥ ३०॥ প্রজ্ঞাবান্ কুরুরুদ্ধে ২ যং সর্কেষা শনঃ পিতা ম 🕫 । আচার্যাশ্চ যথা দ্রোণঃ কুপঃ শারম্বতস্তথা। মন্যন্তে তে ষ্থা সর্বেত্র তথা যাত্রা বিধীয়তাম্ ॥ ১৬ ॥ সম্ব্রস্ত্রা চাশু গচ্ছামঃ সাধনার্থং মহীপতেঃ!। কিঞ্চ নঃ পান্তবৈঃ কার্য্য হীনার্থবলপৌরুধৈঃ ॥ ১৭ ॥ অ । যুহু বা প্রনষ্টান্তে প্রাপ্তা বাপি মমক্ষম্য। य: त्या ताजन सुनिया विता है विषयः 🏶 वयम्। আদাফামে হি গাস্তক্ত বিবিধানি ধনানি চ ৷ ১৮ ৮

॥ ১১ ॥ নিল্প্লাম । নিগ্রীমঃ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ বিনির্থামঃ নিগক্ষামঃ ॥ ২৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

^{, *} সন্ধানোতাত্ত্ব সমতে তি পাঠঃ খ পুস্তাক।

† স্মন্তা ইতাত্ত্ব স্মাংহতা ইতি পাঠঃ খ পুস্তাক।

‡ সন্ধিং বাতেন কৃষাতু ইতাত্ত্ব সংবিভাগেন কৃষাতু ইতি পাঠঃ খ পুস্তাক।

* বিষয় মিতাত্ত্ব নগর মি.ড পাঠঃ খ পুস্তাকে।

रिमण्णायम छेवाउ।

ততো দুর্ঘ্যোধনো রাজা বাক্যমাদায তক্ত তং।
বৈকর্ত্তনক্ত কর্ণক্ত কিপ্রমাজ্ঞাপবং স্কৃষ্য ॥ ১৯ ॥
শাসনে নিত্যসন্যুক্তং দুঃশাসনমনত্তরগৃ।
সহ বৃদ্ধৈক্ত সংমন্ত্রা কিপ্রং ঘোজয় বাহিনীম্॥ ২০ ॥
যথোদেশপ গজ্ঞাম সহিতান্তর কৌরবৈঃ।
স্থশর্মা তু যথোদিকং দেশং হাতু মহারথঃ।
ত্রিগর্ভেঃ সহিতো রাজা সমগ্রবলবাহনঃ,॥ ২১ ॥
প্রাণেব হি স্কুসংবাতো মৎক্তক্ত বিষয়ং প্রতি।
ক্ষমাতো বয়ং তত্র যাক্তামো দির্মাত্তরে।
বিষয়ং মৎক্তরাজক্ত স্কুসমূজ স্কুমংহতাঃ॥ ২২ ॥
তে যান্ত সহিতা ন্তর বিরাট নগর প্রতি।
ক্রিমাং গোপাল মানাদ্য গৃক্ত বিপুলং ধনম্॥ ২৩ ॥
গবাং শতসহস্রাণি প্রীমতি গুণবন্তি চ।
ব্যমগ্রন্থক্তীমে। হিবা ক্রম্বা ব্রব্ধিনীম॥ ২৪ ॥

देवनाळाप्ताम डेवाइ।

তে স্ম গত্বা যথোদিকীং দিশং বহের্মহীপতে।
সমদারথিনঃ সর্বের সপদাতা বল্লোৎ কটা: ॥ ২৫॥
• প্রতিবৈরং চিকীর্যন্তোগোষ্ গৃদ্ধানহাবলাঃ।
তাদদে গাঃ সুশ্রম্মা তু রুষ্ণপ্রকৃত্ব সপ্তনীয়॥ ২৬॥

॥ २৯॥ ২০॥ মথেতিদশং মথা নির্দ্ধিটাং দক্ষিণাগুরুরাং বা দিশং মথ। যোগ্যং বন বিভাগং বা উদ্দিশোত্যর্থঃ॥ ২১॥ ২২॥ ২১॥ ২৪॥ ২৫॥ গৃদ্ধাঃ লুকাঃ॥ ২ ৬॥ অপর্ণ দিবসা সর্ব্ধে রাজন্ সম্ভ্য কৌরবাঃ । অফান্যাপ তে ন্যগৃহ্নন্ত গোকুলানি সহস্রশঃ ॥ ২৭॥ ইন্তি বিরাটপর্বিণি গোহরণপ্রবাণি দক্ষিণ গোগ্রহে সুশর্মাদিয়ানে ত্রিংশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৩০॥

रेनमञ्जाहन छेदाह।

তহন্তেবা নহারাজ তত্রিবামিততেজসাম্।
ছল্পলিন্ধ প্রবিকাং পাপ্তবানাং মহাল্পনাম্॥ ১॥
বাতীতঃ সময়ঃ সমাক্ বসতাং বৈ পুরোজমে।
কুর্মতাং তমা কর্মানি বির্টিদামহীপতেঃ॥ ২॥
কীচকে তু হতে রাজা বিরাটঃ পরবীরহা।
পরাৎ মন্তাবনাঞ্চকে কুন্তা,পুলে যুনিন্তিরে॥ ৩॥
ততপ্রযোদশমান্তে তম্য বর্ষমাভারত।
স্থশর্মণা স্থীতভদ্যোধনং তর্মা বহু॥ ৪॥
ততো জবেন মহতা গোপঃ পুরম্থাব্রজং।
অপশান্ধংস্যরাজান শ সিংহাসনগতং প্রভুম্॥ ৫॥

না গুরুত্ত কলিয়ামান্তঃ॥ ২৭॥

ইতি বিরুটি প্রাণি নৈলুকগীয়ে ভারত ভাবদীপে তিংশোধ্যয়ঃ॥ ৩০॥

জ্মলিদেন ব্রাক্ণাদি কপট বেশেল প্রবিফ্রাণাং ॥ ১॥ ব্যতীতোহতি ক্রান্তঃ সময়ঃ সম্বংসরঃ ॥ ২ ॥ সম্ভর্তনাং কীচকবং অয়মপি মম জয়কর্তা ভবিষাতীতোরং রূপাঃ ॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥

^{*} সিহাসনাতঃ প্রভূমিতার রধাৎ প্রক্ষন্যকুণ্ডলাতি পাটঃ খ পুস্তকে।

শ্বৈঃ পরিবৃতং যোধিঃ কুগুলাঙ্গদধারিতিঃ।

সন্তিশ্চ মন্ত্রিভিঃ সার্দ্ধং পাগুবৈশ্চ নর্বাইভঃ॥ ৬॥

ত শ্বারাশ মহারাজমাসীনং রাষ্ট্রবর্দ্ধন্য।

যোহব্রবিদ্পসন্গম্য বিরাটং প্রণতস্তদা॥ ৭॥

অত্যান্ যুধি বিনিজ্জিতা পরিভূষ স্বাক্সবান্।

গবান শতসহস্রাণি ত্রিগর্ভাঃ কাল্মন্তি তে॥ ৮॥

তান্ পরীক্ষম্ব রাজেন্দ্র মা নেশুঃ পশবস্তব।

তচ্ছারা নৃপতিঃ সেনাং মৎস্যানান সমর্যোজ্মং॥ ৯॥

রথনাগাশ্বকলিলাং পত্তিশ্বজসমাকুলাম্।

রাজানো রাজপুত্রাশ্চ তন্ত্রাশ্রেথ ভেজিরে॥ ১০॥

ভানুমন্তি বিচিত্রাণি শূর্মেব্যানি ভাগশঃ।

সবজারসগর্ভন্ত কবচঃ তপ্তকাঞ্চন্দ্রাব্রথং।

সর্বপারশ্বং বর্দ্ম কল্যাণপটল্য দৃচ্ম্॥ ১২॥

॥ ৬॥ १॥ ৮॥ মা নেশ্বঃ নাশং অদর্শনং দূরে ইতি বাবং মাগচ্ছেন্বঃ ॥ ৯॥ তত্ত্বানি কৰচানি ॥ ১০॥ ভাত্ত্মন্তি দীপামানানি বজারদং অশনিলোকং বছা বজ্রবদচ্ছেদা মভেদাঞ্চবিশন্ভাবারাং পোলাদহতি সংজ্ঞিতং তদ্ভারদং তন্মা গর্ভেত্তিঃ করচং তেন সহিতং সরজারদ গর্ভং পাচান্তরে সংনাহার সজ্জী ভারারদগর্ভং দকণ্টকং গর্ভেজ্বনেহ উকে কুন্দো সন্ধার্ণন সক্ষেকে ইতি নানার্থঃ বজ্ঞং সান্ধীরকে পর্বাবিভিচ॥ ১১॥ অভাহাররং ববন্ধ পারদবং পরান্ হ্লোতি পীডরতি হ্লতি ক্ষিপতিবা পরদবং হ্লোরপ্ স্থার্থে তদ্ধিতঃ পারদবং শস্ত্রং দর্শ পারদ্ধং সর্ধ্বশস্ত্র সহমিত্যুথঃ কলানে পটলং হ্রণ প্রাঞ্চাদিতং কলান মক্ষয়ে বর্গে ইতি বিশ্বঃ॥ ১২॥

শতানীকাদবরজো মদিরাকোইভাহারবং। শতসূৰ্য্যৎ শতাবৰ্ত্তং শতবিন্দ্ৰশতাক্ষিমৎ॥ ১৩॥ অভেদ্যকপ্পং মৎস্যানাং রাজা ক্রচমাছর্থ। উৎসেধে যদ্য পদ্মানি শতৎ সৌগন্ধিকানি চ॥ ১৪॥ স্কুবর্পষ্ঠং সূর্য্যাভং সূর্য্যদক্তোহভাহার্যৎ। দৃঢমায়সগৰ্ভন্ত খেত বৰ্ষা শতাক্ষিম । ১৫॥ ্বির্টিদ্য স্থতে। জ্যেষ্ঠো বীরঃ শঙ্খোইভ্যহার্যৎ। শতশশ্চ তন্ত্রাণি যথাস্বতে মহারথাঃ॥ ১৬॥ বে'ংস্যমানা অনুহা'ন্ত দেবৰূপাঃ প্রহারিণঃ। সূপক্ষের শুভেষু মহৎস্কু চ মহারথাঃ॥ ১৭॥ शृथक् काञ्चनमञ्जाहान् त्थवधीन् त्याकयन्। স্থ্যচন্দ্রপ্রতীক শে রথে দিব্যে হির্ময়ে॥ ১৮॥ মহানুভাবো মৎসাস্য ধুজ উচ্ছিপ্ৰিয়ে তদা। অথান্যান বিবিধাকারান ধজান হেমপরিদ্ভান্॥ ১৯॥ यथाय॰ किञ्जाः मृता त्राथम् ममस्माज्यन् । তথ মৎস্যোহব্ৰথীদ্ৰাজা শভানীকৎ জঘন্যজম ॥ ২০॥ कश्चरलवरभाषाना मामछाङ्ग्हि वीर्याचान्। যুধ্যেযুরিতি মে বুদির্বর্ততে নাত্র সংশ্যং ॥ ২১॥

আবর্ততে পুনঃপুন মুন্মতি বিলস্তীতি মোগাৎ চন্দ্রঃ পদাং বাবিদ্যঃ
কুলচক্রং অক্ষিনেতাকারং চক্রং॥ ১৩॥
উৎসেধে উদ্ধানে সংপূর্ণে বিস্তারে কংলার জাতীয়ানি শতংপদানি পদ্যানিবিক্টানি এবং বিশালমিতার্থঃ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ অভ্যানদান্তেতি পাঠে
কিনিক্টানি এবং বিশালমিতার্থঃ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ অভ্যানদান্তেতি পাঠে
কিনিক্টানি এবং বিশালমিতার্থঃ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ অভ্যানদান্তেতি পাঠে
কিনিক্টানি এবং বিশালমিতার্থঃ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৮॥ উদ্ভিজারে
কিন্তিত্বি ॥ ১৯॥ ২০॥ গোলাক্তিপালাঝাঃ দামগ্রন্থির্পালঃ॥
॥ ২১॥

এতেঘামণি দীয়ন্তাং রখা মজপতাকিনঃ। ক্ৰচানি বিচিত্ৰাণি মৃদুনি চ দুঢ়ানি চ॥ ২২ ॥ প্রতিমুঞ্জ গাতেষু দায়তামাযুধানি চ। বীরাঙ্গরপাঃ পুরুষাঃ নাগরাজকর্বেপিনাঃ 🖟 ২৩ 🖟 নেমে জাতু ন ফুধ্যেযুরিতি মে ধীয়তে মৃতি:। এতছ বা তু নৃপতের্ব। 🗫 ব্রিত্যানসঃ। শতানীকস্ত পার্থেভ্যো রথানাজন্ সমাদিশং । ২৪॥ সহদেবার ভীমার রাজ্তেহ্থ একুলার চ। তে প্রস্কান্ততঃ স্থতা রাজভক্তিপুরস্কৃতাঃ ∤২ঃ॥ निर्क्षिका नत्राप्तर्यन तथान् भीष्रमायाजयन् ! স্বস্থানি বিচিত্রাণি দুঢ়ানি চ মুদুনি চ ॥ ২৬॥ বির টঃ প্রাদিশদ্যানি তেবামক্লিফকর্মণান। তান্যামূচ্য শরীরেষু দংশিতাত্তে প্ররন্তপাং॥ ২৭ ॥ রথানু হথৈঃ সুসম্পান্নীনাস্থায় চ নরোন্তমাঃ। নির্যুন্ধ দিতাঃ পার্থাঃ শত্র সংঘাবমন্দিনঃ॥২৮॥ তরস্থিনশ্চন্নৰপাঃ সর্বের মুদ্ধবিশারদাঃ। র্থান হেমপ্রিচ্ছলানাস্থা চ মহার্থাঃ ॥ ২৯॥ বিরাটমন্বযুঃ পার্থাঃ সহিতাঃ কুরুপুঙ্গবাধন চত্বারো ভাতরঃ শূরাঃ পাপ্তবাঃ সত্যবিক্রমাঃ॥ ৩०॥ ভীমাশ্চ মন্ত্রমাতঙ্গাঃ প্রভিন্ন কর্টামুখাঃ। ক্ষরন্ত ইব জীমূতাঃ স্থদন্তাঃ ধ্টিহাযনাঃ ॥ ৩১ ॥ •

ম ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ২৯ ॥ ৩০ ॥ প্রতির করটামুখাঃ । ক্তিকভগতেটা করটো ইত্যমরঃ ॥ ৩১ ॥

করস্তরজীমৃতা ইতাত করস্তরেত নাগেলা ইতি পাঠ য় পুস্তকে।

স্বাৰটো যুদ্ধকুশলৈঃ শিক্ষিতৈইন্তিসাদিভিঃ।
রাজানমন্ত্যুঃ পশ্চাং চলন্ত ইব পর্বিতাঃ ॥৩২ ॥
বিশারদানা মুখ্যানা ইন্তানাঞ্চানুয়াযিনাম্।
ক্রেটা রথসহস্রাণি দশানাগশতানি চ ॥ ৩৩ ॥
যক্তিশাস্ত্রাণি মৎস্যানামভিনির্যু।
তদনীকং বিরাট্যা শুশুভে ভরত্তি ॥ ৩৪ ॥
দেংপ্রিয়ান্ত তদা রাজনিরীক্ষন্তং গবাং পদম্॥
তদলাগ্রা বিরাট্যা সংপ্রস্থিতমশোভত।
দৃটাযুধজনাকী কি গজাশ্বরথসস্কুলম্॥ ৩৫ ॥
ইতি বিরাটপর্বিণি গোহরণপ্রবিণি দক্ষিণগোগ্রহে বিরাট্যা
বলোদ্যোগে এক ত্রিংশন্তনোহ্যায়ঃ॥ ৩১ ॥

বৈশশ্যান উবাচ।
নির্যায় নগরাচ্চুরা বুটোনীকাঃ প্রহারিবাঃ।
বিগার্ডানস্প্রশান্ত স্যাঃ স্থায়ে পরিবাতে সতি॥ ১॥
তে বিগার্ডাশ্চ মহস্যাশ্চ সংরক্ষা যুদ্ধচুর্মানাঃ।
অন্যোহন্যমভিগর্জ্জন্তো গোষু গুদ্ধা মহাবলাঃ॥ ২॥
॥ ৩২॥ ৩৩॥ ৩৪॥ নিরীক্ষত্তং নিরীক্ষমানং প্রংলিদমার্বং॥ ৩৫॥
ইতি বিরাট পর্কানি নৈলক্ষীরে ভারত ভাবদীপে
একবিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩১॥

নিষ্যায় নির্মতা অস্পৃশন্ প্রাপ্তবতঃ পরিণতে পঞ্ধাবিভক্ত স্যাত্র-ক্তুর্থভাগং প্রাপ্তে ॥১॥২॥

^{*} হঠানাঞ্চাল্যায়িন। মিত্যত্ত হঠানাঞ্চাক্জীবিনামিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

ভীমাশ্চ মন্তমাতক্ষান্তোমরাক্ষ,শচোদিকা^{ংক}। আমণীয়েঃ সমাৰটোঃ কুশলৈইন্তিস দিভিঃ॥ ৩। তেষাপ সমাগমো ঘোরস্তমুলো লোমহর্ষণঃ। प्रठार शहस्त्रादर क्रांकन यमवाके विवर्षानः॥ ४॥ দেবাস্তুরসমো রাজনাগীং সুর্গোহবলমতি। পদাতিরথনাগেল হ্যারে হিলোঘবান । ৫ ॥ অন্যেহন্যভাপেত্তাং নিল্ভায়িতরেত্রম্। উদ্ভিষ্ঠদ্ৰজো ভৌন্স ন প্ৰাক্তায়ত কিঞ্চন॥ ৬॥ প্রিণশ্চাপতন্ ভূমৌ গৈন্যেন রজ্মা রুতাঃ 1 ইবুভিব্যতি স্পাছির।দিত্যেই এর্গীয়ত ॥ ৭॥ খদ্যেতৈরিব সংযুক্তমন্তরীক্ষণ বারাজত। রুকাপ্টানি চাপানি বাতিষক্তানি ধবিনাম্॥ ৮॥ পত্তাং লোকবীরাণাপ স্বাদ্ফিশ্নস্তান্। রথা রুথেঃ সমাজগাই পাদাতৈ 🕫 পদ,ত্যং ॥ ৯॥ मार्मिङः मानिनदेन्द्रय शरेखरेन्द्रय मञ्जाखाः। অসিভিঃ পট্টিশেঃ প্রাকৈঃ শক্তিভিত্তোমরৈরপি॥ ১०॥ সংরকাঃ সমরে রাজানজন্রিতরেতরম্। निज्ञन्तः समरहरूरमाना</br>
भृताः शिविषयाईवः॥ ১১॥ ন শেকুরভিসংরকাঃ শূরানু কর্ত্র পরাজাখান্। ক্লভোত্তরোষ্ঠং স্থনদৎ ক্লভকেশমলস্কৃত্যু॥ ১২॥

আমনী হৈঃ রাজকীয়েঃ আমনী বাপিতেপুংসি ত্রিপুর ক্ষেণি পৈ পিচেতি-নানাথঃ ॥ ৩॥ সমাধ্যমঃ সংআমঃ ॥ ৪॥ অবল্যতি অবরোহতি ॥ ৫॥ ॥ ॥ ৬॥ সৈনোন সেনোখেন ॥ ৭॥ বাতিবিকানি হন্তাং হস্তাহুরং প্রতানি ॥ ৮॥ অস্যতাং ক্ষিপতাং ॥ ৯॥ ১০॥ ১৮॥ ১২॥

^{*} গ্রেদিভা ভ্তাত্র নের্দি তাই তিপাসঃ খ পুস্তকে।

অদুশাত শির্শিছ্রং রজোধস্থং স্কুণ্ডলমু । অদুৰান্ত চ গাতাৰি শুৱৈশিছলাৰি ভাগৰঃ । ১৩॥ শালকল্লনিকাশানি ক্লিয়াণাং মহামুখে। न। গভোগনিকালৈশচ বাছভিশ্চন্দ্ৰে। क्रिटेडः ॥ ১৪॥ আঁস্টীনা বন্ধুধা ভাতি শিরোভিশ্চ সকুগুলৈঃ। রবিনাং রবিভিশ্চাত সংপ্রহারে। 🕶 বর্ত্তি ॥ ১৫॥ र्मापिकः मापिनावर्गात लगा जीनार लगार्जिकः। উপাশামাত্রজো ভৌমণ ক্রবিরেণ প্রদর্পতা॥ ১৬॥ कभावः छारिभारेकातः निर्मार्गाममवर्ज्य ॥ উপাবিশন্ গরুত্বান্তঃ শরৈগাচং প্রবেজিতাঃ। चाउदीएक गाउदिवार मर्मनकः भारत्वा । >१॥ তে সভঃ সমরেহন্যান্য শূরাঃ পরিষণাহরঃ। ন শেকুরভিসংরক্তঃ শূরান্কর্ত্তুং পর।জ্ব থান্॥ ১৮॥ শতানীকঃ শতং হত্তা বিশালাক্ষকভঃশত্য। প্রবিষ্টো মহতী৲ সেনাং ত্রিগর্ভানাং অহারথৌ ॥ ১৯ ॥ তो প্রবিষ্টো মহাদেনাং বলবন্তো মন্স্থিনৌ। আচ্ছেতা পৰাছসংরক্ষো কেশাকেশি নথানিখি॥২০॥

॥ ১০ ॥ নাগভোগ নিকবিশঃ সর্পদেহেপ্রিঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ কশালং মৃক্ষ্য আবিশংশ্রানিতিশের যেবাং গ্রুতাং পক্ষিণাং অভরীক্ষে গতির্দনকতেপি শরেঃ প্রেনজিতাঃ উদ্বেগং প্রাপিতাঃ সভঃ,
উপাবিশন্ ধ্রাপ্রানে বান পটলেন, তেখাংগতি র্দর্শনক্ষ ন্যক্ষাত নিরুদ্ধং
॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ত্রিগতানাং সেনাং প্রিকীবিভাষয়ঃ ॥ ১৯ ॥ প্রবিশান তামা
ভিন্নতাং মোহিত বভৌ কেশাকেশি কেশেরু কেশের গৃহীরা প্রবৃত্তং মৃদ্ধং
কেশ কেশি কবং রথারথি পাঠানুরে নথা নখি নখৈশ্য নথৈশ্য প্রতিদং

যুদ্ধং প্রত্তং নখানিখি কেশেরু গৃহীরা যোধান্রবেরু গৃহীরা রথাংশ্য
প্রক্রিণ ভাইতভারঃ ॥ ২০ ॥

লক্ষযিত্বা ত্রিগর্ভানান তৌ প্রবিষ্টো রথব্রজম। জগ্মতুঃ * স্থাদভুদ্ধ মদিরাক্ষশ্চ পৃষ্ঠতঃ ॥ ২১॥ বিরাটস্তত্র সংগ্রামে হত্বা পঞ্শতানুথান্ । হ্যানাঞ্চ শতান্যটো হত্বা পঞ্চ মহার্থান ॥ ২২ ॥ চরন স বিবিধাঝার্গান্থেন রথস্তুমঃ। ত্রিগর্ভানাং স্কুশর্মাণুমাচ্ছ ক্ররথং রণে । ২৩॥ তৌ ব্যঝহরতাং তত্র মহাআনৌ মহাবলো। অন্যোন্যমভিগর্জন্তে গোঠে গোর্ঘভাবিব। ২৪। ততো রাজা ত্রিগর্ভানাং স্কুশর্মা যুদ্ধতুর্মদঃ ! মৎস্যুৎ সমীযাজাজানং † देवतथ् युक्तमाञ्चयन् ॥ २०॥ ততো রথাভ্যাপ রথিনৌ ব্যতীযত্রমর্ষিণৌ। শরানু বাসজভাং শীঘ্রু তোষধারা ঘনাবিব ॥ ২৬ ৫ जानामाक्षापि मः तस्तो विष्ठतनुत्रमर्भागे। ক্লতান্ত্রো নিশিতৈকাণৈরসিশক্তিগদাভূতৌ ॥ ২৭ ॥ ততে। রাজা স্থশর্মাণ পরিব্যাধ দশভিঃ শরৈঃ। পঞ্জিঃ পঞ্চজিশ্চাস্য বিব্যাধ চতুরো হ্যান ॥ ২৮॥ ত থৈব মৎস্যরাজ্যনৎ স্থশর্যা যুদ্ধত্বর্দ্ধদঃ। ‡ পঞ্চাশতা শিতৈকাণৈকিব্যাধ পরমাস্ত্রবিৎ॥ ২৯॥

স্থাদত সভানীকঃ ॥২১॥ ২২ ॥ ২৩॥ ভেবিরাট স্পর্যাণো ॥২৪॥ ॥২৫॥২৬॥২৮॥২৮॥১৯॥

^{*} জন্মতুরিতাত অতাত ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

† দৈরখং যুদ্ধমাধ্বর নিতাত দৈরখেন নর্মত ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

‡ পঞ্চাশতাশিতৈর্মানৈরিতাত পঞ্চাশক্তিঃ শিতৈর্মানে রিতি পাঠঃ
খ প্রতকে।

ততঃ সৈন্যং মহারাজ মংস্যরাজস্কশর্মণোঃ।
নাভ্যজানন্তদান্যোন্যং সৈন্যেন রজসার্তম্ ॥ ৩০॥
ইতি ব্রিটেপ্রাণি গোগ্রহণপ্রাণি দক্ষিণ গোগ্রহে স্ক্শর্মন বির্টিনুদ্ধে দাবিংশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৩২॥

বৈশাপায়ন উবীত।
তমসাভিপ্পতে লোকে রজ্যা চৈব ভারত।
অতিন্ঠন বৈ মুহু রুঁজু ব্যুচানীকাঃ প্রহারিনঃ॥ ১॥
ততোহল্পকারং প্রপুদর্দতিন্ঠত চন্দ্রমাঃ।
কুর্বাণো বিমলাপ রাত্রিং নন্দ্রম্বর্জত।
আরক্রপং ততন্তম্মিয়াবৈক্ষন্ত পরস্পরম্॥ ৩॥
ততঃ প্রকাশমাসাদ্য পুন্যু ক্মিবর্জত।
ঘোরক্রপং ততন্তম্মিয়াবৈক্ষন্ত পরস্পরম্॥ ৩॥
ততঃ স্থান্যা ত্রৈগর্জঃ সহ লাত্রা ঘবীয়সা।
অভ্যন্তবন্তমারাজং রথবাতেন সর্বশং॥ ৪॥
ততো রথাভ্যাং প্রকন্য ভাতেরী ক্ষাত্রের্যভৌ।
গদাপানী স্কম্পরক্রো সমভ্যন্তাং রথান্॥ ৫॥

ততঃ সৈন্য মিতি শ্লেকঃ প্রাচীন পুস্তকে সন্থা প্রতিত ততঃ সেন্ত সমাহত্য মৎস্কাজ স্থামনী ন জাতিতাং তদানোনিং সৈন্যেন বজ্পা বৃত্তী বিতি তত্ত স্থামনা বিতিহ্রস্কমার্যং সেনা সেনাস্থান্ শ্রান্ সমাহত্য স্নোধন্য সংঘটং করিছিছ। সৈন্যেন সেনোপেন ॥ ৩০॥

> ক্লতি বিরাট পর্বাণি নৈুলকগীয়ে ভারত ভাবদীপো দাবিংশো২ধারিঃ॥৩২॥

তমসা নৈশেনারকারের মূহুর্তং আচন্দ্রোকালং নতুর্ঘাদরমাত্রং কৃষণক্ষ্যা সপ্তমী মিতি সপ্তম্যাং গোগ্রহণস্যোক্তরাং ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ প্রক্ষণ অবক্ষ্য ॥ ৫॥

তথৈব তেষান্ত বলানি তানি কুদ্ধান্যথান্যোন্যমভিদ্রবন্তি। গদাসিথকৈশ্চ পরশ্ববৈশ্চ প্রাসেশ্চ তীক্ষাগ্রস্থপীতধারে: ॥ ৬॥ বলন্ত মংস্যন্ত বলেন রাজা সর্বাং ত্রিগর্ভাধিপতিঃ স্কুশুর্মী। প্রমথ্য জিল্পা চ প্রমন্থ মৎস্কং বিরাটমোজস্বিনমভ্যধাবং ॥ १। তৌ নিহত্য পুথগ'ধুর্ঘ্যাবুভৌ চ পাফি সার্থী। বির্থণ সংস্যরাজানং জীব্তাহ্মগুহৃতীয় ॥ ৮॥ ভমুম্মথ্য স্থশর্মা তু বুবতীমিব কামুকঃ। স্যান্দনং স্বং * সমারোগ্য প্রথযৌ শীঘ্রবাহনঃ॥ ৯॥ তান্মনু গৃহীতে বিরুথে বিরাটে বলবন্তরৈ:। • প্রাদ্রবন্ত ভয়ানাংস্থান্ত্রিগর্টেরদিতা ভূশন্॥ ১০॥ তেয় সংত্রাস্তমানেয়ু কৃতীপুজো যুধিষ্ঠিরঃ। অভ্যভাষরহারাজ্য ভামদেনমরিনদময় ॥ ১১ ॥ মংখ্রাজঃ পরামুটব্রৈগর্তেন স্থশর্মণা। তং নোচয় মহাবাহোঁ ন গচ্ছেদ্বিতা প বশম ॥ ২২ ॥ উষিতাঃ শ্ব স্থুখং সর্বে সর্বিকামেঃ প্রপূজিতাঃ। ভীনদেন তুয়া কাৰ্য্যা তম্ম বাসম্ম নিষ্কৃতিঃ ॥ ২৩ ॥ ভীম উবাচ ৷

অহমেনং পরিত্রাম্যে শাসন্তিব পার্থিব।
পশ্য মে স্থমহৎ কর্ম যুধ্যতঃ সহ শক্রভিঃ॥ ১৪॥
প্রান্থবলমাশ্রিত্য তিঠ স্বং ভাতৃভিঃ সহ।

একান্তমাশ্রিতো রাজন পশ্য মেহ্ন্য পরাক্রমন্ ॥ ১৫॥
তীক্লানি অপ্রাণি স্থপীতাঃ স্বতরাং পীতাঃ শোষিতাঃ ক্রমীতাঃ অনায়াদেন শীঘং পরশরীর প্রবেশক্ষমাঃ ধারীক ঘেষাং তে তীক্লাগ্র স্থপীত
ধারাস্তৈঃ তীক্লায়ন পীতেতি পাঠেপিপাতু শব্দমাক্ত এবার্শঃ॥ ৬॥
বন্ধজিলা চেতি সম্বন্ধঃ॥ ৭॥৮॥ ১॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১০॥ ১৪॥ ১৫॥

^{*} সমারোহোত্যত্র সমারোপ্যেতি পাঠঃ ধ পুস্তকে।

স্থককোহর মহারকো গদারপ ইব স্থিত:।
ভাহমেনমপারুজ্য জাব্য়িষ্যামি শাত্রবান্॥ ১৬॥
रিবশস্থারন উবাচ।

তং মন্ত্রমির মাতঙ্গণ বীক্ষমাণং বনম্পতিম।

অন্তরীন্ত্রাতরং বীরণ ধর্ম্মোরাজাে যুথিন্তিরঃ ॥ ১৭ ।
ভীম মা সাহসণ কার্মীন্তিষ্ঠত্বেষ বনস্পতিঃ।

মা ত্বাণ রুক্ষেণ কর্মাণি কুর্বাণমতিমানুষম্ ॥ ১৮ ॥
জনাঃ সমববুধারন্ ভীমোহয়মিতি ভারত।

অন্যদেবাযুধং নির্দ্ধিৎ প্রতিপদ্যন্থ মানুষম্ ॥ ১৯ ॥
চাপং বা যদি বা শক্তিণ নিক্তিংশংবা পরশ্বধম্।

যদেব মানুষং ভীম ভবেদনৈয়লক্ষিতম্ ॥ ২০ ॥

তদেবায়ুধমাদায় মোক্ষয়াশু মহীপতিম্।

যমৌ চ চক্রকৌ তে ভরিতারৌ মহাবলৌ ॥ ২১ ॥
সহিতাঃ সমরে তত্র মৎস্যরাজং পরীপাত।

বৈশন্পায়ন উবাচ।

এবস্ক্তস্তবেগেন ভীমদেন মহাবল: ॥ ২২ ॥
গৃহীত্বা তু ধন্ম: শ্রেষ্ঠৎ জবেন স্থমহাজব: ।
ব্যমুক্তচ্ছর বর্ষাণি সতোয় ইবতোয়দ: ॥ ২৩ ॥
ত> ভীমো ভীম কর্ম্মাণং স্থশর্মাণ মথাদ্রবং ।
বিরাটং সম বীক্যোনং তিষ্ঠতিষ্ঠেতি চাবদং ॥ ২৪ ॥

অপাকজ্য উৎপাট্য ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২০ ॥ ২০ ॥ বিরাটং সমবীক্ষানং হেসম হেসাধো ইতি বিরাটং বীক্ষা বাচাদৃশাচ সংভাব্য এনং স্থামাণং তিষ্ঠতিটেতি চাবদ দিতি সম্বন্ধঃ সর্বসাধু সমান্ত্র সমংস্যাদভিধেরব দিতি মেদিনী ॥ ২৪ ॥

স্থশর্মা চিত্তরামাদ কালান্তক যমেপিমং। তিষ্ঠাতষ্ঠেতি ভাষত্তং পৃষ্ঠতে। রথ পুঞ্চবঃ। পশ্যতাং স্থমহৎ কর্ম মহদ্যুদ্ধ মুপস্থিতং ॥ ২৫ ॥ পরারুত্তো ধনুর্গৃহ **স্থশর্ম।** ভাতৃভিঃ সহ। নিমেষান্তর মাত্রেণ ভীমদেনেন তেরথাঃ॥ ২৬॥ রথানাঞ্চ গজানাঞ্চ বাজিনাঞ্চ সসাদিনাং। সহস্রশত সংঘাতাঃ শূরানামুগ্রব্দ্বিনাং ॥ ২৭ 🕯। পাতিতা ভীম দেনেন বিরাট্যা সমীপতঃ। পত্তয়ো নিহতাত্তেষাং গদা পৃষ্ঠমহাল্মনা ॥ ২৮॥ তদ্টা তাদৃশ্ বুদ্ধং স্থশ্ম। যুদ্ধ দুর্মান:। চিত্তরামাস মনসা কিং শেষ % হি বলস্যমে। অপরো দুশতে গৈন্যে পুরামগ্যো মহাবলে ॥ ২৯ ॥ আকর্ণ পূর্ণেন তদা ধরুষা প্রত্যদৃশ্যত। সুশর্মা সায়কাং স্তীক্ষান্ ক্ষিপতেচ পুনঃপুনঃ ॥ ৩০ ॥ 🌣 তাভঃ সমস্তান্তে সর্বের তুরগানভ্যচোদয়ন্। দিব্যমন্ত্র^ বিকুর্বাণান্ত্রিগর্তান্ প্রত্যমর্ধণাঃ॥ ৩১॥

রথ পুজবঃ তিষ্ঠতিষ্ঠেতি ভাষমাণঃ মহৎ কর্মানোনা মুদ্ধং পশাতাং কর্মবা তিহারে তঙ্ অবং মাং মহং কর্ম কুর্মাণং পশাতু অহ্ঞেনং দ্রক্ষো ইতার্থঃ ॥২৫ ॥ রথাঃ সংগতা ইতি শেষঃ ॥২৬ ॥২৭ ॥২৮ ॥ চিন্তয়ামান সেতি স্থার্মা রক্ষা সৈন্যমা কিং শেষং কুর্গেতং বধং চিন্তয়ামান শেষঃ । সংকর্মণে বধে ইতি মেদিনী তত্ত্ব হিষম্মাৎ মেমম অপরো জাতা মহাবলে সৈনো পুরাম্মো দৃশাতে জাতুঃ সঙ্গ চ্চত্বা সৈন্যনাশং চিন্তয়া মাসেতার্থঃ ॥২৯ ॥ ধন্ত্বা শোভ্মান ইতি শেষঃ ॥৩০ ॥ তে সর্কে মংসাঃঃ ॥৩১॥

^{*} ততইত্যস্য প্রাক্ বৈশস্পায়ন উবাচ ইত্যাদি আকর্ণ পূর্ণেন তদেতান্ত সাজাফলোকঃ ক পুস্তকে নান্তি।

তালিরভরথ:ন্ দৃষ্ট্রা পাওবান্ সা মহাচমূং। বৈরাটা পরমক্রুদ্ধে যুযুধে পরমাদ্ভত্য ॥ ৩২ ॥ महञ्ज भावतीखंब कूचीशूर्वाः यूनिष्ठितः। ভীনঃ সপ্ত সহজাণি যমলোকমদশ্যৎ॥ ৩০॥ নকুলশ্চাপি সপ্তৈব শতানি প্রাহিণােচ্ছরৈঃ'। শতানি জীনি শ্রাণাৎ সহদেবঃ প্রতাপবান্॥ ৩৪॥ র্থার্বিষ্টির সমাদিকে। নিজন্মে পুরুষর্বভঃ। ভতোহভাপতদভাগ্রঃ স্থশর্মা ব্যুদ্যতাযুধঃ॥ ৩৫॥ হিন্তা তাং মহডী । সেনাং ত্রিগর্তানাং মহারথঃ। ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা ত্তরমাণো মহাবল:॥ ৩৬ : অভিপতা সুশর্মাণং শরৈরভ্যাহনদ্র শন্। স্থশৰ্ম⊧পি স্থসশরস্বস্থরমাণো যুধিষ্ঠিরম্॥ ৩৭॥ অবিধানবভিকাবৈশচভুভিশ্বচভুরে! হয়ান্। ততো রাজনাশুকারী কুত্তিপুজো রুকোদরঃ॥ ৩৮॥ সমাসাদা স্থশর্মানুমস্থানস্য ব্যাপেথিয়ং। পৃষ্ঠগোপাংশ্চ ভক্তাথ হ্বা প্রমসায়কৈঃ॥ ৩৯ ॥ অথাম্ম সার্রথিং ক্রুদ্ধো রথোপস্থাদপাতয়ৎ। চক্ররক্ষণ্ড শূরো বৈ মদিরাক্ষোহতিবিপ্রতঃ ॥ ৪০॥ সমায়াদিরথ দৃষ্ট্ব। ত্রিগর্ভং প্রাহরন্তন। । ততো বিরাটঃ প্রস্কন্য রথাদথ স্কুশর্মাণঃ ॥ ৪১॥ গদামস্য,পরামৃষ্য তমেবাভ্রেবছলী। স চচার গদাপাণিক্ দ্বোহপি তক্রণো যথা॥ ৪২॥

া ৩২ ॥৩৩ ॥৩৪॥ অজুবেশী সুধিঠিরঃ বাক্য শেষাৎ ॥৩৫॥ ৩৬॥ ॥৩৭॥৩৮॥৩৯ ॥৪০॥৪১ ॥৪২॥ পলাবদানং তৈগর্তং দৃষ্টা ভীমেহ ভাভাষত।
রাজপুল নিবর্ত্ত্ব ন তে যুক্তং পলাবন্য ॥ ৪০ ॥
অনেন বীর্যোণ কথা গান্ত্বং প্রার্থবেল বলাং ।
কথপানুচরাং স্তাক্ত্বা শক্রমধ্যে বিধীদান ॥ ৪৪ ॥
ইত্যুক্তঃ স তু পার্থেন স্কর্শ্যা রথযুথপঃ ।
তিষ্ঠতিষ্ঠতি ভীমং স সহসাভ্যদ্রবদ্ধনী ॥ ৪৫ ॥
ভীমস্ত ভীমসঙ্কাশো রথাং প্রক্ষন্য পাপ্তরঃ ।
প্রাদ্রবৃত্ত্বামবার্থে। জীবিতেপ্ট্রু স্কর্শ্যণঃ ॥ ৪৬ ॥
তা ভীমসেনো ধাবত্তমভাগাবত বীর্যাবান্। ।
তিগর্তিরাজমাদাতুং সিম্হং ক্রুমুগং মথা ॥ ৪৭ ॥
অভিক্রতা স্কর্শ্যাণং কেশপক্ষে পরাম্যাহ ।
সমুদামা চ রোযান্ত্র নির্পোধ্যে মহীতলে ॥ ৪৮ ॥
পদা মুর্দ্ধি মহাবান্তঃ প্রাহ্রাদ্বাপ্রিয়তঃ ।
তক্ত জানুং দদৌ ভামৌ জন্মে চৈনমরন্থিনা ।
সামোহমগমন্তাজা প্রহারবর্ণীডিতঃ ॥ ৫৯ ॥ ।

ত্তিগর্তং তিগর্তাধিপতিং ॥ ৪০॥ ৪৪॥ ৪৫॥ ভীম সদ্ধাণঃ ভীমোপমা রামরাবন্যার্দ্ধং রামরাবন্য়ে। রিবেতি বল্লপম ইতার্পঃ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭॥ কেশ পক্ষে কেশকলাপে পাশঃ পক্ষণ হস্তুক কলপার্থাঃ কচাৎ পর ইতি পক্ষে মাদার্গকে ইতুপেক্রমা কেশাদেঃ পরতার্দ্দ ইতি মেদিনী॥ ৪৮॥ ভাষ্টেক্তং নীতি শাস্ত্রে বাম পানি কটোৎ পীডা॥ ১॥ ভূমৌ নিপেবণ্
বলাৎ ॥ ২॥ মূর্দ্ধিপাদ প্রহরণং॥ ৩॥ জাত্নোদর মর্দ্দাং॥ ৪॥ মালুরা-কার্মা মুক্তা কপোলে দৃত তাডনং॥ ৫॥ ককোর্নি পাতোমরুং॥ ৬॥ সর্ব্রেক্তল তাডনং॥ ৭॥ তালেন রুদ্ধে ভ্রমণং॥ ৮॥ মারনং স্কৃত মন্তব্যু, চতুর্ভিঃ ক্ষত্রিয়ং হন্যাৎ পঞ্চাভঃ ক্ষত্রিয়াধমং যড্ভিরেশ্যু সপ্তভিন্ত শুদ্রং সন্ধর মন্ত্রিতি এতেবাং মধ্যে তং কেশগ্রহাদিভিঃ পঞ্চিভঃ মার্য়তাহ্সা ক্ষত্রিয়াধমহং দশিতং॥ ৪৯॥

তিমান গুহীতে বিরথে তিগর্ভ।নাং মহারথে । অভজ্যত বলৎ সর্বাং তৈগর্ভং ভদ্ত্যাতুরম্। ৫০॥ নিবর্ত্তা, গাস্ততঃ স্বাঃ পাণ্ডপুজা মহারথাঃ । অবজিত্য সুশর্মাণং ধনঞ্চাদায সর্বাশঃ ॥ ৫১ ॥ স্বাহুবলদম্পন্না হ্রীনিষেবা যত্রতাঃ। বিরাট্য মহাত্মানঃ পরিক্লেশবিনাশনাঃ । ৫২ ॥ স্থিতাঃ সমক্ষ্ণ তে সর্কো ত্ম্ব ভীমোহভ্যভাষত॥ ৫০॥ . নায^ পাপসমাচারে। মতো-জীবিভুম≨তি। কিল্ল শক্যং ময়া কর্ত্তং যদ্রাজা সততং ঘূণী ।। ৫৪॥ शत्न शृशेषा ताकानमानीय विवनः वनम् । তত এনং বিচে**ইতঃং বন্ধা পার্মে (র্কো**দরঃ ॥ ৫৫ ॥ রথমারোপ্যামাদ বিদংজ্ঞং পাংশুগুর্গিতম্। অভ্যেত্য রণমধ্যস্থমভ্যগচ্ছদ্যুধিষ্ঠিরস্ ॥ ৫৬॥ দর্শবামাস ভীমস্ত তামবস্থাং স্থশর্মাঃ। প্ৰোবাচ পুৰুষব্যান্ত্ৰো ভীমমাহৰশোভিনম্॥ ৫৭॥ তং রাজা প্রাহসক্ষ্টা মুচ্যতা৲ বৈ নরাধমঃ। এবমুক্তোংব্রবীন্তীমঃ স্কুশর্মাণং মহাবল্ম। ৫৮॥ ভীম উবাচ। জীবিতুং চেচ্ছেসে মূঢ় হেতুৎ মে গদতঃ শৃণু ৷ দাসোহস্মীতি ত্বযা বাচ্যং সৎসহস্ক চ সভাস্ক চ ॥ ৫৯॥ এবং তে, জীবিতং দদ্যামেষ্ যুদ্ধজিতা বিধি:।

॥ ৫০॥ ৫১॥ ৫২॥ ৫৩॥ য়ুণীদরা লুঃ॥ ৫৪॥ বিবশং অচিত্তং বশং প্রাধীনং॥ ৫৫॥ ৫৬॥ ৫৭॥ ৫৮॥ ৫৯॥ ৬০॥

তমুবাচ ততো জ্যেষ্ঠো ভ্রাতা মর্প্রবহং । ৬০।

মুখিতির উবাদ।

* মুখ্যেম মধমাদারং প্রমানং যদি তে ব্যম্।
দাসভাবং গতো হোষ বিরাটস্থা মহীপতেঃ।
অদাসো গচ্ছ মুক্তোহসি মৈবং কার্ষীঃ কদাদন ॥ ৬১ ॥

ইতি বিরাট পর্কানি গোগ্রহণ পর্কানি দক্ষিণ গোগ্রহে স্থশর্মা
নিগ্রহে ত্রাস্ত্রিংশস্ত্রমোহধ্যায়ঃ॥ ৩০॥

-

বৈশস্থারন উবাচ।

এবমুক্তেতু সত্রীতঃ স্ক্রশর্ষাসীদধামুখঃ।
স মুক্তোহভাতা রাজানমভিবাদ্য প্রতস্থিবান্ ॥ ১॥
প্রমুচ্য তং স্ক্রশর্মাণং পাপুবাস্তে হতদ্বিষঃ।
স্বাছবলসম্পন্না ক্রীনিষেবা যতন্ত্রতাঃ।
সংগ্রামশিরসো মধ্যে তাং রাত্রিং স্কৃথিনোহবসন্॥ ২॥
ততো বিরাটঃ কোন্ডেয়ানতিমানুষ্বিক্রমান্।
অর্চ্যামান বিজেন মানেন চ মহার্থান্॥ ৩॥

বিরাট উবাচ ৷

যথৈব মম রজানি যুগাকং তানি বৈ তথা। কার্যাং কুরুত সর্কে বৈ যথাকামং যথাসুখম্॥ ৪॥ '॥ ৬১॥

ইতি নিরাট পর্ব্ধনি নুৈনকণ্ডীয়ে ভারত ভাবদীশে ভয়ব্রিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩৩॥

11 8 11 0 11 8 11

* মুঞ্চোস্য প্রাক্ যুগিষ্ঠির উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

দদ বিষ্ণালস্থাং কন্যা বস্থানি বিবিধানি চ। মনসশ্চাপ্যভিপ্রেতং শৃদ্ধং শক্রনিবর্হণাং॥ ৫॥ মুশ্বাকেশ বিক্রমাদদ্য মুক্তোহ্ছং স্বস্তিমানিহ। তন্মান্তবতো সংস্ঠানামীশ্বাং সর্বা এব হি॥ ৬॥

दिमाल्यात्रम छेगात्र।

উথেতি বার্দিং মৎস্তং কোরবেরাঃ পৃথক পৃথক।
উচুং প্রাঞ্জলয়ঃ সর্কে যুথিচিরো পুরোগমাঃ॥৭॥
প্রতিনন্দাম তে'বাকা> সর্কা এব বিশাস্পতে।
এতেনৈব প্রতীতাঃ স্ম যত্ত্বং মুক্তোহদ্য শত্রুভিঃ॥৮॥
প্রথাব্রীৎ প্রীতমনা মৎস্থরাজে। যুথিচিরম্।
পুনরেব মহাবাছ্কিরাটো রাজসন্তমঃ॥৯॥
এহি স্বামভিষেক্যামি মহস্যাজোহস্ত নো ভবান্॥:०॥
মনসন্টাপাভিপ্রেত^ শ যত্তে শত্রুনিবর্হণ।
তত্তেহ্হ্ সংপ্রদাস্যামি সর্কামহিতি নো ভবান্॥>>॥
রন্ধানি গাঃ স্থবর্ণক মনিমুক্তমথাপি চ।
বৈষাত্রপদ্যবিপ্রেক্র সর্কাথৈব নমোহস্ত তে॥ >২॥
স্বহ্রুভি হাদ্য পশ্যামি রাজ্যমান্থানমেব চ।
মতশ্চ জাতঃ সংরন্ধো ন চ শত্রুর্বশঙ্গতঃ॥ >০॥
ততো যুধিচিরো মহসা> পুনরেবাভাভাবত।
প্রতিনন্দামি তে বাকাং মনোজ্বং মহস্য ভাষ্যে॥ ১৪॥

া ৫॥ ৬॥ ৭॥ পুতীতাঃ হাফীঃ । ৮॥ ৯॥ ১০॥ নঃ অস্থ সম্বন্ধি দর্বাং ভবান্ গৃহীতু মহতি॥ ১১॥ ১২ মতে। নিগৃহীতঃ জাতসংগ্রন্থী জাত ভয়োপি ব্যলান্ত শত্রুবশঙ্কতোপি॥ ১৩॥ ১৪॥

^{*} যতে শক্ত নিবৰ্হণে জব্ব যথেইং ভূবিছ্ল'ভ মিতি পাঠঃ খ গুস্তকে।

আনৃশৎস্যপরো নিত্যং স্কুস্থী সততং ভব।
গচ্সু দৃতাস্থ্রিতং নগরং তব পার্থিব॥ ১৫॥
স্থানা প্রিমাখ্যাতুং ঘোষযক্ত চ কে জযম।
ততস্ত্রতনাম্প্রেয়া দূতানাজা সমাদিশ্র ॥ ১৬॥
আচক্ষধ্য পুরং গত্বা সংগ্রামে বিজয়ং মম।
কুমার্য্য: সমলঙ্ক তা পর্যাগচ্ছন্ত মে পুরারে॥ ১৭॥
বাদিকাণি চ সর্বাণি গণিকাশ্চ স্বলঙ্ক তাঃ।
এতাঞ্চাজ্ঞাং তত গ্রুত্বা রাজ্ঞা সংস্যোন চোদিতাঃ।
তামাজ্ঞাং শিরসা কৃত্বা প্রস্তি। কৃত্বা ক্ষমানসাঃ॥ ১৮॥
তে গত্বা ল কেবলাং রাত্রিমথ স্থর্য্যাদ্যং প্রতি।
বিরাটস্য পুরাভ্যাসে দূতা জয়মহোয্যন্॥ ১৯॥
ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণপর্বিণি দক্ষিণ গোগ্রেহে বিরাট
জয়ঘোষে চতুন্ত্রিং শত্তমোহ্যায়ঃ॥ ৩৪॥

देवसम्बागुज्ञम छेत्राह ।

যাতে ত্রিগর্ভানংস্যে তু পশৃংস্তান্স্থান্ পরীপ্রতি। তুর্য্যোধনঃ সহামাত্যো বিরাট্যুপ্যাদ্থ্ ॥ ১ ॥

11 50 11 20 11 20 11 20 11 20 11

ইতি বিরাট পর্বানি নৈলক গীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুব্রিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩৪॥

পরীপ্সতিলিপ্সতি যতঃ অথ অতঃ বিরাটং বিরাট দেশং উপযাংই উপায়াং॥১॥

^{*} কেবলামিত্যত্ত তত্ত্তামিতি পাঠ: খ-খ পুত্তকয়ে:

ভীয়ো দ্রোণশ্চ কর্ণশ্চ ক্লপশ্চ পরমান্ত্রবিৎ। জৌ-িশ্চ সৌবল**ৈচ**ৰ তথা ছুংশাসনঃপ্ৰভো॥ ২॥ বিবিপশতিবিকিকর্ণ চিত্রিসেনশ্চ বীর্য্যবান। তুমুথো । তুঃসহকৈব যে চান্যেহশি মহারথাঃ। ৩॥ এতে মৎস্যানুপাগম্য বিরাট্স্য মহীপতেঃ। ঘোষান বিজ্ঞাব্য তর্মা গোধন জহুরঞ্মা॥ ৪॥ ষটিং প্রবাং মহস্রাণি কুরবং কাল্যন্তি তে। মহতা রথবংশেনু পরিবার্য্য সমন্ততঃ॥ ৫॥ গোপালানান্ত † ঘোষসা হন্যতাং তৈর্মহারথৈঃ। আরাবঃ স্থমহানাদীৎ সং প্রহারে ভরক্রে ॥ ৬ ॥ ্ গৰাধাক্ষন্ত সংত্রস্তো রথমাস্থায় সত্রঃ। জগাম নগরাথৈব পরিক্রোশ-স্তদার্ভবৎ ॥ १ ॥ স্প্রবিশা পুর্ব রাজ্ঞা নূপ্রেশ্মাভ্যযান্ততঃ। অবতীর্য্য রথাভূর্ণমাখ্যাতুৎ প্রবিবেশ হ।৮॥ **मृक्ये । ভূমিঞ্বলাম পুত্রং মৎ**नामा মানিনম্। তব্যৈ তৎ সর্বমাচফ রাপ্রস্য পশুকর্ষণ্ম ॥ ৯॥ ষ্ঠিং গ্রাং সহস্রাণি কুর্ধঃ কাল্যন্তি তে। তদিজেতুং সমুত্তিষ্ঠ গোধনং রাষ্ট্রবর্দ্ধন ॥ ১০ ॥

্রথ । ৩ ॥ ৪ । কালরতি নয়তি রথবংশেন রথসমূহেন ॥ ৫ ॥ ঘোষস্থানাং পবাং গোপালানাঞ্ছনতো ছুন্যমানানামারবিঃ শব্দো মহানভূং ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ভূমিং জয় মিত্যুত্রসৈত্র নামান্তরং॥ ৯ ॥ ১০ ॥

^{` *} হুঃসহ ইত্যত্ত হুঞ্চল ইতি পাঠ থ পুস্তকে।
া ঘোষসোত্যত্ত সর্বেধা মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
া গবাধাক্ষ ইত্যত্ত গোপাধাক্ষ ইতি পাঠ থঘ পুস্তকয়োঃ।

রাজপুত্র হিত প্রেপ্স: ক্ষিপ্রং নির্যাহি বৈ স্বয়। ত্বাং হি মৎস্যো মহীপালঃ শূন্যপালমিহাকরোও॥ ১১॥ ত্বযা পরিষদে। মধ্যে শ্লাঘতে স নরাধিপঃ। পুত্রো মমামুরপশ্চ শূরশ্বেতি কুলোঁদ্বঃ॥ ১২॥ ইম্বস্ত্রে নিপুণো বোধঃ সদা বীরশ্চ মে স্কুতঃ। তদ্য তৎ সত্যমেবাস্ত মনুষ্যেন্দ্রস্য ভাষিতম্ । ১৩। আবির্থ কুরন জিলা পশুন পশুমতামর। নির্দিইবামনীকানি ভীমেন শরতেজসা n >৪॥ ধন্তুক্ত্বাইভরুক্সপুজ্যেঃ শরৈঃ সন্নতপর্ব্বভিঃ।• ্দ্বিষতাং ভিন্ধ্যেনীকানি গজানামিব যুথপঃ॥ ১৫॥ পাশোপধানাং জ্যাতন্ত্রীং চাপ্দগুং মহাস্থনান্। শরবর্ণান ধনুকাণিং শত্রুমধ্যে প্রবাদয়॥ ১৬॥ শ্বেতা রজতসঙ্কাশা রুথে যুজ্যন্ত 🧊 হয়াঃ। ধ্বজঞ্চ সিংহংসৌবর্ণ কুছ ুযন্ত তব প্রভো।। ১৭।। রুকাপুখাঃ প্রসন্নাত্রা মুক্তা হস্তবতা বুয়া। ছাদ্যন্ত শরাঃ সূর্যাৎ * রাজ্ঞামাযুর্নিরোধিনঃ॥ ১৮॥

শূন্যপালং রাজ্যেই সরিধানে পালকং ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ যুথপো গন্দ হস্তী ॥ ১৫ ॥ পাশোপধানা মিতি পাশো মির্কা প্রান্তর গতৌ তাবেব উপধানে বীণায়াং তন্ত্রী সন্ধানার্থংকীল বিশেষো যস্যাং সাপাশো-পধানা তাং জ্যাং তন্ত্রীং মৌর্কোবতন্ত্রী কার্জায়স তন্তবো যস্যাং তাং চাপো ধন্ত্র্বক্তিঃ সৈব অলাবু সহিতো দণ্ডো যস্যাস্তাং মহাস্থনা মিত্যু ভয়-ত্তি তুল্যং শরাস্ততো ভিঃসরন্ত স্তএববর্ণাঃ শন্দ বন্ধ সামান্যাং স্কুরম্পর্নাদয়ো যস্যাং ধন্ত্বঃ শন্দোত্রসজ্য চাপবাচী কামের বীনাং শন্দাং মধ্যে প্রবাদয় ॥ ১৬ ॥ যুজ্যন্ত যুজ্যন্তাং সিংহং সিংহাকুরিং সৌবর্ণং ॥ ১৭ ॥ হন্তবতা দৃড ্
হত্তেন প্রশংসায়াং মতুপ্ ॥ ১৮ ॥

^{*} রাজ্ঞামায়ুর্নিরোধিন ইত্যত্ত রাজ্ঞাৎ মার্গ নিরোধকা ইতি পাঠঃ খ পুতকে।

রণে জিন্ব। কুরান্ সর্কান্ বজ্ঞপাণিরিবাস্থরান্।

যশো মহদবাপা ত্বং প্রবিশেদং পুরং পুনং ॥ ১৯ ॥

ন্বং হি রাষ্ট্রন্য পরমা গৈতির্দ্রংসাপতেঃ স্কুতঃ।

যথা হি পাণ্ডুপুজ্ঞানামর্জুনো জয়তাং বরং ॥ ২০ ॥

ভ এবন গতিন্তং মহস্যানাং সদা বিষয়বাসিনাম্।
গতিমন্তো † ভবস্থ দ্যা সর্বে বিষয়বাসিনাং ॥ ২১ ॥

বিশ্লপায়ন উবাচ।

ক্রীমধ্য উক্তন্তেনাকো তথাক্যমভয়স্করম্।

ভাতঃপুরে শ্লাস্থমান ইদং বচনমন্ত্রবীং ॥ ২২ ॥

ইতি বিরাটপর্বেণি গোহরণপর্বেণি উত্তর গোগ্রহে গোপবাক্যে

পঞ্জিংশক্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৫ ॥

উত্তর উবাচ।

আদ্যাহমনুগচ্ছে য়ং দৃচধন্ব গবাং পদস্।
যদি মে সার্থিঃ কশ্চিন্তবেদশ্বেষু কোবিদঃ ॥ ১॥
তন্ত্রং নাবগছামি যো মে যন্তা ভবেল্লঃ।
পশ্য ত্বং সার্থিং ক্ষিপ্রং মম ! যুদ্ধ প্রায়ন্ত ঃ॥ ২॥

11 22 11 52 11 65 11 65 11

ইতি বিরাট পর্ব্ধণি নৈলকৃতীয়ে ভারত ভারদীপে পঞ্চতিংশোহধায়ে:॥ ৩৫॥

11 2 11 2 11

* এবং গতিন্ত্রং মৎদ্যানাং সদাবিষয় বাদিনা মিতাত্র এবমেব গতি হ্নং ভবান্ বিষয় বাদিনা ছিতি পাঠঃ খ পুস্তকে। † ভবত্দ্যেতাত্র বয়ন্ত্দ্যেতি পাঠঃ খ পুস্তকে। ‡ যুদ্ধ মিতাত্র যুক্ত মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে। অফাবিংশতিরাত্রং বা নান্তব বা মান্তব ।

যেওদানীল্ল দ্বুদ্ধং তত্র নে সার্থিইতঃ॥ ৩॥
স লভেরং যদি জন্যং হয়য়ানবিদং মর্দ্।
জ্রাবানদা যাজাহং সমুচ্ছি তমহাধ্রজ্য ॥ ৪॥
বিগান্থ তং পরানীকং গজবাজিরথাকুল্ম।
শক্রপ্রতাপনিবীর্যান্ কুরুন্ জিজ্বানয়ে পশ্রু॥ ৫॥
ছুর্যোধন শান্তনবং কর্ন বৈকর্ত্তনং কুপ্ম।
ছোর্গান্ধ সহ পুত্রেণ মহেম্বাসান্ সমাগতান্॥ ৬॥
বিত্রাস্থিলা সংগ্রামে দানবানিব বজ্রভং।
অনেনৈব মুহুর্তেন পুনঃ প্রভ্যানমে পশ্রু॥ ৭॥
শ্রামাসাদা কুরবং প্রযান্তাদার লোধনম্।
কিল্ল শক্য ময়া কর্জুন যদহং তত্র নাভবম্॥ ৮॥
প্রেয়ের্বল মে বীর্যান্ কুরবস্তে সমাগতাং।
কিল্ল, পার্থেই জুনঃ সাক্ষান্য়সন্মান্ প্রবাধ্যে॥ ৯॥

ক্রা তদজ্বনোবাকান রাজঃ পুত্রন্ত ভাষতঃ।
অতীত সময়েকালে প্রিয়ান ভার্যামনিন্দিতাং॥ ২০॥
দ্রুপদত্য স্থতাং তশ্বী পাঞ্চালীন পাবকাল্পজাং।
সভাাপ্ত্র গুণোপেতাং ভর্তুঃ প্রিয় হিতেরতাং॥ ১১॥
উবাচরহানপ্রতিঃ কৃষ্ণান সক্রার্থকোবিদঃ।
উত্তরং ত্রহি কল্যানি ক্রিপ্রথ মন্ত্রচনাদিদন॥ ১২॥
অয়ন বৈ পাণ্ডবস্থা সীৎ সার্থি। সংমতোদ্তঃ।
মহাযুদ্ধেষু সংসিদ্ধঃ সত্তেয়ন্তা ভবিষ্তি॥ ১০॥

रेवनम्भात्रम छेवाइ।

ছয়বান বিদং অশ্বণতিজ্ঞং ॥৪॥৫॥৬॥৭ ॥ ৮॥১॥১०॥১০॥ ॥১৩॥ বৈশস্পায়ন উবাচ।

তক্ষ ত্রচন স্থাসু ভ্ষেতঃ সা পুনঃপুনঃ।
নামর্ষক পাঞ্চালী বীভ্ছদোঃ পরিকীর্ত্তনম্ ॥ ১৪ ॥
তাথৈনমুগদক্ষম্য স্ত্রীমধ্যাৎ সা যশক্ষিনী।
ব্রীডমানের শনকৈরিদং বচনমত্রবীৎ ॥ ১৫ ॥
ব্যোহ্নৌ রহুদারণাভো যুবা স্থপ্রিষদর্শনঃ।
ব্হরলেতি বিখ্যাতঃ পার্থক্যাসীৎ স সার্থিঃ ॥ ১৬ ॥
ধনুষ্যনবরশ্চাসীক্তক্ষ শিষ্যো মহাত্মনঃ।
দৃষ্টপুর্বো ময়া বীরশ্চরন্যা পাপ্তবান্ প্রতি ॥ ১৭ ॥
বদা তৎ পাবকো দাবসদৃহৎ খাপ্তবং মহৎ।
অর্জুনন্ত তদা তেন সংগৃহীতী হযোত্তমাঃ ॥ ১৮ ॥
তেন সার্থিনা পার্থঃ সক্ষ ভূতানি সক্ষশঃ।
অজ্যৎ খাপ্তবপ্রন্থে ন হি ষ্টান্তি তাদুশঃ ॥ ১৯ ॥
উত্তর উপাচ।

গৈরন্ধ্রি জানাসি তথা যুবান^,
নপুংসকো নৈবভবেদ্যথা গৌ।
জহং নশকোমি বৃহন্নলা^ শুভে,
বক্তুং স্বয়^ যক্তহ্যান্নমেতি বৈ ॥ ২০॥
ক্রেপিছাবাচ।

† যেয়াং কুমারী স্থানী ভাগিনী তে যবীয়া। তম্মাঃ ন বীর বচনং করিফাতি ন সংশয়ঃ॥২১॥ ॥১৪॥১৫॥১৬ ॥১৭॥১৮॥১৯॥২০॥২১॥

^{*} বৈশাপায়ন উবাচইতাস্য প্রাকৃ বৈশ্যপায়ন উবাচ জ্রাতদর্জুনোবাকা মিতাাদি চতুঃশ্লোকঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

ণ যেয়ং কুমারীতাস্য প্রাক্ উত্তর উবাচ ইত্যাদি ক্রোপত্নাবাচ ইত্যন্তঃ শ্লোকঃ ক প্রস্তকে নাস্তি।

যদি তে সারথিং স ন্থাৎ কুরন্ স্বান্ন স্ংশয়ং।
জিত্বা গাশ্চ সমাদায় ধ্রুবমাগমনং ভবেৎ ॥ ২২ ॥
এবমুক্তং স সৈরিস্কু বা ভাগনীং প্রভাগত।
গচ্ছ অমনবদ্যান্তি তামান্য বহনলাগ্ ॥ ২৩ ॥
সা ভাত্রা প্রেষিতা শীঘ্রমগচ্চ্যুর্তনাগৃহ্যু।
যত্রান্তে স মহাবাহুশ্চন্নং সত্রেন পাপ্তবং॥ ২১ ॥
ইতি বিরাটপর্যান গোহরন পর্বান উত্তরগোগ্রহে বৃহন শ্

বৈশস্পানন উবাচ।
সা প্রাদ্রবং কাঞ্চনমাল্যধারিণী,
জ্যেষ্ঠেন ভাত্রা প্রহিতা যশস্বিনী।
স্কুদ্রিকণা বেদিবিলগ্নমধ্যা,
সা গল্পত্রাভনিভা শিখন্তিনী॥ ১॥

॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ নর্ভনা গৃহং নাাস অস্থে সুজিনাতাৎ হাচিচাবতং স্থেনজ্মন ॥ ২৪ ॥

> ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ইট্ভিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩৬¶

মাল্যং মালামাল্যং কুস্থম তংশ্রজে, রিতি মেদিনী স্থদক্ষিণ ভাতৃচ্ছকান্থ বর্ত্তিনী দক্ষিণা দক্ষিণোদ্যুত সরলচ্ছক বর্ত্তি থিতি মেদিনী বেদিবং
বিলমঃ কুশোমধ্যো যদ্যাঃ সা পদ্ম পত্রাভিনবঃশিখতিনীতি প্রাচীন
পাঠঃ পদ্ম পত্রাভ নিভা পদ্ম পত্রেষ্থ মাভাতীতি পদ্ম পত্রাভা লক্ষীঃ ।
তদ্ধ নিভাদীপ্তি ইদ্যাঃ সা যেতু পদ্ম পত্রাভং মরকতং তল্পিভাং শামা
মিতি ব্যাচখ্যঃ তেবাং কনুকোল্পল ও চ মিতি বাক্য শেষেণ বিরোধ স্পন্তঃ
শিখতিনী মন্তর পিচ্ছা লক্ষারবতী॥ ১॥

তন্ত্ৰীশুভাঙ্গী মণিচিত্ৰমেখলা. মৎস্যস্য রাজ্ঞা ছুট্তো শ্রেষারতা। তন্নর্ভনাগারমরালপক্ষা.. শতভ্রদা মেঘমিবার্গদাত ॥ ২ ॥ সা হস্তিহস্তোপমসংহতোক, রনিন্দিতা চারুদতী স্থমধ্যমা ৷ আসাদ্য তং বৈ বরমাল্যধারিণী, পার্থং শুভা নাগরধূরিব দিপমু ॥ ৩ ॥ সা রত্নভূতা মনসং শ্রিযারতা, স্থতা বিরাট্য্য যথেক্রলক্ষ্মীঃ। সুদর্শনীয়া প্রমুখে যশস্থিনী, ' প্রীত্যাব্রবীদর্জ্জুনমাযতেক্ষণা ॥ ৪॥ সুশোভনোক কনকো জুলবুচং, পার্থঃ কুমারী∾ স তদাভাভাষত। কিমাগম: কাঞ্চনমাল্যধারিণি, মুগা কিং ত্বং ত্বরিতের ভাবিনি। কিন্তে মুখণ স্থন্দরি ন প্রসন্ন, মাচক্ত তত্ত্বং মম শীঘ্ৰমঙ্গনে॥ ৫॥ বৈশম্পায়ন উবাচ।

স তাং দৃষ্ট্র। বিশালাকীং রাজপুত্রীং স্থাং স্থা। • প্রহ্মন্নব্রীদ্রাজন কিমাগ্রমনিভূতে ॥ ৬॥

অরাল পক্ষা বক্তাকি পক্ষা দত হ্রদ। বিহাও । ২ ॥ ৩ ॥ প্রমুখে অয়ে । ৪ ॥ ৫ ॥ কিং কিমর্থং আগামনং ॥ ৬ ॥

তম ব্রবাদাজপুল্রী সমুপেত্য নর্মভম্। व्यन्यः ভावग्रज्ञी मा मथीमधा हेनः वहः ॥ १॥ গাবো রাষ্ট্রম্য কুরুভিঃ কাল্যন্তে নো ইছন্নলে। তান্ বিজেতুং মম ভ্রান্তা প্রযাস্যতি ধরুদ্ধর: ॥ ৮॥ * নচিরঞ হতস্তদ্য সংগ্রামে রথসার্থিঃ। তেন নান্তি সমঃ স্থতো যোহ্স্য সার্থ্যমাচরেৎ ॥ ৯॥ **ত**ेन्त्र প্রযতমানায় সার**থ্য**র্থ^ রুহন্নলে। আচচক্ষে হয়জ্ঞানে দৈরক্ষ্রী কৌশলং তব॥ ১১॥ অর্জুনস্য কিলাসীস্তু ~ সার্থিদরিতঃ পুরী।. च्याजयः महास्मन शृथिवी । शाखवर्षजः ॥ ১১ ॥ সা সার্থ্যং কুরু ভাতুর্শ্বম সাধু র্ইন্নলে। দুরাদ্ধ রতরং মাবো ব্রিয়ন্তে কুরুভিধি নং । ১২। অথৈতদ্বচনং মেখ্দ্য নিযুক্তা ন কুরিষ্যাদি। প্রব্যাত্র্চামানা স্ব^ পরিতাক্ষ্যামি জীবিতম্ ॥ ১৩ ॥ এবমুক্তস্ত স্কুশ্রোণ্যা তয়া সখ্যা † পুনঃপুনঃ। জগাম রাজপুত্রস্য সকাশমমিতৌজসঃ । ১৪॥ ত^ সা ব্রজন্তং ত্রিতং প্রভিন্নমিব কুঞ্জরম্। অবগছি बिभानाको ! গজং গজবধূরিব L SC ॥ দুরাদেব তু তাং প্রেক্ষ্য রাজপুলোহভ্যভাষত। ত্বয়া সার্থিনা পা**র্থঃ খাগু**বেহ্**গ্নিমতর্প্য**ং॥ ১৬॥

প্রান্থ বিনয়ং ভাবয়ন্তী দর্শারন্তি ॥ ৭॥ ৮॥ ১॥ ১০॥ ১১॥ যাবৎ গাবেশ দূরতরং ক্রিয়ন্তে ততঃ প্রাণোব সাইশাং কুক ॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥

শ্বিরমিত্যত্ত নাচির মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

[†] পন পুনরিত্যত্ত পরন্তপ ইন্চি পাঠঃ খপুস্তকে। া গুজমিত্যত্ত শিশু মিতি পাঠঃ শপুস্তকে।

পৃথিবীমজযৎ ক্লংসাণ কুন্তীপুল্রো ধনপ্রয়:।

কৈর্দ্ধী ত্বাং সমাচট্টে সা হি জানাতি পাণ্ডবান্॥ ১৭॥
সংযক্ত্ মামকানশ্বাংস্তথেব ত্বং বৃহন্নলে।
কুরুন্তির্যোৎস্যমানস্য গোধনানি পরীক্ষতঃ ॥ ১৮॥
অর্জুনস্য কিলাসীস্তৃং সার্থিদিয়িতঃ পুরা।
ত্বাজযৎ সহাযেন পৃথিবীৎ পাণ্ডবর্ষভঃ॥ ১৯॥
এবসুক্রা প্রত্যুবাচ রাজপুলুৎ বৃহন্নলা।
কা শক্তির্মাসার্থাং কর্তুং সংগ্রাম মূর্দ্ধনি॥ ২০॥
গীতং বা যদি বা নৃত্যং বাদিত্রং বা পৃথগ্বিষম্।
তৎকরিষ্যামি ভদ্রে সার্থাং তু কুতো শময়ি॥ ২১॥
উত্তর টুবাচ।

† গায়নো নৰ্ত্তনো বাপি বাদনো বা পুনৰ্ভব। ক্ষিপ্ৰং মে রথমাস্থায় নিগৃক্টীম্ব হয়োত্তমান্॥ ২২॥ বৈশম্পায়ন উবাচ।

স তত্র নর্দ্মগর্ক্তমকরোৎ পাশুবো বছ।
উত্তরাযাঃ প্রমুখতঃ সর্বাৎ জানন্নরিন্দমঃ॥২০॥
উর্দ্ধনুৎক্ষিপ্য কবচ∿ শরীরে প্রত্যমুঞ্চত।
কুমার্য্যস্তত্র তং দৃষ্ট্বা প্রাহ্সন্ পূথুলোচনাঃ॥২৪॥
স তু দৃষ্ট্বা ‡ পিনহাস্ত∿ স্বযমেবোত্তরস্তদা।
কবচেন মহাহে∮ণ সমনহাধৃহন্নলাম্॥২৫॥

11 29 11 25 11 20 11 22 11 22 11 20 11 28 11 20 11

^{*} মরীত্যত্ত মমেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

[†] গায়নো নর্তনো বাপি বাদনো বা প্রনর্তবেত্যত্ত রহন্তনে গায়নোবা নর্তনোবা প্রনর্তবেতি পাঠঃ খ প্রস্তকে।

[🚶] পিনছন্তমিত্যত্র বিমুহন্তমিতি পাঠঃ থা পুত্তকে।

বভার কবচং চাগ্র্য্য স্থমপ্য শ্রেমপ্র শ্রুম্ ।

য়জং সিংহণ সমুচ্ছ্রিতা সারথাং সমক প্রথং ॥ ২৬ ॥
ধনুং বি চ মহার্থা বাবাং দ রুচিরান্ বহুন্।
আদায় প্রযথৌ বীরঃ স রহন্ন সারথিঃ ॥ ২৭ ॥
অথোন্তরা চ কন্য দিচ সখ্যস্তামক্রবংস্তদা।
রহন্ন লে আন্যেথা বাসাংসি রুচিরাণি চ ॥ ২৮ ॥
পাঞ্চালিকার্থং চিত্রাণি স্থান্দাণি চ মৃদূনি চ।
বিজিত্য সংগ্রামগতান ভীম্মটোণমুখান্ কুরন্ ॥ ২৯ ॥
এবং তা ক্রবতীঃ কন্যাঃ সহিত্যঃ পাণ্ডুনন্দন। ।
প্রত্রোচ হসন্ পার্থো মেঘতুন্তু ভিনিস্থনঃ ॥ ৩০ ॥
রহন্ন বার্চ।

যত্যন্তরোহয়ং সণ্ঞামে বিজেষাতি মহারথান। তদাহরিষ্যে বাসাণ্সি দিব্যানি রুক্তিরাণি চ॥ ৩১॥

• বৈশ্লপায়ন উবাচ।

এবমুক্ত্বা তু বীভৎস্কস্তভঃ প্রাচোদযদ্ধবান্। কুরুনভিমুখঃ শ্রো নানাধ্বজপতাকিনঃ॥ ৩২॥ তমুত্তরং বীক্ষ্য রখোত্তমে স্থিতং,

র্হন্নলাযাঃ সহিতং মহাভুজম্। স্ত্রিযশ্চ কন্যাশ্চ দ্বিজাশ্চ স্বত্রতাঃ, প্রদক্ষিণঞ্জুরখোচুরঙ্গনাঃ॥ ৩৩॥

॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ পাঞ্চালিকার্থং পাঞ্চালিকা পুত্তিকাদা। দ্বস্ত্র দন্তা দিতি ক্তেতামরঃ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ যনজ্নস্যর্বভত্তাগামিনঃ,
পুরাভবৎ থাওঁবদাহমক্তম।
কুরান্সমাদা র্নে বৃহন্নলে,
সহোত্তরেণাস্ত তদদা মঙ্গলম্ ॥ ৩৪ ॥
ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণপর্বাণি উত্তরগোত্রহে
উত্তরনির্যানে সপ্তাত্তিশ্ভমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৭ ॥

বেশন্পারন উবাচ।
স রাজধান্যা নির্যাঘ বৈরাটিরকুতোভয়ঃ।
প্রথাহীতাক্রবীৎ স্থাত মৃত্র তে কুরবো গতাঃ॥ ১॥
সমরেতান কুরন্ সর্বান্ বিদ্বিগীঘূন্ বিজিত্য বৈ।
গান্তেষাং ক্ষিপ্রমাদায় পুনরেষ্যাম্যহ্ পুরম্॥ ২॥
ততন্তা শেচাদ্যামাস সদক্ষান্ পাতুনন্দনঃ।
তে হ্যা নরসি হেন নোদিতা বাত্র হ্যা
আলিখন্ত ইবাকাশমূহঃ কাঞ্চনমালিনঃ॥ ৩॥
নাতিদ্রমধাে গত্বা মৎস্যপুত্রধনপ্রথাে।
অবেক্ষতামমিত্রশ্লৌ কুরনাং বলিনাং বলম্॥ ৪॥
স্মাশানমভিতাে গত্বা আসসাদ কুরনথ।
উত্তেমমিপে ত্বৈক্ষেতাং বূঢানীকঞ্চ সর্বশঃ॥ ৫॥
১০৪॥

ে ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে সপ্ততিংশেহধায়ঃ॥ ৩৭॥

मरेजि॥ ३॥ २॥ ७॥ ८॥ ८॥

^{*} তৎসমীপে ও বৈক্ষেতা মিতাত্র তাংশমীমন্ববীক্ষেতামিতি পাঠঃ খুপুস্তকে।

তদনীক মহতেবা শ বিতত সাগরস্বনয়।
সর্পমাণমিবাকাশে বনং বছলপাদপম্। ৬॥
দদ্শে পার্থিবো রেণুর্জ্জনিতন্তেন সর্পতা।
দৃষ্টিপ্রণাশো ভূতানাং দিবস্পৃক্ কুরুসন্তম ॥ ৭॥
তদনীকং মহদ্দু গজাশ্বরথসঙ্কুলম্।
কর্ণ চুর্য্যোধনক পৈগু প্রং শান্তনবেন চ ॥ ৮॥
দোণেন চ সপুজেণ মহেম্বাদেন ধীমতা।
হৃষ্টরোমা ভ্যোদ্বিয়ঃ পার্থং বৈরাটিরব্রব্রী ॥ ৯॥
উত্তর উবাচ।

নোৎসহে কুরুভির্যোদ্ধ্ রোমহর্প পশ্য মে।
বছপ্রবীরমত্যপ্রং দেবৈরপি ছুরাসদম্॥ ১০॥
প্রভিযোদ্ধ্ ন শক্ষামি কুরুসৈন্যমনন্তকমু।
নাশংসে ভারতী সেনা প্রবেষ্ট্র ভীমকান্স্কাম ॥ ১১॥
রথনাগাশ্বকলিলাং পত্তিশ্বজ্ঞসমাকুলাম।
দৃষ্টে ব হি † পুরোযাতাং মনঃ প্রব্যথতীব মে॥ ১২॥
যত্র দ্রোশত ভীশ্বন্দ রূপঃ কর্ণো বিবিংশতিঃ।
অশ্ব্যামা বিকর্ণ সোমদন্তক বাহ্লিকঃ॥ ১৩॥
দুর্যোধনন্তথা বীরো রাজা চ রথিনাশ্বরঃ।
দুর্গিতমন্তো মহেষাসাঃ সর্বের যুদ্ধবিশারদাঃ॥ ১৪॥

অতি বেগেন আকাশে ॥৬॥ ৭॥ ৮॥ হাট রোমা রোমাঞ্জিতঃ॥ ৯॥ নোৎসহে ইত্যত্ত্ব হেডুমাহ বহ্নিতি ॥ ১০॥ ১১॥ কলিলাং গহণাং ॥ ১২॥ ॥ ১৩॥ ১৪॥

^{*} বিততং সাগারস্থন মিতাত্র বিবক্তো সাগারোপম মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে

[🕆] পুরোযাতামিতাত্র পরা নাজে ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

দুকৈ, ব হি কুরনেতান্ ব্যুচানীকান্ প্রহারিণঃ। ক্ষিতানি চ রোমাণ্ কশালঞাগত মন॥ ১৫॥ বৈশন্ধায়ন উবাচ।

অবিজাতো বিজ্ঞাতস্য মৌর্যাৎ ধূর্ত্তম্য পশ্যুক্তঃ।
পরিদেবরতে মন্দঃ সকাশে সব্যসাচিনঃ ॥ ১৬ ॥

" ত্রিগুর্ত্তান্মে পিতা যাতঃ শূন্যেহ্সিন্ সরিধার মাস্।
সর্বাং সেনামুপাদার ন মে সন্তীহ সৈনিকাঃ ॥ ১৭ ॥
সোহহমেকে। বহুন্ বালঃ কৃতান্ত্রানকৃতশ্রমঃ।
প্রতিযোদ্ধৃং ন শক্ষ্যামি নিবর্ত্তস্ব রহরলে॥ ১৮ ॥

ব্ৰহনলোবার।

ভয়েন দীনৰপোহ সি দ্বিতাং হর্ষবর্দ্ধনঃ।
ন চ তাবং ক্বতং ক্বিঞ্চং পরেঃ কর্দ্ম রণাজিরে॥১৯॥
স্বযমেব চ মামাথ বহ মাং কৌরবান্ প্রতি।
সোহহং স্বামদ্য † নেষ্যামি যতৈতে বছলস্বজাঃ॥২০॥
মধ্যমানিষ্যৃদ্ধানা ক্বৰণামাততাযিনাম্।
নেষ্যামি স্বাং মহাবাহো পৃথিব্যাদ্পি যুধ্যতাম্॥২১॥

কশলং মৃদ্ধি ॥ ১৫॥ অবিজ্ঞাতঃ জাতং সামান্যং বিগতং যন্মাৎ সবি-জাতোহ সাধারণঃ তদন্যো হবিজাতঃ সাধারণঃ প্রাকৃতঃ প্রাচান্ত সরকারঃ পাচঃ তদাবিয়াতো প্রফঃ প্রফে প্রফু বিয়াতন্চেতামরঃ অবিয়াতো প্রগল্ভঃ ধূর্ত্তস্য চ্ছন্মানেশ ধারিণঃ ॥ ১৬ ॥ ১৮ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ আমিষং মাংসং তত্র যথা গৃধুাঃ পতন্তি ততুল্যানাং পৃথিব্যাং নিমিত্ত ভূতায়াং এতে-নাপ্রভাবি সংগ্রামে ম্বিপ্রাং নেম্বামীত্বাক্তং ॥ ২১ ॥

^{*} ত্রিগর্ভা নিতাস্য প্রাক্ উত্তর উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

া অদ্যেতাত্র তত্ত্তি পাঠঃ খ পুস্তকে।

তথা স্ত্রীষু প্রতিশ্রুতা পৌরুষ পুরুষেষু চ।
কথমানোহ ভিনির্ম্য কিমর্থং ন যুযুৎসুদে ॥ ২২ ॥
ন চেদ্বিজ্ঞিতা গাস্তাস্ত্রং পূহান বৈ প্রতিষাম্বাদি।
প্রহ্মিষ্যন্তি বীরাস্ত্রাং নরা নার্যান্চ সঙ্গতাঃ ॥ ২৩ ॥
অহমপ্যক্র দৈরস্বায়ে খ্যাতা সার্থাকর্মনি।
ন চ শক্ষ্যাম্যনির্জিত্য গাঃ প্রযাত্রং পূরং প্রতি॥ ২৪ ॥
স্তোত্রেণ চৈব দৈরস্ক্যান্তব বাক্যেন তেন চ।
কথন যুধ্যেষ্মহং কুরন্ সর্কান্ স্থিরো ভব ॥ ২৫ ॥

উত্তর উবাচ (

কামণ হরস্ত মৎস্থানাং ভূষাংসং কুরবোধনম।
প্রহসন্ত চনাণ নার্যোনরা বাঁপি রুহরলে॥ ২৬॥
সংগ্রামে ন হি মে কার্যাং গাবো গছন্ত বাঁপি মে।
শুনাং মে নগরং চাপু পিভুশেচব বিভেম্যহম্॥ ২৭॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ইত্যুক্ত্বাপ্রাদ্রবন্ধীতো রথাৎ প্রস্কল্য কুগুলী।।
 তাক্ত্বা দর্পঞ্চ মানঞ্চ বিষ্কর্য সশরৎ ধরুঃ॥২৮॥

র্হরলোবার।

নৈষ † পূর্বিঃ স্মৃতো ধর্মঃ ক্ষত্রিয়ক্ত পলায়নম্। . শ্রেয়ন্তে মরণং যুদ্ধে ন ভীত্ত পলায়নম্॥ ২৯॥

অভি নিৰ্যাতি নিৰ্যাত ন মুমুৎকহেবোঁদুং নেত্ৰদি ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৮ ॥ ২৮ ॥

^{*} ইত্যুক্ত্বা ইত্যুদ্য প্ৰাক্তিনবৰ্তন রথং ক্র্ণং ছদন্নং দে বিদীৰ্যাতে ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ণ পূর্বেরিভাত শ্রৈরিভি পাচঃ খ পুস্তকে।

. दिनन्त्रातम डेवाह।

এবমুক্তা তু কৌত্তেয়ঃ ধেনাহবপ্প তা রপোন্তমাৎ। তমম্বধাৰদ্বাবস্ত্র রাজপুল্রং ধনপ্রয়: ॥ ৩০॥ দীর্ঘাৎ বেণী বিধুস্থানঃ সাধু রক্তে চ বাসসী ! বিধুয় বেণীং ধাবস্তমজানস্তোইৰ্জ্জুন্ তদা ৫ ৩১ ৫ সৈনিকাং প্রাহ্মন্ কেচিত্তথারূপমবেক্য তম্। তুশীঘ্রমভিধাবন্ত সংপ্রেক্ষ্য কুরবোংক্রবন্ । ৩২ ॥ ক এষ বেশপ্রচ্ছােন ভস্মনেব হুতাশনঃ। কিঞ্চিদস্য যথা পুৎসঃ কিঞ্চিদস্য যথা স্তিয়া:॥ ৩৩॥ मानिश्राम्ब्यानिक क्रीयन्त्र विखर्डि ह । তদেবৈতচ্ছিরো গ্রীবং তৌ বছি পরিঘোপমৌ। उद्दर्भवामा विकाखः नायम त्ना धनक्षमा ॥ ७३॥ অমরেম্বি দেবেক্রো মারুষৈষু ধনঞ্জঃ। একঃ কোহস্মানুপাযাদন্যে লোকে ধনঞ্জাৎ। ৩৫। একঃ পুরো বিরাট্য্য শুরো সলিছিতঃ পুরে ! স এব কিল নির্যাতো বালভাবার পৌরুষাৎ॥ ৩৬॥ সত্তেণ ভূনং ছলং हि চরন্ত পার্থমর্জুনম্। উত্তরঃ সার্থিং কৃত্বা নির্যাতো নগরাছহিঃ॥ ৩৭॥ म ता मन्तामरह मृष्ट्री खीठ वर्ष शनीयरा । তং ভূনমেষ ধাবস্ত^ জিমৃক্ষতি ধনঞ্জঃ: 🕩 🛭

रेवमञ्जायम खेवाछ।

ইতি স্মৃ কুরবঃ সর্কে বিমৃশন্তঃ পৃথক্ পৃথক্। নচ বাবসিতুং কিঞ্ছিত্তরং শঙ্গুবান্ত তে। এই।

व दल म निर्मातिक । किल् । यह । किल् । दल । दल । दल ।

ছনং তথা তু সত্তেণ পা গুবং প্রেক্ষ্য ভারত। উত্তরস্ত প্রধাবস্তমনুদ্রত্য ধনপ্রয়:। গত্বা শতপদং তূর্ণ কেশপক্ষে পরামুধৎ ॥ ৪০ ॥ সোহজ্জুনেন পরামুক্তঃ পর্যাদেরষদার্ত্তবং। বছলং ক্লপণঞ্চৈব বিরাটস্য স্কৃতস্তদা ॥ ৪১ ॥

উত্তর উবাচ ৷

শৃণুয়ান্ত । হি কল্যাণি বৃহন্নলৈ স্থমধ্যমে।
নিবর্ত্তর রথং শীদ্রং জীবন ভদ্রাণি পশ্যতি॥ ৪২॥
শাতকুন্তস্য শুদ্ধস্য শতনিক্ষং দ্বামি তে।
মণীনফৌ চ বৈদ্র্যান্ হেমবদ্ধান্তাল্ ৪৩॥
হেমদপ্তপ্রতিভ্নেশ রথং যুক্তঞ্জ স্থাতেঃ।
মন্তাশ্য দশ মাতক্ষান্ মুঞ্চ মাং বং বৃহন্নলে॥ ৪৪॥

্বৈশৃম্পায়ন উবাচ।

এবসাদীনি বাক্যানি বিলপান্তমচেতসম্।
প্রস্বাহা রথস্যাতিকসানম্থ ॥ ৪৫ ॥
অথৈনমন্তবীৎ পার্থে ভয়ার্তং নকচেত্রম্।
যদি নোৎস্কসে মোক্ত শুধ্যমানস্য শক্তিং ॥ ৪৬ ॥
এই মে স্থং হয়ান্ যছ যুধ্যমানস্য শক্তিং ॥ ৪৬ ॥
প্রযাহেতদ্রথানীক মদাহুবলর্কিউং।
অপ্রধ্যতমং ঘোর গুপ্তং বীরের্মহারথৈং ॥ ৪৭ ॥
মা ভৈত্বং রাজপুলাগ্র্য ক্ষালিয়োহ্সি পরন্তপ।
কথং পুরুষশার্দ্দ্র শক্তমধ্যে বিধীদ্ধি ॥ ৪৮ ॥
৪০ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪০ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৬ ॥

* কুকভিরিতাত শত্রুভিরিতি পাঠঃ খ প্রেকে 🛊

আহন বৈ কুরুভির্যোৎস্যে বিজেষানি চ তে পশুন্।
প্রবিশ্যৈতদ্রথানীকমঞ্জ্যং ছুরাসদম্ ॥ ৪৯ ॥
যন্তা ভব নরশ্রেষ্ঠ যোৎসোহ হং কুরুভিঃ সহ।
এবং ক্রবানো বৈরাটিং বীভৎসুরপরাজিতঃ।
সমাশ্রাস্য মুহুর্তন্তমুক্তর শ প্রভাপদ্যত ॥ ৫০ ॥
তত এনং বিচেইতম্কামশ ভ্রপীডিতম্।
রখমারোপরামাস পার্থং প্রহরতাম্বরং ॥ ৫১ ॥
ইতি বিরাটপর্বানি গোহরণপর্বানি উত্তর গোগ্রহে উত্তরাশ্রাসনে অই ত্রিংশস্তমোৎধ্যায়ঃ ॥ ০৮ ॥

বৈশঞায়ন উবাচ।

তং দৃষ্ট্বা ক্লীববেশেন রথস্থ নরপুস্থা।
শনীমভিমুখং যাতং রথমারোপ্য চোজরম্॥ ১॥
ভীমদ্যোশমুখান্তত্র † কুরুণাং রথসন্তমাং।
বিত্রন্তমনসং দর্কে ধনঞ্জয়ক্লান্তমাৎ॥ ২ ॥
ভানবেক্ষ্য হতোৎসাহাকুৎপাভানপি চাচুতান্।
গুরুং শস্তভ্তা শতাধো ভারবাজোহভাভাবত॥ ৩॥

11 83 11 00 11 68 11

ইতি বিরাট পশানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে অফটারংশোধধ্যায় ॥ ৩৮ ॥

তমিতি ॥১॥২॥৩॥

* প্রতাপদাতে তাত্র ভরতর্যভেতি পাঠঃ খ য প্রস্তরোঃ।

পু কুরণাং রণসভ্তমা ইত্যত্র কুরবো র্মিসভ্তমা ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

চ্পাन वाजाः मरवास्य बकाः भर्वतवर्षिनः। ভশ্মবর্ণ প্রকাশেন তমসা সংবৃতন্নভঃ ॥ ৪ ॥ बक्कवर्गाण्ड जलमा मुनारस्ट उपर्मनाः। নিঃসরস্থি চ কোষেত্রাঃ শস্ত্রাণি বিবিধানি চ॥ ৫॥ मिवान विनमत्त्राचा मीखायाः मिलि माक्याः। হয়াশ্চ,শ্রুণি মুগুতি ধ্বজাঃ কম্পন্ত্যকম্পিতাঃ ॥ ৬॥ ঈদৃশানাপি ৰূপাণি দৃশ্যন্তে স্ববহুন্যপি। যন্তা ভবন্তন্তিষ্ঠন্ত সাধুসং সমুপস্থিতমু ॥ ৭ ॥ রক্ষধ্যপি চাত্মানৎ বৃহেধ্ব বাহিনীমপি। বৈশসঞ্চ প্রতীক্ষধং রক্ষধঞাপি গ্রোধনম্ ॥ ৮॥ এষ বীরো মহেছাসঃ সর্বাশস্ত্রকৃতাম্বরঃ। আগতঃ ক্লীববেশেন পার্থো নাস্ত্যত্র সংশয়॥ ১॥ নদীজ লক্ষেশ বনারি কেতুর্নগাহ্বয়য়ানাম নগারিস্থন্তঃ। এবোঞ্চনা বেশধরঃ কিরীটা জিত্বাবর্ত নেষ্যতিচাদ্যগাবঃ । ১০। म এव পার্থো বিক্রান্তঃ मवामाठी পরস্থপঃ। নাযুদ্ধেন নিবর্ত্তে সর্বৈরপি স্থরাস্থরৈঃ॥ ১১॥ ক্লিশিতক বনে শূরো বাসবেন চ শিক্ষিতঃ। অমর্থবশমাপলো বাদবপ্রতিমো যুধি। নেহাস্য প্রতিযোদ্ধারমহং পশ্যামি কৌরবাঃ । >২ ।

ু৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ বৈশসং বৈরং মুদ্ধেকদনং বা॥ ৮॥ ৯॥ নদীজেতি ।
হেনদীজ গালের হে ভীম্ম লক্ষেশসা রাবণুত্ত বনং তস্যারি নাশ্রেকা হড়মান্
সঃকেতুর জোযস্য সং লক্ষেশ বনানিকেতুং নগো রক্ষণ্ডদাব্রঃ রক্ষ নামা
নামেতি বিতর্কে নিশ্চিতং বা অর্জুন ইত্যুর্থঃ শৈল রক্ষো নগাবিগাবিত্যমরঃ ;
নগারিরিক্রন্তস্যত্ত্বঃ এবঃ অন্দাবেশবরঃ কিরীটা এতরামা রংজিত্বা
বঃ যুম্মাকংগাঃ ধেনুঃ নেষাতি তংহ্যোধনং অব পালরঃ॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥

^{*} সএব পার্থো বিক্রান্ত ইতাস্য প্রাক্ নদীজেত্যেক শ্লোকঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

মহাদেবোহপি পার্থেন ক্রায়তে যুদ্ধি ভোষিতঃ। কিরাতবেশপ্রচ্ছনে। গিরৌ হিমবতি প্রভুঃ॥১৩॥

কৰ্ উব্যাচ।

সদা ভবান কাল্কনস্য গুণৈরস্মান্ বিকপাসে। ন চার্জুনঃ কলাপূর্ণো মম জুর্য্যোধনস্য বা । ১৪ ।

इर्रिशाधन छेवात।

যদ্যেষ পার্থে। রাধেয় ক্তকার্ষ্যং ভবেশ্বম।
জ্ঞাতাঃ পুনশ্চরিষ্যন্তি দ্বাদশান্দান বিশাম্পতে ॥ ১৫॥
অথৈব কন্চিদেবান্যঃ ক্লীববেশেন মানবঃ।
শরৈরেন্দ্র স্থানিতিঃ পাত্রিষ্যামি ভূতলে॥ ১৬॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

তিমান ক্রবতি ভদ্বাক্যং ধার্ত্তরাষ্ট্রে পরন্তপ।
ভীমো দ্রোণ: ক্রপো দ্রোণ: পৌরুষং তদপুজয়ন্॥ ১৭॥
ইতি বিরাটপর্বাণ গোহরণপ্রাণ উত্তর পোগ্রহে অর্জ্জন
প্রশাসায়া মেকোন চত্তারিংশদ্ধযোয়ঃ॥ ৩৯॥

रिकाम्भाशन छेवांह।

তাং শমীমুপসঙ্গমা পার্থো বৈরাটিমত্রবীৎ। স্থকুমারং সমাজ্ঞায় সংগ্রামে নাতিকোবিদম্॥ ১॥

। ১৯ । কলাবোড়লোছংশঃ পূর্ণঃ ক্বংস্কঃ । ১৪ । ১৫ । ১৬ । ১৭ ।
ইতি বিরাট পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে

একোনচড়াবিংলোছধ্যায়ঃ । ৬৯ ।

তামিতি৷ ১ ৷

गर्भाषिको भया किथः धतृ षावइदतालत । (नमानि हि वृतीयानि माए १ भकाखि (म वत्र । ভারঞাপি গুরুং বোঢুং কুঞ্জরাখান্ প্রমাদিতুং ॥ ২॥ মম বা বাছবিক্ষেপং শত্রনিহ বিজেষাতঃ। তস্মান্ত্রিঞ্ঘারোহ শমীমেতাং প্রলাশিনীম্।। ৩। অস্তাৎ হি পাণ্ডপুত্রাণাৎ ধনুৎ যি নিহিতান্তাত। पूर्वित्रक जीमक वीज्रामार्थमायाक्या ॥ ८ ॥ ধজাঃ শরাশ্চ শূরাণাং দিব্যানি কবচানি চ। অত্র চৈব মহাবীর্যাং ধরুং পার্থক্ত গান্তিবঁম্ ।। ৫॥ একং শতসহত্রেণ সন্মিতং রাষ্ট্রবন্ধনম। ব্যায়াম সহমত্যর্থং তৃণরাজসমং মহৎ॥ ७॥ সর্কাযুধমহামাত্র শক্রসম্বাধকারকম্। স্থবর্ণবিক্ষত দিব্যং শ্লক্ষমাযতমব্রগম্ । १॥ অলং ভারং গুরুং বোচ । দারুণং চারুদর্শনম । তাদৃশান্যেৰ সৰ্বাণি বলৰম্ভি দৃঢানি চ। যুধিষ্ঠিরস্ত ভীমস্ত যমযোশ্চ তথোত্তর ॥ ৮ ইতি বিরাটপর্ববিণ গোহরণপর্বাণি উত্তরগোঞ্রহে অর্জুনা-স্ত্রকথনে চত্তারিংশস্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪০॥

ক্ষেবছর অবতারয় ॥২ ॥ বাছবিকেপংশোচুং নশকান্তী-তি সম্বন্ধঃ॥ ভূমিঞ্বছেউত্তর পলাশিনীং বহুপত্রবজীং ॥ ৩॥৪॥৫॥ প্রারাজ্ভাল ভংনমং॥৬॥ মহামাত্রং অতি প্রমাণং॥৭॥৮॥

> ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চন্ধারিংশোহধ্যায় ॥ ৪০॥

উত্তর উনাচ!

অন্মিন রক্ষে কিলোদ্ধং শরীরমিতি নং শ্রুতম্।
তদহং রাজপুত্রঃ সন্ স্পুশেষং পাণিনা কথম। ১॥
নৈব্যিধক ম্যা যুক্তমালকাং ক্ষক্রযোনিনা।
মহত রাজপুত্রেণ মন্ত্রতবিদা সদা॥ ২॥
স্পৃষ্টবন্তং শরীরং মাং শ্ববাহমিবাশুচিম্।
ব্রথমব্যবহার্যাং বৈ কুর্বীথাস্ত্রং রহন্নলে॥ ৩॥

बुर्मालाग्राह।

ব্যবহার্যাশ্চ রাজের্দ্র শুচিদৈচব ভবিষ্যসি। ধনুশ্ব্যতানি মা ভৈস্তুশ শ্রীরং নাত্র বিদ্যতে ॥ ৪ ॥ দাযাদং মৎস্থরাজস্থ কুলে জাতশ মনস্থিনম। কথং ত্বাশ নিন্দিতং কর্মা কার্যেয়শ নূপাত্মজ ॥ ৫ ॥

रिवमक्यातंन छैन्छ।

এবমুক্তঃ স পার্থেন রথাৎ প্রক্ষন্য কুগুলী।
আরুরোহ শানীরক্ষং বৈরাটিরবশস্তদা॥ ৬॥
তমস্থশাসচ্চক্রমে। রথে তিন্ঠন্ ধনপ্রয়ঃ।
অবরোপয রক্ষাপ্রাদ্ধনুংযোতানি মা চিরম্॥ ৭॥
পরিবেন্টনমেতেষাং ক্ষিপ্রং চৈব ব্যপান্ধন।
গোহপহ্নত্য মহার্থানি ধন্তং যি পৃথুবক্ষসাম্।
পরিবেন্টন প্রাণি বিনুচ্য সমুপান্যং॥ ৮॥
ততঃ সর্ক্নান্যেষাং পরিমুদ্ধা সমস্ততঃ।
অপশ্রদ্ধা প্রবং তত্ত চতুর্ভিরপর্ট্রঃ সহ॥ ৯॥

অস্মিরিডি॥ ১॥ আলব্ধ শুপ্রফুং॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ দারাদং পুত্রং॥ ৫॥
॥ ৬॥ ৭॥ অপহতা রক্ষাদধ আনীর ॥ ৮॥ সং নহনানিধন্ন্বাং বন্ধনানি

তেষা বিমুচ্য ধানানা ধরুষামর্কবর্চ দামু।
বিনিশ্চের: প্রভা * বিদ্যা প্রহাণামুদ্যে ঘিব ॥ ২০॥
স তেবাং রূপ মালোক্য ভোগিনাথিব, জৃন্তভাম।
ক্রেটরোমা ভযোদ্মিঃ ক্ষণেন সমপদ্যত॥ ১১॥
সংস্পৃত্য ভানি চাপানি ভারুমন্তি বৃহন্তি চ।
বৈরাটিরক্জুনং রাজনিদং বচনমত্রবী ॥ ১২॥

ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণপর্বাণি উত্তরগোর্তাহে অস্ত্রা-রোপণে একচন্থারিংশত্তমোহধারঃ॥ ৪১॥

উত্তর উষাদে।

বিন্দবো জাতৰূপক্ত শতং যশ্মিরগাতিতাঃ। সহস্রকোটি সৌবর্ণাঃ কব্যৈতদ্বনুরুত্তমন্॥ ১॥ বারণা যত্র সৌবর্ণাঃ পুষ্ঠে ভাসন্তি দংশিতাঃ। সুপাশ্বং সুগ্রহঞ্বৈ কব্যৈতদ্বনুরুত্তমন্॥ ২॥

11 20 11 22 11 25 11

ইতি বিরাট শর্কণি নৈলক্তীয়ে ভারত ভারদীপে এক্চমারিংশো২ধগনঃ ॥ ৪১॥

ক্ষা জাতরপন্য জাতকীর্ত্তের রূপং স্বভাবে দৌন্দর্ব্যে নালোক পশু রুদ্ধরোঃ প্রস্থা রুত্তের নাটকাদাবাকার শোকয়োরপীতি নেদিনী বিন্দবঃ , দৌবর্ণা ইতি সম্বন্ধঃ সহজে সহস্যুত্তো বলবতো দীগুিমতেট বা কোটা প্রান্তো যদ্য তৎসহস্র কোটি সহোবলে জ্যোতিবি'চেতি মেদিনা সহস্ শক্ষর্থীয়োরপ্রতায়ঃ ॥ ১ ॥ দংশিতাঃ ভাসমানঃ স্থ গ্রহং গৃহতেশিয়িতি প্রহোমধাং ॥ ২ ॥

^{*} বিদ্যেতাত দিব্যেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

তপনীয়স্ত শুদ্ধস্থ * ষ্টির্যুক্ত প্রে প্রকার শ্রে শাভ্রে ক্রৈড জনুরু জমন্ ॥ ৩॥
স্থা যা বি চ সৌবর্ণা স্থায়ো ভাসন্তি দুশাভাঃ।
তেজসা প্রজ্বন্তা হি ক্রেড জনুরু জমন্ ॥ ৪॥
শলভা যা সৌবর্ণা স্থানীয়বিচিত্রিতাঃ।
স্থান্মণিচিত্রপ্র ক্রেড জনুরু জমন্ ॥ ৫॥
ইমে চ ক্স্থানারাচাঃ সাহমে লোমবাহিনঃ।
সমস্তাৎ কলধোতাগ্রা উপাসঙ্গে হিরণায়ে॥ ৬॥
বিপাঠাঃ পৃথবং ক্স্যা গার্দ্ধপ্রাঃ শিলাশিতাঃ।
হারিদ্রবর্ণাঃ † শতশঃ পীকাঃ স্ক্রার্সাঃ শ্রাঃ॥ ৭॥
ক্যায়নসিতাবাপঃ পঞ্চশান্ধ্নিল লক্ষ্ণঃ।
বরাহকর্ন্যামিশ্রান্ শ্রান্ ধারয়তে দুশা ৮॥

তপনীয়য়য় য়বর্ণয় ইন্দ্রগোপকাঃ কীট রিশেষাঃ বক্ত পীতভাষ্ববর্ণাঃ
॥ ৩ ॥ ৪ ॥ সৌবর্ণাঃ শলভাঃ স্বর্ণঃ রুষ্ণাক্ষরর্ণ দ্রবাং মীনা ইতি
সংজ্ঞিতং তয়য়াঃ তেমুছ নীলবর্ণের তপনীয়াখ্য ব্র্প ভূষণানি শোভত্তে
স্বর্গাচ রুষ্ণাগক মখান্তরে ইতি বিশ্বঃ স্থর্গমণয়ঃ ব্র্প বিন্দ্রঃ শোভন বর্গ মনেমাছিলঃ পাত্রবক্তঃ লোমছেদিন ইতানো উপাসহন্দ্রশঃ সংখ্যা তাঃ লোমবাছিলঃ পাত্রবক্তঃ লোমছেদিন ইতানো উপাসঙ্গে নিবন্ধে ॥ ৬ ॥ বিপাচাঃ স্থূলদণ্ডঃ স্যা দিতি কম্পক্রঃ গার্ধপত্র
গ্রুপ পাত্র বাছিলঃ শিলাশিতাঃ শিলায়াং তীক্ষীক্রতাঃ পীতাঃ কর্মারেণ
তেরান জলং পারিতাঃ স্ব্রিয়েশীঃ কেবলং লোহময়াঃ কার্চদণ্ড রহিতা
ইতার্থঃ॥ ৭ ॥ বরাহকর্পকারেঃ শল্পঃ ব্যামিশ্রান যুক্তান্ ধারয়তে শরান্
চিত্ররূপানে বেতিভাবঃ॥ ৮ ॥

শ বৃষ্টি রিত্যত্র পৃষ্ঠে ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
 † শতশ ইত্যত্র স্থুমুখা ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কন্তেমে পৃথবো দীর্ঘান্টক্রবিষ্ণার্দ্ধনাঃ।
শতানি সপ্ত তিষ্ঠন্তি নারাচা রুধিরাশনাঃ॥ ১॥
কদ্যেমে শুকপজাতৈঃ পৃথৈর কৈঃ স্বধাসনঃ।
উত্তরৈরায়দৈঃ পীতেঃ (গ্রুমপুর্ট্ডিঃ শিলাশিতৈঃ॥ ১০॥
শুরুভারসহো দিবাঃ শাত্রবানাং ভরস্করঃ।
কস্যায়ং শায়কো দীর্ঘঃ শিলাপৃষ্ঠঃ শিলামুখঃ॥ ১১॥
বৈয়াঘ্রকোষে নিহিতো হেমচিত্রৎ সরুর্দ্মহানু।
সুফলন্টিত্রকোশন্ট কিন্ধিনীশায়কো মহানু॥ ১২॥
কন্তা হেমৎসরুর্দ্দিবাঃ খড়গাং পরমনির্দ্মলাঃ।
কন্যায়ং বিপুলঃ খড়গো গব্যে কোশে সমর্পিতঃ॥ ১৩॥
হেমৎসরুর্নাপ্রয়ো নৈবধ্যো ভারসাধনঃ।
কন্য পাঞ্চনখে কোশে শায়কো হেমবিগ্রহঃ॥ ১৪॥
প্রমাণকপদন্সনঃ পীত আকাশস্ত্রিভঃ।
কন্য হেমময়ে কোশে স্তুপ্তে পাবকপ্রতে॥ ১৫॥

চন্দ্র বিষাধ্য বদ্দর্শনং যেষাং অর্ধিচন্দ্রাকারা ইতার্যঃ ॥৯॥ পূর্ব্বেঃ কপরিকৈ রির্ধিঃ উপলক্ষিতাঃ সুবাসসঃ স্বপ্রথা বাণাএক উত্তরে রপ্রভাগৈঃ হেম প্রথে স্বর্ণধারা চিত্রিতিঃ ॥১০॥ শিলী ভেকীপৃষ্ঠে চিত্ররূপেণ যস্ত্রপরিচয়ার্থং শিলীমুখো ভেক্যা মুখ মির মুখং যস্ত্য সায়কঃ খড়াঃ শরে খড়োচ সায়ক ইত্যমরঃ ॥১১॥ বৈয়ান্ত কোশে ব্যান্ত্রচর্ম কোশে ৎসকঃ 'ধড়াাদি মুফ্টো স্যাদিত্যমরঃ স্কুলঃ শোভ্র ভল্লিকঃ কলং শক্তাপ্রে ব্যক্তি লাভয়ো রিতি বিশ্বঃ কিন্ধিনী যুক্তঃ সায়কঃ ॥১২॥ গ্রে গোচর্মজে কুর্মে ইতিবিশ্বঃ হেম বিপ্রাহ স্বর্ণে নালং কৃত্রিদহঃ ॥১৪॥ আকাশসন্থিতঃ কৃষ্ণভাষ্বঃ ॥১৫॥

নিপ্রিশংশইরং গুরুং পীতঃ নায়কং পরনিপ্রবিং।
কদ্যায় মনিতঃ খড়েগা হেমবিন্তুভিরারতঃ ॥ ১৬ ॥
আশীবিষ সমস্পর্শঃ পর্কায় প্রভেদনঃ ॥
গুরুভার সহোদিবাঃ সপত্রানাপ ভয়প্রদঃ ॥ ১৭ ॥
* নির্দিশ্ব যথাতত্ত্বপ মরা পৃষ্টা রহমলে।
বিশ্বয়ো মে পরো জাতো দৃষ্ট্যা সর্বমিদং মহৎ ॥ ১৮ ॥.

* ইতি বিরাট পর্বানি গোহরণপর্বানি উত্তর বাক্যং শাম
দ্বিচন্থারিংশত্তমোহ্যায়ঃ ॥ ৪২ ॥

द्रश्चरलायाः ।

যনাং পূর্ব্বমিহাপৃচ্ছঃ শক্র ণ দেনাপহারিণম।
গাণ্ডীবমেতৎ পার্থক্য লোকে বু বিদিত বুঃ ॥ ১॥
সর্বাযুধমহামাত্রং শাতকু স্তুপরিষ্কৃত্য।
এতত্তদর্জ্বনজাসীদাণ্ডীবং পরমাষুধ্য ॥ ২॥
যত্তচ্চতসহত্তেণ সন্মিতং রাষ্ট্রবর্দ্ধন্য।
যেন দেবান্মুষ্যাংশ্চ পার্থো বিজয়তে মুধে॥ ৩॥

নিজ্ঞিংশঃ ত্রিংশতো ২সুলিভোগ নির্গতঃ ত্রিংশদসুলাধিকঃ সায়কঃ খড়া। পরেষাংশজ্ঞেন নির্গতো ত্রনো যদ্য পরানভিভূতঃ শিক্য ইতি পাঠে পুক্ষদ্যেনোহ মানা সাধীতি প্রদিদ্ধা তদ্যোগ্যঃ॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥

> ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বিচ্যারিংশেহধ্যায়ঃ ॥ ৪২

অপহরতীতাপ হারী কালঃ শেভামিরিতাপ হারিণং পামাদি দায়ত্ব-্থীলোন প্রত্যয়ঃ কালরপীতার্থঃ ॥১॥২॥ ধন্ত্যাং শতসহজ্বেণ লক্ষেণ দেংমিতং॥৩॥

^{*} নির্দিশ্ব যথাতত্মিতাসভ্পাক্ ক্সায়ম্সিতঃ খড়া ইতি সার্টেক লোকঃ ক গুভুকে নাস্তি।

ণ সেনাপহারিণ মিত্যত্র সেন।নিবর্ছণমিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

চিত্রসুক্ষাবিটকনি লৈ শ্রেক্ষনায়তমন্ত্রণম্।
কেন্দানবগল্পকৈ: পূজিতং শাশ্বতীঃ স্মাঃ॥৪॥
এতদ্বিসহস্ত্র ব্রহ্মা পূক্ষনধারয়ং।।
তেতাহনন্তরমেবাথ প্রজাপতিরধারয়ং॥৫॥
আনি পঞ্চশতক্ষৈব শক্রোহশীতিঞ্চ পঞ্চ বৈ।
সোমঃ পঞ্চশতং রাজা তথৈব ব্রুণঃ শতম।
পার্থঃ পঞ্চ চ ব্যিঞ্চ বর্ষানি শ্বেত্বাহনঃ॥৬॥
•

॥৪ ৫॥ ত্রীনি বর্ষানি পঞ্চশ্তং বর্ষানি প্রজাপতি রধারয় দিতি সম্বন্ধঃ অত্তৰজাদীনা হৰ্ষাণি দেব মানে নৈৰ জ্বেরানি যোহস্মাকং সৌর: সম্বংসরঃ স তেবামেকং দিন মিতি শাস্ত্র প্রসিদ্ধং পার্থঃ পঞ্চ চ ষ্ঠিঞে ত্যত্রতু বর্ব শব্দো বৃষ্টিপরঃ তথার্চ সম্বংসরে বর্ষদ্বয়ংজীয়তে তথাহি একেন বর্ষেণ তৃপ্তঃ শর্কি ব্রীষ্থার্মণং করোতি অপরেণ তৃপ্তো বসন্তে যবাতায়নং প্রকৃত্য আশ্বলায়নঃ আত্তি মুদাহরতি অপিহি দেবা আত্-স্ত্রোপুনং বর্ষ্যা প্রবেশ্ব হি যজত ইতি তথান্যত্রাপি তদেব প্রকৃত্য ভাতং ব্রীহিভিরিষ্ট্র ব্রীহিভিরেন মজেতা থ মনেভো মনৈরেন মজেত ব্রীহিভ্য ইতি এবঞ্জিকিশ্মন সম্বৎসরে কর্কায়নাদ্যেকং বর্ষমপরং মকরায় নাদীতি দেবৰ্কে ততশ্চ সাৰ্দ্ধ দাতিংশতাসম্বংসরৈঃ পঞ্চমষ্টিবৰ্বাণি ভবন্তীতি যুক্তযুক্তং পার্থঃ পঞ্চযক্তিঞ্চ বর্ষাণি এত দ্বন্ত্বাধি অন্যেতু অতীত মনাগতঞ্জ কালং একীকৃত্য পঞ্চষষ্টি সম্বংসরং ধরুদ্ধারণং বর্ণয়ন্তি বর্ষোই ন্ত্রী ভারতা ছে ভু জমুদ্বীপান র্ফিমিতি মেদিনী রুক্তির্বমিত্যমরশ্চ তত্ত্ব প্রাচাৎ মতে২ধারয়দিতি ভূত কালাত্মপর্শক্তিঃ বক্তঃ কদাচিদায়ু জ্ঞান • কম্পানে পি প্রতি পাত্তঃ পারোক্ষেণ র্জুনবরো বিদেশ্ব প্রতি পত্তিকেতি বিচারনীয়ং অস্মাকভু গাণ্ডীব লাভানন্তরং, গতেয়ু দার্দ্ধবিভেংশরর্ষেষ্ ज्दताम गवर्षानि वनवारम जाका कार्य मर्थ मायुषानातर धाविकेमार्ज्नमा. জৌপদী ধর্মরাজয়ো: সহাসন কালে ২লুপ্রবেশ নিমিতে দাদশ বর্ষাণ ইতি পঞ্চ বিংশতির্গতানি অন্যান্যপি দিধিজয় রাজস্যু রাজ্যকরণাদি কালে প্রাণেব সাদ্ধি সপ্ত বর্বাণি গতানীতি সমুলেয়ং॥৬॥

মহাবীর্যাং মহদ্বিত্যমেতদ্বসুরস্কুত্রম্ব। 🕸 এতৎপার্থমনু প্রাপ্তং বরুণাচ্চারুদর্শনম্ ॥ १॥ পূজিত^ স্থরমতের্যমু মিভর্ত্তি পরমৎ বপুঃ। স্পাশ্বং ভীমদেনস্থ জাতৰপগ্ৰহং ধনু:। যেন পার্থোহজমৎ ক্লৎসাং দিশৎ প্রাচীং পরন্তপ:॥ ৮ । ইন্দ্রগোপকচিত্রঞ্চ যদেতচারুবিগ্রহম। রাজে। যুধিছির সৈতে ছৈরাটে ধনুরুত্তমম্। ১॥ স্থ্যা যাস্ত্ৰ-স্ত সৌবৰ্ণা প্ৰভাসত্তে প্ৰভাসিনঃ। তেজসা প্রজ্বারো বৈ নকুলক্ষৈত্দাযুধম্॥ ১০ । শলভা যত্র সৌবর্ণাস্তপনিয়বিচিত্রিতাঃ। এতনাদ্রীস্কৃতভাপি সহদেবভা কার্মাকর ॥ ১১॥ যে ত্রিমে কুরশঙ্কাশাঃ সহস্র লোমবাহিনঃ। এতে২র্জ্জুনস্ত বৈরাটে শরাঃ সর্পবিষোপমাঃ॥ ১২॥ এতে জ্বন্তঃ সংগ্রামে তেজ্সা শীঘ্রগামিন:। ভবন্তি বীরস্থাক্ষ্যা বাহতঃ সমরে রিপূন্॥ ১৩॥ य एट्य शृथरवा मीर्घाम्बन्धविश्वार्कनर्मनाः । এতে ভীমস্থ নিশিতা রিপুক্ষয়করাঃ শরাঃ॥ ১৪॥ হারিদ্রবর্ণা যে চৈতে হেমপুষ্থাঃ † শরাঃ শিতাঃ। নকুলম্ভ কলাপোহয়^ পঞ্চশাৰ্দ্যলক্ষণঃ॥ ১৫॥

। ৭॥৮॥১॥১০॥১১॥ সহআঃ রেডজ্বিনোদৃঢ়াঃ সহজ্শঃ সংমিতাবা ॥১২ এবৃহতঃ কিপতঃ ॥১৬॥১১৪॥ ১৫॥

^{*} এতং পার্থমন্ত্রাগুমিতার এতক মান্ত্রং প্রাপ্ত মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

[†] শরাঃ শিতা ইতাত্র শিলা শিতা ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

यनारमो गुजस कृश्याः थाजीहीः विभगाहरव । কলাপো ছেষ ভষ্ঠাদীঝাদ্রীপুক্তস্থ ধীমুভঃ ॥ ১৬ ॥ य दिस्म ভाक्षताकाताः मक्तानाताः। এতে চিত্র ক্রিয়োপেতা: সহদেবস্থা ধীমতঃ ॥ ১৭ ॥ যে ত্রিমে নিশিতাঃ পীতাঃ পৃথবো দীর্ঘবাসসঃ। হেমশৃঙ্গা স্ত্রপর্বাণে। রাজ্ঞ এতে নহাশরাঃ ॥ ১৮॥ यस्य भाषात्का नीर्यः भिलीपुर्धः भिलीपुर्यः। অর্জুনবৈশ্বব সংগ্রামে গুরুত্বারসহো দৃত। ১৯॥ देवब्राष्ट्रकायः स्रमहान् जीयत्मनस्य भावनः। গুরুভারসহো দিব্যঃ শাত্রবাণাণ ভয়ঙ্করঃ॥ ২০॥ † অব্রণ্শিত্রকোষশ্চ হেমৎসরুরুত্তমঃ। নিস্ত্রিংশঃ কৌরবলৈয়য ধর্মারাজন্ত ধীমতঃ॥২১॥ যন্ত্র,পাঞ্চনখে কোষে ! নিহিতশ্বিতাখনে। নকুলসৈয়ে নিস্ত্রিংশো গুরুভারসহো দুটঃ॥ ২২ ॥ যন্ত্ৰুয়ং বিপুলঃ থড়েগা গব্যে কোশ সমৰ্পিতঃ। সহদেবতা বিদ্ধোন সর্বভারসহং দুরম্। ২৩॥ ইতি বিরাট পর্বাণি গোহরণপর্বাণি উত্তর গোগ্রহে আযুধবর্ণন নাম ত্রিচত্বারি শক্তমৌহধ্যায়ः॥ ৪৩।

[॥] ১৬॥ সর্বাপারসবাঃ সর্বাঞ্চতৎ পারিং পর সমূহং স্থাতে হিংসন্তি তে সর্বাপারসবাঃ সর্বাশক্ত সমূহনাশকরাঃ॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ চিত্র যোধনে বিশ্চিত্র যুদ্ধ নিমিত্তং নিহিঙঃ পালিতঃ॥ ২২॥ ২৩॥

ইতি বিরাট পর্বানি নৈল কুণ্ডীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিচড়ারিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ৪৩ ॥

^{*} শৃদ্ধা ইতাত্র পুংখা ইতি পাচঃ খ ঘ পুস্তকয়োঃ।

† অত্রণ ইত্যত্ত স্কুদল ইতি পাচঃ খ ঘ পুস্তকয়োঃ।

‡ নিহিতশ্চিত্রয়োধন ইত্যত্ত্ব নিহিত্যশিত্তসেবনে ইতি পাচঃ ক পুস্তকে।

উত্তর উনাচ।

স্বর্ণবিক্কতানীমান্যাযুধানি মহাজ্ঞান্য।
ক্রিচরাণি প্রকাশন্তে পার্ধানামাশুকারিণাগ্ । ১ ॥
ক কু স্থিদজ্জুন: পার্থ: কৌরব্যা বা যুধিন্তির:।
নকুলঃ সহদেবো বা ভীমসেনক পাপ্তব: ॥ ২ ॥
সুক্র এব মহাজ্মান: মর্কেহমিত্রবিনাশনাঃ।
রাজ্যমকৈঃ পরাকীয়্য ন জ্রান্তে কথঞ্চন ॥ ৩ ॥
জৌপনী ক্রাথ পাঞ্চালী জ্রীরত্রমিতি বিজ্ঞাতা।
জিতানকৈন্তদা কুঞা তানেবান্থ্যমন্ত্রগ্ ॥ ৪ ॥

अर्ज्जून हेवाह।

অহমক্মাৰ্চ্জুনঃ পাৰ্থঃ সভাস্তারো যুধিষ্ঠিরঃ। বল্লবো ভীমদেনস্ত পিতুক্তে রসপাচকঃ॥৫॥ অশ্বব্যোহথ নকুলঃ সহদেবস্ত গোকুলোঁ। দৈরক্ষ্মী দ্রৌপদীং বিদ্ধি যংক্তে কীচকা হতাঃ॥৬॥

উত্তর উবাচ।

দশ নামানি পার্থস্য ধানি পূর্বাং প্রুতানি মে। প্রব্যান্তানি যদি মে শ্রদ্ধ্যাং সর্বাম্বের তে॥ १॥

অজ্জুন উবাচ।

হস্ত তেহহং সমাচক্ষে দশ নামানি যানি মে। বৈরাটে,শূণুভানিত্যং যানি পূর্বাৎ শ্রুতানিতে । ৮॥

স্বর্ণেতি॥১॥२॥পরাকীর্যা অপাস্য।। ৩॥৪॥৫॥ ৬॥ १॥৮॥

* একপ্রিমানসো ভূত্বা শৃণু সর্ববং সমাহিতঃ।
ভূত্বজুনঃ কাল্পনো জিফুঃ কিরীটা শ্বেতরাহনঃ।
বীভৎস্কিজ। কুফঃ সব্যসাচী ধনস্করিঃ॥৯॥

উত্তর উব†চ।

কেনাসি বিজয়ে নাম কেনাসি শ্বেতবাহন:।
কিনীটা নাম কেনাসি সব্যসাচি কথং ভবান্ ॥ ১০॥
অর্জ্জুনঃ কাল্কুনো জিষ্ণুঃ কুষ্ণো বীভৎস্থুরেব চ।
ধনঞ্জয়শ্চ কেনাসি প্রক্রাহি মম তন্ত্রতঃ॥ ১১॥
শ্রুতা মে তস্য বীরস্য কেবলা নামহেতবঃ।
তৎ সর্বাহ যদি মে ব্রুয়াঃ প্রদিশ্বাহ্ন সর্বামেব তে॥ ১২॥

অজ্ব ন উবাচ।

সকান্ জনপদান্ জিখা † বিত্তমাশ্রেতা কেবলম্।
মধ্যে ধনস্য তিষ্ঠামি তেনাভূম্মাং ধনপ্তয়ম্॥ ১৩॥
অভিপ্রয়ামি সংগ্রামে যদহং যুদ্ধভূম্মদান্।
নাজিত্বা বিনিবর্তামি তেন মাং বিজয়ং বিতঃ॥ ১৪॥
শ্বেতাঃ কাঞ্চনসন্নাহা রথে যুজ্যন্তি মে হয়াঃ।
সংগ্রামে যুধ্যমানস্য তেনাহং শ্বেতবাহনঃ॥ ১৫॥

নররপদ্য মম মহাবিষ্ণোর্নামানি সঙ্কটে অর্থামানানি বিজয়বহানীতাতি-প্রেত্যাহ একাথ্রেতি ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ২১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

^{*} একাগ্রমানসোভূত্বতাস্য প্রাক্ বৈরাট্টে শৃণুতানিতামিতার্দ্ধং ক পুস্তকে নাস্তি।

[†] বিত্তমাজিত্যেতাত বিত্ত মাদায়েতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

উত্তরভাঞ্চ পূর্ববিদ্যাং ফল্কনীভ্যানহন্দ দিবা।

কালো হিনবতঃ পৃষ্ঠে তেন মাং ফাল্কনং বিছুঃ ॥ ১৬ ॥
গুরা শক্রেণ মে দন্তন খুধাতো দানবর্ধ ভৈঃ।
কিরীটং মূর্দ্ধি সুর্যাভিং ভেনান্তর্মাং কিরীটিনম্॥ ১৭ ॥
ন কুর্যাণ কর্ম্ম বীভংসং যুধামানঃ কথঞ্চন ।
ভেন দেবমনুষ্যেমু বীভংসুরিতি বিশ্রুতঃ ॥ ১৮ ॥
উতৌ মে দক্ষিণৌ পাণী গাণ্ডীবস্থা বিকর্ষণে।
তেন দেবমনুষ্যেমু সুব্যুসাচীতি মাং বিছুঃ ॥ ১৯ ॥
পৃথিব্যাঞ্চতুরন্তারাং বণো মে ছুর্লভঃ সমঃ।
করোমি কর্মা শুক্লঞ্চ তেন মামর্জ্রনং বিছুঃ ॥ ২০ ॥
অহং গুরাপো ছুর্নমো দমনঃ পাকশাসনিঃ।
ভেন দেবমনুষ্যেমু জিফুর্নামান্সি বিশ্রুতঃ ॥ ২০ ॥
ক্ষাইত্যেব দশমং নাম চক্রে পিতঃ মমু।
ক্ষাবদাত্য সদা প্রিয়ম্বালক্ষ্য বৈ ॥ ২২ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ভতঃ পার্থ~ স বৈরাটিরভ্যবাদযদন্তিকাৎ। অহং ভূমিঞ্জয়ো নামু নামাহমপি চোত্তরঃ॥ ২৩॥

নক্ষত্রাভ্যাং তারাভ্যাং তত্ত্তিতে চল্লে ইত্যর্থঃ উত্তরভ্যাঞ্চ পূর্ব্বভ্যামিতি পাঠে নক্ষত্র সন্ধ্যে ইত্যর্থঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ বীভংক্সরিতি ভদি কল্যাণে স্থাং চেতাস্য স নিরুপং ॥ ১৮ ॥ বিকর্ষণে শঙ্কে ইভি শেষঃ সব্যেন বামেনার্পি হন্তেন সচিতুং জ্যাকর্ষণাদি ক্রিয়ার্যাং সম্বদ্ধঃ শীলমস্যেতি সব্যস্তিত্যিওঃ ', ৪৯॥ অর্জুন ইভি শুজ গভিস্থানার্জনোপার্জনেম্বিভাভঃ উনন্ প্রভাষে ভবতি বর্গেদীপ্তিঃ সমঃ শুজুঃ দাপ্তিমহাৎ সমহাৎ শুদ্ধকর্ম করহাচ্ছার্জুন ইভার্থঃ ॥ ২০॥ জিফুর্জরশীলঃ ॥ ২১॥ কৃষ্ণাবদাত্যা কৃষ্ণভাষর বর্ণস্য কর্মতি চিত্ত মিতি মনোহরহাদ্বা কৃষ্ণ ইত্যাহ প্রিয়হাদিতি ॥ ২২॥ ২০॥

দিন্টা ত্বাং পার্থ গশ্যামি স্থাগতং তে ধনপ্লয়।
লোহিতাক্ষ মহাবাহো নাগরাজকরোপ্য ॥ ২৪ ॥
অদলানন্নবোচং ত্বাং ক্ষন্তমইনি তন্মসু।
যতস্ত্রা ক্বতং পূর্বাং বিচিত্র কর্ম ত্ষ্ণরম্।
অতো ভয়ং ব্যক্তাতং মে প্রীতিশ্চ পরমা ত্বয়ি॥ ২৫ ॥
ইতি বিরাট পর্বাণি গোহরণপর্বাণ উত্তর গোগ্রহে অজ্জুনপরিচয়ে চতুশ্ব্যারিংশভ্রমোহ্যায়ঃ ॥ ১৪ ॥

উত্তর উবাচ।

আস্থায় ^এ বিপুলং ধীর র**থং সা**রুথিনা ময়া। কতমণ যাম্সদেহনীকমুক্তো যা**ঠ্যা**ম্যহং **ওয়া॥ ১**॥

অৰ্জুন উবাচ।

প্রীতাঁহিন্দা পুরুষব্রাদ্র ন ভয়ং বিদ্যুতে তব।
সর্বাংস্তদামি তে শকুন্ রণে রণবিশারদ॥২॥
স্বস্থো ভব মহাবাহো পশ্য মাশ শক্রভিঃ সহ।
যুধ্যমানং বিমর্দ্দেহিন্দান কুবাণং ভৈরবং মহৎ॥ ৩॥

নাগরাজ ঐরাবতঃ তদ্যোব করোপমাহস্তরোঃ সাঁদৃশ্যং যদ্য হস্তি হস্তো-পম করেত্যর্থঃ ॥ ২৪ ॥ কর্ম দিয়জরাদি ॥ ২৫ ॥

> ইতি বিরাট পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে চতুশ্চকারিং শোধনায়: ॥ ৪৪ ॥

আস্থারেতি॥ ১॥ মূদামি দুরী করোমি॥ ২॥ ভৈরবং ভরানকং মহৎকর্ম ।
কুর্বাণ:॥ ৩॥

^{*} বিপুলমিত্যত্ত ক্তিরমিতি পাঠঃ খ ঘ পুতত্তক্ষো; ।

এতান্ সক্রিপাসঙ্গান্ * ক্রিপ্রমাহর মে রথে। এতমাহর নিস্তিংশং জাতরূপপরিষ্কৃতন্॥ ৪॥ ধ্রশাগারন উবাচ।

অর্জুনস্য বচঃ শ্রুত্বা ত্বরাবানুত্তরস্তদ। । অর্জুনস্ঠাযুধান গৃহু শীঘ্রেণাবতরত্ততঃ ॥ ৫ ॥

অৰ্জ্জন উবাচ।

অহং বৈ কুরুভির্য্যোৎস্থাম্যবজেষ্যামি তে পশূন্। ৬। সঙ্কপোপক্ষবিকেপুপ-বাস্থাকারতোরণম্। ত্রিদপ্তভূণসম্বাধমনেকধ্রসঙ্কুলম্। ৭॥

উপা্দলান্ ত্নীরান্ ॥ ৪ ॥ গুছ গৃছীত্ব। শীঘেন বেশেন ততঃ
শমীতোহবাতরং ইতরেষা মাঞ্ধানি তত্র নিধায়েতি শেষঃ ॥ ৫ ॥
অবজেষামি হেলয়াজেবাামি ॥ ৬ ॥ তত্ত্তয়ং তাজে তাছে সংক্পেতি
ত্রিভিঃ ইদংময়! গুপুং রক্ষিতং রথোপছং রখোপরি ভাগ স্তেত্র নগরং
নগর বক্ষকং ভবিয়াতি তত্র রখান্দের নগরাল সম্পত্তিমাহ সক্ষপা পক্ষ
বিক্ষেপ মিতি সঙ্গপাঃ সমাক্ কম্পনং চক্রাক্ষরজ ক্রর মুগাদীনামদানাং দার্চেনি সমর্থনং তদেব পক্ষয়োঃ বীথীনাং পার্যয়োঃ বিক্ষেপাে
বিস্তারো যশিন্ বাহুএব স্বীয়াে বাত্ত্ল্যভাদান্ধবা এববা প্রাকারঃ পুরপরিধি ভিত্তিস্থাং স্তোবনং প্রদারং যশিন্ রথিসার খােরপি রথান্দর
বিক্ষয়া এত হক্তং ত্রিণগুঃ ঈষা তত্ত্র পার্যদাকনী চেতিমিলিতা ত্রিদগু
উচাতে সচত্নো নিষদ্ধতভাত্তাং সম্বাধ্ সন্ধটং ক্লপুবেশং পক্ষে ত্রিদগু

উচাতে সচত্নো নিষদ্ধতভাতাং সম্বাধ্ সন্ধটং ক্লপুবেশং পক্ষে ত্রিদগু

(সন্য ত্রয়ং রথিনাং হস্তিসাদিনাং হ্য়সাদিনাঞ্চেতি ত্রীনি সৈন্যানি তেষাং
ত্নোপ লক্ষিতানি আযুধানি তৈঃ সম্বাধং অনেক ধর্জ সক্লং বন্তপ্র
বিষ্যাপ্তং অনেকেন অননেন ধ্রেনাবান্বান্যরেণ সংক্লং ভয়য়রং একে মুখাান্যকেবলা ইতিনানার্থঃ ॥ ৭ ॥

^{*} ক্লিপ্রমাহরেতাত ক্লিপ্রং ব্দ্রীহীতি পাঠ: খ প্রতকে।

জ্যাক্ষেপণ্ কোধক্তং নেমীনিনদতুন্তুভিঃ। নগরং তে ময়া গুপ্তং রথোপস্থ ভবিষ্যাতি॥৮॥ অধিষ্ঠিতো ময়। সংখ্যে রথো গাণ্ডীপৃষ্বনা। অজ্যেঃ শত্রুসৈন্যানাং বৈরাটে ব্যেতু তে ভয়ম্॥৯॥

উত্তর উবাচ।

বিভেমি নাহমেতেষাং জানামি ত্বাং স্থিরং যুধি।
কেশবেনাপি সংগ্রামে সাক্ষাদিক্রেণ বা সমম্॥ ১০।
ইনস্ত চিন্তয়ন্নেব পরিমুহামি কেবলম্।
কিশ্চয়ঞ্চাপি গচ্চামি ছুর্ম্মেধা ন কথঞ্চন ॥ ১১॥
এবং যুক্তাঙ্গৰূপন্ত লক্ষণৈরুচিতন্ত্র চ।
কেন কর্ম্মবিপাকেন ক্লীবত্বমিদ্যাগতম্ ॥ ১২॥
মন্যে ত্বাং ক্লীব্বেশেন চরন্তং শ্লপানিনম্।
গল্পুরাজপ্রতিমং দেব বাপি শতক্তেরুম্॥ ১৩॥

প্তাৰ্জুন উবাচ।

ভাতুর্নিযোগাৎ জোষ্ঠতা সম্বংসর্মিদ্ ব্রতম্।
চরামি ব্রহ্মচর্য্য বৈ সত্যমেত্র বীমি তে॥ ১৪॥
নাক্ষি ক্লীবো মহাবাহো পরবান্ ধর্ম্ম প্রতঃ।
সমাপ্তব্রতমুত্তীর্ণ বিদ্ধি মাণ স্থং নূপাক্ষি॥ ১৫॥

জ্যাধন্ত মেনিকা দৈব ক্ষেপণানি গোলাগনানি নালিকাখ্যানি যামিন্ ক্রোধেন পরজিঘাংসা হেতুনা চিত্ত বৃত্তি বিশেষেণ নিমিত্ত ভূতেন কৃতং পরিচ্চতং দ্বনাপা ॥ ৮ ৷ ফলিতমাছ্ অধিচিত,ইতি ॥ ৯ ॥ কেশবেন ইক্রেণ বাসসং সার্জং সংপ্রামে বাং স্থিবং জানামি॥ ১০ ॥ ॥ ১১ ॥ বুক্তাজরূপসা বুক্তানি সমীচীনানি অজ্যানি যুদ্ধাস্থানি গাস্তান্ত্র নৈ-পুণাদীনি রূপং আকৃতিশ্চ যস্য লক্ষণৈঃ পঞ্চরক্তহাদিভিঃ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ॥ ১৪ ॥ পর্বান্ নাথবান্ উত্তীর্ণ আপন্তা ইতি শেষঃ॥ ১৫॥

উত্তর উবাচ।

প্রমোংকুপ্রহো মেহ্দ্য যং প্রতর্কোন মে রুথা। নহীদৃশাঃ ক্লীবৰূপা ভব**ন্তি তু নৱোত্তম ॥ ১৬ ।** महाय्यानियात्रात यूरश्रममर्गततिति । সাধ্বসং সংপ্রনন্ত্> মে কিং করোমি ব্রবীহি'মে। ১৭। অহং তে সংগ্রহীষ্যানি হয়ানু শত্রুরথারুজান্। ণিক্ষিতো হৃষ্মি সারথ্যে তীর্থতঃ পুরুষর্ধভ॥ ১৮॥ দারুকো বাস্থদেবস্ত যথা শক্রন্ত মাতলিঃ। তথা মাং বিদ্ধি সার্থ্যে শিক্ষিত নরপুঙ্গব। ১৯॥ যস্ত যাতে ন পশুত্তি ভূমৌ ক্ষিপ্তং পদ৲ পদম্। দক্ষিণা থা ধুর বুক্তঃ স্থগ্রীবসদৃশো হয়ঃ॥ ২০॥ যোহরং ধুরং ধুর্য্যবরো বামাং বহতি শোভনঃ। তং মন্যে মেঘপুষ্পাশ্ত জহেন সদৃশং হয়ম্॥ २১॥ যোহয়ং কাঞ্চনসন্নাঃ পাঞ্চি বহুতি শোভনঃ। भगः रिमवामा मरनाश्रः जरवन बलवखतम् ॥ २२ ॥ যোহযং বহতি মে পাঞ্চিং দক্ষিণামঞ্চিতোদ্যতঃ। বলাহকাদিপি মতঃ স জবে বীর্য্যবন্তরঃ ॥ ২৩ n चारमवासः तर्था त्वाष्ट्र मः आरम्भ ईिं विचनम् । স্বঞ্সেং রথমাস্থায় যে।জুমর্হো মতে। মম॥ ২৪॥

"॥১৬॥১৭॥শক্রথাকজান্ শক্ররথ ভঞ্জকান্ মূলবিভূজাদিরাংকঃ তীর্থতো গুৰুতঃ ॥১৮॥১৯॥ যাতে গ্নানে পদং পদং সর্বাদিপ পদং ভূমোক্ষিপ্তং ভূত উদ্পৃহীতং বান পশ্যন্তি বেগকজ্বাং স্থাতীব মেঘ প্রজ্প শৈব্য বলাহকা ভগবতো ইথান্তং সামামেষাং বাহানামুক্তং ॥২০॥২১॥ পাঞ্চিং প্রঃ ছিত্যোরশ্বরো পৃষ্ঠ ভাগং পাক্ষাত্যং যুগ মিতি যাবং পাঞ্চিং স্যাহ্মদ ক্রিরাং ক্রিয়াং দ্রোঃ দৈন্য পৃঠে ইতিমেদিনী॥২২॥২৩॥২৪॥

বৈশম্পারন উবাচ। ততো নিমুচ্য বাহুজ্যা^ বল্যানি স রীর্য্যবান্। চিত্রে * তুন্তুভিসনাদে প্রত্যমুগজ্ঞে শুভে । ২৫॥ কুষ্ণান ভঙ্গিমতঃ কেশানু শ্বেভেন্) দা থা বাসসা। অথানৌ প্রাপ্তমুথো ভূত্বা শুচিঃ প্রয়তমানসং। অভিদধ্যো মহাবাহুঃ সর্বাস্ত্রাণি রথোত্তমে॥ ২৬॥ উচুশ্চ পার্থ~ সব্বাণি প্রাঞ্জনীনি নুপাত্মজমু। ইমে স্ম প্রমোদার কিন্ধরাঃ পাণ্ডুনন্দন ॥ २०॥ প্রনিপত্য চ তান্ পার্থঃ সমালভ্য চ পাণি না। স্কাণি মানসানীই ভবতেতাভাভাষত ॥ ২৮॥ প্রতিগৃহ ততোইস্তানি প্র**হৃষ্ট ফ**নোইভবৎ। অধিজ্যং তরসা রুত্বা গাণ্ডীবপ ব্যাক্ষিপদ্ধনু:॥ ২৯॥ তস্য ব্যাক্ষিপ্যমাণস্য ধনুষোহভূমহাস্থনঃ। যথা শৈলস্য মহতঃ শৈলেইনবাৰজন্মতঃ ॥ ৩০॥ সনিৰ্যতোভৰ † দুভিদ্বিকু বায়ুধ্বৰৌভূশন্। পপাত মহতী চোল্কা দিশো ন প্রচকাশিরে। ভ্রান্তর্গর্ক 🖠 খন ভদানীৎ প্রকল্পিত্রহাদ্রুমম্। 🤒 ।

পর্যা মুঞ্চ জনগুতে ইতি পাঠেছু কুগুলে ইতিশেরঃ ॥২৫॥ ভদিমতঃ
কৌটিল্যবতঃ অভিদ্রো স্ত্রান্ ॥২৬ ॥২৭॥ মানগানি প্রয়োজন
কালে স্তি গোচরাণি ॥ ২৮ ॥ প্রতিগৃহ অনুকূলানি কুরাব্যাক্ষিপংটণং
কারিত্যান্ ॥২১॥ অবজন্নতঃ অবহন্যমানদা অভিনিন্নত ইতি পাঠান্তর
॥৩০॥ ভূভিৎ ভূবিদারকঃ প্রচকারিকে প্রকাশবত্যাহ ভূবন্ ভাশ্তা ইতশ্চন
লিতাঃ হজাব্যান্ এতেন পর সৈন্য বাহেষু শক্ষান্তা সাত্রং প্রথ গামিবং
ব্যান্যতে প্রকাশিত মহা জম মিতানেন ভূমিকপ্রো ব্যান্যতে॥৩১॥

^{*} হুত্মভিদন্নাদে ইতাত্ৰ কাঞ্চন সন্নাহেইতি পাচ থ পুস্তকে।

† ভূভিদিত্যত্ৰ ভূমিনিতি পাচঃ ক পুস্তকে।

‡ ধ্ৰুমিতাত্ৰ দিলমিতি পাচঃ ক পুস্তকে।

তং শব্দং কুরবোহজানন্ বিস্ফোটনশনেরিব। যদর্জ্জুনো ধনুঃ শ্রেষ্ঠং-বাস্কৃত্যামাজিপদ্রথে॥ ৩২॥

উত্তর উল্বচ।

একস্বং পাশুবলেঠ বহুনেতামহারথান।
কৃথক জেষায়ি সক্প্রামে সর্বান্ত্রপারগান্। ৩০॥
অসহাযোহসি কৌন্তের সসহায়াশ্চ কৌরবঃঃ।
অত এব মহাবাহো ভীতন্তিঠামি তেইপ্রতঃ॥ ৩৪॥
ॐ উবাচ পার্থো মাতৈষীঃ প্রহ্ন্য স্থনবন্তন।। ৩৫॥
বুধামানস্য মে বীর গন্ধার্শিং স্থমহাবলৈং।
সহাযো ঘোষযাত্রায়াক কন্তনামীৎ স্থা মম॥ ৩৬॥
তথা প্রতিভ্রে তামিন্ দেবদানবসক্লা।
থাপ্তবে বুধ্যমানস্য † কন্তনাগাৎ সহায়তাম্॥ ৩৭॥
নিবাতকবলৈং সার্দ্ধক পৌলোমেশ্চ মহাবলৈং।
বুধাতো দেবরাজার্থে কং সহারস্তদাভবৎ॥ ৩৮॥
স্থাতো দেবরাজার্থে কং সহারস্তদাভবৎ॥ ৩৮॥
স্থাতো বছভিন্তাত্রকং সহায়স্তদাভবৎ॥ ৩৯॥
উপজীব্য শুক্রং দ্রোণং শত্রক বৈপ্রবণং যমম্।
বক্ষণং পাবককৈব ক্রপংক্রঞং চ মাধবম্॥ ৪০॥

110811 00 11 08 11 00 11 00 11 00 11 00 11 00 11 00 11 00 11

^{*} উবাচ পার্থ ইত্যস্থাক্ বৈশিম্পায়ন উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

কন্তনাগাৎ সহয়তা মিত্যত্ত কন্তনাসীৎ সধা মমেতি পাঠঃ ধ
পুস্তকে।

পিনাকপানিনঞৈব কথমেতার যোধয়ে। রথং বাহয় মে শীঘ্র> ব্যেতু তে মানসো জ্বঃ॥ ৪১॥ ইতি বিরাটপর্বানি গোহরণপর্বাণুত্তর গোগ্রহে উত্তরার্জ্জুন যো বাক্যং নাম পঞ্চ চত্তারিংশস্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৫॥

বৈশন্পায়ন উবাচ।

উত্তর সার্থি কৃত্বা শ্মীং কৃত্বা প্রদক্ষিণ্য।
আয়ুধণ সর্ব্বমাদায় প্রযোগ পাণ্ডুনন্দনঃ ॥ ১॥
ধুজং সিংহং রথান্তস্মাদপনীয় মহারথঃ।
প্রাণিধায় শ্মীমূলে প্রায়াতুত্তর সার্থিঃ॥ ২॥
দৈবীং মায়াংরথেযুক্তাং বিহিতাণ বিশ্বকর্মণা।
কাঞ্চনং সিংহলাঙ্গুল ধুজং বানরলক্ষণম্॥ ৬॥
মন্দা চিন্তয়ামাস প্রমাদণ পাবকর্ম্য চ।
স তু তচ্চিন্তিতং জ্ঞাত্বা ধুজে ভূতান্যচোদয়ং॥ ৪॥

1 85 1

ইতি বিরাট পর্ব্ধনি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চ চত্তারিং শোহধা\য়ঃ ॥ ৪৫ ॥

• উত্তরমিতি ॥ ১ ॥ সিংহং সিহাকারং ॥ ২ ॥ দৈবীং মারামিতাদুতবং ধ্জদাদশিতিং মারামির ইবধজোঙ্গুতুইতার্থঃ বিশ্বকর্মণা এলাণা ভৌম-নেন বা কাঞ্চনং কাঞ্চনবর্গং সিংহং ছিল্লং লাসুলং যদ্য প্রক্র বিক্লেপণে । ইনব বছুন্ হন্ত্যাদীন্ পোধ্যন্তমিতার্থঃ বনের লক্ষ্ণং বানর স্বরূপং ॥ ৩ ॥ প্রদাদং প্রদাদপ্রধিং সঃ পাবকঃ তালিন্ততং অদেশয়ৎ অযোজয়ৎ ॥ ৪ ॥

সপতাক বৈচিত্রাক্ষং সোপাসক শহরণারম্। থাৎ পপাত রথে তুর্ণ দিব্যক্ষপং মনোরম্য। ৫॥ রথ ত্রাগতং দৃষ্ট্রা দিকিবং প্রাক্ষেরান্তদা। রথমান্তার বীভৎস্কঃ কৌন্তেরঃ শ্বেতবাহনঃ॥ ৬॥ বদ্ধনোরান্ত্রালিঃ প্রসূহীতশরাসনঃ। ততঃ প্রারাত্রদীচীং স কপিপ্রবরকেতনঃ॥ ৭॥ খনবত মহাশভ্যং বলবানরিমর্দ্দনঃ। প্রাধমন্ত্রমান্তার দ্বিতাং লোমহর্ষণ্য। ৮॥ তততে জবনা ধুর্যা জারুত্যামগমন্ত্রীম্। উত্তরশ্ব পি সংক্রতো রথোপন্থ উপাবিশৎ॥ ৯॥ সংস্থাপ্য চাশ্বান্ কৌত্তেয়ঃ সমুদ্যম্য চ রশ্মিতিঃ। উত্তরঞ্চ পরিশ্বজ্য প্রত্যাশ্বাস্থদক্ষ্রনঃ॥ ১০॥

অজ্জু ন উবাচ। '

মা ভৈন্ত্ৰ, রাজপুত্রাপ্ত্য ক্ষজ্রিষোহনি পরন্তপ !
কথং পুরুষশার্দ্ধি ল শত্রুমধ্যে বিষীদসি ॥ ১১ ॥
গ্রুত্তান্তে শত্থাশকাক্ষ্ট ভৈরীশকাক্ষ পুষ্কলাঃ ।
কুঞ্জরাণাঞ্চ নদভাং ব্যুদানীকেষু ভিঠতান্ ॥ ১২ ॥
স ত্বং কথমিহানেন শত্থাশক্ষেন ভীষিতঃ ।
বিষয়ন্ধপো বিত্রস্থঃ পুরুষঃ প্রাক্তাে যথা ॥ ১৩ ॥

, । ৫ ॥ ৬॥ ৭ ॥ ৮ ॥ তেজবঁনাঃ প্রসিদ্ধাঃ বেগবন্তে†২িমিদত্ত রথস্থা॥ ৯ ॥ ৺সংস্থাপ্য যথাবৎক্রা ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥

^{*} হিরণারমিতাত্র মহাবল মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

উত্তর উবাচ।

শ্রুত্তা মে শঙ্মশন্দান্ত ভেরীশন্দান্ত পুন্ধলা। বুঞ্জরাণাঞ্চ নদতাং ব্যুতানীকেষু তিষ্ঠতাম্॥ ১৪॥ নৈবন্ধিঃ শঙ্মশন্দঃ পূরা জাতু ময়া শ্রুত্তা। ধজুগা চাস্য রূপং মে দৃষ্টপূর্বা নহীদৃশন্॥ ১৫॥ ধরুষদৈত্ব নির্ঘোষঃ শ্রুত্তপূর্বাে ন মে কৃচিৎ। শুস্য শঙ্ম্যে শক্ষেন ধরুষাে নিস্থনেন চ॥ ১৬॥ শঙ্ম্যা শক্ষেন ভূতানা শঙ্কামিনাম্। রথস্য চ নিনাদেন মনাে মুক্তাতি মে ভূশ্দ্ ॥ ১৭॥ ব্যাকুলান্দ দিশঃ সর্বা ক্লেয়ণ ব্যথতীব মে। ধজেন পিহিতাঃ সর্বা দিশোে ন শ্রুতিভাত্তি মে॥ ১৮॥ গাণ্ডীবস্য চ শক্ষেন কণাে মে ব্রিরীকৃতাে। সমুহুর্ত্তং প্রয়াতস্ক পার্থাে বৈরাটিমব্রবীৎ॥ ১৯॥

অজ্ব ন উবাচ।

একান্তং রথমাস্থার পদ্ধাং স্বমবপীতরন্।
দৃঢ়ঞ্চ রশ্মীন্ সংঘচ্ছ শস্তং ধ্যাসাম্যহং পুনঃ॥ ২০॥
বৈশন্যায়ন উগাচ।

ততঃ শশ্বমুপাধ্যাসীদ্ধারয়ন্নিব পর্বতাক।
† গুহা গিরীণাঞ্চ তদা দিশঃ সর্বাস্তথৈব চ।
উত্তরক্ষাপি সম্লীনো রথোপস্থ উপাবিশৎ॥ ২১ ॥

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ •একাত্তং স্থাত্ত পাঠস্থ লেখক প্রমাদঃ রথং সুদৃঢ়ং অবলম্বেতার্গঃ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

^{*} অর্জন উবাচ ইত্যাস্থাক্ সমুহূর্ত মিতার্দ্ধ শ্লোকঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

† গুহারিরী নামিতাস্য প্রাক্ দ্বিষতাং হুঃশ জননং স্ক্রদাহর্বর্দ্ধনমিতি

পাঠঃ ক পুস্তকে।

তদ্য শশ্বদ্য শব্দেন রথনেমিশ্বনেন চ। গাণ্ডীবদ্য চ শব্দেন পূথিবী দনকম্পত ॥ ২২॥ তং * সমাশ্বাদ্যামাদ প্রেরেব ধনঞ্জঃ ॥ ২৩॥ ব্যোগ উবাচ।

যথা রথস্য নির্ঘোযো যথা মেঘউদীর্ঘতে। প্রকম্পতে যথা ভূমিরৈ ষোহন্যঃ সব্যসাচিনঃ ॥ ২৪ ॥ শস্ত্রাণি ন প্রকাশন্তে ন প্রহুষ্কাতি বাজিনঃ। অগ্নয়শ্চ ন ভাদত্তে সুমিদ্ধান্তর শোভনম্ ॥ ২৫॥ প্রত্যাদিতাঞ্চ নঃ সর্বের মূগা ঘোরপ্রবাদিনঃ । ধজেয়ু চ নিলীয়ন্তে বায়সান্তল শোভনম্॥ ২৬॥ শকুনাশ্চাপসব্যা নো বেদয়ন্তি মহন্তয়ম্॥ ২৭॥ গোমাযুরেষ সেনায়াং রুদন্মধ্যেন ধাবতি। অনাহতক নিষ্কাতো মহদেশয়তে ভয়ম্।। ২৮॥ ভবতাং রোমকূপাণি প্রহৃষ্টান্যুপলক্ষয়। ধ্রুবং বিনাশো যুদ্ধেন ক্ষজ্ঞিয়াণাং প্রদুশ্যতে ॥ ২৯॥ জ্যোতী প্ৰ ন প্ৰকাশন্তে দাৰুণা মৃগপক্ষিণঃ। উৎপাতা বিবিধা ঘোরা দৃশ্যন্তে ক্ষত্রনাশনাঃ॥ ৩०॥ বিশেষত ইহাস্মাকং নিমিন্তানি বিনাশনে। উল্কাভিশ্চ প্রদীপ্তাভিশ্বধ্যন্তে পৃতনাতব। বাহনান্যপ্রহৃষ্টানি রুদন্তীব বিশাম্পতে॥ ৩১॥

॥ ২২॥ ২৩॥ ২৪ ॥ ২৫ ২৬ ॥ ২५ ॥ অনাছতঃ অক্ষতঃ ধবিতি ॥ ২৮॥ ২৯ ॥ ভোতিংহি স্থ্য চক্ষু বৃদ্ধি মনাংসি॥ ৩০॥ ৩১॥

^{*} তমিতাদ্যপ্ৰাক্ উত্তৱন্ত ৰূপে দৃষ্ট্ৰ। শগ্ধ শব্দেন মোহিত মিতি পাঠঃ ক্পুস্তকে!

উপাসতে চ সৈন্যানি গৃধাস্তব সমন্ততঃ।
তপ্যসে বাহিনীং দৃষ্ট্যা পার্থবানপ্রপীডিতাম্।
পরাভূতা চ বং গেনা ন ক্শিচদেবাদ্ধ্রিচ্ছতি ॥ ৩২ ॥
বিবর্ণমুখভূয়িষ্ঠাঃ সর্বে যোধা বিচেতসঃ।
গাঃ প্রসংস্থাপ্য তিষ্ঠামো ব্যুঢানীকাঃ প্রহারিণঃ॥ ৩৩ ॥
ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণপর্বাণি উৎপাতিকোনাম ষ্ট্
চত্বারিংশস্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৬॥ ত্

বৈশম্পায়নউবাচ।

অথ তুর্য্যোধনো রাজা সমরে ভীন্নমন্ত্রবীং।
দোণঞ্চ রথশার্দ্দুলং কুপঞ্চ স্থমহাবলম্॥ ১॥
উক্তোহয়মর্থ আচার্য্যো ময়া কর্ণেন চাসকুং।
পুনরেব চ বক্ষ্যামি ন,চ তৃপ্যামি তং ক্রবন্॥ ২॥
পরাজিতৈর্নিকস্তব্যং তৈশ্চ দাদশ বংসরান্।
বনে জনপদেহজ্ঞাতৈরেক হিস পানো হিনঃ॥ ৩॥
তেষা ন ভাবনির্কৃত্তং বর্ত্তে চ ত্রোদশম্।
অক্তাতবাসো বীভংস্কর্থামাভি স্মাগত্ঃ॥ ৪॥

॥ ७२॥ ७७॥

হতি বিরাটপর্ব্যণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ষট্-চত্তারিংশোহধায়ঃ॥ ৪৬॥

অথেতি ॥ ১ ॥ আচার্যোনি জোনং কপঞ্চ প্রতীতিময়া ২য়ুমর্য উক্তঃ পাচান্তরে ২য় মাচার্যো হন্মিন্নর্থে বিষয়ে ময়াকর্নেন চোক্ত ইতি যোজনা ॥ ২॥ ৩॥ ৪॥

অনিরত্তে তু নির্বাদে বীভং স্থাদি চাগতঃ।
পুনদ্বাদশ বর্ষাণি বনৈ বংসান্তি পাওবাং ॥ ৫॥
লোভাদা তে ন জানীয়ুল্মান্ বা মোহ আবিশং।
ইানাভিরিক্তমেতেষাং ভীলো বেদিতুমইতি ॥ ৬॥
অর্থানাস্ত পুনদৈ ধি নিত্য ভবতি সংসাঃ।
অন্যথা চিন্তিতো হুর্থং পুনর্ভবতি সোহন্যথা॥ ৭॥
তেত্তরং মণ্র্যাণানাং মৎস্যসেনাং যুযুৎসতাম্।
যদি বীভৎসুরাযাতস্তদা ক্স্যাপরাধ্মং ॥ ৮॥
ত্রিগর্ভানাং বয়ং হেঁভোর্মান্স্যান্ যোজ্মহাগতাঃ।
মৎস্যানাং বিপ্রকারাণতে বহুনস্মানকীর্ত্রন্॥ ৯॥

॥ ৫॥ হীনেতি নজাতমধিকং বাহজাত বাসকালং জাতু মইতি॥ ৬॥
তত্র উনপক্ষেইন্টমেবসিদ্ধং অধিক পক্ষেপি দোষমাহ অর্থানা মিতি
দৈধে দিপ্রকারত্বে সংশ্রোভবঙি অর্থানাং প্রয়োজনানাং অরু ভাবঃ
যদি তে নিস্তীর্ণ প্রতিজ্ঞা স্তর্হি তেষাং স্বাংশলাভার্থং মাং উপগতানাং
মংপ্রসাদন্ত স্তংপ্রাপ্তির রপ্রাপ্তিরে তি দিধে সংভবতি সংশ্রা ক্রান্তানা
মক্ষাং যুদ্ধার্থ মাগমনং দোষ এবেতি পূর্কবৈরেণ সত্যাপি সংশ্রে
হম্মজিঘাং সরা আগতানাং পরাজ্রে পি সংভাব্যত ইত্যাহান্যথেতি
অন্যাব্যেন যুধ্যতঃ পরাজ্যোপি অধিকৈবন্দির স্ত্রীতভাবঃ॥ ৭॥ উত্তরং
গোত্রহং মার্গমাণানামিদ্রতামম্মাকং অনাদরেষ্ঠী অম্মান্ অনাদৃত্যে
ভার্থঃ বালিস্প্রীবরোগুদ্ধি প্রবিশন্ রামইবার্জনোপি কুরুমংস্য সন্নিপাতে
প্রবিশন্তরাধীস্যাদিত।র্থঃ॥ ৮॥ নম্ব তর্হি মৎস্যা ত্রিগর্ত বিমর্দ্ধে কুরুভির
পিকিমর্থং গস্তব্যমিত্যাশঙ্কাহে ত্রিগর্তানামিত্যাদিনা তে তব সমক্ষ মিতি
েশবঃ॥ ৯॥

^{*} উত্তরমিত্যস্য প্রাক্ স্বার্থেসর্কে বিমুখন্তি বেহপি ধর্মবিদোজনা ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

তেয়াণ ভরাভিভূতানাং তদন্দ্রভিঃ প্রতিশ্রুত্র ।
প্রথমং তৈথ্য হীতব্যং মৎস্যানাং গোলন মহং।
সপ্তম্যামপরাহে বৈ তথা নত্তঃ সমাহিত্য । ১০ ।
অইম্যাং পুনরস্মাভিরাদিত্যস্যোদয়ং প্রতি ।
ইমা গাবো গ্রহীতব্যা গতে মৎস্যে গবাং পদম্ ॥ ১১ ॥
তে বা গাশ্চানিরিয়াতি যদি বা স্থাঃ পরাভিতাঃ ।
অস্মান্ বা হাপুসন্ধায় কুর্য্রেরিংস্যেন সন্ধ্রম্ম ॥ ১২ ॥
অথ বা তানপাহায় মৎস্যে জনপদেঃ সহু ।
সর্বেয়া গোলন্ম সাদ্ধি সংবৃত্যে ভীমর্লিয়া।
তারাতঃ কেবলাং রাজিনস্মান্ মোজ্মহাগতঃ ॥ ১৩ ॥
তেবামের মহাবীর্যাঃ কশ্চিদের পুরঃসরঃ ।
অস্মান্ জেতুমিহায়াতো মৎস্যো বাপি স্বয়ং ভবেৎ ॥ ১৪ ॥
যদ্যেষ রাজা মৎস্যানাণ যদি বীকৎস্করাগতঃ ।
স্বৈর্যোদ্ধ্যমন্মাভিরিতি নঃ সময়ঃ কুতঃ ॥ ১৫॥

তেবাং ত্রিগর্তানামর্থেতং মংগ্রৈণ্ড নহনুদ্ধং প্রতিশ্রুতং ॥ ১০॥ ন কেবলং
মিত্র পক্ষপাত মাত্র মন্মাক মন্তি অপিতু আর্থেণি স্তৌত্যাহ অফম্যা মিতি
তথাচ আর্থং যুধ্যতাং নান্মাক মপরাধোন্তি মংস্যা গরাং ত্রিগর্তৈষ্ঠতানাং পদং মার্গং গতে সতি অন্যাভিরিমাগাবো গৃহীতব্যাঃ ॥ ১১॥
তে ত্রিগর্তাঃ উপসন্ধার বঞ্চারিয় মংস্যেন সং গতং আহং কুর্নঃ সর্বথা
পক্ষত্রেপি অন্যাভিরিদানীং যেদ্বিন্যমেবেত্যর্থঃ ॥ ১২॥ তান্ ত্রিগর্তান্
অপাহার গোভিঃ সহ উপেক্ষ্য কেবলং রাত্রিং রাত্রো অগৃহং আয়াত্র,
ইদানীং প্রাত্তরকান্ যোদ্ধ্যমিত ইতি সম্বন্ধ ॥ ১০॥ পক্ষান্তর মাহ
তেষামিতি॥ ১৪॥ কলিত মাহ মর্কিরিতি মর্কেরশাভি রেকীভূর যে
আগতান্তিঃ সহ যোদ্ধ্যমেবেতার্থ॥ ১৫॥

অথ কন্মাৎ স্থিতা হোতে রথে পুরুবসন্তমা: ।
ভীন্মো দোণঃ রূপশৈকে বিকর্ণো দৌণিরের চ ॥ ১৬ ॥
সভ্রান্তমনসং সর্বের কালে ছন্মিন্ মহারথাঃ ।
নান্যত্র যুদ্ধাচ্ছে যোহন্তি তথাত্মা প্রনিধীয়তাম্ ॥ ১৭ ॥
আঁচ্ছিন্নে গোধনেহন্মাকমপি দেবেন বজ্রিনা ।
যমেন বাপি সংগ্রামে কো হান্তিনপুরং ব্রজেৎ ॥ ১৮ ॥
শরৈরেভিং প্রণুন্নাং ভগ্নানং গহনে বনে ।
কো হি জীবেৎ পদাতীনাং ভবেদশেষু সংশরং ॥ ১৯ ॥
ছর্মোধন বচঃ শ্রুত্বারাধেরন্ত্রুবীঘ্রচং ।
* আচার্যাং পৃষ্ঠতঃ রুত্বা তথা নীতির্বিধীয়তাম্ ॥ ২০ ॥
জানাতি হি মতং তেষামত্রানেষ্তীহ নং ।
অর্জ্বনে চাস্য সংপ্রীতিমধিকামুপলক্ষরে ॥ ২১ ॥

॥ ১৬ ॥ আত্মাচিত্তং প্রণিধীয়তাং সাবধানং ক্রিয়তাং ॥ ১৭ ॥ লব্ধদা গোধনদা নাশে অস্মাভিঃ স্বপুরং ন প্রবেষ্টবামিতি প্রতি জানীতে আছিল্ল ইতি পদাত্যস্ত্বস্থিন যুদ্ধনং ক্ষাইন্তা বাসাস্থ কদাচি জ্ঞীবিষ্যান্তা পীত্বাহশবৈরিতি প্রাচাৎ ব্যাখ্যাবক্তবুরপকর্ষস্চিকা বস্তুত্ত আছিল্লে ২পহতে গোধনে নিমিত্তে দেবেনবাদংহদ প্রামে উপস্থিতে সতি অস্মাকং ভীম্মাদীনাং মধ্যেই ইতি প্রসিদ্ধঃ কোন্তি যো ন পুরং ব্রজেৎ অপিত্ব প্রত্যেকং সর্বৈএবস্থং গ্রুং দেবানপি জেতুং গাশ্চাচ্ছেত্তুং সমর্পাঃ আ ইত্যর্থঃ ॥ ১৮ ॥ শবৈরিতি এভিরিতি স্বকীয় শর প্রদর্শনং ॥ ১৯ ॥ আচার্যাং রণান্ডীতং পৃষ্ঠতঃ ক্রেত্বা সেনা মুখাদপসার্য্য অস্মিন্ ভীতে সর্বেপি ভীতাঃ স্থারিতি, ভাবঃ ॥ ২০ । তেবাং পাত্যবানাং মতং দংমতং অস্মত্রেজো বধকরণং জানাতীতি ॥ ২১ ॥

আচার্যামতাসা প্রাক্ ত্র্যোধনেতার্দ্ধানঃ ক পুত্তকে নান্তি।

তথা হি দৃষ্ট্বা বাভংকুমুপায়ান্ত প্রশংস্তি।
যথা সেনা ন ভজ্যেত তথা নীতির্কিধীয়তাম্। ২২ ॥
হেবিতং স্পশ্নানে জোনে সর্বাং বিঘট্টিতম্।
অদেশিকা মহারণ্যে গ্রীয়ে শক্তবশ্ব গতা।
যথা ন বিভ্রমেৎ সেনা তথা নীতির্বিধীয়তাম। ২০॥
ইফাহি পাণ্ডবানিত্য মাচার্য্যমা বিশেষতঃ।
আসেয়ন পরার্থাশ্চ কথ্যতেক্সম্বরং তথা। ২৪।
* অশ্বানাং হেবিতং ক্রম্বা কং প্রশাব্দা পরো ভবেৎ।
সানা বাপি বহুতো বা সদা হেবিতি বাজিনঃ ॥ ২৫॥
সদা চ বায়বো বান্তি নিত্যং বর্ষতি বাসবঃ।
ভনবিজ্যেশ্চ নির্ঘোষ ক্রয়তে শক্তশন্তথা। ২৬॥
কিমত্র কার্যাং পার্থক্য কথ্যা স প্রশাস্তাত।
আন্ত্র কামাং দ্বেঘান্বা রোষান্বাক্ষান্ত কেবলাৎ। ২৭॥

॥ ২২ ॥ জোণে ভীতে সতি সর্বং বিষণ্ডিতং বিচলিতং ভবেৎ সামর্থ্য মিতি শেবঃ প্রীম্মে মর্মানালে বসন্তে ইত্যর্থঃ হতঃ বন্ধানালয়রং যুদ্ধারন্তন্য লার্দি দৃষ্টবাৎ অদেশিকাঃ অদেশাৎ চ্যুতাঃ ব্যুহতঙ্গোমাভূদিতার্থঃ ॥ ২৩ ॥ ইফাইীতি পাশুবাঃ অপরার্থাঃ নান্তি পরার্থো ফ্লোণ তেহপরার্থাঃ আর্থা পেরাঃ আন্যন্ জোনং বংসমীপে স্থাপিতবতঃ পরকীয়ো যমিতার্থঃ তত্ত্ব হেছু মাছ স্বয়ং জোণেন তথাকথাতে মন্ত্বা পাশুবীয়ন্ত্বং স্বস্য প্রকাশতে ওথেতার্থঃ ॥ ২৪ ॥ এতদেব বির্ণোতি অস্থানামিত্যাদিনা ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ পার্থানার্ম্নিনা গ্লামন্ হত্ত্ব কিং,কার্যাং কিম্বাং বাদোনেন প্রশানতে তত্ত্বহেছুঃ অন্যত্ত পার্থ গ্রেরার কামাদল্পি লায়াং অস্থাস্থবা দ্বেষাৎ জিঘাং সাতঃ রোবাত্ত্বলুলাদভিজ্বলনাং ॥ ২৭ ॥

^{*} অখানামিত্যস্য প্ৰাক্ ইফ্টাহি পাণ্ডবানিত্য মিত্যেকরোকঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

আচার্য্যা বৈ কারুনিকাঃ প্রাক্তাশ্চোপারদর্শিনঃ ।
নৈতে মহাভয়ে প্রাপ্তে সংপ্রক্তবাং কদাচন ॥ ২৮ ॥
প্রাসাদের বিচিত্রের গোষ্ঠীরূপবনের চ।
কথা বিচিত্রাঃ কুর্বাণাঃ পণ্ডিতান্তর শোভনাঃ ॥ ২৯ ॥
বহুন্যাশ্চর্যারপাণি কুর্বিন্তো জনসংসদি।
ইজ্যান্তে চোপসন্ধানে পণ্ডিতান্তর শোভনাঃ ॥ ৩০ ॥
পরেষাং বিবরজ্ঞানে সন্মুখ্চরিতের চ।
হস্ত্যশ্বর্থচর্যান্ত খরোষ্ট্রাজাবিকর্মণি ॥ ৩১ ॥
পোধনের প্রতোলীর বর্ষারমুখের চ।
অন্নসংক্তারদোষের পণ্ডিত্রাং ন্তর শোভনাঃ ॥ ৩২ ॥
পণ্ডিত্রান পৃষ্ঠতঃ কুত্রা পরেষাং গুল্বাদিনঃ ।
বিধীয়তাং তথা নীতির্যথা বধ্যেত বৈ পরঃ ॥ ৩৩ ॥
গা বশ্চব প্রতিষ্ঠাপ্য সেনাং বৃহ্য সমন্তঃ ।
আরক্ষাশ্চ বিধীয়ত্তাং যত্র যোৎস্যাম্বাহ্ন পরান্ ॥ ৩৪ ॥
ইতি বিরাটপর্বনি গোহরণপর্বানি তুর্য্যাধনবাক্যে

ত্রোণ মুপহসতি আচার্টা ইত্যাদিনা কাফণিকা ইত্যানেন যুদ্ধ ধর্মান ভিজ্ঞত্ব মুক্তং অপাপং অহিংসা তদ্দর্শিনঃ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ আন্চর্যারূপানি বিনোদাদীনি ইজান্ত্রে যজ্ঞায়ুধে কপালাদো তেষাং উপসন্ধানে আসাদন প্রেষাণ ইত্যান্ত্র জ্ঞানাং যাজিকানাং বিবরজ্ঞানে ডিছে দর্শনে এটা মহ্বাচরিতের স্থানাচমন ভোজনাদির হস্তাহ্যরথচর্যান্ত্র হস্ত্যাদিনী বাহনেনচ্যাগমনং হালিনাং কর্মান্ চিকিৎসাদে ॥ ৩১ ॥ প্রতালীমু গৃহবাহাবয়বের প্রদীয়নান বলিদানাদো ইতার্থঃ সংস্কারো বৈশ্বদেবাদিন নাদেষঃ কেশ ক্রীট পাতাদিনা ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ গাঃব ইতিছেদঃ গাবন্ধ সংপ্রেষ্টি পাঠান্তরে গাব ইত্যেকং পদং আরক্ষাঃ রক্ষকাঃ ॥ ৩৪ ॥ ইতি বিহাট পর্যাণ নৈল কণ্ডারে ভারত ভাব দীপে সপ্ত চহা-

রিংশোহধার ॥ ৪৭॥

সপ্তচত্ত্বারিংশভ্রমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৭॥

কর্ণ উবাচ।

সৰ্বানাযুষ্তো ভীতান্ সংত্ৰস্তানিব লুক্ষয়ে। অযুদ্ধমনমশৈচৰ সৰ্ববাপ শৈচবানবস্থিত নি॥ >॥ যদ্যের রাজা মৎস্থানাৎ যদি বীভৎস্থুরাগতঃ। অহমাবারয়িষামি বেলেব মকরালয়ম্॥ ২॥ মম চাপপ্রযুক্তানাং শরাণাং নতপর্বণাম। নার্তির্গচ্চতামন্তি * সর্পাণামিব সূর্পতাম। ৩॥ রুক্মপুখ্যাঃ স্থতীক্ষাত্র! মুক্তা হস্তবতা ময়া। ছাদয়ন্ত শরাঃ পার্থং শলভা ইব পাদপর্মী 🗷 ॥ শরাণান পুস্থাসকানান মৌর্ব্যাভিহতয়া দৃত্য । জ্ঞারতাং তলয়েঃ শব্দো ভের্ম্যোরাইতয়োরিব। ৫।। । সমাহিতো হি বীভৎস্ক্রর্মাণ্যটো চ পঞ্চ। জাতৃমেহশ্চ যুদ্ধেহিসান মন্ত্রি স∽প্রাহরিষ্যতি॥৬॥ পাত্রীভূতশ্চ কৌন্তেরো ব্লান্ধণো গুণবানিব! শরৌঘান প্রতিগৃহ্ছাতু ময়া মুক্তান্ সহস্রশঃ॥ १॥ এষ চৈব মহেম্বাসন্ত্রিমু লোকেমু বিশ্রুতঃ। অহঞাপি নর শ্রেষ্ঠাদর্জ্জুদান্নবের: ক্রচিৎ॥৮॥ इंडरमञ्च नियु देङः काक्षरेनर्गृथुवाक्षिरेङः। দৃশ্যতামদ্য বৈ ব্যোম খদ্যোতেরিব সংর্তম্।। ৯॥

দকানিতি সকান্তীখাদীন্ অনবস্থিতান্চঞ্চলান্ ॥ ১ ॥ ২ ॥ অর্ত্তিঃ ।
লক্ষ্যচ্যতির্ন ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ পৃংখ সন্দোনাং সক্ত পুং খানাং ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥
॥ ৮ ॥ গাদ্বাজিতিঃ গৃধুপক্ষিঃ বাজঃ বেগঃ শব্দংপক্ষবাসংজাতো ।
থেষাং তৈঃ বাজোনিঃ অন পক্ষাঃ বেগেপুমানিতি মেনিনী ॥ ৯ ॥ ।

তিহাং

^{*} অস্তীতাত্তেম মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

অদ্যাহমূণমক্ষয়ং পুরা বাচা প্রতিশ্রুতম্। ধার্ত্তরাষ্ট্রায় দাস্যামি নিহত্য সমরেহর্জ্জুনম্ ॥ ১০॥ « অন্তরাচ্ছিল্যানানা পুঞ্জানা ব্যতিশীর্যাতায়। শলভান।মিবাকাশে প্রচারঃ সংপ্রদৃষ্ঠতামু॥ ১১॥ ইন্দ্রাশনিসমস্পর্শং মহেন্দ্রসমতেজসম। অর্দ্ধবিষ্যাম্যহং পার্থমূল্কাভিরিব কুঞ্জরমূ॥ ১২॥ রধাদতিরথং 'শূরং সর্বাশস্ত্রভূতাম্বর্। বিবশং পার্থমাদাত্তে গরুত্মান্বি প্রগন্ ॥ ১৩॥ তমগ্রিমিব তুর্ধর্মদিশক্তিশরেক্সনম্। পাওবায়িমহন দীপ্তং প্রদহন্দমিবাহিত্য ॥ ১৪॥ অশ্ববেগপুরোবাতো রথৌঘন্তদয়িত্রুমান্। শরধারো মহামেঘঃ শময়িষ্যামি পাওবম্॥ ১৫॥ মৎকামু কবিনিমু ক্তাঃ পার্ধমাশীবিষোপমাঃ। শর্শ: সমভিসর্পম্ভ বল্মীকমিব পর্গা:-॥ ১৬ । স্থতেজনৈ রুক্সপুৰো † সুপীতৈর্নতপর্ব্বভিঃ। আচিত পশ্য কৌস্তেয়ং কর্ণিকারৈরিবাচলম্॥ ১৭॥ জামদগ্ন্যান্ময়া হস্ত্রং সংপ্রাপ্তমৃদিদত্তমাৎ। ততুপাশ্রিত্য বীর্যাঞ্চ যুধ্যেয়মপি বাসবম্। ১৮॥

আক্ষাং ইতরৈঃ ক্ষপায়িতু মশকাং ॥ ১০ ॥ পুংখানাং পুংখবতাং শরানাং
। ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ নতপর্বভিঃ নমীকৃত প্রস্থিদেশৈঃ "
॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

[্]ৰী, * অন্তরান্দিন্দানানামিতাদা প্রশৃক্ মৎকার্মাক বিমুক্তানাং শরানাং নতপর্কনাং। কঃসহেতাগ্রতঃ স্থাতু মিপি সার্কোঃ স্থরাস্থরৈ রিত্যেকঃ শ্লোকঃ ক পুত্তক্ষা পাঠঃ।

[†] স্বলীতৈরিত্যত্র স্থাধেতিরিতি পাঠঃ খ ঘ প্রক্রেরাঃ।

ধুজাগ্রে বানরন্তিষ্ঠন্ ভল্লেন নিহতো ময়া।
আন্যৈব পততাং ভূমৌ বিনদন্ ভৈরবান রবান্ ॥ ১৯॥
শ্রোম্মাভিপঁলানাং ভূতানাং ধুজবাসিনান্ ।
দিশঃ প্রভিষ্ঠমানানাম্স্ত শব্দো দিবক্সমঃ॥ ২০॥
আদ্য তুর্যোধনসাহং শলাং ক্স্ দি চিরস্থিতম্ ।
সমূলমুদ্ধরিধ্যামি বীভৎস্কে পাত্মন্ রথাৎ॥ ২১॥
হতাশ্বন বিরথন পার্থন পৌরুষে পর্যাবস্থিতম্ ।
নিশ্বসন্তং যথা নাগমদ্য পশ্রুষ্ত কৌরবাঃ॥ ২২॥
কামং গচ্ছন্ত কুরবো ধনমাদার কেবলম্ । ৯
রথেমু বাপি তিষ্ঠন্তো যুদ্ধং পশ্রুষ্ত মামকম্॥ ২৩॥
ইতি বিরাটপর্কানি গোহরন্পর্কানি উত্তর গোগ্রহে কর্নবিক্থনে অফ্টব্যারিন্শিন্তমোহ্ধ্যায়ঃ॥ ৪৮॥

•রূপ উবাচ। . `

ন দৈব তব রাধের যুদ্ধে ক্রুরতর! মতিঃ।

* অর্থানাং প্রকৃতিং বেৎসি নানুবন্ধমবেক্ষসে। ১॥

১৯॥বিপন্নানাং ভংশিতানাং॥২০॥২১ ২২ ৮ ধনং গোধনং॥২০॥

ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে অফ

চ্যারিংশোষ্ণায়॥ ১৮॥

অর্থানাথ পাবাদীনাথ প্রস্কৃতিং প্রাপ্তিকারণং অত্যন্ধং প্রাপ্তের বা ফলং নাছদ্যতং অর্থানামর্থানাং পরিক্রণং নামে স্থকরত্বং চান্তীতাভি সন্ধিঃ ॥ ১॥ ,

^{*} অর্থানামি তাত্ত নার্থানা মিতি পাঠঃ খ প্রস্তুকে।

শ মারা হি বহবং সন্তি শাস্ত্রান্যাশ্রিত্য চিন্তিতাঃ।
তেষাং যুদ্ধন্ত পাপিঠং বেদয়তি পুরাবিদঃ॥ ২ ॥
দেশকালেন সংযুক্তং যুদ্ধান বিজয়দন ভবেং i
হীনকালন তদেবেহ ফলদনন ভবতুতে i
দেশে কালে চ বিক্রান্তং কল্যাণায় বিধীয়তে ॥ ৩ ॥
আমুকুল্যেন কার্য্যানামন্তরং সংবিধীয়তে।
ভারং হি রঞ্চারম্য ন ব্যবস্যন্তি পণ্ডিতাঃ ॥ ৪ ॥

মায়া ইতি যেষাং শর্কীটাদীনাং মায়াঃ কপটানি বহৰঃ বহনঃ সন্তি তেযাং দুষ্ট্যা যুদ্ধং পাণিষ্ঠং নাশকরত্বাং নুহীদানি মর্জুনো দ্যুতেনের মায়া মাত্রেণ জেতুং শক্ষ্য ইতি ভাবঃপাচান্তরেণ ঝনীতরঃ সামাদ্যাঃ তেবাৎ মধ্যে যুদ্ধং পাপিষ্ঠং। ২।। দেশ ইতি ইদানীং এ'বেগ ন যুদ্ধকালঃ প্রান্ত্যা জলাভাবেন চ সদ্যোবাহনানাং নাশাপত্তঃ নাপিদেশো গিরিত্রগাদ্যা শ্রিতোন্তীতি ভাবঃ हेनर युक्तर कलर न लंडरंड कलर न लंडरंडर श्वायु (न नकालावस् কুলাবের বর্ত্তে ইতি ভাবঃ বিক্রান্তং পরাক্রমঃ ॥৩॥ দেশাদেরাত্র কুলোন হেতুনা কার্যানাথ যুদ্ধাদীনাথ অন্তর্য তাদর্থ্য ফলবন্ত্রমতিয়াবৎ সং বিধীয়তে সম্যক্ ক্রিরতে অন্তর মবকাশাবধি পরিধানান্তর্দ্ধিভেদ তাদর্থ্যে ইতি মেদিনী মন্ত্রাণা মিতি পাঠে দেশাদ্যাত্র কূল্যেন কার্যাং বিচার্য্য মিত্যর্থঃ ভত্রাভাণক মাহ ভার মিতি যথা রথকারেণ দিব্যোয়ং ময়া নির্মিতো রথঃ স্দৃঢ়াঙ্গোইনেন স্থ[°]দেবানপি ক্র্মণা জেষ্যদী স্থাক্তে তদ্বচ্চিত্যক্তে তদ্ব-, চসি ভারং দথা দেশকালাত্ন কুল্যমনপেকৈয়ব পণ্ডিতা ন ব্যবসান্তি যোজ মিতি শেষঃ এবং ব্রচসি ভারং দ্বা দেশাদাত্র কূল্য মনবেক্ষ্য কথমসাভি ্রোদ্ধব্যং তবতু বচনং রথকার বচন বদর্থ শুন্য মিতি ভাবঃ সর্বানাযুম্বতো-' ভীতান্ সন্ত্র স্তানি বলক্ষয় ইতি যৎকর্ণেনোক্তং তদ্যৈ তত্ত্বরং॥ ৪॥

^{*} মায়াহী তাত্ত নয়াহীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

পরিচিন্তা ত পার্থেন সন্নিপাতো ন নঃ ক্ষাঃ। এক: ক্রন " ভারক্ষদেক শালিমতর্পর্থ । ৫। একশ্চ পঞ্চ বর্যাণি ব্রহ্মচর্য্যমধারয়ে । একঃ স্বভদ্যাবোপ্য বৈরথে ক্ষমাহ্বরহা ৬॥ একঃ কিরাতরপেণ স্থিত পরুদ্রময়োধরং। অস্মিয়েব বনে পার্থে। হ্লতাং রুফায়বাজয়ৎ ॥ ৭॥ একশ্চ পঞ্জ বর্ষাণি শক্রাদ্র্রোণ্যশিক্ত । একঃসোহয়মরীনু জিত্ব। কুরুণামকরোদ্যশং॥৮॥ (अरका शक्तर्वत । जान कि जारमन भतिनम् मर्ग । " বিজিগ্যে তর্মা সংখ্যে সেনা ছাস্য স্বুছ রাম্। ১। তথা নিবাতকবচাঃ কালকঞ্জাশ্চ দানবাঃ। দৈবতৈরপ্যবধ্যাত্তে একেন যুধি পাতিভাঃ॥ ১০॥ ওকেন হি ত্বরা কর্ণ কিলামেহ কুলুপ পুরা। একাকিন। যথা তেন ভুমিপালা বশীক্ষতাঃ॥ >>॥ ইন্দ্রোহপি হিন পার্থেন সংগ্রামে যোদ্ধ মইতি। যন্তেনাশংসশে যুদ্ধ † কর্ত্তমন্তেজসা॥ ১২॥ णा-गैविषमा कुकमा পाणिमूनामा निक्नम्। অবসূষ্য প্রদেশিন্য। দংখ্রামাদাভূমিচ্ছিদি 🕯 ১৩ ॥ অথবা কুঞ্জর সভামেক এব চরন্বনে। অনকুশঃ সমারুছ নগরৎ গন্তমিচ্ছাসি॥ ১৪॥

বিচার ফল মাহ পরিচিন্ত্যেতি ॥ ৫॥ ৬॥ ৭ ୩ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ প্রেদেশিনাতের্জন্য ॥ ১০ ॥ ১৪॥

^{*} অভ্যরক্ষদিতাত্ত অভ্যাগছদিতি পাঠঃ খ প্রস্তকে। কু কর্তুমুত্তমতেজ্যে তাত্ত কর্তুব্যং তস্যভেষজ মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

স্মিদ্ধ পাবকং বাপি মৃত্যেদেবিশাছ্তম্। ঘূতাক্ত শীরবাসান্ত্রং মধ্যেনোৎসর্কু মচ্চসি॥ ১৫॥ णाञ्चानः वः ममुम्रा करके वस्तु। महारिनामः। সমূদ্র প্রতরেদে। জ্যাং তত্র কিল্লাম পৌরুষন্ ॥ ১৬ ॥ রুত।স্ত্রমকুতাস্ত্রো বৈ বলবন্তং স্বত্নুর্বলঃ। তাদৃশশ কৰ্ম: পাৰ্থণ যোদ্ধ্মিছেৎ স দুৰ্ম্মতিং ॥ ১৭ ॥ অন্মাভিরেষ নিক্কতো ব্র্ধাণীছ ত্রয়োদশ। সি হঃ পাশবিমুক্তো বা ন নঃ শেষং করিষ্যতি ॥ ১৮ ॥ একাত্তে পার্থনাদীনং কুপেৎগ্নিমব সংর্তম্। অজ্ঞানাদভাবক্ষন্য প্রাপ্তাঃ স্মো ভয়মুক্তমম্॥ ১৯॥ সহ যুধ্যামহে পার্থমাগত ু যুদ্ধতুর্মদম ! সৈন্যান্তিষ্ঠস্ত সল্লা ব্যুতানীকাঃ প্রহারিণঃ॥ ২০॥ क्रिंग दूर्याप्रता जीका जवान् क्रोनिस्था वस्रा मर्द्य युधामाइ पार्थः कर्गमा नाइनः क्रथाः॥ २०॥ বয়ং ব্যবস্থিত পার্থ বজ্ঞপাণি মিবোদাতম্। ये थाः क्रिवृत्धाम जिल्हेम यनि मः हजाः ॥ २२ ॥

মধ্যের মধাত উৎসতৃথ উৎসপিতৃং ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১১ ॥ ২০ ॥

॥ ২১ ॥ মতৃত্বং কামং গাছতু ক্রবোধনমাদার কেবলং রথের বাপিতিঠতোযুদ্ধং পশান্তু মামক মিতি তত্তাহবড় থা ইতি সংহতাঃ বড়পি একীভূয়তেনৈকেন বোদ্ধার কথাং চিছ্লোগ্যোন কেকেকণ ইতিভাবঃ ॥ ২২ ॥

॥२०॥

বুটানীকানি সৈন্যানি যন্তাঃ প্রমধন্ধিন্ঃ।
যুধ্যামহৈহজুনং সংখ্যে দানবা বাস্বং যথা ॥ ২৩ ॥
ইতি বিরাটপ্রাণি গোহরণপ্রাণি উত্তর গোগ্রহে রূপবাক্যে
একোন পঞ্চাশন্তমেহধ্যায়ঃ ॥ ৪৯ ॥

অশ্বথামোৰাচ ৷

ন চ তাৰ জ্জিতা গাবো ন চ সীমান্তর পতা: ।
ন হান্তিনপুর পথাপ্তান্ত কর্ন বিকপ্রসে ॥ ১॥
সংগ্রামান স্বহুন জিত্বা লঁকা চ বিপুলং খুন্ম।
বিজিতা চ পরা শি ভূমিং নাছ: কিঞ্চন পৌরুষম্ ॥ ২॥
দহত্যগ্লিরবাকান্ত ভূফী পভাতি দিবাকর: ।
তূফীং ধারয়তে লোকান্ বস্থা সচরাচরান্॥ ৩॥
চাতুর্বির্নাস্য কর্মানি বিহিতানি স্বয়স্থা।
ধনং মৈরধিগন্তবাং মচ্চ কুর্বিন্ ন চ্বাতি॥ ৪॥
অধীত্য ব্যাক্ষণো বেদান্থাজয়েত যজেত চ।
ক্ষিত্রিয়ো ধনুরাপ্রিত্য যজে চৈবে ন যাজয়েৎ॥ ৫॥

প্ৰতি বিৱাট পৰ্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভাৱত ভাব দীপে একোন পঞ্চাশভমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪১ ॥

নালেত শ্রাঃ পরবিতং জিরা পরদীমামুলজ্যা অ নগরং প্রতিনীরাপি ন শাবতে বস্তু এতেবা মেক তম মপাক্রা কথদে অতোনিলজ্জা দীতিভাবঃ ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ মহুজুং নৈতে মহাভয়ে প্রাপ্তে দংপ্রউগ্যা ইত্যাদিনা বাহ্বানাং ভোজনাদাবেব কৌশলং নগুদ্ধে ইতি তত্ত তবাপি বৈশ্যভাষা মুদ্ধে সাম্প্যমন্তীতি দশ্যিবান্ বর্ণনিং কর্মাণ বিভজতে চাতুর্বন্ত্রী স্বোত্যাদিনা। ৪॥ ৫॥
"

* ভূমি মিতাত্ত্র সেনা মিতি পাঠঃ খ গুলুকে।

বৈশ্যোহ্ধিগনা নিজ্ঞানি ব্রহ্মকর্ম্মাণি কারয়েৎ। শূত্রঃ শুশ্রাবণং কুর্য্যাক্রিয়ু বর্ণেষ্টু সর্বাদা। বঞ্চনাযোগবিধিভিক্ষৈতসীং বুজিমাঞ্জিতাঃ। ৬॥ वर्त्त्राना यथा भाखः अला हालि मरीनिमान्। সংকৃক্তি মহাভাগা গুকন্ স্বিগুণানপি॥ ৭॥ প্রাপ্য দুর্ভিন কো রাজাং ক্ষল্রিয়োস্তোষ্ট্রমইডি। তথা নুশংসৰপোহয় পাৰ্ত্তরাষ্ট্রশ্চ নিঘুণিঃ॥ ৮॥ তথাভিগম্য বিস্তানি কো বিকথেবিচক্ষণঃ। নিক্লত্যা বঞ্চনাযৌলৈশ্চরন্ বৈতংগিকো যথা ॥ ৯ ॥ কতমং দৈরেখং যুদ্ধং হতা লৈ ধির্দ্ধনপ্রয়ম্। নকুলং সহদেবঞ্ধন এবৰাং ব্যাহ্য হতন্। ১০ ॥ যুধিষ্টিরো জিতঃ কন্মিন্ ভীসক্ষ বালনাম্বরঃ। ইক্রপ্রস্থ ব্য়া কলিন্ সংপ্রামে নিভিতং পুরা। ১১।। তথৈব কতমদ্দ,দাং যশ্মিন রুফা ত্রা জিতা। একবস্ত্রা সভাবে নীতা চুফ্টকর্ম্বন্ রজম্বলা॥ ১২॥ मृलरभवा - भइए कुछ - मातार्थी हन्द्रनः एथा। কর্ম্ম কার্য়েথাঃ স্থত * ভত্র কিং বিদ্যুরে!২এবীৎ॥১৩॥

চিত্তান্যধিগ্মা ক্র্যাদিনা ইতি শেহঃ এক্ষক্ষানি আধানাদীনি কার্ছেই স্বার্থেনিচ্ ॥ ৬ ॥ বর্তমানা ইতি নাছেন পৃথিবীং জিহাপি সভা বিগুণা-নৈপি গুরুব্ সংক্ষান্ত হতুজানামেন পাগুবং জিহা সাধুনপি গুরুব্ নিন্দুসীভিভাবঃ ॥ ৭ ॥ এতদেবছে প্রপোতি নিয়ণো নির্লজ্জঃ ॥ ৮ ॥ নিক্তাণ শাচোন বঞ্চন যোগৈঃ ছলেপাছঃ বীতথ্যো বন্ধনোপ য়ন্তেন জীবতীতি বৈতংগিকো ব্যাধঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ইত্রপ্রস্থাত হস্তাঃ পাগুবাঃ॥ ১১ ॥ ১২ মূলামতি এবাং পাগুবানাং মূলং মহৎ মহজ্জ বার্চাং এক্ষ্যাক্ষয়েখাং বেদ্বাকাং প্রাক্তাশ্চ ব্যোক্তং আদিপ্রকাশি

^{*} স্ভেভাত্র শূরেভি পাঠঃ ক পুস্তকে।

মূলং কুষ্ণোব্ৰহ্ম বাহ্মণাশ্তেতি তদেতদ্বেদ বিৰুদ্ধ মনুতং দূয়তং কুৰ্বত ধার্ত্তরাফ্রেণ ধর্মসা মূলং কৃতং চ্ছিলং ইদানীষ্ঠ ব্রাহ্মগান অবজানতা ত্ব-য়াপি তদেবকৃতং অতোধৰ্মনাশাং ভবতাং নাশেংহবশাং ভাৰীতাৰ্থঃ मृत्र कीमृगः हम्मनः यथा गासः नीउनः नजूमाइकः काधक्राः उथाह ভূর্ব্যোধনঃ কেবলং ক্রোধময় ইত্যুক্তং প্রাক্ ভূর্ব্যোধনোমভাময়ো মহা-ক্রম ইতি সারাধী কর্মকারয়িখ্য ইতিব্যবহিত্তেন সম্বন্ধঃ সারাধী ধন_ র্থী ধনেচ সার্মিতি মেদিনী পাণ্ডবান্ কর্মকারানিব ক্রতবানসি যত্ত-কালে তত্ৰ তদা বিহুরঃ কিমব্রবীং ক্ষয় মূলং দূর্ভমিতি তদিদানীং শরেতি ভাবঃ হতেতি সম্বোধয়ত্বকতিয়হা দদ্য মুদ্ধেষ্টকৌশনং ব্যনক্তি নবাদিতোবৈ দৈবং ক্ষত্তমিতি শ্রুতের্দিব্যাৎ ক্ষত্তাং জাত্স্যাস্য কথমক্ষত্ৰহং যুদ্ধা কৌশল ঞেতি বিহুষাপাৰ্য খামা বক্তুং যুক্তমিতি চেং-শূলু সর্বেষাং হি বর্ণানাং দিবিধং জুজামোনিজং সংক্ষারজঞ্চ তত্ত্ব যএব যোনিঃ স এব সংস্কর্তাচেং স একজোনপ্রকৃতিত প্রাবতে কর্ণ্যু দৈবক্ষত্র জোপ্যক্রিয়েণ স্তেন সংস্ত ইতি দ্বিজাতহাৎ ক্রিয়ন্ত্রেন প্রহন্ত্র্ কুশলোপি স্তত্বন পরকীয় প্রহারং সোচুমক্ত ইতি যুদ্ধাৎ পলায়তে ইত্যাশয়ে নৈনং সূর্য। পুত্রং জীনন্নপি স্থতেতি সম্বোধয়তি তথাচ মন্ত্রবর্ণঃ সহস্মনো অভিমাতি মশৈকজন্ হণন্ প্রহণন্ প্রেহিশত্রু উপ্রে পাজোনখাৰকংধ্বশীবশং নয় সএকজয় মিতিঅস্যাৰ্থঃ তাপদো মহা ঋষিঃ সৎকেপ্সা ধিষ্ঠাতীং দেবতাং মহাসং জাং প্রার্থয়তে তয়া মন্যো ইতি স্থক্তে তৃতীয়াইয়মুক্ যন্তেমন্য বিতি মধ্যৎ দিন ইতি মাধ্যৎ দিনে সবনেশ্যে-নয়াগে শক্রমারনার্থে ২সা স্কুস্য বিনিয়োগ: হেমন্যো অশ্যে শর্ণাগ তায় রাজ্যায় বা এতদ্রক্ষণার্থ মিতি যাবং অভিমাতিং দর্মতঃ পীড়াং পিএাদিভিঃ সহ বিরোধং জ্ঞাতি বধুদে। যং বা সহস্ব ক্ষমন্ত কথং তেষাৎ রক্ষাং স্থাদত আহ কজন্রোগং প্রাপ্রন্ম্ণন্ গ্রিমাণে। জরাতান্ত ইতার্থ: প্রমূ অতারং আসর মৃত্রী শত্ন প্রেহি প্রকর্ষণ জেতুং গাছে অত্রশরীরগতং রোগাদি তদভি মানিনি চেত্সিউপচর্য্যতে নম্বশক্তেন রোগাদ্যাক্রান্তেন ময়া কথং শত্রণো জেতুং শক্যা ইত্যাশক্ষাহ উত্রমিতি উত্তাং পরমর্কনক্ষণ তে তবপাজন্তেজোনহু নিশ্চিতং আৰুক্ধে আরোক্ষ্

ষণাশক্তি মনুব্যাণাং শমমালক্ষয়ামহে।
আন্যেষাকৈব ভূতানাম্পি কীটপিপীলিকৈ:।
দৌপদ্যান্ত্ৰ প্রিক্লেশ্ব ন ক্ষন্তং পাশুবোহ্ছতি॥ >৪ ॥
ক্ষয়ায় ধার্ত্তরাষ্ট্রাণাং প্রাত্তভূ তাে ধনপ্রয়:।
ত্ব পুনঃ পশুতোে ভূতা বাচং বক্ত্রমিছেছসি॥ ১৫ ॥
বৈরান্তকরণাে জিফুর্ন নং শেষং করিষ্যতি॥ ১৬ ॥
বৈব দেবাল গল্পাক্রান্তরান চু রাক্ষসান্।
ভরাদিহ ন যুধ্যেত কুন্তীপুল্রো ধন্প্রয়ঃ॥ ১৭ ॥
যং যমেষাহভিসংকুন্ধঃ সংগ্রামে নিপতিষ্যতি।
বৃক্ষং * গরুভ্বেগাে বা বিনুহ্ত্য তমেষ্যতি॥ ১৮ ॥

শতুন্ সমর্থ মন্তি দৃষ্ট সংক্রপায়হি'তেজঃ পরান্ অবশ্যং নাশরে দেবে তার্থঃ এতদেবাহ বলী সর্ব্বমন্য বশেস্তাতি বলী সংক্রপা দার্ট্যাদেব ছগা-স্তাদিভিঃ সমুদ্র পানাদীনাপি কুতানি অতএব সর্ব্বং জগাৎ দ্বমেব বশং নয়নে বশিহে হেছুঃ হেএকজ একমাজ্জাত নুষ্কেমেব মনঃ সংক্রপাসো
পাদান মিতি ব্যর্থং বিশেষণ মিতি চেরকুগুবাারভার্থনাৎ সন্থনান জা-তোহনোন চ আত্মায় বৃদ্ধা সংস্কৃত ইতি নদৃঢ় সংক্রপো ভবতি নচ পরাং আত্মং শর্রোতি বিজন্মং তথাচ লোকে আভাগকঃ যসাদ্বেচনে স বিশিত্বক ইতি বজারো ভবন্তি অত, একজেতার্থ ব্যুচনং দক্তকীতাদৌছু শাস্ত্রীয়ং একসৈয়ে স্বত্বমন্তা অপি তে কুতো ন শাম্যন্তি কুতোবা পর সাহায়ার্থ স্বান্ত্র হৈছে মুজাতা অপি তে কুতো ন শাম্যন্তি কুতোবা পর সাহায়ার্থ স্বান্ত্র পেকুতং শমং লক্ষ্যামহে ইতি যোজ্যং বালিরাময়ো বি-হর্মা ভাবেপি রামেণ বালীহত ইতি সোহপরাধী পাণ্ডবান্তু মুত্বাভিরপ ক্রতাইতি যুত্বান্ জিষাংসন্তো না পরাধ্যন্তীতিভাবঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ নিবন্ত্রের অপিতু যুদ্ধাতিবেশ্তার্থঃ ॥ ১৭ ॥ এব্যতি গমিয়াতি॥ ১৮ ॥

^{*} গৰুড় বেগা ইভাত্ৰ গৰুত্বান্ বেগেনেভি পাঠঃ থ পুশুকে !

স্বতো বিশিন্তং বীর্যোগ ধনুষ্যমররাট্সমন্।
বাস্থদেবসমং যুদ্ধে তং পার্থন কো ন পুজরেং॥ ১০॥
দৈবং দৈবেনযুধ্যেত মানুষং মানুষেণ চ।
অন্তং হান্তেণ যো হন্যাৎ কোহজুনেন সমঃ পুমান্॥ ২০॥
পুজাদনস্তরঃ শিষ্য ইতি ধর্মবিদো বিছঃ।
এতেনাপি নিমিজেন প্রিয়ো জোণস্য পাপ্তবং॥ ২১॥
যথা স্মকরোদ্যতমিক্রপ্রস্থং যথাহরঃ।
যথানৈষীঃ সভাং ক্ষাং তথা যুধ্যস্ব পাপ্তবম্॥ ২২॥
অয়ং তে মাতুলঃ প্রাক্তঃ ক্ষত্রধর্ম্য্য কোবিদঃ।
ছদ্যতদেবী গাস্বারঃ শকুনিযুধ্যতামিহ॥ ২৩॥
নাক্ষান্ ক্ষিপতি গাপ্তীবং ন কুছেং দ্বাপরং ন চ।
জ্বাতো নিশিতান্ বাণাংস্তীক্ষান্ ক্ষিপতি গাপ্তিবম॥ ২৪॥

ন হি গাণ্ডীবনিমুক্তা

* অন্তরেধেব তিষ্ঠতৈ গিরীণামপি দারণাঃ । ২৫ ॥
অন্তবং পবনো মৃত্যুর্ত্তথাপ্লিকিডবামুখঃ ।
কুর্যুরেতে ক্লচিচ্ছেষং ন তু কুকো ধনপ্লয়ঃ ॥ ২৬ ॥
যথা সভারাং দৃতেং তং মাতুলেন সহাদরোঃ !
তথা যুধ্যম্ব সংগ্রামে সৌবলেন স্থাক্ষিতঃ ॥ ২৭ ॥

* যুধ্তো কামমাচার্য্যো নাহং বোৎস্যে ধনপ্লয়ম্ ।
মৎস্যো হুম্মাভিরাযোধ্যো যদ্যাগচ্ছেদ্যবাং পদম্ ॥ ২৮ ॥
ইতি বিরাটপ্রাক্তি গোহরণপ্রবিগ্রাহাথামভৎ সনবাক্যে
পঞ্চাশস্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫০ ॥

ভীম্ম উবাচ।

নাধুপশ্যতি বৈ দ্রৌণিঃ কুপশ্চ সাধু পশ্যতি।
কর্ণস্ত ক্ষপ্রধর্মেণ যথাবদেয়াদ্ধ মিছ্ডি । ১ ॥
আচার্য্যো নাভিবক্তব্যঃ পুরুষেণ বিজানতা।
দেশকালো তু সমপ্রেক্ষ্য যোদ্ধব্যমিতি মে মতিঃ । ২ ॥
যক্ত স্থ্যসমাঃ পঞ্চ সপত্রাঃ স্থ্যপ্রহারিণঃ।
কথমভ্যদয়ে তেষাঃ ন প্রমুষ্টেত পণ্ডিতঃ॥ ৩ ॥

॥ २०॥ २७ ॥ २१ ॥ २৮ ॥

ইতি বিরাট পর্কাণ ইনলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চা-শতমোহধারে: ॥ ৫০॥

मासिष्डि ॥) ॥ २ ॥ यमा इत्राधनमा পरूपालकोः ॥ ७॥ ८॥

শ গার্দ্ধপারা ইত্যত্র গাধ্িপকা ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

* অস্তরেষেবেত্যত্ত মান্তরেষেবেতি পাঠঃ থ য পুস্তকয়োঃ।

* যুধ্যতামিত্যস্য প্রাক্ যথা সভায়ামিত্যেক শ্লোকঃ ক পুস্তকে নান্তি॥

স্বার্থে সর্বে বিমুহ্নন্তি যেহপি ধর্ম্মবিদো ক্রনাঃ। তশাদ্রাজন ব্রীম্যেতৎ বাক্যে তে যদি রোচতে । ৪। कर्ताहि यमरवाह जान एडकः मन्क्रमनाग्र छए। আচার্যাপুত্র ক্ষমতাং মহৎ কার্যামুপস্থিতম্।। ৫।। নায়ং কালো বিরোধস্য কৌন্তেযে সমুপস্থিতে। ক্ষন্তব্যং ভবতা সর্বামাচার্য্যেণ কুপেণ্চ॥৬॥ ভবতাং হি ক্লভাস্তবং যথাদিত্যে প্ৰভা তথা। যথা চন্দ্রমদো লক্ষ্মীঃ সর্ব্বথানাপক্ষয়তে ॥ ৭॥ এবং ভবৎস্থ ব্রাহ্মণ্যং ব্রহ্মান্ত্রঞ্ব প্রতিষ্ঠিত্য ি চত্রার একতো বেদাঃ ক্রাত্তমেকত্র দুশাতে ॥ ৮॥ নৈতৎ সমন্তমুভয়ং কল্মিংশ্চিদমুশুশ্রুম। অন্যত্র ভারতাচার্য্যাৎ সপুত্রাদিতি মে মতি:। ১॥ বেদান্তাশ্চ পুরাণানি ইতি হাসং পুরাতনং। काममभा मृटजताकन् काद्रजानां मिरका छटवर ॥ ১०॥ अञ्चलाखरिक्षव (वनाक्ष देनलनगळ कुमारङ। আচার্যাপুত্র: ক্ষমতাৎ নায়ৎ কাল: স্বভেরনে॥ ১১॥ সর্বে সংহত্য যুধ্যামঃ পাকশাসনিমাগতম্॥ ১২॥ 'বলম্ব ব্যসনানীহ যাত্রাক্তানি মনীবিভি:। भूत्था (जित्न हि তেवास नानिएक। विज्वार मजः ॥ ১०॥

॥ ৪॥ যং অবেচি দার্যিসা নিন্দারপং তকুস্যের তেজঃ সংজননারৈব নতুদ্বেষাং ॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০ ॥ ১১॥ ১২॥ বলসাসেনাস্য বাস-• নানি বিনাশ কানি॥ ১৩॥

শ্রন্ত কৈবেতাসা প্রাক্রেনিভানেততাক লোকঃ ক পুস্তকে নাতি।

जार्श्व थाटभावाह।

নৈবং ন্যাষ্যমিদং বাদ্ধমম্মাকং পুরুষর্ষত। কিন্তু রোষপরীতেন গুরুণা ভাষিতা গুণাং॥ ১৪॥ শত্রোরপি গুণা † বাচ্যা দোষা বাচ্যা গুরোরপি। সর্বাথা সর্বায়ন পুত্রে শিষ্যে হিত্ত বদেৎ॥ ১৫॥

ভূৰ্যোধন উবাচ।

আচার্য্য এব ক্ষমতাং শান্তিরত্র বিধিয়তাম্। অভিদ্যমানে ভু,গুণ্টো তম্ব তং † শেষকারিত্তম্॥ ১৬॥

বৈশৃশারন উবাচ।

ততো'দুর্যোধনো দ্রোণ্ ক্ষময়ামাস ভারত। সহ কর্ণেন ভীয়েণ ক্লপেণ চ মহাত্মনা॥ ১৭॥

শ্রেণ উবাচ।

যদেব প্রথমণ বাক্যণ ভীম্মঃ শান্তনধ্বাহব্রবীৎ। তেনৈবাহং প্রসম্মোহিম্মি নীতিরত্র বিধীয়তামু॥ ১৮॥

নৈবেতি অস্মাক মিদং বচনং হয়া ন্যাযাং নৈবনিন্দাং রোবেণ সুদ্যুতাদি
দর্শনজেন পরীত ভেন গ্রন্থ দোণেন গুণা অর্জন্য ॥ ১৪ ॥ হিতং বল
বতা সহ নির্থলৈভবিভিবিচার্যা যোদ্ধব্যমিত্যেবং রূপং ॥ ১৫ ॥ আচার্য্য
ইতি রোধাদেভছচন মাচার্যোণেইক্রং নতুভেদার্থ মিতি ভাবঃ পাচান্তরে
আভিষম্ব মাণে অভিমূষ্য মাণে উপালভা মানে ইতি যাবং রোষ কারিতং
শেষং কর্ত্তব্যং কারণীয়ঞ্চ তৎ সর্বাং ন ক্রতং স্যাৎ প্রস্তুত কার্য্য নাশো ভবে
দিতার্থ: ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ প্রথমং মুখ্যৎ, ভেদো ন কার্যাঃ ক্রত্তব্যঞ্জেতি যতুক্রং
তেনেবাহৎ বাক্যোন প্রসন্থোম্ম ॥ ১৮ ॥

^{*} বাচ্যেত্যত্র প্রাহেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
* শেষেত্যত্র রোধেতি পাঠঃ খ খ পুস্তকরোঃ।

যথা ছর্যোধন পার্থো নোপদপতি সঙ্গুরে। # সাহসাৎ যদি বা মোহাত্তথা নীতির্রিধীয়তাম ॥ ১৯॥ বনবাদে ছনিক্ত দেশয়েল স্মর্জুনঃ। ধनং বা লভমানোহত নাদ্য তৎক্ষন্ত ম≨ভি॥ २०॥ यथा नायः मगायुक्षाकार्जताष्ट्रः कथक्षन। ন চ সেনা পরাজ্যাত্তথা নীতির্বিধীয়তাম ॥ ২৯॥ উক্ত^ ছুর্য্যোধনেনাপি পুরুম্ভাদাকামীদৃশম্। जमञ्जूका नारक्त्र यथाविषक्त्रईनि ॥ २२ ॥ ° ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণশর্বাণি ডোণবাক্যে এক

পঞ্চাশভ্রমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫১ ॥

॥ ১৯॥ ধনক্ষেতি ধনং লক্ষা অস্বাস্থপেক্ষা গৃহং গমিষাতি গোধনে অত্যন্তং দুরতোহ ন্যৈ নীতে যুধ্যতা মন্মাকং অন্তমেধায়ং ক্ষিয়তীতি ভাবঃ ॥ ২০ ॥ সমাযুজ্যাৎ সংপ্রাপ্ত পরাজয়াৎ পরাজয়প্রাপ্ত ॥ ২১॥ পুরস্তাদ্বাকা মুক্তং অজ্ঞাত বাসকালঃ পুর্ণোনবেতি প্রথমং বিচার্থা মিত্যেৰ রূপং॥ ২২॥

> ইতি বিরাটপর্মণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে এক পঞ্চালভমোহধারিঃ ॥ ৫১ ॥

^{*} সাহসাদিত্যসা প্রাক্ যথা হুর্যোধনো রাজা নগচ্ছেদ্বিতাং বশ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ভীম উপাচ।

কলাকাঠাশ্চ যুক্জান্তে মুহূর্তাশ্চ দিনানি চ।
আর্দ্ধানাশ্চ নাদাশ্চ নক্ষত্রাণি গ্রহান্তথা ॥ > ॥
ঋতবশ্চাপি যুদ্ধান্তে তথা সম্বংসর। অপি।
এবং কালবিভাগেন কালচক্রং প্রবর্ততে ॥ ২ ॥
তেষাং কালতিরেকেণ জ্যোতিষাঞ্চ ব্যতিক্রমাৎ।
পঞ্চমে পঞ্চমে বর্ষে ছৌ মাদারু শ প্রায়তঃ ॥ ৩ ॥
এবামপ্যধিকা মাদা পঞ্চ চ ছাদশ ক্ষপাং।
তারোদশানাৎ বর্ষাণামিতি মে বর্ততে মতিঃ ॥ ৪ ॥

কলা কাষ্ঠান্টেডি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ফ্লাত্র চতু িংশত্যাপটক্ষিশ্যক্তিঃ সম্বংসরঃ চতুষ্পঞ্চাশ্বধিক শতত্রয়দিনাত্ম সাক্ষ্য স এব দ্বাদশ ব্যবিকাদি প্রতিজ্ঞা-হ গ্রাম্যনাদি সভাদিষ্ট উপগুজাতে ত্রীনি শতানি পঞ্চ ষ্টিশ্চ দিনানি পঞ্চদশ ঘটকা একতিংশং পলানি বিংশ দক্ষরানি সেরিস্য সম্বৎ সরস্য মানং তত্ত্ব প্রায়েশ জ্যোতিনিদঃ সৌর সম্বংসগ্রাহ্যরোগেনৈব বর্ষ প্রবে-শাদিকং কুর্বান্তি মার্তে বর্দ্ধাপনাদে ছ চান্তেণেতি বিশেষে সভাপি যদা এত্যোরান্তরালিকঃ সাংনাবেশীগণাতে তদা সৌরগতা রন্ধিন্তত্র গণাতে এবং গ্রানার্থ ক্রিয়মাণায়াং এয়োদশ অব্দেয়ু পঞ্চান্ত্রামাদাঃ দ্বেদিনে সপ্তত্তিংশরাড়াঃ পঞ্চয়ারিংশংপলানি পঞ্চ দশাক্ষ্যাণিচ তথাচ কিঞ্চি দ্ধিকানিব দিনানাবধি পূর্ত্তে রধিকানি জাতানি জ্যোতিয়াই নক্ষতানাং ব্যতিক্রমাণ স্বর্ধান চক্রেণ্ড লজ্জনাৎ উপজায়তঃ অধিকৌ ভবতঃ॥৩॥ অত্ত্ৰ অৰ্দ্ধাসাশ্চ যুজাত ইতি গ্ৰহণাং ত্ৰোদশানাং বৰ্ষাণাং চান্দ্ৰমাসাং ষট্ পঞ্চাশদধিকং শতং ভনন্তীতি তে এৰু গৃহীতা ইতি জেনং তথাচ বিজন্ন-• দশম্যাৎ দৃত্তে পাগুৰপরাঞ্চাঃ লোকে তদ্যৈৰ প্রাতে কালত্বাৎ 'ত্রীমেচ গোগ্রহার্থং' প্রবৃত্তা ইত্যুক্তং তেন বিজয় দশম্যামাগামিন্যাং অয়োদশার্ক পুরনং ভবিষাতীতি হুর্যোধন প্রত্যাশা পাণ্ডবাস্থ চান্দ্রাক

^{*} উপদায়ত ইতাত্র উপদীয়ত ইতি পাঠঃ রু পুত্তকে।

সর্বাং যথাবচ্চরিত শদ্বদেভিঃ প্রতিশ্রুতম্। এবমেতদ্ধ্বং জ্ঞাত্বা ততো বীভৎসুরাগতঃ। । ।। সর্বেটের মহাত্মানঃ সর্বের ধর্মার্থকোরিদাঃ। যেষা বুধিষ্ঠিরে! রাজা কথং ধর্মেইপরাধু য়ু: ॥ ৬ ॥ অলুক:শৈচৰ কৌন্ডেয়াঃ ক্লভবস্তুক্ষ হুম্বরমৃ। ন চাপি কেবলং রাজামিচ্ছেয়ুস্তেই্নুপায়তঃ॥ १॥ । তদৈব তে হি বিক্রাস্তমীয়ুঃ কৌরবনন্দনাঃ। > ধর্মপাশনিবদ্ধান্তে ন চেলু: ক্ষত্রিয়ব্রতাং । ৮। যক্তানুত ইতি খ্যায়। দ্ব: স গচ্ছেৎ পরাভব্যু।। রুণুযুর্দ্মরণং পার্থা নান্তত্ত্ব কথ্ঞন। ১ ॥ প্রাপ্তে কালে তু প্রাপ্তব্য নে। স্থেজযুর্নরর্ষভাঃ। অপি বক্সভূতা গুপ্তং তথাবীর্যা হি পাণ্ডবা: ॥ ১• ॥ প্রতিযুধ্যাম সমরে সর্বাশস্ত্রভাষ্ণরম্। * তম্মাদ্দেত্র কল্যাণং লোকে সদ্ভিরনুষ্ঠিতম্। তৎ সংবিধীয়তাং শীঘ্রং মা বো হুর্থে। হভাগাৎ পরম ॥ ১১॥ ন হি পশ্যামি সংগ্রামে কদাচিদপি কৌরব। একান্ত সিদ্ধিং রাজেন্দ্র সংপ্রাপ্তশ্ব ধনঞ্জয়ঃ ॥ ১২॥

মানেন ত্রাপদশবংসরান্ আতি বাহু কৃত কৃত্যা অভূবন্ তত্তবিজয় দশমীতঃ
পূর্বাং পঞ্চমাসাঃ দাদশদিনানি প্রকটা ভবিতবাং তত্তদশান্ত মাসে চৈত্রকৃষ্ণ সপ্তম্যামা বিভূতাঃ প্রতিজ্ঞাং নিস্তীর্যোব কানিচিদ্ধিকানাপি দিনানি,
আতিবাহু আবিভূতা ইত্যর্থঃ ॥৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ বচ্চ যদিচ পাশুবাং
আন্তোয়মজ্জুন ইতি খ্যায়াৎ কথ্যেংসপরতিবং গচ্ছেং॥ ১॥ ১০॥ ১১॥
॥ ১২॥

^{*} তক্ষাদিত্যস্থাক্ আগতং কাল্পনং রাজন্ সর্বেতত্ত নসং শয়ঃ ইতি পাঠঃ ক পুশুকে।

সংপ্রবৃত্তে তু সংগ্রামে ভাবাভাবৌ জয়াজয়ৌ। অবশ্যমেকং স্পুশতো দুইমেতদস্পয়ম॥ ১৩। তম্মাদ্যুদ্যোচিতং কর্ম্ম কর্ম্ম বা ধর্মস্থিতম। ক্রিয়তামাশু রাজেক্র সংপ্রাপ্তো হি ধনঞ্কয়ঃ॥ ১৪।

হুৰ্যোধন উবাচ।

নাহং রাজ্য প্রদাস্থামি পাওবানা পিতাম । । যুদ্ধোপঁচারিকং যতু ভচ্ছীঘ্রং সংবিধীয়তাম । ১৫ ।

ভীম্ম উবাচ ৷

অত যা মামিকা বুদ্ধিং শ্রেরতাং যদি রোচতে।

সর্বাংশি ময়া প্রেয়ো বৃক্তধ্যং কুরুনন্দন ॥ ১৬ ॥
কিপ্রাং বলচতুর্জাগান গৃহ্ছ গৃদ্ধ পুরুন প্রতি।
ততোহপরশ্চতুর্জাগো গাং সমাদায় গচ্ছতু ॥ ১৭ ॥
বয়ং অর্ক্রেন সৈন্যস্য প্রতিষ্যাৎস্যাম পাঞ্জবম্।
অহং দ্রোণশ্চ কর্নশ্চ অশ্বর্থামা রূপস্তব্ধা।
অভিযোৎস্যাম বীভৎ স্থুমাগতং কুত্রনিশ্চয়ম্॥ ১৮ ॥
মৎস্যংবা পুনরায়াত্মাগত্রনা শতক্রতুম্।
অহমাবারয়িষ্যামি বেলেব্যকরালয়ন ॥ ১৯ ॥

रियमणायन छेवाह।

তদাক্য করুচে তেবাং ভীমেনোক্তং মহাত্মনা। তথা হি কৃতবানাজা কৌরবাণামনন্তরম্ ॥ ২০ ॥

। ১৩॥ ধর্মনং হিতং কর্ম অষুদ্ধেন এতিঃ সহঐক্যং গড়া রাজ্য প্রদানং ॥ ১৪॥ ১৫॥, ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ অনস্তরং অবিলম্বিতং ॥ ২০॥

ইবশালামন উবাচে ভাষা প্রাকৃ অহমিতার লোকঃ, ক পুস্তকে নাতি।

ভীন্বঃ প্রস্থাপ্য রাজান গোধনং তদনন্তরম্। সেনামুখ্যান ব্যবস্থাপ্য ব্যহিতু সংপ্রচক্রমে,॥ ২১॥ ভীন্ম উবাচ।

আচার্য্য মধ্যেতিষ্ঠত্বমশ্বপামা তু সব্যতঃ।
কুপঃ শারদ্বতো ধীমান পাশ্বং রক্ষতু দক্ষিণ্ম ॥ ২২ ॥
অগ্রতঃ স্তপুত্রস্ত কর্ণস্তিষ্ঠতু দংশিতঃ।
অহস্ত সর্বাসন্যা পশ্চাৎ স্থাস্যামি পালয়ন ॥ ২০ ॥
ইতি বিরাট পর্বাণি গোহরণপর্বাণি জীয়া সৈন্যব্যুহে বি
পঞ্চাশস্তমোহ্য্যায়ঃ ॥ ৫২ ॥

বৈশস্পায়ৰ উবাচ।

তথা ব্যুচেম্বনীকৈষু * কৌরবানাং মহারথৈ:।
উপায়াদর্জুনস্ত ন রথঘোষেণ নাদ্যন্॥ >॥
দদৃশুন্তে ধজাগ্রন বৈ শুর্জবুক্ত রথস্বনম্।
দোধ্য় মানস্য ভূশং গাঞ্জীবস্য চ নিস্তনম্॥ ২॥
ততন্তৎ সর্বানালোক্য ডোণো বচনমত্রবীৎ।
মহারথমমুপ্রাপ্তং দৃষ্ট্য গাঞ্জীবধন্থিনম্ ৫৩॥

॥ २२ ॥ २२ ॥ २७ ॥

ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দি-পঞ্চাশতমোহধ্যায়ঃ॥ ৫২॥

তথেতি॥১॥২॥৩॥

^{*} কৌরবানাং মহারথৈরিতা কৌরবেয়ের ভারতেতি পাঠঃ খ প্রকে।

দ্রোণ উবাচ।

এতদ্বজাপ্রং পার্থসা দূরতঃ সংপ্রকাশতে।

এব ঘোষঃ স রথজা রোরবীতি চ বানর॥ ৪॥

এব তির্চন্ রথশ্রেষ্ঠে রথী রথবরপ্রপুৎ।

উৎকর্ষতি ধনুশ্রেষ্ঠ গাঞ্জীবমশনিস্থনম্॥ ৫॥

ইমৌ ছি বানৌ সহিতৌ পাদয়োশ্রে বাবস্থিতৌ।

অপরৌ চ বাতিকান্তৌ কণৌ সংস্পৃশ্য মে শরৌ ॥ ৬॥

† নির্বার্তা হি বনে বাস ক্রমা কর্মাতিমামুষম্।

অভিবাদয়তে পার্থঃ শ্রোত্রে চ পরিপুচ্ছতি ॥ ৭॥

চিরদৃষ্টোহয়মমাভিঃ প্রজ্বান বাক্ষবপ্রিয়ঃ।

অতীবস্থলিতো লক্ষ্মা পাঙ্পুলো ধনপ্রয়ঃ॥ ৮॥

রথী শরী চাক্তলী নিষঙ্গী শন্থী পতাকী কবটী কিরীটা।

থক্সী চ ধনী চ বিভাতি পার্থঃ শিখী, রতঃ ক্রম্ভিরিবাজ্যসিক্তঃ
॥ ৯॥

🗓 अब्बून डेगाह।

ইষুপাতে চ সেনায়াপ হয়ান্ সপ্যচ্ছ সার্থে। যাবৎ সমীকে সৈন্যেহ সিন্ কাসো কুরুকুলাধমঃ॥ ১০॥

॥ १॥ ৫॥ মেমম কণো সংস্পৃশা অতিক্রান্তে। ৬॥ १॥ ৮॥ চাৰতলং হস্তা বাপশ্চাৰতলং তদ্বান্ কাৰতলী অগ্তিঃ জুহুপ্রভৃতি ছিঃ॥ ৯॥ ইযুপাতে ইযুপাত প্রমিতে দেশে অসৌ হুর্বোধনঃ॥ ১০॥

^{*} রথী রথবর প্রণুদিতাত রথে চ রথিনাম্বর ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে। া নির্বাতোত্তাত নিরুষ্যেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

[া] অজ্পূর্ন উবাচ ইতাসা প্রাক্। বৈশম্পায়ন উবাচ। ততোহজ্পুনঃ
কুরন্দৃষ্ট্বা সংগ্রামে সমবন্ধিতান্ তৎকাল সদৃশং বাক্যং সৎস্যপুত্র
মভাষতেতাক লোকঃ ক পুস্তকস্য।

স্কানন্যাননাদৃত্য দৃষ্ট্যা তমতিমানিনম্।
তস্য মূর্দ্ধি পতিষ্যামি তত এতে পরাজিতাঃ । ১১॥
এষ বাবস্থিতো জোণো জৌনিশ্চ তদনন্তরম্।
ভীষ্মঃ ক্রপশ্চ কর্নশ্চ মহেষাসা বাবস্থিতাঃ ॥ ১২॥
রাজানং নাত্র পশ্যামি গাঃ সমাদায় গজ্তি।
দক্ষিণং মার্গমাস্থায় শঙ্কে জীবপরায়নঃ ॥ ১০॥
উৎস্কোতজ্বানীকং গজ্ঞ যত্র স্ব্যোধনঃ।
তত্তিব যোৎস্যে বৈরাটে ন্যুন্তি যুদ্ধং নিরামিবস্।
ভ তং জিত্বা বিনিবর্তিষ্যে গাঃ সমাদায় বৈ পুনঃ ॥ ১৪॥

देवनान्याचन छैत्राह ।

এবমুক্তঃ স বৈরাটি≨য়ান্ সংযম্য যতুতঃ।
নির্ম্য চ ততো রশ্মীন্ যত্র তে কুকুপুঙ্গবাঃ।
অচোদরৎ ততো বাইান্, † যতো রাজা স্থোধনঃ ঃ ১৫ ॥
উৎস্ত্য রথবংশন্ত প্রয়াতে শ্রেতবাহনে।
অভিপ্রায়^ বিদিল্লাস্য রূপো ‡ বচনম ত্রবীৎ ॥ ১৬ ॥
নৈষোহত্তরেণ রাজানং বীভৎস্কঃ স্থাতুমিচ্ছতি।
, তস্য পাঞ্জি গুহীব্যামো জবেনাভিপ্রয়াস্যতঃ ॥ ১৭ ॥

॥ ১১ ॥ মহেলাসাঃ মহনীয় ধলুযঃ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ রথ^{বং শং} । রথসমূহং ॥ ১৬ **॥** ১৭ ॥

^{*} তং জিমা বিনি বর্তিষো ইভাত্ত তং নিহতা নিব্তিষো ইতি পাঠঃ কঁ পুস্তকে !

[†] যভোরাজান্মযোধন ইত্যত্ত যত্ত্ত ছেব্লোধ নাগত ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে। ়ু কুপ ইত্যত্ত দ্রোণ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ন ছেনমতিলংকুদ্ধমেকো যুধ্যেত সংযুগে। অন্যো দেবাৎ মহস্রাক্ষাৎ কুফাদ্বা দেবকীস্কুতাৎ। আচার্য্যাক্ত স পুত্রাম্বাভার্ম্বাজ্বানু মহার্থানু॥ ১৮॥ * কিন্নো গাবঃ করিষান্তি ধনং বা বিপুলং তথা। ছুর্য্যোধনঃ পার্থজলে পুরা নৌরিব সীদতি ॥ ১৯ ॥ তথৈব গ্রা বীভৎস্থর্কাম বিশ্রাব্য চাল্পনঃ। শঁলভৈরিব তাং সেনাং শব্রৈ শীঘ্রমবাকিরৎ। ২০। কীর্য্যনাণাঃ শরৌবৈষ্দ্ত যোধান্তে পার্থচোদিতৈ:। নাপশ্যনারতাং ভূমিন নান্তরীক্ষঞ্চ পত্রিভিঃ ॥ ২১ ॥ তেষামাপততাং যুদ্ধে নাপ্যানেহভবন্নতি:। শীঘ্রথমেব পার্থন্য পূজয়ন্তি শ্ম তে তদা॥ ২২। ততঃ শঙ্খং প্রদধ্যৌ দ দ্বিষ্ঠাং লোমহর্ষণম্। বিক্ষার্য্য চ ধনুঃশ্রেষ্ঠং ধ্যে ভূতান্যচোদয়ন্ ॥ ২৩ ॥ তস্য শঙ্খস্য শব্দেন রথনেমিস্থনেন চা গাণ্ডীবসাচ শব্দেন পৃথিবী সমকম্পতঃ ২৪ 🛚 অমানুষাণাৎ ভূতানাং তেষাঞ্চ ধ্বজবাসিনাম্। উর্ত্ত পুচ্ছান্ বিধুম্বানা রেভমাণাঃ সমন্ততঃ। গাবঃ প্রতিন্যবর্ত্ত দিশমাস্থায় দক্ষিণাম্॥ ২৫॥

> ইতি বিরাটপর্বাণ গোহরণপর্বাণি গোনিবর্ত্তনে ত্রি পঞ্চাশস্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৩॥

॥ ১৮ । ১৯ ॥ ২০ ॥ আর্ভাং• ভূমিং নপিশান্ত্রিত অপিত শরৈরার্তামে , রা পশান্ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৬ ॥ ২৪ ॥ রেভমানাঃ হস্বারবং কুর্বাণাঃ ॥ ২৫ ॥ ইতি বিরাট পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রি-পঞাশভূমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৩ ॥

^{*} কিলে। গাব ইতাস্য প্রাকৃ আচার্য্যাদিতার্দ্ধ লোকঃ ক প্রতকে নান্তি।

বৈশম্পায়ন উবাচ।

স শক্রসেনাং তরসা প্রণুদ্য,
গাস্তা বিজিত্যাথ ধনুর্জরাপ্ত্যঃ।
ছুর্য্যোধনায়াভিমুখং প্রযাতো,

* মৎস্তস্ত রাজ্ঞঃ প্রিয়মাচিকীয়ুঁ:॥ ১॥
গোষু প্রয়াতাস্থ জবেন মৎস্তান্,
কিরীটিন কার্যাকৃতঞ্চ মন্ত্যা।
ছুর্য্যোধনায়াভিমুখ প্রযান্তং,
কুরুপ্রবীরাঃ সহসাভিপেতুঃ॥ ২॥
তেষামনীকানি বহুনি গাতং,
ব্যুঢ়ানি দৃষ্ট্যা বছলধজানি।
মৎস্তস্ত পুল্রং বিষতাং নিহন্তা,
বৈরাটিমামল্র্য জুতোহভ্যুবার্ট॥ ৩॥
এতেন ভূর্বং প্রতিপাদর্যৈতান্,
শেতানু হয়ানু কাঞ্চনরশ্মিযোক্তান্।
জবেন সর্বেণ কুরু প্রয়ণ্ণু,

সইতি ॥১॥২॥৩ ॥ এতেন পথা কাঞ্চনমগারশায়োরজ্জব স্তা এব থাজানি বন্ধনানি যেষাং তান্ কুঞ্সিংহদ্য হর্ষোধনদা বৃন্দং মুখাং রহি রদ্ধো অক্যাৎ কুঞ্জায়ে হ্যাদঃ ॥৪॥

योगोष्ट्रार्ट्र १ कुक्लिंग्श्ह्रक्ष्य । है ॥

^{*} মৎসাসা রাজ্ঞপ্রির মাচিকীয়্রিতাত্র, ভূরোরণং সোভি চিকীর্বমাণ ইতি পাঠঃ থ প্রস্তুকে।

[🕆] কুৰু সিংহ রন্দমিতাত্র রথাসিংহ রন্দ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

গজো গভেনেব ময়া চুরাত্মা, যো যোদ্যাকাল্কতি সূতপুত্রঃ। তমেব মাং প্রাপর রাজপুত্র, তুর্য্যোধনাপাশ্রমজাতদর্পন্। ৫॥ म टिड्र रेयक्षा छक देवत्र इस्टिः शुर्खा विवादेशा स्वर्गकरेकः। ব্যধং সম্ভদ্রথিনামনীক ... ভতোহবহৎ প্রাপ্তবসাজিমধ্যে॥ ৬॥ ७१ हिजामत्ना विभित्येकिशारिकः मः आप्रक्रिक्कुम् गर्श जशक। প্রত্যুদ্ধযুর্ভারতমাপতন্তং, মহারথাঃ কর্মভীপ্রমানাঃ॥ ৭ ॥ ততঃ গ তেষাং পুরুষপ্রবীরঃ, শরাসনার্চিঃ শরবেগতাপঃ। বাতান্থানামদহৎ সম্নুা, स्तनः यथाधिः कुक्रशुक्रवानाम्॥ ৮॥ তিমিংস্ত যুকে তুমুলে প্রবৃত্তে, পার্থ- বিকর্বোহতিরথং রথেন। विभावित्रधंग कुरू श्रवीरत्।, चौरमन जीमानुजनाममाप n > n

॥ ৫॥ সুবর্ণ ককৈ: স্থা মরো ককে পলাগদা পশ্চাদঞ্জ পদ্ধবী যেষাং তৈঃ কক্ষঃ ম্যাদন্তরীয়দ। পশ্চাদঞ্জ পদ্ধবি ইতি মেদিনী ॥ ৬॥ অভীপ্যমানাঃ বর্ণ জীবন্ত মেদ্ভঃ॥ ৭॥বাতং সমূহং॥ ৮॥ বিপাঠঃ ততো বিকর্ণস্য ধন্মবিরেষ্য জাষ্নদাত্য্যোপচিতং দুঢ়জ্যম্। ছিন্নধুজঃ সোহভাপয়াজ্জবেন। ১০॥ ত~ শাত্রবাণাং গ্রাবাধিতার~, কর্মাণি কুর্বাণমমানুষাণি। † শক্তন্তপঃ কোপমমূষ্যমাণঃ, मया फ्रां कृष्यं न त्थन भार्थम् ॥ >> ॥ স তেন রাজ্ঞাতিরথেন বিদ্ধো, বিগাহমানো ধজিনীং কুধ্বণাম্। শক্রন্তপং পঞ্চিরাশু বিদ্যু, * ততোহস্য স্থতং দশভিজ ঘান॥ ১২॥ ততঃ স বিদ্ধো ভরতর্ধভেণ বাণেন গাত্রাবরণাতিগেন। গতাস্থরাজৌনিপপাত মহাং,

নগো নগাঞাদিব বাতকুয়: । ১৩।

বিক্ষা বিলিথাছিতেতার্থ: অসা তং প্রসিদ্ধীং শ্বজঞ্চ মথা উদ্বথা পাতরংও অপযাৎ ॥ ১০ ॥ গণস্য বাধিতারং তেজোহরং শক্রন্তপ নামা ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ নগোরক: নগাবাধিং পর্বতাপ্রাহিশন ব্রকৌ নগাবগাবিতামরঃ ॥ ১৩ ॥

^{*} মধ্যেত্যত্র পার্থ ইতি প্লাচঃ ক পুশুকে। •

† শক্রন্তপঃ কোপমম্ব্যমাণঃ সমার্দ্ধরৎ কূর্মনখেন পার্থ মিত্যত্র শক্ত ন্তপঃ পার্থ মম্ব্যমাণঃ সমার্দ্ধরছর বর্ষেণ পার্থ মিতি পাচঃ খ পুশুকে।

नतर्वजारङ जु नतर्वरज्ञन, বীরা রণে বীরতরেণ ভয়াঃ। চকল্পিরে বাতবশেন কালে, প্রকম্পিতানীব মহাবনানি । ১৪॥ হতাস্ত্র পার্থেন নরপ্রবীরা, শেগতাসবোৰ গাং স্থৰপুঃ স্থবেশাঃ। বস্থপ্রদা বাসবতুল্যবীর্য্যাঃ, পরাজিতা বাসবজেন সংখ্যে। ১৫। সৌবর্ণকাঞ্যায়সবর্ম্মনদ্ধা, নাগা যথা হৈমবতাঃ প্রবৃদ্ধাঃ। তথা স শকুন্ সমরে বিনিম্নন, গান্তীবধন্বা পুরুষপ্রবীর: ॥ ১৬ ॥ চচার সংখ্যে প্রদিশো দিশস্চ, দহলিবাগির্বনমাতপাত্তে। व्यकीर्न ११। विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य † বিশাভরিত্বাপবনোযুদাংক ॥ ১৭ ॥

॥ ১৪ ॥ গতাসব: উর্বা মিতিছেদ: সন্ধিরার্য: ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ আতপান্তে ধর্মস্বরূপে নিদাঘে অন্ত: করেপে নাগে না ইতি মেদিনী॥ ১৭ ॥

^{*} গ্রাসবের্ব্যা মিত্যত্র ভূমৌ সুবান ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† বিশাত্যিত্বা প্রনোষ্ট্রা শেত্যত্র বিশাত্যন্ বার্ রখে। স্নন্ধে
ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

স তান্ সপত্নান্ বিকিরন্ কিরীটী,

চচার সংখ্যেহতিরখো রথেন।

শোণাশ্বাহ্য্য হয়ান্ নিহত্য

रिवकर्जनखाङ्गतमीनमञ्जः।

একেন সংগ্রামজিতঃ শরেন,

শিরো জহারাশু কিরীটমালী ॥ ১৮ ॥

তিমান হতে ভাতরি স্তপুজো,

देवकर्त्वता वीर्यामधानमानः।

প্রগৃহ্ দন্তাবিব নাগরাজো,

নর্বভ^ সিংহ ইবাভ্যধাবঁৎ ॥ ১৯ ॥

স পাণ্ডবৎ দ্বাদশভিঃ পৃষ্ৎকৈ,

ঁ ধৈকর্তনঃ শীঘ্রসুপাক্ষান।

বিব্যাধ গাত্রেষু হয়াংশ্চ সর্বান্,

বিরাটপুত্রঞ্ করে নিজ্পে॥ २०॥

তমাপতন্ত> সহসা কিরীটী,

देवकर्त्तन देव महमाजिलका ।

প্রগৃহ বেগং ন্যপতজ্ঞবেন,

নাগং গরুত্মানিব চিত্রপক্ষ: ॥ ২১॥

শোনাশাঃ বাহে বাহকে রখে যদ্য তদ্য ॥ ১৮ ॥ আদদান আদাতু মিচ্ছন, এপ্র্ আগ্রহেণ দস্তাবিব পর্বত শিধরতুল্যো অর্কুনোন্তরে প্রতি অভ্য-ধাবৎ দন্তঃসাহান কথ্যত ইতি বিশ্বঃ দন্তোজি কটকে কুঞ্জে ইতি মেদিনী ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ বেবাং গৃহ স্বীকৃত্য ॥ ২১ ॥

তাবুভমৌ সর্বধনুধ রাণাং, महावत्नी मर्समभन्नभारही। कर्नमा भार्थमा निभमा युक्तः, দিদৃক্ষমাণাঃ কুরবোহ্বতন্থঃ । ২২ । म পা खबरुर्ग मुनीर्ग का भः, क्रुडानमः कर्गम्नीका व्वार क्तराय मार्थः मत्रथः मरक्तु, মন্তর্দধে ঘোরশরৌঘর্ঠটা ॥ ২৩॥ ততঃ স্থবিদ্ধাঃ সরবীঃ সানাগা, যোধা বিনেত্রভরতর্বভাগায় । অন্তর্ধিতে ভীন্নমুখাঃ স্থায়াঃ, कितीिंग। कर्नत्रथं भुष्टिकः ॥ २६॥ স চাপি তানজ্নবাহুযুক্তান্, শরাঞ্জরৌঘেঃ প্রতিহত্য বীরঃ । তত্বৌ মহাত্মা সধনুঃ সবাণঃ, সবিস্ফুলিক্সোহগ্নিরিবাশু কর্ণ: ॥ ২৫॥ ততন্ত ভূৱৈ তলতালশকঃ, সশস্থতেরীপণবপ্রণাদঃ। প্রক্ষেডিতজ্যাতলনিম্বনমূং,

নিশম্য রুদ্ধাত্পরম্যদিদৃক্ত মার্ণাঃ তেছু: ॥ ২২,৫ ২০ ॥ কর্ণ স্যান্ত ,ধানানস্তরং ইতরেপি শরৈরস্তর্ধিতাঃ কৃতাঃ ॥ ২৪ ॥২৫ ॥ প্রক্ষেত্তা মুক্তো জ্যাতদরোমিন্দনো যেন তং পুজয়তাং তল তালশকঃ তলেন চপেটয়া তালঃ করা ক্যালনং তজ্জঃ শব্দোতৃৎ তলশ্চপেটে তালকর্জো ভালঃ করাক্ষালে ইতি চমেদিনী ॥২৬॥

বৈকৰ্ত্তনং পূজয়তাং কুৰূণাম ৷ ২৬ ৷

উদ্বলাজ্লমহাপতাকং,

.ধজোত্তমাশশাকুলভীধণান্তম।

গাণ্ডীবনির্ঘোষক্বতপ্রণাদং,

े কিরীটিনং প্রেক্ষ্য ননাদ কর্ণঃ॥ ২৭॥

म हालिटेवकर्लनमंद्रिजा,

সাশ্বণ সম্ভুতং সরথং পৃষৎকৈ:।

তমাববর্ষ প্রসভং কিরীটী,

পিতামহং দোনক্লো চ দৃষ্ট্য। ২৮॥

স চাপি পার্থং বছভিঃ পুষৎকৈ,

दैर्वकर्डरना (मघ हैवा जावर्ष ।

ভবৈৰ কৰ্ণঞ্চ কিব্ৰীটমালী,

সংজ্ঞাদয়ামান শিতৈঃ পুষৎকৈঃ॥ ২৯॥

তয়ো: সূতীক্ষান্ সজতো: শরৌব্বান্,

মহাশরীঘাস্ত্র রিবর্দ্ধনে রণে।

त्रत्थ विनशाविव हक्त सर्पारी,

घनाखरत्नाथ नमर्भ (नाकः॥ १०॥

উদ্ধৃতং উপরিক্তং লাস্থল মেব মহতী পতাকা ধজাঞ্চলো যানিন্ তন্য ধজনা উত্তমৌ অংকৌ উপরিস্থ তির্যাক্ ফল কারা তাগৌ তত্ত্ব আকুলা ব্যথাঃ যে ভীষণাঃ ভূতাদরঃ তে অন্তে সমীপে যদা তং গাণ্ডীব নিহ্রাদেন সহক্তঃ প্রণাদো কিরীটিনং ধ্রুড়ে? পরিস্থ ভূত নাদৈঃসম্বর্ধিত নাদমিতার্থঃ । ॥ ২৭॥ জ্বোনকুপৌচ দৃষ্ট্রী বংশুর্বিত, অন্ত্র্বাতে ॥২৮॥২৯॥ মহন্তিঃ শ্রোঘৈ রজ্রোঘৈ ক্রিবর্দ্ধনং চ্ছেদনং যত্ত্ব উন্মিন্ন বিলগ্নী সংনিহিতৌ চক্র স্থানী খন মধ্যাদিবতৌ বাণ সংখ্মধ্যালোকোই স্থদদর্শ॥ ৩০॥ ১৯

^{*} মহাশরৌঘান্ত বিবর্জনে বণে ইত্যত্ত মহাত্মঘোরান্ত বতো বিমর্ফে ইতি পাঠিঃ ক পুস্তকে।

অথাশুকারী চতুরো হয়াৎশ্চ,

বিব্যাধ কর্নো নিশিতৈঃ কিরীটনঃ।

ত্রিভিশ্চ যন্তারমমুষ্যমাণো,

বিব্যাধ ভূর্ণং ত্রিভিরস্য কেতৃমু ॥ ৩১ ॥

তেনাভিবিদ্ধঃ সমরাবমর্দ্দী,

, প্রবোথিতঃ সি^হ ইব প্রস্থুগুঃ।

গাণ্ডীবধন্বা ঋষভঃ কুৰূণা

মজিন্স গৈঃ কর্ণীময়ায় জিফুঃ॥ ৩২॥

স শস্ত্রবুট্যাভিহতো মহাল্প

প্রাত্তশ্বারাতিমনুষ্যকর্ম।

व्याष्ट्रामसं कर्नसंय शृयं टेक,

লোকানিমান্ সূর্য্য ইবাংশুজালৈ । ৩০ ॥

স হস্তিনেবাভিহতো গজেন্দ্রং,

প্রগৃহ ভল্লানিশিতানিষঙ্গাৎ।

আকর্ণপূর্ণঞ্চ ধনুর্বিরুষ্য,

বিব্যাধ বাবৈরথ স্থতপুত্রম্ ॥ ৩৪॥

অথাস্য বাছুরুশিরোললাট্র

গ্রীবাং বরাঙ্গাণি পরাবমর্দ্রী।

* শিতৈশ্চ বাগৈয়ু ধি শিব্বিভেদ,

গা্গুীবমুক্তৈরশনিপ্রকাশৈ: ॥ ৩৫॥

1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2 8 1 2 6 1

^{*} শিতৈশেতাত্তিত সোতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

স পার্থমুকৈর্বিশিখৈঃ প্রণুরো,
গজো গজেনেব জিতস্তরন্ধী।
বিহায় সংগ্রামশিরঃ প্রয়াতো,
বৈকর্ত্তনঃ পাশুববাণতপ্তঃ ॥ ৩৬ ॥
ইতি বিরাটপর্বাণ উত্তর গোগ্রহে কর্ণাপরানে চতঃপঞ্চাশস্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৪ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

অপযাতে তু রাথেয়ে তুর্ঘ্যোধনপুরোগমাঃ।

অনীকেন তথা স্বেন শরৈরাচ্ছ ত পাঞ্চবম্ ॥ ১ ॥

বছধা তগ্য দৈন্যে বৃঢ্দ্যাপতিতঃ শরৈঃ।

অবারয়ত বেগং স বেলেব তু মহোদধেঃ ॥ ২ ॥

ততঃ প্রহ্ম্য বীভৎস্কঃ কৌত্তেয়ঃ দৈছত্বাহনঃ।

দিব্যমস্ত্র^ বিকুর্বাণঃ প্রভ্যান্ত্রথসন্তমঃ ॥ ৩ ॥

যথা রিশ্মভিরাদিত্যঃ প্রচ্ছাদয়তি মেদিনীম্।

তথা গাঞ্জীবনিম্ম কৈঃ শরৈঃ পার্থো দিশো দশ ॥ ৪ ॥

ন রথানাং ন চাখানাং ন গজানাং ন বর্ম্মণাম্।

অনিবিদ্ধিক শিতৈব্বাণেরাসীদ্যুস্কুলমন্তরম্॥ ৫ ॥

1 991

ইতি বিরাট পর্ব্ধনি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুঃ পঞ্চাশতমেশ্হধায়িঃ ॥ 🕫 ॥

আছে তি আগতাঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ প্রতারাৎ প্রাতিকুলোনাভিমুখণাদিত্যর্থঃ
॥ ৩॥ দিশোদশ প্রচ্ছাদিতবান্ ॥ ৪॥ অনিবিদ্ধতিতরামবিদ্ধং অন্তরং
অবকাশঃ ॥ ৫ ॥

দিব্যযোগাক পার্থসা হয়ানামুন্তরস্য চ।

শিক্ষানিপোপপন্নমানন্তনাঞ্চ পরিক্রমাৎ।

বীর্যামতাদ্ভূতং চাগ্রাং দৃষ্ট্ব। জিফোরপূজ্যন্॥ ৬॥

কালাগ্নিমিব বীভৎস্কং নিদ্দেহন্তমিব প্রজাঃ।
নারয়ঃ,প্রেক্ষিতুৎ শেকুজ্ব লন্তমিব পাবকম্॥ ৭॥

কালাগ্রমিব বীভৎস্কং নিদ্দেহন্তমিব প্রজাঃ।
নারয়ঃ,প্রেক্ষিতুৎ শেকুজ্ব লন্তমিব পাবকম্॥ ৭॥

কালি,গ্রস্তান্দনীকানি রেজ্বরজ্বন্যার্থিং।
শৈলং প্রতি * বলাজানি ব্যাপ্তানীবার্করশ্রিভিঃ॥ ৮॥

অশোকানাং ব্যানীবজ্লানি * কুস্তমৈঃ শুভিঃ।
রেজ্বঃ পার্থশবৈস্তত্ত তদা সৈন্যানি ভারত॥ ৯॥

আজাহর্জুনশবৈঃ শীর্থ শুষ্ডং পূজাং হির্নারন্।
ছত্রাণি চ পভাকাক্ষ খে দ্বার্ন সদার্গতিঃ॥ ১০॥

অবলত্তাসনাজ্যাঃ পরিপেতুর্দ্দিশো দশ।
রথাঙ্গদেশানাদার পার্যজ্বির্যুগা হরাঃ॥ ১০॥

কর্ণকক্ষবিধানেমু অন্তরো স্কেরু হৈব ছ।

মর্ম্বক্ষেমু চাইত্যাপাতরৎ সমরে গজান্॥ ১২॥

উত্তরদ্য হরানাং শিক্ষা শিল্পোপপন্নরাদিতি সমন্ধ্যকতং বেগং অপুজয়ন্ অরয়ইত্যপ ক্রাতে ॥৬॥१॥ শৈলং প্রতি শৈল সমীপে বলাজানি বলবন্তি অচঞ্চলানি অভানি স্থারশিব্যাপ্তানি যথা তথা তান্যনাকানি শর ব্যাপ্তানার্জন সমীপে রেজুরিতার্থঃ॥৮॥ শুভৈঃ পুলৈঃ ফলস্চকরাত্রেযাং শুমহং ॥৯॥ অজঃ পুলাং হিরণায়ং স্বর্ণ চলাকজং শুষাং শরৈঃ শীর্পিত্রদক্রোদীনি, চসদাগতিঃ বায়ু খে দধার বান জালান্তি হিত্যান্তেয়া মধঃ পতনং না ভূদিতার্থঃ॥১০॥ রগান্ধ দেশান্ যুগদৈয়ক দেশান্ আদায় হয়ঃ পরিপেইরিতারয়ঃ॥১১॥ গজান্ কর্ণাদি প্রদেশ্য আইতা বিশ্বাপাতয়ং প্রাতর্তিম॥১২॥

 ^{*} বলাজাণী তাত্র নবাজাণীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 * কুন্থমৈরিতাত্র বহুণ ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কৌরবাপ্রাগজানান্ত শরীরৈর্গতচেতসাম্।
ক্রানের সংর্তা ভূমির্ল্ফেবিরির নভন্তলম্। ১৩॥

মুগান্তসময়ে সর্বাং যথা স্থাবংজঙ্গমম্।
কালক্ষয়মশেষেণ দহত্যপ্রশিখঃ শিখী।
তদ্বৎ পার্থো মহারাজ দদাহ সমরে রিপূন্। ১৪॥
ততঃ সর্বান্তভোভির্ম বাে নিম্ননেন চ।
শব্দেনামানুষাণাঞ্চ ভূতানাং ধ্বজবাদিনাম্।
ভৈরবং শব্দমতার্থং বানরস্য চ কুর্বেতঃ। ১৫॥
ইনবারিপাচ্চ বীভংগ্রন্তানার দিন্ধোধনে বলে।
ভয়মুৎপাদ্যামাস বলবানরিদর্দনঃ। ১৬॥
রথশক্তিমমিত্রাণাৎ প্রাগেব নিপতন্তুবি।
পোহপবাৎ সহসা পুশ্চাৎ সাহস্যাচ্চাভ্যুপেনিবান্। ১৭॥
শরত্রাতৈঃ স্থতীক্ষাত্রেঃ সমাদিকৈঃ থগৈরিব।
ভক্ত্রিস্ত থ্যাবত্রে লোহিতপ্রাশ্বনঃ থগৈঃ। ১৮॥

ত্যাজানাং দেনাগ্র গামিনাং গজানাং গত চেতসাং স্থানাং॥ ১৩॥ কালক্ষরং কালনা ঐশ্বাং জগদিতার্গঃ অপ্রশিশঃ অপ্রবন্তীক্ষাঃ শিখায়সা॥ ১৪॥ ১৫॥ দৈবারিপাং দেবারীন সুরুদ্ন পাতীতি দেবারিপঃ সমুদ্রস্তাল জাতো দৈবারিপঃ সংখঃ তত্মাৎ চাং ভৈরবং শব্দং কুর্বত ইতান্ত্রুষাতে॥ ১৬॥ অমিক্রাণাং, বৈরিগাং রহশক্তি শরীর সামর্থাং রথঃ সান্দন-দেহরোরিত কোশঃ প্রাণাব সহসা দর্শন মান্ত্রাদেবনিপতং নাপাতরং শক্তিরিত্বি পাঠেনাপতং অভ ভাবাদি রার্থঃ সোর্জ্বঃ অপষাং প্রগতৌ গতাভাবাদিতার্থঃ সাহসাচ্চ অশক্ত বধর পাই পশ্চাতান্ যুদ্ধার্থং উপেরিবান্॥ ১৭॥ খবি পক্ষিভিরিব খগৈর্বাণেঃ॥ ১৮॥

অত্রমধ্যে যথার্কন্স রশায়ন্তিগাতেজসং।
দিশাস্থ চ তথা বাজন্ ন সংখ্যাতাং শরাস্তদা॥ ১৯॥
সক্দেবানতং শেকুরথমভ্যসিতুং পরে।
আঁলভ্যঃ পুনরশৈস্ত রথাৎ সোহতিপ্রপাদয়েৎ॥ ২০॥
' তে শরা দিট্শরীরেষু যথৈব ন সসজ্জিরে।'
দিডনীকেষু বীভৎসোর্ম সসজ্জে রথস্তদা॥ ২১॥
স তেদিক্ষাভর্গাসাস হ্রাতিবলমঞ্জ্যা।
অনন্তভোগো ভুজগঃ ক্রিডদিরি মহার্গবে॥ ২২॥

অত্র মধ্যে অতং অমত্রং অত্রান্যাব্দৈ পড়িঃ সংভরন্তী-ত্যাদা-বিবাতাপি মধ্যে বৰ্লাপ্শ্ৰীন্দ্যঃ যদাহশৌনকো বৃহদ্দেবতায়াং বর্ণস্য বর্ণহোলোপো বহুনাং ব্যঞ্জনস্য বা অত্তাপীতি কপিনাভাদনো যামী-ত্য ঘাস্থচেতি অত্রান্য সৈ পদ্ভিঃ অমত্রানীত্যপেক্ষিতে বর্ণস্য লোপঃ প্রিয়া নফানিমেকণিঃ বুনাকপিবিত্যণেক্ষিতে বুষাইত্যে তয়োর্বণয়োর্নোপঃ অয়ুৎ নাভাবদতি নাভানে দিক্ত ইতাপেক্ষিতে বৰ্ণত্ৰলাপঃ দনো বিশ ইক্ত দনোদান মনস ইত্যপেক্ষিতে বহুনাং বৰ্ণানাং লোপঃ দনোদান মনস ইতিহাক্ত তত্ত্বামিয়া চামীতাপেক্ষিতে অঘাত্মহনাতে গাব মঘা-ব্বিতাপেক্তি ব্যঞ্জন লোপঃ যথা পাত্তে প্রথিষ্ঠাঃ ভূষ্যরশ্বয়েছিবকা-শাভাবাৎ সংকুচল্ডিভদৃদ্গগণে২র্জুন বাণানমান্তীতার্থ: দেব তৎক্ষণ মেব আনতং উপগতং রথং অর্জুন রথং পরে রিপবঃ ,গভাসিতুং পরিচেতুং শেকুঃ তু গবেদা ছেন্বর্থেছতঃ সপুনঃ ক্ষণান্তরে অ-লভাঃ পরৈজ্ঞাতুমশকাঃ তএহেছু মাহ অথৈরিতিসঃ অথৈঃ সহপরান্ রথাৎ অতিপ্রপাদয়েৎ ইমংলোক মতিথাপরিত্বাহ্যুৎ লোকং নয়েৎ দৃষ্ট শুরোর্জ্নঃ শরেঃ পরাৎপরলোকং গোপয়তীতার্থঃ॥ ২০॥ ন সসজ্জিরে ন সক্তাঃ কিন্তু ভিত্বা প্রতএব গতাঃ এবং রথোপি দ্বিষ্থ অনীকেষিতার্থঃ শরাণাং রথস্য চ প্রতির্কৃতিতা ভবতীতার্থঃ ॥ ২১ ॥ অনন্তভোগঃ বহুফলঃ (निय इंडार्थः ॥ २२ ॥

অস্যতো নিত্যমত্যর্থং সর্বিমেবাতিগন্তথা। অশ্রুতঃ জ্রাতে ভূতৈর্ধনুর্ষোষঃ কিরীটিনঃ ॥ ২৩ ॥ সম্ভান্তত্র মাতঙ্গা বাণৈরপান্তরান্তরে। সংর্তান্তেন দুশস্তে মে্ঘা.ইব গভস্তিভিঃ॥ ২৪॥ দিশোহনুভ্রমতঃ সর্বাঃ সব্যদক্ষিণমস্থতঃ। সততং দৃশ্যতে যুদ্ধে সায়কাসনমগুলম্॥ ২৫॥ পতন্ত্যৰপেষু যথা চক্ষুশ্বি ন কদাচন। নালক্ষ্যেমু শরাঃ পেতৃস্তথা গান্তীবধন্তনঃ ॥ ২৬ ॥ মার্গো গজসহস্রস্য যুগপদাচ্ছতো বনে। যথা ভবেত্তথা জভ্তে রথমার্গঃ কিরীটিনঃ ॥ ২৭॥ নূনং পার্থজয়ৈষিত্বাচ্চক্রঃ সর্বামরেঃ সহ। হস্তাম্মানিত্যমন্যন্ত পার্থেন নিহতাঃ পরে॥ ২৮॥ মন্ত্রসহিতান্ বিজয়ং তত্ত মেনিরে। কালমৰ্জ্জুনৰপেণ সংইরন্থমিব প্রজাঃ॥ ২৯॥ কুরুকেনাশরীরাণি পার্থে নৈবাহতান্যপি। সেত্রঃ পার্থহতানীব পার্থকর্মানুশাসনাৎ॥ ৩০॥

সর্বমেবাতি গঃ সর্বাধিকঃ সর্ব শকাভি ভাগী তার্থঃ ॥ ২৩ ॥ ত্রেরণ ভূমো অপ্পান্তরান্তরে অপেশ অন্যান্তরৈ পদে পদে সন্ততা ইতার্থঃ তেনকারণেন তে গভন্তিভিঃ স্থ্যরন্দিভিঃ সংহতা মঘাইব দৃশ্যন্তে ॥ ২৪ ॥ সায়কাসনং ধল্পঃ তস্যমঞ্চলং অতিবেগাৎ অলাতচক্র শান্ত্যান্ত্যা ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ মার্গাইতি গজ সহজেণ বনমিবার্জন রথেন পরিসেনাং উপস্কাতেইতার্থঃ ॥ ২৭ ॥ ই৮ ॥, বিজয়ং অর্জ্যং কালমিব মেনিরে ॥ ২৯ ॥ পার্থেনির হতানি পার্থ হতানীব সেন্ত্রিশীর্ণানি বভূবু । বিভিন্ত রাম রাবণ্যোরিবেতিবদভূতোপমেরুমিতার্থঃ যতোরপ্রর্থ কর্মেনির শান্ত্যাধি কর্ত্ব্যং নান্য কর্ম অতঃ পার্থ হতানীব সেন্ত্রিতার্থ ॥ ৩০ ॥

उम्बीनार भितार भीव विषक्तीर्वान (माश्चराद। অবনেশুঃ কুরুণাং হি বীর্য্যাণ্যর্জ্জুনজান্তয়াৎ।। ৩১॥ णर्ज्जुनानिल जिल्लानि वंनानार्ज्जुनविषिधाम्। চকুর্লেছিতধারাভির্ধরণীং লোহিতান্তরাম্। ৩২। লোহিতেন সমায়ুক্তৈঃ পাৎশুভিঃ পবনোদ্টুতেঃ। বভুরুর্বোহিতান্তত্র ভুশমাদিত্যরশায়ঃ॥ ৩৩॥ সার্ক খন্তৎ ক্ষণেনাসীৎ সন্ধ্যায়ামিব লোহিতম্। অপ্যস্ত> প্রাপ্য স্থর্যোহর্দি নিবর্ত্তেত ন পাণ্ডবঃ 🛭 ৩৪ 🗈 তান স্কান্ সমরে শূরঃ পৌরুষে সমবস্থিতান। দিবৈ।রস্ত্রৈরচিন্ত্যাত্মা সর্বানাচ্ছ দ্বন্ত্রধ্রান্।। ৩৫। म उ. (ऋांविख मञ्जूडा! 'कूर्त्र थावार ममार्थित । जुःमर~ দশভिकारिन८मो निमको। ভিরেব চ ॥ ०७ ॥ ছুঃশাসুনং দ্বাদশভিঃ কুপুং শারদ্বতং ত্রিভিঃ। ভীন্তং শান্তনবং যক্যা রাজানঞ্চ শুঠেন চ। কর্ণঞ্চ কর্ণিনা কর্ণে বিব্যাধ পরবীরহা। ৩৭॥ তित्रान् विष्क मरङ्घारम कर्न मकाञ्चरकाविष्म । হতাশ্বস্থতে বিরথে ততোহনীকমভজ্যত ॥ ৩৮॥ তৎ প্রভগ্নং বলং দৃষ্ট্রা পার্থমাজিস্থিতং পুনঃ। * অভিজ্ঞানায় কৌন্তেয়ং বৈরাটিরিদমক্রবীৎ॥ ৩৯॥

ওম্বীনাং বীহাাদীনাং শিরাংসিকণি শাণি অব্যাৎ অত্ত্রুমাৎ প্রতান্তঃ নফানি অর্ক্রমাৎ অর্ক্রমাৎ অর্ক্রমাৎ অর্ক্রমাৎ অর্ক্রমাণ অর্ক

^{*} অভিজ্ঞানার কৌন্তের মিত্যত্ত অভিপ্রায়ং সমাজারেতি পাঠঃ ধ পুস্তকে।

আস্থার রুচিরং জিফো রথং সারথিনা মুয়া। কতনংযাস্তাসেহনীকমুক্তো যাস্তাম্যহণু স্বয়া॥ ১০॥

অজ্জু ন উবাচ।

* লোহীতাক্ষমরিন্টং যং বৈরাত্রসন্থপশ্যসি।
নীলাং পতাকামান্ত্রিতারথে তিষ্ঠন্তমুন্তর ॥ ৪১ ॥
কপস্যৈতদনীকাঞ্জ প্রাপ্তযুক্তদেবমান্।
এতস্ত দর্শরিষামি শীঘ্রাস্ত্রং দৃচধৃন্থিনং ॥ ৪২ ॥
কমগুলুর্ম জৈ যক্ত শান্তকুল্পমরং শুলং।
আচার্য্য এব হি জোণঃ সর্বশস্ত্রভূতাস্বরং ॥ ৪০ ॥
সদা মমের মান্যক্ষ সর্বশস্ত্রভূতাস্পি।
* স্থাসন্মনা বীর কুরুদ্ধেনং প্রদক্ষিন্ন্ ॥ ৪৪ ॥
অত্রবচাবরোহেরমের ধর্মঃ সনাতনং।
বিদ্বি প্রথমং জোণঃ শ্রীরে প্রত্রিষ্যতি।
ততোহ্স্ত প্রহ্রিষ্যামি নাস্য কোপো ভবেদিতি॥ ৪৫ ॥
ক্যোবিদ্রে চ ধর্ম্মজাত্রে যক্ত দৃশাতে।
আচার্যুদ্যের পুলো বৈ অশ্বণামা মহার্থং॥ ৪৬ ॥
সদা মমের মান্যক্ষ সর্বশস্ত্রভূতামপি।

• এতস্ত হ্বং রথং প্রাপ্য নিবর্ত্তেখাঃ পুনঃ পুনঃ॥ ৪৭॥

 ^{*} লোহিতার্থ মিতাত্র লোহিতামিতি পাঠঃ থ পুস্তকে।
 * স্থপ্রনন্ত্রমনা বীরেতাত্র স্থপ্রসন্ত্র মহাবীর মিতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

য এষ ভুরথানীকে স্থবর্ণক কারতঃ। সেনাগ্রোণ্ ভৃতীয়েণ ব্যবহার্যোণ তিষ্ঠতি ॥ ৪৮ ॥ যক্ত নাগো ধুজাতো দৌ হেমকেতনসংবৃতঃ। ধূতরাষ্ট্রাত্মজঃ শ্রীমানেষ রাজা স্কুযোধনঃ 🖟 ৩৯ 🛭 এতস্যাভিমুখং বীর রখং পররথারুজং। প্রাপর রৈজাহি প্রমাথী যুদ্ধ দুর্মান:॥ ৫ ।। এষ ত্যোৰস্যৰ্শিষ্যাণাং শীঘ্ৰাস্ত্ৰঃ প্ৰথমো মতঃ। এতস্থ দর্শরিষ্যামি শীঘ্রান্তং বিপুলং রণে। ৫১। নাগকক্ষা তু রুচিরা'ধঙ্গাগ্রে যস্য তিষ্ঠতি। এষ বৈকর্ত্তনঃ কর্ণো বিদিতঃ পূর্ব্বমেব তে । ৫২ ॥ এতস্থারথমাস্থার রাধেশ্বর্যা জুরাত্মনঃ। যত্তো ভবেথাঃ সংগ্রামে স্পর্ক্তে হি সদা ময়া॥ ৫৩॥ যস্ত নীল্∤নুস†রেণ পঞ্চতারেণ কেতুনা। হস্তাবাপী রহদ্ধরা রথে তিষ্ঠতি বীর্য্যবান্। ৫৪ ॥ যক্ত তারাকচিত্রোহসৌ রথে ধুজবরঃ স্থিতঃ। যথৈতৎ পাওরং ছত্র বিমলং মূর্দ্ধি তিষ্ঠতি। ৫৫॥ মহতো রথবংশস্থ নানাধ্রজপত।কিনঃ। বলাহকাগ্রে সুর্যো বা য এব প্রমুখে স্থিতঃ ॥ ৫৬॥ হৈমং চক্র।র্কস্কাশং ক্রবচং যতা দুখাতে। 🖐 জাতৰূপশিরস্তাণস্তাসর্যন্তিব মে মন: ॥ ৫৭॥

ব্যবিহার্যোণ ব্যবহার যোগোন অজ্যান্তেনেতার্থঃ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥
নাগককাহন্তাঙ্কিত পতাকাঞ্চাঃ হন্তি স্থানেতান্যে ॥ ৫২ ॥ ৫০ ॥ নীলাম্
সারেণ নীল পতাকা বতা তারাঃ স্বর্গ মণ্ডলানি হস্তাবাপোহস্ত্রাণথ
তথান্ ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ স্থোবা স্থাইব ॥ ৫৬ ॥ ৫৭ ॥

^{*} জাতরূপ শিরস্তাণং মনন্তাপয়তী বমে ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

এব শান্তনবো ভীন্নঃ সর্বেষাং নঃ পিভামহঃ।
রাজন্রিরা বিরুদ্ধস্ত তুর্য্যোধনবশানুগঃ । ৫৮ ।
পশ্চাদের প্রযাতব্যো ন মে বিল্লকরো ভবেং।
এতেন যুদ্ধমানস্থ যক্তঃ সম্যক্ত মে হয়ান্ ॥ ৫৯ ॥
ভতোহভাবহদবাগ্রো বৈরাটিঃ সব্যসাচিনন্ ।
যত্রাতিঠং ক্লো রাজন্ যোৎস্থমনো ধনপ্রযন্ ॥ ৬০ ॥
ইতি বিরাট পর্বিনি উত্তরং প্রতি ক্লোচার্যাদীনাং পরিচয়দানে পঞ্চপঞ্চশত্রমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৫ ॥

देवनका (यम छैक्छ।

তান্যনীকান্ত্ৰপ্ত কুৰণামুগ্ৰধবিনাম্।
সক্সপজো যথা মেঘা ঘৰ্মাতে মন্দ্ৰমাৰুতাং ॥ ২॥ তভাগে বাজিনস্তস্থ সমাৰুতাঃ প্ৰহাবিণঃ।
ভীমৰপাশ্চ মাতক্ষান্তোমিরাক্ষ্ণনোদিতাং!
মহামাত্রৈঃ সমাৰুতা বিচিত্রকবচোজ্লাঃ॥ ২॥
ততঃ শক্রঃ স্থ্রগণৈঃ সমাৰুত্ব স্থানিম্।
সহেপোয়ান্তনা বাজন্ বিশ্বাশ্বিমক্তাং গণৈঃ॥ ৩॥

1 05 1 00 1 50 1

ইতি বিরাট পর্কনি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চ পঞ্চাশতমোহধান্তঃ॥ ৫৫॥

তানীতি ঘর্মাতে প্রারট কালে ॥ ১ ॥ ২ ॥ সমাক্ষ বিমান মিতি শেষঃ স্থদর্শনং শক্রসমাধ্যমং উপায়াৎ স্থদর্শনো হরেশ্চক্রে দ্বীপে শক্রসমান্ গমে ইতি মেদিনী স্থদর্শনং যাম্মিতানো ॥ ৩ ॥

তদ্বেরকার্মার্কমহে রেগসমাকুলম্। শুশুভেহত্ত বিনিশু ক্তং " গ্রহানামিব মণ্ডলম্ ॥ ৪ ॥ অস্ত্রাণাঞ্চ বলং তেবাং মানুষেষু প্রযুজ্যতাম্। ভচ্চ হোর মহাযুদ্ধ ভীরাজ্জু নসমাগমে। দ্রষ্ট মঙ্গাগতা দেবা বিমানেঃ স্থৈঃ পৃথক্ পৃথক। ৫॥ শতিং শতিসহজাণা মত স্থা হিরণা্যী। মণিরত্নময়ী চান্যা প্রাসাদমুপধারয়ৎ॥ ৬॥ ভত্ত কামগম দিবাং সর্বারত্রবিভূষিতম্। বিমান্ দেবরাজন্য শুশুতে খেচর শুভম্ ॥ ৭ চ তত্র দেবাস্ত্রযন্ত্রিং শত্তিষ্ঠন্তি সহবাদবাঃ। পক্ষর্কা রাক্ষদাঃ সর্পা: পিতৃর 🕶 মহর্ষিভিঃ ॥ ৮ ॥ তথা রাজা বস্থমনা বলাক্ষঃ স্থাতর্দ্দে। অষ্টকশ্চ শিবিশৈচৰ ষ্যাতিৰ্নছ্ষো পয়ঃ ॥ ৯ ॥ মনুঃ † কুপো রযুর্ভারু: † কুফাক্ষ: সগরঃ শল: ١ বিমানে দেবরাজন্ম সমদৃশ্রন্ত স্থাভাঃ ॥ ১০॥

তৎমগুলং সভূমিভাগঃ গ্রহাণাং মণ্ডল বিব রতং শুশুভে ॥ ৪॥ ৫॥ শভ সহস্রাণাং শতং লক্ষ শতং কোটি সংখ্যাঃ স্থাই একাহিরমায়ী স্থাচ যদধারয়ং॥ ৬॥ ৭॥ এয়স্তিংশং স্ফৌবসব একাদশ ক্রাম্বাদশাদিত্যাঃ প্রস্থাতিক বৃষ্ট্ কারকেডিউ ব্যক্ষাং॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥

গ্রহানীমির মণ্ডলমিতাত গাহৈরিবনতশুল মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 ক্পইতাত্ত পুরু রিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
 ক্ষাক ইতাত্ত কুণাখ ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

অগ্নেরীশস্ত্র সোমস্তা বরুণকা প্রজাপতে:। তথা ধাতৃর্বিধাতৃশ্চ কুবেরস্ক ষমস্তাচ ॥ ১১ ।, अलखुरब्धा अक्राप्त । अक्राप्त के जुखुरकांः। ষ্থাভাগ * ষ্থোদেশং বিমানানি চ্কাশিরে। ১২। সর্ব্ব দেবনিকায়াশ্চ সিদ্ধাশ্চ পরমর্বয়ঃ। অৰ্জ্জনক্ষ কুৰণাঞ্চ যুদ্ধ দেই মুপাগতাঃ॥ ১৩ । [निवारितार के उठ मालानित शक्तः श्रुप्तारिय मर्खभः। প্রসার বসন্তাতো বনানামিব ! পুষ্পাতাম্॥ ১৪॥ ** রক্তারক্তানি দেবানাং সমদৃ**শান্ত** তিষ্ঠতাম্। আতপত্রাণি বাসাং দি অজশ্চ'ব্যঞ্জনানি চ ॥ ১৫॥ উপাশাম্যক্রজো ভৌমৎ সর্বাং ব্যাপ্তং মরীচিভি:। पिक्षान् शक्का कुर्या नाम वासुर्या थानं स्मय । ১৬ ॥ প্ৰভাষিত্মিবাকাশং চিত্ৰৰপ্মলঙ্কৃত্য। স্পত্তিঃ স্থিতিশ্চাপি নানারত্রাবভাসিতৈঃ॥ ১৭॥ বিমানৈ কিবিধৈ শিট্ত রূপনী তৈঃ স্থারোজ মৈ:। বজ্রভুচ্ছু শুভে তত্র বিমানস্থঃ সুরৈকা তঃ ॥ ১৮ ॥ ॥ ১১ । অলম্বেশ্বাসেনানাং তৎপ্রভূতীনাং গন্ধর্কাণাং ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ 🥦 1174 11 20 11 24 11 25 11

* ভাগমিতাত্ত মানমিতি পাঠ: খ পুস্তকে।

† তত্তেতাত্ত সর্ব্বেতি পাঠ: খ পুস্তকে।

‡ পুস্পাতামিতাত্ত ভারতেতি পাঠ: খ পুস্তকে।

** রক্তারকানীতাত্ত ভত্তরতানীতি পাঠ: খ পুস্তকে।

বিজ্ঞালাপ মহাতেজাঃ পদ্মোৎপলসমাযুতাম।

* সপ্প্রেক্ষমাণো বলভিন্নাতৃপ্যৎ স্থতমাহবে। ১৯॥

ইতি বিরাটপর্কানি গোহরণপর্কানি দেবানামাগমনে

বঁট্ পঞ্চাশস্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৬॥

देवभम्भाशम छेदाह।

দৃষ্ট্ব। ব্যুচান্যনীকানি কুৰণাং কুৰুনন্দন:।
তত্ৰ বৈরাটিমামস্ত্র্য † পার্ধোবচনমন্ত্রবীৎ॥ > ॥

া জান্ত্রদমন্ত্রী ব্লী হজে যত্ত প্রকাশতে।
তথ্য দক্ষিণতো যাহি রূপঃ শার্দ্ধতো যতঃ॥ ২॥
বৈশ্লপায়ন উবাচ।

ধনপ্রের্চঃ প্রান্থ বৈরাটিস্থ্রির্ভিন্তদা।
হয়ানুজতসঙ্কাশান্ হেমভাগুলচোদয়ৎ॥ ৩॥
আরুপূর্নিটা তু তৎসর্কমাস্থার জবমুন্তমমু।
প্রাহিণেচন্দ্রসঙ্কাশান্ কুপিতানিব ভান্ হয়ান্॥ ৪॥
স গত্বা কুরুদেনায়াঃ সমীপং হয়কোবিদঃ।
পুনরাবর্ভয়ামাস ভান্ হয়ান্ বাতর হেনঃ॥ ৫॥

11 29 II

ইতি বিরাট পৃষ্ধনি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে ধট্-পঞ্চাশত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৬॥

দৃফেতি ॥ ১॥ ২॥ ছেমভাগুল, অর্ণলঙ্কারান্ ॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥

^{• *} সংপ্রেক্ষমাণোৰ লভিন্নাতৃপ্যং স্থতমাহবে ইত্যত্ত বিপ্রেক্ষ্য মাণো বহুভিনাতৃপ্যং স্থ মহাহবমিতি প্লাঠঃ খ পুস্তকে।

[†] পার্থোব্চন মত্রবীদিত্যত্ত পাওবোহথাত্রবীদিদ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

‡ জালুন্দেত্যস্য প্রাক অর্জুন্টবাচেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

প্রদক্ষিণমুপার্ভ্য মপ্তলং স্ব্যুমের চ। কুৰন্ সম্মোহয়ামাস মৎস্যো যানেন তত্ত্ববিৎ ॥ ৬॥ ক্রপস্য রথমাসাদ্য বৈরাটিরকুতোভয়ঃ। প্রদক্ষিণমুপারত্য ভম্বো তস্যাগ্রতো বলী॥ १॥ ততোহজুনঃ শশুবরং দেবদন্তং মহারবম। প্রদধ্যে বলমাস্থায় নাম বিশ্রাব্য চাত্মনঃ ॥ ৮ । তস্য শব্দো মহানাসীদ্ধম্যমানস্য জিঞ্চনা। তথাবীর্ঘ্যবতা সংখ্যে পর্বতস্যেব দীর্ঘ্যতঃ॥ ৯॥ পুজরাঞ্চিত্রির শঙ্খ পুরুরস্তে সদৈনিক।।। অর্জুনেন তথাধাুাতঃ শতধা যন্ন দীর্য্যতে। ১০॥ দিবমারত্য শব্দস্ত নির্তঃ শুশ্রুবে পুনঃ। স্ফো মঘৰতা বজ্ঞঃ প্রপতন্নির পর্বতে। ১১। এতি সান্তরে বীরো বলদর্পসমন্তি:। অজ্বং প্রতিরক্ষা রাপঃ পরম তুর্জয়ঃ। 🤻 অমুষ্যমাণস্ত॰ শব্দং কুপঃ শার্দ্বতস্তথা ॥ ১২ ॥ অজ্রেন্ প্রতি স্বর্রো যুদ্ধার্থী স মহারথঃ। মহোদ্ধিজমাদায় দধ্যৌ বেগেন বীর্ঘাবানু ॥ >৩ ॥ . স তু শব্দেন লোকা~জ্বীনারত্য রথিনাং বরঃ। ধনুরাদায় স্থমহজ্জাশক্ষকরোত্তদা॥ ১৪॥

মংস্যঃ উত্তরঃ ॥৬॥৭॥৮॥৯ ॥১০॥ বজঃ অণ্নিঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ মহেদ্দিধিজেং শৃংখং । ১০॥১৪॥ *

^{*} অম্বামাণ ইতাদা প্ৰাক্ অৰ্জনং প্ৰতিশংবন্ধ ইতি চুৱাদ্বাং ক পুস্তকে নাস্তি।

(छो #वीर्वो सूर्वानकारमो (याष्मामारनो महावरलो । শারদাবিব জীমূতো ব্যরোচেতা - ব্যবস্থিতৌ । ১৫॥ ততঃ শারদ্বতন্ত্র পথিং দশভিরাশুগৈঃ। বিবাধে পরবীরত্মং নিশিতৈর্দ্মভেদিভিঃ ॥ ১৬ ॥ পার্থে। হপি বিদিত শোকে গাণ্ডীবং পরমায়ুধম্। বিক্ষ্য, চিক্ষেপ বহুরারাচাক্মর্মভেদিন: ॥ ১৭ ॥ কানপ্রাপ্তাঞ্জিতৈকাবৈর্নারাচানুক্তভোজনান্। ক্লপশ্চিচ্ছেদ পাৰ্থস্য শতশোহ্থ সহস্ৰশःূ॥ ১৮॥ ততঃ পার্যস্ত সংক্রুন্ধঃ † শীঘ্রাক্রব্রং বিদর্শয়ন্। पिभाः প্রাচ্ছাদয়দাবৈ: প্রদিশ**শ্চ মহারথঃ**! একচ্ছায়মিবাক শং ‡ কুর্বন থগতঃ প্রভুঃ॥ ১৯॥ প্রাচ্ছাদয়দমেয়াত্মা পার্থঃ শরশতৈঃ রূপম্। স শবৈর্কিক: কুকঃ শিবৈত্রগিশিখে।পবিম: ॥ ২ । । ভূর্ণং শতসহত্রেণ পার্থমপ্রতিমৌজ্সম্। व्यक्तिञ्चा महाञ्चानः ननाम नमरत कूषः॥ २०॥ ততঃ কনকপ্রবাত্রেবীর সমতপ্রভিঃ । ত্বরন্ গান্তীবনিশ্র্তৈরজ্জুনস্তস্য বাজিন:॥ ২২॥

রথৌরথিনো ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ক্রক পর্ব্বাইগ্রঃ কনক লিপ্ত ফলকৈঃ ॥ ২২॥ •

🗓 কুর্মনুখ গত প্রভুরিতাত্ত অকরে।ং সর্মতঃ প্রভুরিতি পাচখ গুস্তকে।

^{*} বীরাবিতাত রথাবিতি পাঠ: খ পুস্তকে।

' শ শী এব্সত্ত বিদর্শয়রিতাত চিত্রান্মাগোন্প্রদর্শয়রিতি পাঠ: খ
পুস্তকে।

'

চত্রভিশ্চত্রস্তীকৈরবিধ্যৎ পরমেষ্ভি:। * তে হয়া বিশিথৈ: ক্ষণ্টা জলদ্ভি: পাবকোণমৈঃ। উৎপেতৃঃ সহসা সর্কে কুপঃ স্থানাদথাচ্যবৎ।। ২৩॥ চ্যুতন্ত গৌতমৎ স্থানাৎ সমীক্ষ্যা কুরুনন্দনঃ। নাবিধ্যৎ পরবীরত্নে। রক্ষমাণোহ্স্য গৌরবম্॥ ২৪॥ ম তুলকা পুনঃ স্থানং গৌতমঃ সব্যাচিনম। বিব্যাধ দশভিব্যানৈস্কুরিতঃ কঙ্কপাজিভঃ॥২৫॥ ততঃ পার্থে। ধনুস্বস্য ভালন নিশিতেন চ। চিচ্ছেদৈকেন ভূয় 🕶 হস্তাবাপমথাহরৎ ॥ ২৬ ॥ व्यथाना करहर वारिनिर्मिटि श्रीश्री किनि । ব্যধমন্ন চ পার্থেহিদ্যা শরীরম্বপীড্যুৎ॥ ২৭॥ তম্য নিশ্ম চামানম্য ক্রচাৎ কায় আবভৌ। সমুয়ে মুচ্যমানদ্য সর্পদ্যেব তন্তুর্বধা ॥ ২৮॥ ছিলে ধরুষি পার্থেন সোহন্যদাদায় কার্মাকুম্। চকার গৌতমঃ সজাং তদদুত্মিবাভবৎ॥ ২৯। স তদপ্যস্য কৌন্তেয়ন্চিচ্ছেদানতপৰ্কা।। धवमनानि हालानि वहूनि मृह्ह्छवर। • শারদ্বত্য্য চিচ্ছেদ পাওবঃ পরবীরহা ॥ 🗽 ॥ স চ্ছিন্নধনুরাদায় রথাচ্ছক্তিৎ প্রতাপবান । প্রাহিণোচ্চাপি পার্থায় প্রদীপ্তামশনীমিব।। ৩১॥

^{*} তেছয়া বিশিথৈঃ স্পৃষ্টা জ্বাড়িঃ পাবকোপন্মরিত্তে তেছয়ানি শিতেরাবৈজ্বাড়িরিব পর্মানিতি পাচঃ খ পুত্তকে।

তামজ্জু নস্তদায়ান্তীং শক্তি ৎহমবিভূষিতাগু। বিয়কাতাং মহোলকাভাং চিচ্ছেদ দশভিঃ শরৈঃ॥ ৩২॥ সাপতদ্দশধা ছিল্লা ভূমৌ পার্থেন ধীমতা॥ ৩০॥ যুগপদ্ধৈৰ ভল্লৈস্ত তঙঃ সজ্যধনুঃ রূপঃ। তমাশু নিশিতেঃ পার্থং বিভেদ দশভিঃ শরৈ:॥ ৩৪॥ ততঃ পার্থোমহাতেজাঃ শরান্থশিখোপমান্ 1 চিকেপ সমরে কুদ্ধস্রয়োদশ শিলাশিতান্॥ ৩৫॥ অথাক্ত যুগমেকেন চুতুর্ভিশ্চতুরো হয়ানু। ষষ্ঠেন চ শিরঃ কাযাচ্ছরেণ রথসার্থে। ৩৬॥ ত্রিভিস্তিবেণুং সমরে দাভাগ্যকং মহারথ:। षाम्दर्भन ह जल्लन हकर्ज्य धंत्र जथ।। ७१॥ ততো বজনিকাশেন ফাল্গুনঃ প্রহুসরিব। ত্রাদেশেনেন্দ্রমঃ কুপৎ অক্ষ্যস্যবিধ্যত ॥ ৩৮॥ স ছিন্নধনা বির্থো হতাস্থো হতসাক্থিঃ। গদাপাণিরবপ্লভ্য ভূর্ণ চিক্ষেপ তাং গদাম। ৩৯। সা তুমুক্তা গদা গুরুষী রূপেন স্থপরিষ্কৃত।। অর্জুনেন শরৈরু রা প্রতিমার্গমথাগমৎ॥ ৪০॥ তন্ত্র যোধাঃ পরীপুদতঃ শার্ঘতমমর্থাম। সর্বতঃ সমরে পার্থং শর্বধৈরবাকিরন ॥ ৪১॥ ততো বিরাটস্য স্থৃতঃ স্বামার্ত্য বাজিনঃ। यमकः, मखनः कृषा जान् (यावान् श्राजाताव्यः ॥ ४२ ॥

। ৩২ । ৩৩ । ৩৪ । ৩৬ । ৩৭ । ৩৮ । ৩৯ । নুরা দ্রীকৃতা প্রতিমার্গং বিপরীত মার্গং অর্মাৎ পরার্ভ্তের্থঃ । ৪০ । ৪১ । সব্যং আর্ত্য প্রদক্ষিণং ক্রেত্যথঃ 'যমক ০ শত্রাং নিরোধকং মণ্ডলং ক্রায়িমন্কতে শক্রপম্নিতো লজ্জিতন্তিষ্ঠ তে । ৪২ ॥

ততঃ কুপমুপাদায় বিরথং তে নরর্ষভাঃ।
অপজগ্ম, শহাবেগাৎ কুন্তীপু জ্রাদ্ধন প্রঞাধ ॥ ৪৩॥
ইতি বিরাটপর্কাণি গোহরণপর্কাণ কুপাপ্যানে সপ্তপঞ্চাশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৭॥

বৈশস্পায়ন উক্ত।

ক্পেহপনীতে দোণস্ত প্রগৃহ সশরং ধরুঃ।
অভ্যদ্রবদনাধ্বাঃ শেশিখিং শ্বেতবাহনশ্॥।

শ তু রুকারথং দৃষ্ট্বা গুরুমায়ান্তমন্তিকাং।
অর্জুনো * রথিনাং শ্রেষ্ঠ উত্তরং বাক্যমত্রবীং॥২॥

অজ্ঞ্ন উবাচ।

যুক্তবা কাঞ্চনী বেদী † প্রদীপ্তাগ্রিশিখোপনা।
উচ্ছি তা প্রবরে দণ্টে পুতাকাভিরলস্কৃতা।
তত্র মাং বহু ভক্রং তে দ্যোনাকায় সার্থে॥ ৩॥
অশ্বাঃ শোনাঃ প্রকাশন্তে বৃহত্তশ্চারুবাহিনঃ।
স্থিপবিক্রুমসন্ধাশাস্তামাস্যাঃ প্রিয়দর্শনাঃ।
যুক্তা রথবরে যুদ্য সর্বশিক্ষাবিশারদাঃ॥ ৪॥

অপজনাুনীতবন্তঃ ॥ ৪৩ ॥

ইতি বিরাট পর্ঝান নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভারদ্বীপো সপ্ত-পঞ্চাশতমোহসুনায়ঃ ॥ ৫৭॥

কুপ ইভি ॥১॥২॥৩॥৪॥

* রথিনামিতাত্ত জলতা মিতি পাঠঃ খ গুস্তকে। ক প্রদীপ্তাগ্রিশিখোপমেত্যত্ত হজেষদ্য প্রকাশতে ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে। দীর্ঘবাহুর্গহাতেজা বলরপসমন্তিঃ।
সর্বলোকেয়ু বিখাতো " ভারদ্বজেঃ প্রতাপবান্॥ ৫॥
বৃদ্ধা তুল্যা হুশনসা বৃহস্পতিসমো নয়ে।
বেদান্তথৈব চত্বারো ব্রদ্ধচর্যাৎ তথৈব চ॥ ৬॥
সসংহারাণি দিব্যানি সর্বাণাস্ত্রাণ্র মারিষ।
ধনুর্বেদশ্চকাৎ স্থান যমিনিত্যং প্রতিষ্ঠিতঃ॥ ৭॥
কানা দমশ্চ সত্যঞ্জ আনুশংস্যামথ জ্বিষ্।
এতে চান্যে চ বহুবো যমিনিত্যং দিলু গুণাঃ॥ ৮॥
তেনাহং যেজুমিচ্চামি মহাভাগেন সংযুগে।
তক্মান্ত্রং প্রাণয়াচার্যাৎ ক্রিপ্রয়ন্তর বাহুয়॥ ৯॥

বৈশলাক্ষন উবাচ।

জর্জুনেনৈবমুক্তন্ত বৈরাটির্হেমভূষণান্।
চোদয়ামাস তানস্থান্ ভারশ্বাজরথৎ প্রতি॥ ১০॥
তমাপততং বেগেন পাগুবং রথিনাশ্বরম্।
ডোলঃ প্রত্যাদ্বযৌ পার্থৎ মন্তো মন্তমিব দ্বিপম্॥ ১১॥
ততঃ প্রাধ্যাপয়জ্জ্বাৎ ভেরীশতনিনাদিতম্।
প্রচুক্ষুভে বলং সর্বামুদ্ধত ইব সাগরং॥ ১২॥
তথ শোণান্ সদৃষ্যংস্তান্ হৎসবর্ধের্মনোজবৈং।
মিশ্রিতান্ সমরে দৃষ্ট্যা বাসায়ন্ত রণে নরাং॥ ১০॥
তৌ রথৌ বীর্যাসম্পন্নো দৃষ্ট্যা সংগ্রামমূর্দ্ধনি।
আচার্যাশিব্যাবজিতৌ ক্তবিদ্যৌ মনস্বিনৌ॥ ১৪॥

॥,৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ প্রতিদ্বন্ধি জেণিার্ক্রয়োধা-জিনাং মিশ্রণে নাতি সানিধ্যাদ্বিশ্যোজাতঃ॥ ১৩॥ ১৪॥

^{*} বিখ্যাত ইত্যত্ত বিক্রান্ত ইতি পাঠঃ খ প্রস্তকে।

ममाञ्चिरको छमारनग्रनार (जानभारशे म्हायलो । দৃষ্টা প্রাকম্পত মুহুর্ভরতানাং মহদ্বলম্॥ ১৫॥ হর্ষযুক্তন্ততঃ পার্থঃ প্রহুসন্নিব বীর্যাবান্। র্থ্ র্থেন ফ্রোণ্স্য সমাসাদ্য মহার্থ: ॥ ১৬॥ অভিবাদ্য মহাবাহঃ " সান্তুপূর্মমেদণ বচঃ। উবাচ শ্লক্ষয়া বাচা কৌন্তেয়ঃ পরবীরহা॥ ১৭ ॥ উষিতাঃ স্মো বনে বাসং প্রতিকর্মাচিকীর্ঘরঃ। कां पर नाईनि नः कर्जुः मनाममत्रेज्ञ श्र ॥ ३৮ ॥ অহন্ত প্রহার প্রার্থামি তেইন্ট। • ইতি মে বৰ্ততে বুদ্ধিস্তত্বান্ কৰ্তুমুহতি ॥ ১৯ ॥ ততোহলৈ প্রাহিণোদ্ধোন: শুরানিধিকবিংশতিম। অপ্রাপ্তাংকৈর তানু পার্থশিচছেদ ক্লতহস্তবং॥২० ততঃ শরুসহস্রেণ র্থাৎ পার্থাস্য বী্র্যাবান্। ' অবাকিরন্ততো দ্রোগং শীঘ্রমন্ত্রং প্রদর্শরন্॥ ২১॥ হয়াংশ্চ রক্ষতপ্রথান্ কঙ্কপজৈঃ শিলাশিতঃ। অবাকিরদমেয়ালা পার্থ সংকোপয়লিব ॥ ২২ ॥ এবং প্রবরতে যুদ্ধ ভারদাঞ্জকিরীটিনোঃ। ় সমং বিমুঞ্জোঃ সংখ্যে বিশিখানগ্নিতেজসঃ॥ ২৩॥

^{*} সাস্ত্রেতাত সামেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

তাবুভৌ খ্যাতকৰ্মাণাবুভৌ ৰায়ুসমৌ জবে। উভৌ দিব্যাস্ত্রবিদ্ধ সারুভাবতুলতেজসৌ। ক্ষিপত্তৌ শরজালানি মোহয়ামাসত্র পান ॥ ২৪॥ ব্যস্ময়স্ত ততো যোধাঃ সর্কে তত্ত্র সমাগতাঃ। শরান্ বিস্জতোস্তূর্ণ সাধু সাধিত্যপূজয়ন ॥ ২৫॥ ट्यांनर 'हि ममदत देवारता योक् महिंड का खुनार। রৌদ্রঃ ক্ষাত্রিরধর্ম্মো হয়ং গুরুণা যদযুধ্যত। ইত্যক্রেবন্ জনান্তত্র সংগ্রামশিরসি স্থিতাঃ॥২৬॥ বীরো তাবভিদংরকো সন্নিক্ষেটা মহারথো *। ছাদয়েতাং শরব্রাতৈরন্যোন্যুমপরাজিতৌ । ২৭ ॥ বিক্ষার্য্য স্থমহচ্চাপং হেমপ্রষ্ঠৎ ছুরাসদৃদ্। ভারদ্বাজোহথ † সংকুদ্ধ ফাল্গুনং প্রত্যযুধ্যত॥ ২৮॥ স শায়কমথৈজ । লৈরজ্জ্নক্ম রথং প্রতি। ভারুমন্তিঃ শিলাধৌতৈর্ভানোঃ প্রাচ্ছাদরং প্রভাম ॥ ২৯ ॥ পার্থঞ্জ স্থমহাবাহুর্দ্মহাবেগৈর্মহারথঃ। বিব্যাধ নিশিতৈকাবৈণক্ষেঘে৷ রুষ্টোব পর্বতম্ ॥ ৩০ ॥ তথৈব দিব্যং গাণ্ডীবং ধনুরাদায় পাণ্ডবঃ। শক্রমং বেগবান্ হুঠে। ভারসাধনমুত্তমম্ ॥ ৩১॥

বিহুষৌ বিশ্বাংসো ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৮ ॥ শিলাগৌতেঃ দৃষ্দি তেজিতৈঃ ॥ ২৯॥ ৩০॥ ভার সাধনুং শক্রমর্দ্দন ক্ষমং অচ্ছেদ্যমিত।র্থঃ ॥ ৩১॥

রংাবিতাত্র ভুঞাবিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
 শ সংকুদ্ধ ইতাত্র সংবক্ক ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

বিসসজ শরাৎ শিত্তান্ স্বর্ণবিক্ষতান্ বহুন্। নাশয়ন শরবর্ষাণি ভারদ্বাজন্ত বীর্যাবান। ভূৰ্ণ চাপবিমুক্তানি তদদ্ভভমিবাভবং ॥ ৩২ ।। म तर्थन हत्नु भार्यः त्थकनीरमः धनक्षमः। যুগপদিকু সর্বান্ত সর্বতোহস্ত্রাণ্যদর্শয়ৎ॥ ৩০॥ একচ্ছায়মিবাকাশং বাবৈশ্চক্তে * ধনপ্তয়ঃ। নাদৃশ্যত ততো ছোণো নীহারেণের সংরুত॥ ৩৪॥ তম্যাভবত্তদাৰূপং সংবৃত্যা শ্লোভামঃ। জাজ্বামানন্ত যথা পর্বতন্ত্রেব সর্বতঃ । ৩৫॥ দুষ্ট্র তু পার্থস্থ রণে শরৈঃ স্বর্থমার্তম্। স বিক্ষার্যাধনুশিত্র মেঘন্তনিত্রনিম্বনম্। ৩৬॥ অগ্রিচক্রোপম বোরং ব্যক্ষ্ত্রপরমায়ুধম। ব্যশাত্যচ্চরাংস্তাংস্ত দ্রোণঃ সমিতিশোভনঃ॥ ৩৭॥ মহানভূত্ততঃ শব্দো রুশানামিব দিছতাম্॥ ৩৮॥ काञ्चनमप्रदेशः পুर्श्वान्धवैष्ठाशविनिर्भरेखः। প্রাচ্ছাদয়দমেয়াল্লা দিশঃ সূর্য্যস্ত চ প্রভাষ্ ॥ ৩৯ ॥ ততঃ কনকপুস্থানাং শরাণাং নতপর্বাণায়। বিষক্ষরাণাং বিষতি দুশ্যন্তে বহবো ত্রজাঃ॥ ৪०॥ দ্রোণস্থ পুংখদক্তাশ্চ প্রভবন্তঃ শরাসনাৎ ১ একো দীর্ঘ ইবাদুশ্রদাকাশে সংহতঃ শর: ॥ ৪১॥ এবং তৌ স্বর্ণবিক্ষতান বিমুঞ্চত্তো মহাশরান্। আকাশং স্কুতং বীরাবুল্ফাভিরিব চুক্র তুঃ ॥ ৪২ ॥ •

1 02 1 00 1 08 1 00 1 00 1 09 1 09 1 05 1 80 1 80 1 82 1

^{*} ধনঞ্জ ইত্যত্র সমন্তত ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

শর্বিত্যে। শচ্বিবভুঃ কল্পবি≨িণবাসসঃ। পংক্তাঃ শর্দি থস্থানীং হংসানাঞ্চরতামিব ॥ ৪৩ ॥ যুদ্ধ সমভবস্তত সুস্পর্কং মহাত্মনোঃ। জে। পা গুরুষোর্ঘেরিং রুজ্রবাসবয়ে।রিব ॥ ৪৪ ॥ তৌ গজাবিব সংক্রম্বৌ বিষাণাজ্যে পরস্পর্ম 1 শরৈঃ পূর্ণায়তোৎস্টেরন্যোন্যমভিজন্ম হুঃ ॥ ৪৫ ॥ তৌ ব্যবাহরতাং * শূরো সৎরকৌ রণশোভিনৌ। উদীরয়ন্তো সমরে দিব্যান্যস্তাণি ভাগশং ॥ ৪৬ ॥ অথ স্বাচাৰ্য্যমুখ্যেন শ্রান্ স্ফান্ শিলাশিতান্। नावाहम्ब्रिटक्वारेनबर्द्धाता क्रम्जार वत ॥ ८१ ॥ দশ্রন্ বীক্ষমাণানামস্ত্রমুগ্রেপরাক্রমः। ইষুভিন্ত র্নাকাশং বছভিক্ষ সমার্ণোৎ ॥ ৪৮॥ জিঘাংসন্তং নরব্যাত্রমর্জ্রন তিগ্নতেজসম। আচার্য্যমুখ্যঃ সমরে দ্রোণঃ শিক্তভুত্যমরং। অর্জুনেন সহাক্রীডচ্ছরৈঃ সন্নতপর্বভিঃ॥ ৪৯॥ पिवानाञ्चानि वर्षस्य । जित्रान् देवजुन्त तरा। चरेळातळानि मःवाद्यां काल्डनः ममरयाध्यः ॥ ८०॥ তয়োরাগীৎ সংপ্রহারঃ কুদ্ধযোর্নর সংহয়োঃ। 🦠 व्यमिति । १० । प्रमान वेद्यातिव ॥ १० ॥

দা ৪০॥ ৪৪॥ বিষাণা আৈদভা আৈঃ ॥ ৪৫॥ অবাহরতাং ব্যবহারং ধর্মযুদ্ধং কৃতবন্তে । ॥ ৪৬॥ ৪৭॥ ৪৮॥ জিঘাং স্তাপ্যৰ্জনেন স্হবাং সল্যাৎ স্বয়ং ্সক্রডংনসুকুরোহভূং ॥ ৪৯॥ ৫০॥ ৫১॥

^{*} শূরাবিত্যত্ত রুদ্ধে ইতি পাঠঃ খ প্রস্তকে।

† তিমন্থিতুমুলে রণ ইত্যত্ত ভারম্বাজো মহারণ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

1 60 11 65 11

এক্রণ বায়ব্যমাগ্রেয়মন্ত্রমন্ত্রেণ পাওবঃ ৮ জোণেন * মুক্ত মাত্রস্তাসতি সা পুনঃ পুনঃ ॥ ৫২ ॥ এবং শুরৌ মহেষাসৌ বিস্ফলতৌ শিতাঞ্রান্। একছার^ চক্রবুস্তাবাকাশ্র শরর্ফি;ভঃ। ৫০॥ তত্রার্জ্জুনেন মুক্তানাৎ পতিতানাং শরীরিষু। পর্বতেম্বি বজাণাং শরাণাং শ্রাণতে স্থনঃ॥ ৫৪॥ ততো নাগা রথাকৈব বাজিনক । বিশাম্পতে। শোণিতাক্তা ব্যদৃশ্যন্ত পুঞ্চিতা ইব কিংশুকাঃ॥৫৫॥ বাহুভিশ্চ সকেয়ুরৈবিচিত্রৈশ্চ মহারথৈঃ । স্থবর্ণ, চিত্রৈ: কবচৈর্গতি স্ফাপি নিপাতিতৈঃ ॥ ৫৬ ॥ যোধৈশ্চ নিহতৈত্তত্ত পার্থবাণ্প্রদী উতৈঃ। বলমাদীৎ সমুদ্রান্তং দ্রোণার্চ্জুনসমাগমে ॥ ৫৭ ॥ विश्वारनो जु को दीरहो धत्रुषी आवमाधरन। সপ্ছাদয়েতামন্যোহন্ত ; ততক্ষতুর্থেষুভিঃ ॥ ৫৮ ॥ **তরে** । সমভদ্য দেং তুমুল∿ ভরতর্যভ। ক্রোণকৌন্তেয়যোস্তত্র বলিবাসবয়োরিব॥ ৫৯॥ অথ পূর্ণায়তোৎস্থাটা: শরৈঃ সরভপর্বভিঃ। ব্যদারয়েতামন্যোন্য প্রাণদাতে প্রবর্তিত। ৬০।। অথান্তরীকে নাদে, হভূৎ দ্রোণং তত্র প্রশংসতাম্। তুষ্কর∿ কুতব্ং ক্রেবিশ যদৰ্জ্জুনমযোধয়ৎ ॥ ৬১ ॥ । दर। द७। द३। दव। द७। द०।। उठकरूः की ११ ठकरूः। दु७।। द०।।

প্রমাথিনং মহাবীর্যাং দুর্দ্মফিং তুরাসদম্। জেতারং দেব * মত্রানাং † সর্পাণাঞ্চ মহারথম্। ৬২॥ অবিভ্রমঞ্ শিক্ষাঞ্চ লাঘ্বন দুরপাতিতাম্। পার্থস্য সমরে দৃষ্ট্র। ক্রোণস্যাভূচ্চ বিস্ময়ঃ ॥ ৬৩ ॥ ততে! গাণ্ডীবমুদ্যম্য দিব্যং ধন্তুরমর্ষণঃ। বিচক্ষ রেণে পার্থে। বাছভ্যাং ভরতর্ষভ ॥ ৬३ ॥ তিন্য বাণুময় প্ৰধং শলভানামিবায়তিম। দৃষ্ট্ৰ তে বিশ্মিতাঃ সর্কো সাধুসাধিত্যপূজয়ন্ ॥ ৬৫ ॥ ন চ বাণান্তরে বায়ুরস্য শক্ষোতি সর্পিতৃষ্। অনিশ্ সন্দ্রধানস্য শ্রান্ত্বিস্জতস্তথা ॥ ৬৬॥ मनुदर्भ नाख्र किल्ड পार्थभामम्हा प्राप्त है। ७१॥ 🖠 अथाख्ययुष्क (घारत्र वर्डिमारन स्नाकृत्न। শীঘাচ্চীঘতরঃ পার্থ: শর্পনন্যানুদীরয়ৢ৽॥ ৬৮॥ ততঃ শতসহস্রাণি শরাণাং নতপ্রাণাম। যুগপৎ প্রাপত ত্রুব দ্রোণস্য রথমন্তিকাৎ ॥ ৬৯॥ আকীর্য্যাণে জোণে তু শরৈর্গান্তীব্ধন্থনা। হাহাকারে। মহানাসীৎ দৈন্যানাং ভরতর্বভ ॥ १०॥ পা ওবসাত শীঘাত্রং মঘবা প্রত্যপুজন্নৎ। গল্পরসংশরসংশ্রেষ যে চ তত্র সমাপতাং॥ १১॥

॥ ৬২ ॥ ৬৩॥ ৬৪॥ আয়িন্তি সন্তৃতিং ॥ ৬৫॥ ১৬॥ ৬৭॥ ৬৮॥ ৬৯॥ ॥ ৭০॥ ৭১॥

^{*} মত্যানামিতাত্র দৈত্যানামিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

প সপ্থানামিত্যত্ত্বংসর্কোমিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

1 অধান্ত যুদ্দে ছে,রেডু ইত্যত্ত্ব তথা শীজান্ত যুদ্দেডু ইতি পাঠঃ খ
পুস্তকে।

ততো রুন্দেন মহতা রুথানা । রুথ্যুথপঃ। আচার্য্যপুত্র: সহসা পাণ্ডব প্রপ্রত্যবারয়ং॥ এই। অশ্বথামা ত তৎকর্দ্ম হৃদয়েন মহাত্মনঃ। পুজয়ামাস পার্থস্য কোপঞ্চাস্যাকরোন্ত,শম ॥ ৭৩॥ স মনুবেশমাপনঃ পার্থমভাদ্রবদ্রণে ! কিরন্ শরসহস্রাণি পর্জন্য ইব রুফিমান্॥ १८॥ আর্তা তু ম**হাছাহর্যতে। ক্রৌ**ণিস্ততো হয়ান্। ' অন্তরং প্রদদৌ পার্থে। ছেণেক্ত বাপস্পি হুন্॥ ৭৫॥ म जू लक् । खुत्र जूर्वमशाया उक्क वरेन ईरेसः। ছিলবর্ণাধ্জঃ শূরো নিক্তঃ পরমেষুভি:॥ ৭৬॥

ইতি বিরাটপর্ঝনি গোহরণপর্ঝনি দ্রোণাপয়ানে অউপঞ্চা-শত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৮॥

देवमञ्चाराम छेवाह।

ততো দ্রৌণির্মহারাজ ! প্রযযাবর্জুনৎ রণে। তং পাৰ্থঃ প্ৰতিজ্ঞাহ * তাক্ষ্যো নাগমিৰৌদ্ধতম্। শরজালেন মহতা বর্ষনাণ ইবাসুদঃ॥ ১ ।

৭২॥ ৭৩॥ ৭৪॥ অনন্তরং অবকাশং 🕽 ৭৫॥ নিক্তঃ প্রাহ্নতঃ॥ ৭৬॥

ইতি বিরাটপর্কাণ নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে অঊ-

• পঞ্চাশতমোহধ্যায়ঃ oar ॥

তত ইতি ॥ ১॥

ভাক্তোনাগ মিত্যত্র বায়্বেগ মিতি পাঁচঃ খ পুস্তকে।

ত্যোদেব সুরদমঃ মৃত্রিপাতো সহানভুং। কিরতোঃ শরজালানি রত্রবাসবয়োরিব ॥ ২॥ ন স্ম স্থায়ে। দিবা ভাতি ন চ বাতি সমীরণঃ। 🌞 শরপাকৈঃ ক্লতে ব্যোগি ছায়াভূতে সমন্ততঃ ॥ 🌣 🛚 মহাংশটেটটাশকো যোধ য়োণযু ধ্যমানয়োঃ। দহতোমিব বেশনামাদীৎ পরপুরঞ্জয় । ৪ ॥ হয়।নস্তাৰ্জ্জনঃ স্কুন্ন ক্তবানপঞ্জীবিতান্। তে রাজন প্রজানন্ত দিশং কাঞ্চন মোহিতাঃ॥ ৫ ॥ ততো দৌণিৰ্মহাবীৰ্য্যঃ পূাৰ্থস্থ বিচরিষাতঃ। विवतः स्कामात्नाका का। कित्र्हम कुरत्व ह। তদক্ষাপুজয়ন্দেবাঃ কর্মা দৃষ্ট্যাতিমানুষম্॥ ৬ । क्तारना ভीश्रम्ह कर्नम्ह कूश्रारेम्हव ग्रहात्थाः। সাধুসাম্বিভিভাষতো পুজয়ন্ কর্মতস্তুত ॥ ৭ ॥ ততো ! দৌণির্ধনুঃ শ্রেষ্ঠমপরুষ্য রথর্মভং। পুনরেবাহনৎ পার্থ হৃদরে কম্বপল্রিভি:॥ ৮॥ ততঃ পার্থো মহাবাছঃ প্রহন্ত খনবত্তনা। যোজ্যামান নব্য়া মৌক্যা গাণ্ডীব্যোজনা॥ ৯॥

॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ন প্রজানত অভভাব আর্থ নচজাতবভঃ ॥ ৫॥ বিবরং রয়ুং॥ ৬ ॥ ৭॥ অপকৃষ্য ,আকৃষ্য ॥ ৮॥ ৯॥ . ''

^{*} শরপাতেঃ কৃতে ইতাত্র শরজালারতে ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

† ধুঁথামানগো রিতাত্ত ছ্নামানগো রিতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

‡ ততোজোনিধ হঃ শ্রেষ্ঠমপক্ষা রথর্বত মিতাত্ত ততোজোনিধ নৃং ব্যক্ষা
বপক্ষমা রথর্বতঃ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ততোহদ্ধিক্রমারত্য তেন পার্থ: সমাগম্ৎ। বারণেনেব মত্তেন মত্তো বারণয়ূথপঃ॥ ১০॥ ততঃ প্রবরুতে যুদ্ধং পৃথিব্যামেকবীরুরোঃ। त्रपार्था घर्षारत्वः स्मारलामहर्षभम् ॥ >> ॥ তৌ বীরৌ দদৃশুঃ সর্বে কুরবে। বিস্ময়ান্বিতাঃ। यूधामारनी महावीर्र्या यूथेशाविव मऋरठी ॥ >२ ॥ त्वो नमाजच वृतीतावरन्यानाः शुक्रवष्टां। শরৈরাশীবিধাকারৈজ্বনিত্রিব পাবকৈঃ ॥ ১৩॥ अक्रमाविचुयी मिरवारे भा खबख महाजानः । তেন পার্থো রণে শ্রস্তস্থৌ গিরিরিবাচলঃ॥ ১৪॥ অশ্রথায়ঃ পুনর্বাণাঃ কিপ্রযন্ত্রান্তারণে। জগ্মঃ পরিক্ষয়ং শীঘ্রমভূত্তেনাধিকোইর্জ্কুনঃ ॥ ১৫॥ ত্তঃ কর্ণো মহচ্চাপণ বিক্নষ্যাভাপিকং রুষা। অবাক্ষিপত্ততঃ শকৌ হাহাকারো মহানভূৎ। ১৬। ততশ্চক্ষুদ্দিধে পার্থে। যত্ন বিক্ষার্যাতে ধরু:। দদর্শ তত্র রাধেয়ং তত্ত্য কোপে। ব্যবদ্ধত । ১৭ ॥ স রোষবশ্যাপন্নঃ কর্ণমেব জিঘাৎ ন্যা। তবৈক্ত বিরুত্তাভ্যাৎ নেত্রভ্যাং কুরুপুঞ্চবঃ॥ ১৮॥ তথা তু বিমুখে পার্থে দ্রোণপুত্রন্থ সায়কান। ত্বরিতাঃ পুরুষা রাজয়ুপাজত্রঃ সহস্রশঃ॥ ১৯॥ উৎস্জা চ্মহাবাহজে বিপুক্ত ব্ধনঞ্জা। অভিচুদ্রাব সহসা কর্ণমেব সপ্রুজি । ২ ।।

অর্দ্ধিত অর্দ্ধি আর্ত্য প্রায় প্রা

তমভিক্রত্য কৌন্তের্ঃ ক্রোধসংরক্তলোচনঃ। কামরন্ দৈরথং তেন যুক্ষ বঁচনমন্ত্রবীৎ ॥ ২১ ॥ ইতি বিরাটপর্বানি গোহরণ পর্বানি অর্জুনাশ্বত্থামযুদ্ধে একোন স্ফিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৯॥

অজ্জন উবাচ।

কর্ণ যতে সভামধ্যে বছ বাচা বিক্থিতম্।
ন মে যুধি সমোহন্তীতি তদিদ সমুপস্থিতম্॥ ১॥
সোহদ্য কর্ণ ময়া সাদ্ধং ব্যবহৃত্য মহামুধে।
ত্তব্যেত্য পরুষা বাচা ধর্মমুহুদুজ্য কেবলম্।
ইনন্ত তুদ্ধর মাননাদৃত্য কিঞ্চন।
তদ্দ্য কুরু রাধের কুরুমধ্যে ময়া সহু॥ ৪॥
যহ সভায়াঞ্চ পাঞ্চালীং ক্লিশ্যমানাং তুরাঅভিঃ।
দৃষ্টবানসি তত্তাদ্য কলম্যাপ্লুছি কেবলম্॥ ৫॥
ধর্মপাশনিবদ্ধেন যম্মা মহিতিং পুরা।
তত্ত্ব রাধের কোপতাবিজয়ণ পশ্য মে মুধে॥ ৬॥

কামরন্ কামরমানঃ ॥ ২১ ॥

হৃতি বিরাটপর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে একোন-যঞ্চিতমোঝ্যায়ঃ॥ ৫৯॥

কর্ণে ভিতেত্রা ॥ ১.॥ ২॥৩॥৪॥৫॥७॥

^{*} জাস্যদে বলমান্ত্রীয় মিত্যত্ত্ব জ্ঞাস্যস্য বলমান্ত্রান মিতি পাঠঃ থ পুস্তকে !

বনে দ্বাদশবর্ষাণি যানি সোঢ়ানি ছুর্মান্টে। তথ্যাদ্য প্রতিকোপস্থা ফলমাপ্প হি সাম্প্রতম্যা ৭ ॥ এহি কর্ণ ময়া সার্দ্ধং প্রতিযুধাস্ব * সঙ্গরে। প্রেক্ষকাঃ কুরবঃ সর্বের ভবস্ত তব সৈনিকাঃ ॥৮ ॥

কৰ্ণ উবাচ।

ব্রবীষি বাচা যথ পার্থ কর্মনৈতৎ সমাচর।

অতিশেতে হি তে বাক্যং কর্ম্মিতং প্রথিতং ভূবি॥ ৯॥

যন্ত্রা মর্ষিতং পূর্বা তদশক্তেন মর্ষিত্র।

ইতোগৃহ্লীম হে পার্থ তবদৃষ্ট্বা পরাক্রমম্॥ ১০॥

ধর্মপাশনিবদ্ধেম যন্ত্রা মর্ষিতং পূরা।

তথৈব বন্ধমালানমবদ্ধমিব মন্যসে॥ ১১॥

গদি তাবদ্বনে বাসো যথোক্তশ্বরেতস্তর্যা।

তত্ত্বং ধর্মার্থবিং † ক্লিফ্টঃ সময়া মোদ্ধ্ মিচ্চিনি॥ ১২॥

যদি শক্রঃ স্বয়ং পার্থ মুধ্যতে তব কারণাং।

তথাপি ন ব্যথা কাচিন্মম স্থাদ্বিক্রমিষ্যতঃ॥ ১৩॥

তারা কৌন্তের কামস্তে নচিরাং সমুপস্থিতঃ।

যোৎস্তানে স্থং ময়া সার্দ্ধমদ্য ক্লিফানি মে বলম্॥ ১৪॥

॥ १ ॥ ৮ ॥ তেতৰ বাক্যং কর্ত্তর্ম অতিগেতে অস্পং কর্ম বাক্যন্তু বছল । মিত্যর্থঃ ॥ ৯ ॥ ইতঃ পরং তব পরাক্তমং গৃহীমতে অদী কুর্মতে ॥ ১০ ॥ -॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥

^{*} মুধ্যম্বেভাত্ত পদ্যম্বেভি প্লাঠঃ ক পুস্তকে। ।

† ক্লিফ ইভাত্ত ক্লঃ সময়া ঘোদ্ধমিদ্দ্দীভাত্ত সময়ং ভেতৃ মিদ্দ্দীভি
পাঠঃ ক পুস্তকে।

অৰ্জ্জন উবাচ।

ইদানীমেব তাবজুং ব্যপুরাতে। রণাম্ম । তেন জীবদি রাধের নিহতস্ত্রুজস্তব ॥ ১৫ ॥ ভাতর মাত্রিস্থা তু ত্যক্তা রণশিরশ্চ কঃ। স্থান্যঃ পুরুষঃ সংস্কৃত্রায়াদেবং ব্যবস্থিতঃ॥ ১৬ ॥

देवमञ्जाशन छेदाह।

ইতি কর্ণং ক্রবন্নের বীভৎস্করপরাজিতঃ।

অভ্যয়াদ্বিস্থজন্ বাণান কায়াবরণভেদিনঃ॥ ১৭॥

প্রতিজ্ঞাহতান কর্ণ * প্রীয়মাণো মহারথঃ।

শরবর্ষেণ মহতা বর্ষ মাণ ইবাস্থদঃ॥ ১৮॥
উৎপেতুঃ শরজালানি ঘারর্শাণি সর্বশঃ।

অবিধাদশান্ বাস্থোশ্চ হস্তাবাপং পৃথক্ পৃথক্॥ ১৯॥

সোহমুধ্যমাণঃ কর্ণস্থা নিষম্ম্যাবলম্বন্য।

নিশিতাজ্ঞেণ চিচ্ছেদ শরেগানতপর্বনা॥ ২০॥
উপাসঙ্গাত্রপালায় কর্ণো বাণমথাপরম্।
বিব্যাধ পাপ্তবং হস্তে তম্য মুন্টিরশীর্যাত॥ ২১॥
ততঃ পার্থো মহাবাছঃ কর্ণস্থা ধনুরচ্ছিন্থ।

স শক্তিং প্রাহিণোত্তিম তাং পার্থো ব্যধমছ্টেরঃ॥ ২২॥
ততো নিপেতুর্বহ্বো রাধেয়্য পদানুগাঃ।

তান গাপ্তীববিনিম্পু কৈঃ প্রাহিনোদ্বম্যাদনম্॥ ২৩॥

॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ অবলং বনং স্ত্রং ডিছেদ ॥ ২০ ॥ ততো-নিষকে মহাতুনীরে পতিতেসতি উপাসলাৎ ক্ষুদ্রতুনীরাৎ স্বদেহ বাহাৎ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩॥

^{*} প্রীরমাণো মহারথ ইত্যত্ত শরান্য্যি শিখো পর্মানিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ততোহস্থাপান্ শরৈকীকৈবীভৎস্প্রির দ্বিনঃ।
আকর্ণমুক্তৈরহনতে হতাঃ প্রাপতন্ ভুবি ॥ ২৪ ॥
অথপেরেণ বাণেন জ্বলিতেন সহৌজসা।
বিব্যাধ কর্নং কৌন্তেরজীকেনোরসি বার্নাবান্॥ ২৫ ॥
তক্ত ভিত্তা তন্তুত্রাণ্শ কারমভ্যগমচ্ছরঃ।
ততঃ স তমসাবিকৌ ন স্ম কিঞ্চিৎ প্রজ্ঞজ্ঞিবান্॥ ২৬ ॥
স গাচবেদনো হিত্বা রন্ং প্রারাত্ব জ্মুখঃ।
ততঃ তিরাটপ্র্নিণি গোহরণ্প্র্নিণি কর্ণশ্রানে

বৈশস্পায়ন উবাচণ

ষ্টিত্রোহ্ধায়ঃ॥ ৬০॥

ততো বৈকর্ত্বন জিল্বা পার্থে। ব্রোটমন্ত্রীং।
এতলাং প্রাপরানীক ব্লুত্র তালো হ্রেণারঃ॥ ১॥
যত্র শান্তনবো ভীলো র্থেইস্মাকং পিতানহঃ।
কাজ্জমাণো ময়া বৃদ্ধং তিঠতামরদর্শন্ঃ॥ ২॥
অথ দৈনাং মহদ্ট্রা হয়নাগর্থাকুলম্।
অব্রীচুত্তরঃ পার্থং প্রতিবিদ্ধঃ শবৈভূশিম্॥ ৩॥
নাহং শক্যামি বীরেই নিয়ন্তং তে ইয়োত্তমান্।
বিধীদন্তি মম প্রাণা মনো বিহ্বল্তীব মে॥৪॥

॥ २८ ॥ २० ॥ २५ ॥ २१ ॥

ইতি বিরাট পর্ব্ধনি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে ব্**ষিত্রো**হধ্যায়ঃ ॥ ৫৯ ॥

তত ইতি 🛭 ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥

অস্ত্রাণাসিহ দিব্যানাং প্রভাবাৎ সংপ্রযুজ্যতাম। স্বয়া চ কুরুভিদৈচৰ দ্রবৃত্তীৰ দিশো দশঃ॥ ৫॥ গল্পেন মুক্তি কেশ্চাব্সি বসাক্ষধিরমেদসাম। বৈধীভূতং মনো এেহ্দ্য 🏶 ত্রাসশৈচব প্রপশ্য তঃ॥ ৬ ॥ অদুষ্টপূর্বঃ শূরাণাং ময়া সম্ব্যে সমাগমঃ। গদাপাত্তন † মহতা শভানাং নিন্দেন চ॥ १॥ मि॰इनि पिक्ट मृहाना॰ शकानाः तुः हिटेउछथा। গাগুবিশকেন ভূশ্মশনিপ্রতিমেন্চ। প্রতিভঃ স্মৃতিশ্বংম বীর প্রনফী মুচচেত্য:॥৮॥ অলাতচক্র প্রিমং মণ্ডলং সতত প্রা। ব্যাক্ষিপ্যমাণং সমরে গাণ্ডীবঞ্চ ‡ প্রপশ্যতঃ। দৃষ্টির্কিচলিতা বীর হৃদয়ং দীর্য্যতীব মে॥ ৯॥ বপুশ্লোগ্রং তব রণে ক্রন্ধুম্ভাব পিনাকিনঃ। ব্যায়চ্চতঃ 🎎 শরান্ ছোরান্ দৃষ্ট্যু ভীর্মে ভবত্যপি ॥ ১• ॥ नाममानः न मक्तानः न मुक्षेत्रः भारतालमान् । ত্বামহং সংপ্রপশ্যামি পশ্যরপি বিচেতনঃ॥ >>॥ অবসীদস্তি মে প্রাণা ভূরিয় দলতীব চ। ন চ প্রতোদণ রশ্মীংশ্চ সংয়ন্তঃ শক্তিরন্তি মে। ১২।

,॥ ৫॥ ৬ ॥ ৭॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০॥ র সক্ষানং নসং দধানং বর্ণ লোপ আর্ষিঃ ॥ ১১॥ ১২॥

^{*} ত্রাসইত্যত্র ভাবেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

া গদাপাতে নেত্যত্র গোধাঘাতেনেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

া প্রপশ্যত ইত্যত্র প্রকর্মতা ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

** শরান্ ধোরানিতাত্র তবভুজ মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

অৰ্জ্জন উগাচ।

মা ভৈষী: স্তম্ত্রাত্মানং ত্মাপি নরপুষ্কব।
অত্যন্ত্রানি কর্মানি ক্রতানি রণমূর্কনি ॥ ১৩ ॥
রাজপুজোংসি ভদ্রতে কুলে মৎস্যায় বিশ্রুতে।
জাতস্ত্রু সকুদমনে ন বিধীদিতুম ইসি ॥ ১৪ ॥
ধ্রতি ক্রা স্ক্রিপুলাং রাজপুজ্র রথে মম।
বুধ্যমানস্য সমরে হ্য়ানু সংযাক্ত শুকু হন্॥ ১৫ ॥

বৈশস্থায়ন উবাচ। 🔥

এবমুক্ত্বা মহাবাছর্কৈরাটি রথগন্তমঃ।

অর্জুনো রথিনাং শ্রেষ্ঠঃ লপুনরেবেদমন্ত্রবীৎ॥ ১৬॥

সেনাগ্রমাশু ভীশ্বস্য প্রাপারকৈতদেব মামৃ।

আচ্ছেৎস্যাম্যহমেত্রস্য ধরুর্জামিপি চাইবে॥ ১৭॥

অস্যুন্তং দিব্যমন্ত্রং মাং চিত্রমদ্য নিশাময়।

শতহ্রদামিবায়ান্তীং স্তর্নায়ন্তোরিব্যুক্তরে॥ ১৮॥

স্বর্ণপৃষ্ঠং গান্তীবং ক্রন্সান্তি কুরবো মম।

দক্ষিণেনাথ বামেন কতরেণ স্থিদস্যতি॥ ১৯॥

ইতি মাণ সঙ্গতাঃ সর্কে তর্কয়িয়ান্তি শত্রং।

শোণিতোদাং রথাক্তিং নান্সনক্রাং জুরতায়াম্।

নদীৎ প্রস্কারিয়ামি প্রলোকপ্রবাহিনীম্॥ ২০॥

পাণিপাদশিরঃপৃষ্ঠবাহুশাখানিরন্তরম্।
বনং কুৰাণাং ছেৎস্যামি শাবুঃ মন্তপ্র্বভিঃ ॥ ২১॥

॥১৩॥১৪॥১৫॥ ১৩॥ ১৭॥ নিশাসের পশা শতভুদাং বিজ্যতং॥১৮॥. ॥১৯॥২০॥২১॥

^{*} প্রনরেবেদমিতাত্র উত্তরং বাক্য মিতি পাঠঃ খ প্রস্তকে।

জয়তঃ কৌরবীং সেনামেকস্য মম ধ্রিনঃ। শত^ মাৰ্গা ভবিষ্যন্তি পাবকস্যেব কাননে।। ২২।। ময়া চক্রমিবাবিদ্ধং দৈনাং দ্রক্ষ্যদি কেবলম্। ইম্বস্ত্রে শিক্ষিত্র চিত্রমহুৎ দর্শয়িতাক্সি তে॥ ২৩॥ অসংভাত্তো রথেতি ঠ সমেষু বিষ্মেষু চ। দিবমার্ত্য তিঠতং গিরিং ভিক্সাং স্ব পজিভিঃ॥ ২৪॥ र्वहिमिन्समा वहनार मर्धारमञ्जाहन श्रुता। পৌলোমান * কালথঞ্জাংশ্চ সহস্রাণি শতানি চ॥ ২৫॥ অহমিন্দ্রিং মুটি॰ বেদানঃ কুতহস্তাম্। প্রগাঢ়ে তুমুলং চিত্রম † ভ্যাশিক্ষং প্রজাপতেঃ॥ ২৬॥ অহং পারে সমুদ্রদ্য হিরণ্যপুর্বাদিনাম্। জিত্বা যটিৎ সহস্রাণি রথিনামুগ্রধন্বিনাম্॥ ২৭॥ भौर्यामानानि कृलानि । श्रद्धाकतन् वार्तिना । ময়া কুৰণাং রুকানি পাত্যুমানানি পূশ্য বৈ ॥২৮॥ ধজরক্ষং পত্তিতৃণ্ রথসিৎহর্ণাযুত্ম। বনমাদীপুরিষ্যামি কুরুণামস্ত্রভেজ্পা ॥ ২৯ ॥

শতং মার্গা ইতি সর্বব্যে মার্গস্যা নিরোধ উক্তঃ সর্বব্যেরা মমবাণা রামিষ্যন্তীত্যর্থঃ ॥ ২২ ॥ আবিদ্ধং ভাষামানং শিক্ষিতং শিক্ষাং ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ,॥ ২৫ ॥ প্রার্গাচ্চে সংকটে চিত্তাং নানাবিধং তুমুলং সঙ্কটি যুদ্ধৎ সর্ববিদ্ধীতিশেষঃ ॥ ২৬ ॥ জিহাজেতুংশক্তঃ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ রথসিৎ হর্গবৈঃ আসমস্তাং, যুতং ॥ ১৯ ॥

^{*} কাল খঞ্জাংশেতাত্ত ক লকঞ্জাংশেতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

† অভ্যশিক্ষমিতাত্ত হাত বিদ্ধীতি পাঠঃ খ গুন্তকে।

‡ কূলানী তাত্ত তুলানী বারিণেতাত্ত বায়ুনেতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

তানহ শুরুধনীডেভা শুরেঃ সন্তপর্বভিঃ। যন্তান্ সকানতিবলান্ যোৎস্যানানবস্থিতান্। একঃ সঙ্কালয়িষ্যামি বজ্ঞপাণিরিবাস্কুরান্ ॥ ৩০ ॥ রৌদ্রং রুদ্রাদহং হস্ত্রে বারুণং বরুণাদ্পি। অস্ত্রমাগ্রেয়মগ্লেশ্চ বারব্য- মাতরিশ্বনঃ। বজাদীনি তথাস্তাণি শক্তাদহমবাপ্তবান॥ ৩১॥ ধার্ত্তরাষ্ট্রং বনং য়োরং নরসিশ্হাভিরক্ষিত্যুর্ অহ্মুৎপাট্য়িষ্যামি বৈরাটে ব্যেতু তে ভয়ম্॥ ৪২ ॥ বৈশস্পায়ন উবাচ। এবমাশ্বাসিতক্তেন বৈরাটিঃ সব্যসাচিনা। ব্যবাগাহদ্থানীক্ ভীম্ ভীমাভিরক্ষিত্ম্ । ৩০ ॥ তমায়ান্ত শহাবাছং জিগীয়ন্তং রণে কুৰন্। অভ্যবারয়দব্যগ্রঃ ক্রুরকর্মাপেগাস্থতঃ ॥ ^৩৪ ॥ ত্বীয় জিফুরুপার্ত্ত ধ্রজং মূলে নাপাত্যং। বিক্লষ্য কলধৌতাগ্রৈঃ স বিদ্ধঃ প্রাপতভূবি॥ ৩৫॥ তং চিত্র মাল্যাভরণাঃ কুত্রিদ্যা মনস্থিনঃ। আগচ্ছন্ ভীমধন্বানং চত্ত্বারস্ত * মহাবলাঃ ॥ ৩৬ ॥ ত্বঃশাসনো বিকর্ণচ ত্বঃসহোহথ বিবিঃশতিঃ। আগত্য ভীমধন্বান বীভৎস্ত্র পর্যাবারয়ন্ । ৩৭॥ ছু:শাসনস্ত ভল্লেন বিদ্ধা বৈরাটিমুক্তরণ। দ্বিতীয়েন।জ্জুনং বীরঃ প্রত্যবিধ্যৎ স্তনান্তরে ॥ ৩৮ ॥ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ তথ পা ব্যবাগাহৎ আলোডিত বান্॥ ৩০ ॥ ৩৪ ॥ উপাহ্নত্য সংমুখীভূয় বিকৃষ্য ছিত্বা ফলধোতিবৈত্রীঃ স্বর্ণ রঞ্জিত ফলকৈবিবিং॥৩৫॥ 1 00 109 100 1

* মহাবলা ইতাত্ত মহারথা ইতি পাঠঃ ক প্রতকে।

তস্য জিঞ্জুকাবারত্য পৃথ্ধারেণ কামুকিন্। চকর্ত্ত গার্কপত্রেশ জাতরূপপরিষ্কৃতম্।। ৩৯॥ অথৈন পঞ্চভিঃ পশ্চাৎ প্রত্যবিধ্যৎ স্তনান্তরে। নোহপ্যাতো রণ্ হিন্ত। পার্থবাণপ্রপীডিত: ॥ ৪০॥ তং বিকর্ণঃ শরৈস্তীক্ষৈগার্দ্ধণত্তৈরজিন্ধগৈঃ। বিব্যাধ পরবীরন্নমর্জুনং ধৃতরাষ্ট্রজঃ । ৪১॥ ততন্তর্মপি কোঁন্তেয়ঃ শরেণানতপর্বিণা ললাটেহভ্যহনভূর্্ স বিদ্ধঃ প্রাপ্তদ্রথাৎ॥ ৪২ । ততঃ পার্থমভিক্রতা ছুঃসহঃ স্বিবিশ্শতিঃ। অব।কিরচ্ছরৈস্তীক্ষৈঃ পরীপ্সুন্ ভ্রতিরং রণে॥ ৪৩॥ তাবুভৌ গাৰ্দ্ধপত্ৰাভ্যা নিশিত্যভ্যাং ধনঞ্জয়ঃ। বিদ্ধা যুগপদব্যগ্রস্তয়োর্জাহানস্থদয়ৎ ॥ ৪৪ ॥ তৌ হতাখো বিবিদ্ধাক্ষো ধৃতরাপ্রাত্মজাবুভৌ। অভিপত্য রুথৈরন্যৈরপনীতৌ পদানুর্গেঃ॥ ৪৫॥ সর্বা দিশশ্চাভাপতদীভৎস্করপরাজিত্য। কিনীটমালী কৌতেয়ো লব্ধলকৌ মহাবলঃ ॥ ৪৬॥ ইতি বিরাটপর্কণি গোহরণপর্কণি অর্জুন ছুঃশাসনাদি যুদ্ধে এক বিষ্টিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬১॥

"॥৬৯॥ এনং হুঃশাসনং ॥৪০ ॥৪১॥৪২॥ ৪৩॥৪৪॥৪৫॥ লাৰালিকঃ: অপ্তাচুত লকঃ॥৪৬॥

> ইতি বিরাট পর্ম্বণি নৈলকণীয়ে ভারত ভাবদীপৈ একষষ্টি-তমেহিধ্যায়ঃ ॥ ৬১॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

অথ গঙ্গম্য দর্বের তু কৌরবাণাং মহারথাঃ । অর্জুনং সহিতা যন্তা: প্রতাবিধ্যন্ত ভারত ॥ ১॥ म माञ्चकपरेयक रिलः मर्वा उल्लाग्य हात्र थान्। প্রাচ্ছাদয়দমেয়াত্মা নীহার ইব পর্বতান ॥ ২॥ नम्खि क महानारेशर इवमारेगक वाकि छिः। ভেরীশস্থানিনাদৈশ্চ স শব্দস্তমুলোহভবৎ ॥ ৩ ॥ * नागाश्वकाशाबिर्डिना (लोशांन कवहानि ह। পার্থস্থ শরজালানি বিনিপ্পেরুঃ সহস্রশং 🕯 🖇 ॥ ত্বরমাণঃ শ্রান্তান পাগুরঃ স্বভৌরণে। মধ্যন্দিনগতে। হর্চিলান শরদীব দিংগকরঃ॥ ৫॥ উপপ্লবন্তি বিত্রস্থা রথেভ্যো রথিনস্তথা। সাদিনশ্বাশ্বপৃষ্ঠেভ্যে ভূমৌ চাপি পদাতয়ः॥ ৬॥ শ্বৈঃ † সন্তাড্যমানানাং কবচানা মহাত্মনাম। তামরাজতলৌহানাং প্রাত্রাসীশ্রহাম্বনঃ॥ १॥ * ছন্নমায়োধন সর্বাৎ শরীরের্গতচেতসায়। গজাশ্বসাদিনাং তত্র পার্থবাণ প্রপীডিতৈঃ। ৮॥ রথোপস্থাভিপতিতৈরাস্তীর্ণা মানবৈশাস্থী। া অনুত্যদিব সংগ্রামে চাপহস্তে। ধনঞ্জা । ১॥

অথেতি ॥ ১ ॥ নীহারের ধূমোত্মণা ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ উপপ্লবন্তি ইত ১ । স্ততোধাবন্তি ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ আয়োধনং রণভূঃ গতচেতসাং মূঢানাং আন্তজীবি তৈমু তৈঃ শরী রৈঃ ॥ ৮ ॥ রথোপতে ভাগেছ ভিন্তঃ পতিতিঃ ॥ ১ ॥

* নাগাখেতাত্র নগখেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

† সন্তাভ্যেতাত্র সংছিদ্যেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

‡ অনৃত্যদিবেত্যত্র প্রনৃত্যতীবেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

প্রাত্তা গাণ্ডীবনির্ঘে মুং বিক্স্ জিভমিকাশনেঃ। ত্রস্তানি সর্বাইনুন্যানি ব্যপাগচ্ছন্মহাহ্বাৎ॥ >०॥ কুণ্ডলোফীষধারীণি জাতরপস্রজানি চ। পতিতানি স্ম দৃশ্যন্তে শিরাংসি রণ্মুর্কনি॥ ১১॥ বিশিখে মুখিতৈর্গাত্তৈর্বাহুভিক্ষ সকামু কৈঃ। সহস্তঃভর্বেশ্চান্যৈঃ প্রচ্ছরা ভাতি মেদিনী। ১২॥ শির্মাং প্রতিমানানামন্তরা নিশিতেঃ শ্রৈ:। অশার্ফিরিবাকাশাদভবদ্ধরতর্ঘভ ॥ ১৩ ॥ দর্শবিদ্ধা তথা ছানিং রৌদ্রং রুদ্রপরাক্রমঃ। অবরুদ্ধশ্চরন পার্থে। বর্ষাণি দশ ত্রীণি চ। ক্রোধ্রাগ্রিমস্জদেবারং ধর্তিরাষ্ট্রেষু পাওবং ॥ ১৪॥ তস্ত ভদ্দহতঃ দৈন্য~,দৃষ্ট্য চৈব পরাক্রময়। সর্কে শান্তিপরা যোধা ধার্ত্তরাষ্ট্রতা পশাতঃ ॥ ১৫॥ বিত্রাসয়িত্বা সৈন্যানি জাবয়িত্বা মহারথান। অর্জ্জনো জয়তাং শ্রেষ্ঠঃ পর্যাবর্ত্ত ভারত॥ ১৬॥ প্রাবর্ত্তয়ন্নদীং ঘোরাং শোণিতোদাং তরঙ্গিণীয়। * অস্থিশবালসংবাধাং যুগান্তে কালনির্মিতাম্॥ ১৭॥ শরচাপপ্লবাং ছোরা । কেশশোবল শাদলাং। তনুত্রেফীষসং বাধাৎ নাগকুর্ম মহাদ্বিপাৎ॥ ১৮॥

॥২০॥ ধারিনী শিরাংসি অঞ্জ পতিতানি দৃশ্যতে॥ ১১॥১২॥১৩॥
ত্রীনিচদশচেতি ত্রিদশানি বর্ষানি অবৰুদ্ধঃ পার্থঃ তদানীং স্বেচ্ছয়া২চরদিতার্থঃ॥১৪॥১৫॥১৬॥১৭॥ নায়া হস্তিন এব ক্র্মাঃ মহাহিপাজলগ
জাশ্চ যসাাং তাং॥১৮॥

^{*} অস্থীতাত্ত্ব কেশেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† কেশশোবলশাদ্বলামিত্যত্ত্ব মাংসশোনিত কৰ্ম্মামিতি নাগকুৰ্ম মহাদ্বিপা মিত্যত্ত্ব নাগনকাং রখোডুপা মিতিপাঠঃ ক পুস্তকে।

মেদোবসাস্কৃথবহাং মহাভয়বিবর্দ্ধিনীমু।
রৌজনপাং মহাভীমাং শ্লাপদৈরভিনাদিতাম্, ১৯॥
তীক্ষশস্ত্রমহাগ্রাহাং ক্রব্যাদগণদেবিতাম্।
মুক্তাহারোর্ম্মিকলিলাং চিত্রলঙ্কারভূহিতাম্॥ ২০॥
শরসঞ্জমহাবর্ত্তাং নাপকুর্মাং ছরত্যয়ামৄ॥ ২১॥
মহারথমহাদ্বীপাং শল্ভছুন্জুভিনিস্তনাম্।
চকার মহতী পার্থো নদী ছুস্তরশোনিতাম্।
আদদানস্য হি শরান্ সন্ধায় চ বিমুপ্তেহঃ।
বিকর্ষত্রশভাগিত ক ন কিঞ্জিদ্শ্যতেহাত্রম্॥ ২২॥
ইতি বিরাট পর্কনি গোহরণপ্রকৃতি অর্জুনস্কুলসংগ্রামে
দ্বিষ্টিতমোহ্যায়ঃ ॥ ৬২॥

বৈশলারন উপত।
অথ তুর্য্যোধনং কর্ণে জুঃশাসনবিবিংশতী।
ডোণশ্চ সহ পুত্রেণ † কুপশ্চাপি মহারথ!॥১॥
পুনরীয়ুঃ স্থসংরক্ষা ধনঞ্জয়জিঘাৎসবঃ।
বিক্ষারয়ভশ্চাপানি বলবন্তি দৃঢানি চ॥২॥

শী ১৯॥ ২০ । ২২ ॥ ২২ ॥ ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাঁবদীপো দ্বিফি-তমোহধাগুরঃ ॥ ৬২ ॥

তত ইতি ॥ ১ । ২ ॥

^{*} ন কিঞ্ছিদ্শাতে ২মর্মিতার ন কশ্চিদ্দশেজন ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

ণ কুপশ্লাপি মহারথ ইতাত্র কুপশ্লাতি রখোরণে ইতি পাঠঃ ক গুস্তকে।

ভানু প্রকীর্ণতাকেনু রথেনাদিত্যবর্চসা। প্রভাষেরের মহারাজ সমন্তাল।নরধুজঃ॥ ৩॥ ততঃ কুপশ্চ কর্ণ্ড দ্রেণিশ্চ রথিনাম্বর:। ত ~ মহাস্ত্রৈর্মহাবীর্য্য পরিবার্যা ধনঞ্জয়ম্॥ । ।। ্শরৌঘান্ সম্যাসমতো জীমুতা ইব 🦇 পর্বতে। ববষু : শেরবর্ষাণি † পাতরন্তোধনপ্রম্॥ ৫॥ ইমুভির্ণ ছভিওূর্ণং সমরে লোমবাহিভিঃ। অদুরাৎ পর্যাবস্থাপ্য পূবরামাস্তরাদৃতাঃ॥ ৬॥ তথাবকীর্ণা চংতৈর্দিবোরক্তেঃ সমন্ততঃ। ন তস্য দ্বাঙ্গুলমপি বিরুত্ত সমদৃশ্যতে ॥ ৭॥ ততঃ প্রহ্মা বীভৎসুর্দিগ্রিমন্ত্রং মহারথঃ। অক্তমাদিত্যসঙ্কাশং গাণ্ডীবে সমযোজয়ৎ॥ ৮॥ াু শরঃশ্মিরিবাদিত্যঃ প্রতম্থে সমরে বলী। কিরীটমালী কৌত্তেয়: সর্বান্ প্রাচ্ছাদ্মৎ কুৰন্ ॥ ৯॥ यथा दलाइर्क विद्वाद পावर्रका वा लिएलाफरस । তথা গাঞ্জীবমভবদিন্দায়ুধমিবাততম্ * ॥ ১০ ॥

বিকীণ্ণিকারিতা পুতাকাংজাঞ্লোযস্য তেন ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ পাত্যতঃ
পীত্যতঃ ॥ ৫ ॥ প্রাঃস্থাপ্য ক্তরী কৃত্য ইয়্ভি পুরয়ামাস্থঃ আর্তবতঃ
॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ •

শৃপর্বত ইত্যত্র বার্থিকা ইতি,পাঠঃ খ ঘ পুতৃকমোঃ।

 শৃপাতরভো ধনঞ্জরমিত্যত্র প্রপত্তো কিরীটান নিতি পাঠঃ ক পুতৃকে।

 শুরুরশ্বিবাদিত্যঃ প্রতম্থে সমরে বলীত্যত্র সররশিরিবাদিত্যঃ

প্রপতন্ সমরে বলীতি পাঠঃ কণ্যস্তকে।

^{**} আত্তমিতাত্র আনত্মিতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

যথা বর্ষতি পর্জ্জন্যে বিচ্ছান্তিনাজতে দিরি।
দ্যাতয়তী দিশং সর্বাঃ পৃথিবীঞ্চ সমন্ততঃ ॥ ১১॥
তথা দশ দিশঃ সর্বাঃ পতদা গুরিমার্নে ।
* নাগাশ্চ রথিনঃ সর্বে মুমুছস্তত্র ভারত ॥ ১২॥
সর্বে শান্তিপরা ভূত্বা † স্বচিন্তানি ন লেভিরে।
সংগ্রামে বিমুখাঃ সর্বে যোধাস্তে হতচেতসঃ ॥ ১৩॥
এবং সর্বানি সৈনানি ভ্রানি ভ্রত্রত ।
ব্যক্তবন্ত দিশঃ সর্বা নিরাশানি স্বজীবিতে ॥ ১৪॥
ইতি বিরাটপর্বনি গোহরণপর্বনি ভ্রেজুনসঙ্কলযুদ্ধে
তি ষ্টিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬৩॥

বৈশম্পায়ন উব্ধি

ত ত শান্তনবো ভীক্ষঃ ! ভারতানাং পিতামহঃ।
বধামানেষুদৈনাষু ধনপ্রেমপাদ্রবং ॥ ১ ॥
প্রগৃহ্য কার্মাক্তেপ্রিস্কৃতম্ ।
শ্রানাদার তীক্ষাপ্রান্ মর্মাভেদান্ প্রমাথিনং ॥ ২ ॥
॥ ১১ ॥ ১২ ॥ স্বচিতানি অয়মহমিতি নজাতবন্ধ ৯ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥
ইতি বিরাট পর্কানি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিষ্টিতমেহিধ্যুয়ঃ ॥ ৬৩ ॥

তত ইতি । 🖰 ॥ 🖈 ॥

^{*} নাগাশ্চ রথিনঃ সর্ব্ধে মুমুহ স্তত্ত্ব ভারতেত্যত্ত ত্তত্ত্বশ্ব স্থানঃ সর্ব্বে বভূরু স্তত্ত্ব শর্মাশ ইতি পাঠঃ কপুস্তকে। † ভূবেত্যত্ত যোধা ইতি পাঠঃ খ পুস্তকৈ। ‡ ভারতানাং পিতামহ ইত্যত্ত স্মুদ্ধিঃ প্রতাপবানিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

পাণুরেণাতপত্রেণ ধিরুমাণেন মুর্দ্ধনি। শুশুভে দ নরবাছে। ধিরিঃ স্থাোদিয়ে যথ। ॥ ৩॥ প্রাধায় শব্দং গাঙ্গেয়ে। ধার্ত্তরাষ্ট্রং প্রাহর্ষয়ন। প্রদক্ষিণমুপার্ত্য বীভৎস্তং পর্যাবারয়ৎ ॥ ৪ । তমুদীক্ষ্য সমায়ান্তং কৌন্তেয়ং পরবীরহা। প্রত্যগুর্ভাৎ প্রহৃষ্টাত্মা ধারাধরমিবাচলঃ॥ ৫॥ ততাৈ ভীন্নঃ শরানফৌ ধজে পার্থদ্য বীর্যাবান্। সমর্পরস্থাবেগান, খ্রমানানিবোরগান্। ৬ ॥ তে ধজং পাণ্ডুপুঁজন্য নমাদাদ্য পতজিণঃ। জ্বন্তঃ কপিমাজস্থ জিগ্রেনিলয়াংশ্চ তান্॥ ৭ । ততো উল্লেন মহতা পৃথুধারেণ পাগুবঃ। ছত্রং চিচ্ছেদ ভীশ্বস্য ভূর্নং তদপতদ্ধবি॥ ৮॥ धकः रेहथात्रा कोटख्यः मठेत्रतचाहनम्ह्हन्। শীঘ্রকৃত্রথবাহাত তথে। ভৌপাফি দার্থ। ১। অমুধ্যমাণ্ত্ত ভীয়ো জানন্নপি চ পাণ্ডবম্। দিব্যেনাস্ত্রেণ মহতা ধনঞ্জয়মবাকিরৎ॥ ১০॥ ত रेथव পা खरवा जी शः मिता मञ्जभूमी तत्र । প্রত্যগৃহ্ণদমেয়াঝা মহামেঘমিবাচলঃ ॥ ১১॥ তয়োন্তদভবদৰ্দ্ধ তুমুল প্লোমহর্ধণম। ভীয়েণ সহ পার্থেন বলিবাসবয়োরিব ॥ >২ । ে প্রৈক্ষন্ত ,কুরবঃ সর্বের যোধাশ্ব সহুদৈনিকাঃ। ভলৈ জলাঃ সমাগম্য ভীমপাঞ্বয়োযুষি। অন্তরীক্ষে ব্যরাজন্ত খদ্যোতাঃ প্রার্ধীব হি॥ ১৩॥

1018101919191919191919191

অগ্নিচক্রমিব বিদ্ধং সব্যদক্ষিণ্মস্যতঃ। গা গ্রীবমভবদাজনু পার্থ্স্য স্কতঃ শরানু ॥ ১৪॥ # ততঃ স॰ছাদ্যামাম ভীন্নং শর্মতেঃ শিতৈঃ। পর্বতং বারিধারাভিশ্ছাদয়ন্নিব তোরদ:॥ ১৫॥ তা শ্ব বেলা নিবৈদ্ধি তাং শরর্ফী মুপস্থিত। মৃ। ব্যধমৎ শার্ত্তিকভীয়া পার্থক্ত সমবার্য়ৎ॥ ১৬॥ ততস্তানি নিরুজ্ঞানি শরজালানি ভাগশঃ। সমরেহভিব্যশীর্যান্ত কাল্গুনন্ত র্থণ প্রক্রি॥ ১৭॥ ততঃ কনকপুত্থানাং শরর্ফীনুপস্থিতামী। পাপ্তবস্তারথাত্তর্ণ শলভানামিবায়তিম। ব্যধমত্তা পুনস্তস্ত ভীয়া শর্শতৈঃ শিতৈঃ ॥ ১৮ ॥ • ততত্তে কুরবঃ সর্কে সাধু সাধিতি চাক্রবন্। ত্বজ্বং ক্লতবান্ ভীয়ো যদর্জ্জনম্যোধয়ৎ ॥ ১৯॥ वनवा ॰ खक्रा पक्षः किथा ना है। কোহন্যঃ সমর্থঃ পার্থক্থ বেগং বার্য়িভু রবে। । ২০।। ঋতে শান্তনবান্তীয়াৎ ক্লফাদ্বা দেবকীপ্লতাৎ। আচার্য্য প্রবরাদ্বাপি ভারদ্বাজান্মহাবলাৎ ॥ ২১ ॥ অস্ত্রৈরস্ত্রাণি সংবার্য্য ক্রীড়ব্ডৌ ভরতর্মভৌ। চক্ষু পৰি সৰ্বাভূতানাং মোহয়স্তে মহাবলী ॥ ২২ ॥ প্রাদাপতা ॰ তথৈ বৈক্রমাথের রঞ্চারণ মৃ। कोरवतः वाक्रगरेकव यात्राः वात्रवारमव ह। প্রযুঞ্জানো মহাত্মানো সমরে তো বিচেরতু ॥ ২৩ ॥° অ্যিচক্রং অলভিচক্রং আবিদ্ধং ভাষ্যমাণং ॥ ১৪ ॥ ১৫॥ ১৬॥ ১ ॥ ७५ ॥ ७५ ॥ २० ॥ २२ ॥ २२ ॥ २० ॥

* তত ইতাত্ত সতৈরিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

বিক্সিতান্যথ ভূতানি তৌ দৃষ্ট্য সমরে তদা।
সাধু পার্থ মহাবাহে। সাধু ভীষ্মেতি চাক্রবন্ । ২৪॥
নারং যুক্তো মনুষ্যেষু যোহরং সপদ্শতে মহান্।
মহাস্থাবাং সংপ্রয়োগঃ সমরে ভীম্ম পার্থয়োঃ ॥ ২৫॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

এব শর্কী স্তাবিত্ব বারস্ত্রযুদ্ধ মবর্তি ।
অর্ক্রযুদ্ধ নির্ত্তে তু শর্মুদ্ধ মবর্তি ॥ ২৬ ॥
অথ জিফুরুপারতা কুর্থারেণ কাম্মুক্র ।
চকর্তি ভীয়স্ত তদা জাতরপপরিষ্কৃত্যু ॥ ২৭ ॥
নিমেষান্তরমাত্রেণ ভীয়োহনাৎ কাম্মুক্র রণে ।
সমাদার মহাবাছঃ সজ্যঞ্জে মহারথঃ ।
শরংশ্চ স্থবহুন কুদ্ধো মুমোচাশু ধনপ্রয়ে ॥ ২৮ ॥
অর্জুনোহণি শরাংশ্চিত্রান্ শ ভীয়ায় নিশিতান্ বহুনু ।
চিক্ষেপ স্থমহাতেজান্তথা ভীয়শ্চ পাত্রবে ॥ ২৯ ॥
তরোদিব্যাস্ত্রবিত্রেরস্যতোনিশিতান্ শরান্ ।
ন বিশেষন্তার বিত্রেরস্যতোনিশিতান্ শরান্ ।
ন বিশেষন্তার বিত্রের স্থাতে স্ম মহান্থানাঃ ॥ ৩০ ॥
অথার্ণোক্রশ দিশঃ শরৈরতিরথন্তা ।
করীট্রমালী কৌন্তের্য় শুরং শান্তন্বন্ত্র্যা । ৩১ ॥
অতীব পাণ্ডবো ভীয়্র ভীয়্শ্চাতীর পাণ্ডব্যু ।
বভূব তিন্মন্ সংগ্রামে রাজন্ লোকে তদভূত্যু ॥ ৩২ ॥

॥ २८ ॥ २७ ॥ छेला हुङ अभीलत्युङ ॥ २० ॥ २৮ ॥ २৯ ॥ ०० ॥ ७১ ॥ ॥ ७२ ॥

^{*} চিত্রানিত্যত্র তীক্ষানিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

পাপ্তবেন হতাঃ শূরাঃ ভীন্নদ্য রথরক্ষিণঃ। শেরতে সামহারাজ কৌন্তেয়দ্যাভিতো রথ্য ॥ ৩৩ ॥ ততো গাঞ্জীবনিশ্ম ক্রা নিরমিত্র চিকীর্ষবঃ। অগচ্ছন পুঋদ<িশ্লফী: শ্বেতবাহনপত্তিব:॥ ৩৪॥ নিষ্পতত্তো রথান্তস্য ধৌতা হৈরণ্যবাসসং। আকাশে সমদৃশ্যন্ত হৎসানামিব পংক্তয়ঃ॥ ৩৫॥ তস্য তদ্দিব্যমস্ত্রং হি বিগাঢং চিত্রমস্যতঃ। বীক্ষত্তে স্মান্তরীক্ষন্তাঃ সর্বে দেবাঃ স্বাসবাঃ॥ ৩৬॥ তংদৃষ্ট্র। পরমগ্রীতো গন্ধর্ক শিক্তমন্ত্রফ্। ', শশংস দেববাজায় চিত্রসেনঃ প্রতাপবান ॥ ৩৭ ॥ পশ্যেমান্ পার্থনির্মাক্তান্ সংস্ক্রানিব গছত:। চিত্রৰপমিদ জিঞােদিবামস্ত্রমুদীর্যাতঃ॥ ৩৮॥ निष्य अञ्चर्धाः मन्मध्रमं शिष्य তে**यू** विष्रटि । পৌরাণানাং মহাজ্রালাং বিচিত্রেহিয়ং সমাগম:॥ ৩৯॥ আদদানতা হি শরান সন্ধার চ বিশুঞ্তঃ। বিকর্ষতশ্চ গাণ্ডীবং নান্তর্ণ প্রত্যদৃশ্যত ॥ ৪০ ॥ মধ্যন্দিনগত পর্য্যং প্রতপত্তমিবায়রে। ন শক্রন্তি দৈন্যানি পাণ্ডবণ্ প্রতিবীক্ষিতুম্। ৪১॥ **क्टेश्व जीवार नाटक्रवर क्रकेट तोरमहर**ङ कनः ॥ ८ ॥ উভৌ বিশ্রুতকর্মাণো উভৌ তীব্রপরাক্রমৌ। উভৌ সদৃশকর্মাণাবুভৌ যুধি ছুরাসদৌ ॥ ৪৩ ॥ हेजुरका देवदाकछ পार्वजीवनगातवम्। পূজয়ামাদ দিব্যেন পুষ্পাব্যেশ ভারত॥ ৪৪॥

॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ অন্ত্ৰং বাণালাং কোপুণুং কর্ম ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪৬ ॥ 'ভতঃ শান্তনবো ভীয়ো বামপাশ্ব'মতাডয়ৎ।

* পশ্বতঃ প্রভিদন্ধায় বিধাতঃ দ্বাসাচিনঃ॥ ৪৫॥

ভতঃ প্রহন্থ বীভৎস্কঃ পৃথুধারেন কান্ম্ক্ম।

চিছেদ গার্ধ পত্রেন ভীন্মন্তাদিত্যতেজসং॥ ৪৬॥

অবৈনং দশভিবানেঃ প্রতাবিধাৎ স্তনান্তরে।

যতমানং পরাক্রান্ত ক্রীপুজ্রো ধনপ্রয়ং॥ ৪৭॥

স্ পীডিতো মহাবাছ্যু হীত্বা রথক্বরম্।

গাঙ্গেয়ো যুদ্ধর্ত্ত হৌ † দীর্ঘমিবাতুরঃ॥ ৪৮॥

ত বিদংজ্ঞমপোবাহ দংযুদ্ধা রথবাজিনান্।

উপদেশমনুষ্ত্য রক্ষমানো মহারথম্॥ ৪৯॥

ই তি বিরাট পর্বাণি গোহরণপর্বাণি ভীয়াপয়ানে চতুঃ
যটিতমোহ্ধ্যায়ঃ॥ ৬৪॥

देनमञ्जाश्रम छन्।

ভীয়ে তু দংগ্রামশিরো বিহার, " পলায়মানে ধৃতরাষ্ট্র পুত্রঃ। '

উচ্ছিত্য কেতুং বিনদন্মহান্ধা,

া ধনু বিগৃহাজ্জুনমাসসাদ॥ ১॥

॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ক্বরং রথ মুগন্ধর । ৪৮ ॥ অপোবাছঅপদারয়ানাদ ॥ ৪৯ ॥

> ইতি বিরাট পর্ব্যণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চতু:-ষষ্টিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৪॥

ধতরাক্র প্রভাে হর্বোধনঃ উৎসূজা উল চা কেছু পভাকাং ॥ ১॥

্ * পশাত ইতাত্ত্ব অস্যুত ইতি পাঠঃ ক প্স্তুকে।

† দীর্ঘমিবাযুর ইতাত্ত্ব দীর্ঘমিবাস্তর মিতি পাঠঃ খ পুস্তুকে।

‡ ধহুরিতাত্ত্ব স্বয় মিতি পাঠঃ ক পুস্তুকে।

म ভीমধন্বানমুদগ্রবীর্ঘাৎ

धनक्षाः भक्तित्व हतस्य।

আকর্পূর্ণায়তচোদিতেন

ভল্লেন বিব্যাধ ললাটমধ্যে ॥ ২ %

স তেন বাণেন সমর্পিতেন

জাম্বদাতো সুসংশিতেন।

ররাজ রাজমহনীয়কর্মা

যথৈকপ্রবা ক্রচিরৈকশুক্ষঃ গ ৩॥

অথায় ভলেন বিদারিতয়

প্রাতুর্বান্থগজন্ত ুষ্ণম ।

* সতম্ভ জামূনদপুষ্ঠিতো

ভিত্তাললাটং স্থবিরাজতে সা ॥ ৪॥

† ছুর্যোধনশ্লপি তমুগ্রতেজাঃ

পার্থশ্চ ছুর্য্যোধনমেকবীরঃ।

जरनानामाङो शूक्षधवीरवो

সমং সমাজগাতুরাজমীলৈ 🕕

॥ ২ ॥ এক শৃষ্ণঃ পর্বতো যথ। একেন পর্ব্ধনত। দীর্ঘ বংশেন একঃ পর্বা মন্মিন্নিত সম্পানঃ মতুব্লোপ আর্ষ্য:॥ ৩ ॥ অসুক্রক্তং ॥ ৪ ॥ ৫ ॥

^{*} সতস্য জাম্বদ পুঞ্চিত্রো বিভাগ লল্টং স্বিরাজতে ম ইতার সাতস্য জাম্বদ পুষ্পচিত্রামালের দ্বিনাতি বিরাজতেমইতি পাঠঃ ক্রপ্ততের।

[†] ছর্ষে । শরাস্থাক নতেন বাণের হতন্তরন্দী ছর্ষ্যে ধিনেনোদ্ধত মহ্যবেগঃ। শরাস্থাদায় বিষায়িকপান্ বিব্যাধ রাজান মদীনসত্তঃ ইত্যেক শ্লেকঃ ক পুন্তক্ষা।

ততঃ প্রভিয়েন মহাগজেন মহীধরাভেন পুনর্বিকর্ণঃ। রথৈশ্চ হর্ভির্গজপাদরকৈঃ কুন্তীস্থতং জিফুমথাভাধাবং॥৬॥ তমাপতেন্তং স্বরিতং গজেন্দ্র वनक्षतः कुञ्जविভाগमर्या । আকর্ণপূর্ণেন মহায়ুসেন' বাণেন বিবাধে মহাজবেন ॥ ৭ ॥ পার্থেন স্বন্ধ: স তু গাধ্,পত্রা আপুষ্থদেশাৎ প্রবিবেশ নাগম্। বিদার্য্য শৈল প্রবরপ্রকাশৎ যথাশুনিঃ পর্বত্যিক্রস্ট:। ৮॥ শরেণ তপ্তঃ স তু নাগরাজঃ প্রবেপিতাকো ব্যথিতান্তরালা। সংদীণমানো নিপপাত মহাং বজাহতং শৃঙ্গমিবাচলন্ত । ১। নিপাতিতে দন্তিবরে পূর্বিব্যাং তাসাদ্বিকর্ণঃ সহসাবতীর্যা। তুৰ্ণ পদান্যফশতানি গঁড়া ,

॥ ७ ॥ मश्त्रात्मन मश्कनात्कन ॥ १ ॥ ৮ ॥ ১ ॥ ১० ॥

ব্বি~শতে: **শুন্দন**মারুরোই॥ ১৫॥

নিহত্য নাগন্ত শরেণ তেন, বজোপমেনা * দ্বিরাম্দাভগ্। তথাবিধেনৈব শরেণ পার্থো, তুর্যোধনং বক্ষদি নির্বিভেদ। ১১। ততো গজে রাজনি চৈবভিন্নে ভগ্নে বিকর্ণে চ সপাদরক্ষে। গান্তীবসুকৈর্কিশিখেঃ প্রণুন্না তে যোধমুখ্যাঃ সহসাহপর্জগ্নঃ॥ ১২॥ দুষ্টেব পার্থেন হতন্ত নাগং যোধা শচ সর্বানু দ্রবতো নিশ্ম্য। রথং সমারত্য কুরুপ্রবীরো রণাৎ প্রদ্রাব যতো ন পার্যঃ ॥ ১৩॥ তং ভীমৰূপং স্বরিতং দ্রবন্তৎ তুর্য্যোধনং শক্রসহোহভিষঞ্চাৎ। † अर्फा छे सरम्बाक्त मना कि ती ही। বাবেন বিদ্ধা क्षिति वगउम् ॥ ১৪॥ অৰ্জ্জন উবাচ :

বিহায় কীর্ত্তি বিপুলাং যশশ্চ
ব্যাহাৎ পরার্ত্য পলায়েসে কিম্।
ন তেংদ্য তুর্যাণি সমাহতানি
্ তথৈবরাজ্যা দবরোপিতভা । ১৫॥
। ১১॥ অপ্লেজ্য পলায়নং কৃতবন্তঃ ॥ ১২॥ ১০॥ অভিষদাৎ পরাভ দ্রবন্তং আলক্ষ্য প্রাক্ষান্তর্ব আঁ। কেল্টিং নাহশ্দং কৃতবীন । স

ভূর্যাণি জয়বাদ্যানিতথৈ বেত্যাদি উত্তরাধয়ি॥ ১৫॥

* অদ্রিবরাষ্ট্রাভ মিতাত্র অন্তিমেণেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† প্রাক্ষেটিয় দিতাত্র প্রাক্ষে পর্যাদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

1 তথৈবরাজ্যাদবরোপিতস্যে তাত্র যথা বহুদ্যান্তি গতমঃ হুদ্ধে
পাঠঃ ক পুস্তকে।

মুখিনিক্সান্সি নিদেশকারী
পার্থকু তাঁরো মুখিন চ ক্তিতোহিন্ম।
তদর্থমারত্য নুখং প্রক্ষ
নরেন্দ্রতং সার ধার্তরাষ্ট্র ॥ ১৬ ॥
নে,ঘং তবেদং ভূবি নামধ্য়েং
কুর্য্যোধনতা হুরতং পুরস্থাং।
ন চেই তুর্য্যোধনতা তবান্ধি,
পলায়মানক্স,দ্র্ণ বিহায় ॥ ১৭ ॥
ন তে পুরস্তাদর্থ পৃষ্ঠতো বা প্রস্থাদর্থ পৃষ্ঠতো বা প্রস্থাদর্থ পৃষ্ঠতো বা প্রস্থাদর্থ পৃষ্ঠতো বা প্রস্থাদর্থ প্রক্ষপ্রবির
প্রাণান্ প্রিয়ান্ পাপ্তরতোহদ্য রক্ষ ॥ ১৮ ॥
ইতি বিরাট পর্বানি গোণ্রণপর্বানি তুর্য্যোধনপলায়নে ,
পঞ্চ ঘটিতিয়োহধ্যায়েং ॥ ৬৫॥

रेनमण्यात्म हेन्ड ।

অ ভ্রমানস্ত স তেন সংখ্যে মহাত্মনা বৈ প্রব্যান্ত্র পুত্রঃ

নিবর্ত্তিতম্ব গিরাঁকুশেন

মহাগজো মত্ত ইবাঞ্লেন॥ ১॥

তৃত্তীরঃ পাথঃ পৃথাসতোহজ্জনোমি রতং দৃতোদিসগর্মঃ ॥ ১৬॥ ,॥১৭॥১৮॥

> হাত বিরাটপর্কাণ নৈলকখীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চ-২ফিতমেশহধ্যায়ঃ॥ ৬৫ ॥

আহুয়েতি ৷ ১ ৷

সোহমুষ্যমাণে বচসাভিমুটো মহার্থেনাতির্থস্তরস্বী। পर्याविवर्ज्य त्रायन वीरता ভোগী যথা পাদতলাভিমুফঃ ॥ ২ ॥ ত^ প্রেক্ষ্য কর্ণঃ পরিবর্ত্তমানং নিবর্ত্তা সংস্কৃতা চ বিদ্ধগাত্রম। দুর্য্যোধনস্থোত্তরতোহভাগচ্ছৎ পার্থং নুবীরো যুধি হেমমালী ॥ ৩॥ ভীগস্ততঃ শান্তনবো * নিবর্ত্তা † হিরণ্যকক্ষাংস্তরগান্ পিষঙ্গান্। ছার্য্যোধনং পশ্চিমতে হভারক্ং পার্থামহাবাহুরবিজ্যধন্য। 3 ॥. দ্ৰোণঃ ক্লপশ্চৈৰ বিৰিংশতিশ্চ ष्ट्रः भागनरे म्हत-निवर्त्ता भीष्यं । সর্বে পুরস্তাদ্বিততোর্কুচাপা ছুর্য্যোধনার্থ ত্রিত।ভ্যুপেযুঃ ॥ ৫॥ म जानानीकानिनिवर्खमाना ন্যালোক্য পূণৌ ঘনিভানি পার্থঃ। হ~দো যথা মেঘ্মিবাপতত্তং ধনপ্রয়ঃ প্রত্যতপত্তরস্বী ॥ ৬॥

পর্যাববর্ত পরার্ত্তবান্ ॥ ২॥ নৃবীরে ছির্মোপনঃ ॥ ৩॥ অভিযদীশত্রু-পরাজয় সমর্থঃ ॥ ६॥ ছরিতাঃ অভ্যূপৈয়ুঃ, সন্ধিরার্ধঃ ॥ ৫ ॥, হংসঃ স্থাঃ প্রতাতপৎ প্রতাপিতবান্ ॥ ৬॥

^{*} নিবর্ত্তের বির্ত্তেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।,

† হিরণ্য কক্ষাংস্তরগান্ পিষদা নিত/ত্র হিরণ্যকক্ষত্ত্রয়া ভিষদীতি
পাঠঃ থ পুস্তকে।

ৈ সর্ব্বতঃ সংপরিবার্য্য পার্থ মস্ত্রাণি দিব্যানি সমাদদানাঃ। ধুরভ্যেত্য শরেঃ সমন্তা মেঘা যথা পর্বতমমূজালৈঃ॥१॥ .ভাহস্ত্ৰমস্ত্ৰেণ বিদাৰ্য্য তেষাং गाः छीवधवा कुक्शुक्रवानाम्। ন্মাহনং শত্রুসহোহন্যদস্তং প্রাত্ম-চকা दৈतन्त्र य बात नी श्रम् ॥ ৮॥ ठा निमः भः अपिटना वित्रका শরৈঃ স্থারেরিশিতৈঃ স্থপুঞ্জৈঃ। धोवाघारम् मनाश्मि (उमार মহাবলঃ প্রব্যথয়াঞ্জনার ॥ ৯॥ ঃ পুনর্ভীমরবং প্রগৃষ্ দোর্ভ্যাং মহাশপ্রযুদ্রিঘোষম্। নয়ৎ খং প্রদিশো দিশশ্চ ভূবঞ্চ পার্থো দ্বিষতাৎ নিহন্তা ॥ ১০ ॥ ্সপ্রনাদেন কুরুপ্রবীরাঃ সম্মোহিতাঃ পার্থসমীরিতেন। 😳 হজ্য চাপানি গ্রাসদানি সর্বে তদা শান্তিপরা বভূবুঃ । ১১ ॥ বিসংজ্ঞেষু পরেষু পার্থঃ স্থা চ বাক্যানি তথোত্তরায়াঃ। 🐪 📑 ই মধ্যাদিতি মৎস্থপুত্ৰ मुर्वाठ यावर कुत्रद्वा विमः छाः ॥ ३२ ॥

🕝 🖟 ॥ বিস্তৃত্য ব্যাপ্য ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ শান্তিপরাঃ উপরত্চিত্রাঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥

আচার্য্যশারদ্বতয়োস্ত্র শুক্লে কর্ণস্থা পীতং রুচিরঞ্চ বস্ত্রম। দৌণেশ্চ রাজ্জশ্চ তথৈব নীলে वरञ्ज नमां प्रस्थ नत्र श्रवीत ॥ ১० ॥ ভীশ্বন্দ্র ভাষ্টে তথৈব মন্যে জানাতি মেহস্ত্রপ্রতিঘাতমেষঃ। এতভা বাহানু কুরু সব্যতন্ত মেব॰ হি যাতব্যমমূদ্দংকৈঃ ॥,১৪॥ রশ্মীনু সমুৎস্ক্রজ্য ততো মহাল্পা. রথাদবপ্ল,ত্য বিরাটস্থনুঃ। ব্স্তাগুপোদায় মহারথানাৎ जूर्र श्वनः अश्तर्थमाक्तरताह ॥ ১৫ ॥ ততেহিন্তশাসচ্চত্রঃ সদস্বান্ পুত্রে। বিরাটস্থ হিরণ্যকক্ষান্। তে তদ্যতীযুধ জিনামনীক শ্বেতা বহন্তোহ জুনমাজিমধ্যাৎ ॥ ১৬॥ তথা নু যান্ত পুরুষপ্রবীর ১ ভীয়াঃ শরৈরভ্যহনন্তরস্বী। স চাপি ভীন্নস্ত হয়ানিহত্য বিব্যাধ * পাশ্বে দশভিঃ পৃষৎকৈঃ ॥ ১৭ ॥

॥ ১৩ ॥ অমুচদং জৈঃ ভীষাদিভিঃ স্ব্যতঃ ক্লুতিকপলক্ষিতেন ভবতা যা-তব্যং গ্রেব্যং॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ প

* পাখে ইতাত্র পার্থ ইতি পাচঃ খ গম্বকে।

'ততোহজুনো ভীগ্যমপান্ত যুদ্ধৈ বিদ্ধাতা যতারমরিউগরা। তত্বে বিমুক্তো রথরুন্দমধ্যা সেঘং বিদার্যোব সহস্ররশ্মিঃ।। ১৮।। नक्। जू मः छ। छ कुरू अवीताः পার্থং সমীক্ষ্যাথ স্থারেক্রকণপায়। র্ণেরিযুক্ত^.স্থিতমেকমাজৌ স ধার্ত্তরাষ্ট্রস্থারিকুং বভাষে॥ ১৯॥ অয়ং কথ বৈভ্ৰমতো বিমুক্ত ख्या निमधीज यथा न मुरहार । তমত্রবীজ্বান্তনবং প্রহস্ত ক্ত গতা বুদ্ধিরভূৎ হৃ বীর্য্যয়। ২০॥ শান্তিং পরাং প্রাপ্য যদা স্থিতো২ভূ রুৎস্জ্য বাণাংশ্চ ধনুশ্চ চিত্রম্ । নত্বের বীউৎস্থরলৎ নৃশ্ৎমং कर्दुः न পार्थिश्ख गरना निविधिम् ॥ २ ३ ॥ ত্রৈলোক্যহেতোর্ন জহেৎ স্বধর্মং তস্মান্ন সর্বে নিহতা রণেহস্মিন্। ক্ষিপ্ৰং কুৰন্ যাহি কুৰুপ্ৰবীর ' বিজিত্য গাঁশ্চ প্রতিয়াত পার্থ:। মা তে স্বকোহর্থো নিপতেত মোহাৎ তৎ সংবিধাতব্যমরিষ্টবন্ধং ॥ ২২ ॥

॥১৮॥ ১৯॥ অরং অর্জনঃ ভগতঃ বিসংজ্ঞান্ যুখান্ যথা ন মুচ্যেৎ ন মোচনং ন্যাওথা প্রমথীত উপমৃদ্যাৎনতু মুদিতবানিতি ভাবঃ ॥ ২০॥ শাতিং নফচিত্ততাং নৃশংসংকর্তুংসংমৃদান্ মার্রিজুং র অলং ন যোগ্যঃ তত্তহেতুঃ ন পাপেস্য মনোন্তি যতো বিশিষ্ঠং শ্রেষ্ঠং॥ ২১॥ অরিষ্ঠবন্ধং কল্যাণান্ত্ বন্ধিকর্ম॥ ২২॥ रेवमण्यात्रम छेवाउ।

ছুর্য্যোধনস্তদ্য ভু ভলিশ্ন্য

পিতামহস্থাত্মহিত এচাইধ।

অতীতকামো যুধি সোহত্যমর্য

রাজা বিনিশ্বক্ষ বভূব ভূফীম্॥২৩॥

তদ্বীষ্মবাকাৎ হিত্মীকা সর্বে

ধনঞ্যাগ্রিপ বিবর্জমানমু ।

नियर्जनारेयव माजिल निष्धा

र्फ (र्यावनः (ज পরিরক্ষমানাঃ॥ २। ॥ ।

তান্ প্রিভান্ প্রীতমনাঃ স পার্থে।

धनक्षतः (अक्ता कुरु अवीतान्।

অভাৰমাণে।২ন্তুনয়ং মুহুর্ত্তং

৺ বচোত্রবীৎ গংপরিহৃত্য ভুয়ঃ॥ ২৫॥

পিতামহং শান্তনৰঞ'র্দুং

দোণ গুরুপ প্রতিপূজা মূর্দ্ম।

प्रोवित कृत्रदेशव कुक्श * मानान्

শবৈবিহিতিরভিবাদ্য চৈব॥ ২৬॥

, ছুর্যোধনস্যোত্তমরত্নচিত্রং ,

চিচ্ছেদ পার্থো মুকুটং শরেণ।

আমন্ত্র্য বীরাৎশ্চ তথৈব মান্যান্

शा छोवटघाटयन विनामा लाकान्॥ २१॥

॥ ২৩ ॥ ২৯ ॥ পরিক্রতা পরিরতা ॥ ২৫ ॥ শারেরের পাদদেশে প্রতিতিরভি বাদা মানাগুল বাঞ্লীক সোমদন্তাদীন্ ॥ ২৬ ॥ মুকুটং চিচ্ছেদেতি হুর্যোঃ-ধনসা মরণমেব স্থতিং ॥ ২৭ ॥

ন বলোববীং মাপারহৃত। ভূষ ইত্যত্ত সংপূজ্যং স্তত্ত কুক্পবীরা নিতি। পাচিঃ ক গুতকে।

স দেবদত্তং সহসা বিনাদ্য
বিদার্য্য বীধা বিষ্টাং মনাংসি।

য়জেন সর্বানভিভূয় শত্রুন্
সহেমজালেন বিরাজনানঃ॥ ২৮॥

দৃষ্ট্রা প্রযাতাংস্ত কুরুন্ কিরীটা
ক্টোংব্রবীস্তত্র স মংস্থাপুত্রম্।
আবর্ত্তবাশান্ পশবো জিতান্তে

যাতাঃ পরে,মাহি পুরং প্রক্ষটঃ॥ ২৯॥

দেবাশ্চ দৃষ্ট্রা মহদদ্ভং ত '
দযুদ্ধং কুরুণাণ মহন্দ, জ্বনেন।
জগ্য র্থাস্তং ভবনং প্রতীতাঃ '
পর্যেস্ত কর্মানি বিচিত্ত্যন্তঃ॥ ৩০॥

ইতি বিরাট পর্বানি গোহরণপর্বানি সম্স্ত কৌরব পলায়নে

যট্ ষ্টিউমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৬॥

বৈশস্পায়ন উবাস।

বিজিত্য হৈব সংগ্রামে কুরন্ সর্যভেক্ষণঃ।
সমান্যামাস তদা বিরাট্য ধনং সহৎ॥ >॥
গতেষু তেষু ভয়েষু ধার্ত্রাষ্ট্রেষু সর্বশঃ।
বনালিছ্ম্য গহনাদ্ধরঃ কুরুসোনকাঃ॥ ২॥
হেমমাল্যাসহিতেন সহেম্মালেন ইজেন ॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥
ইতি বিরাটপর্বাণ নৈলক্তীয়ে ভারত ভাবদীপে ষট্
যক্তিমোহধায়ে॥ ৬৬॥

इर (७ क्ने : ८ अप्रे मृथि: ॥ ১ ॥ २ ॥ १

ভয়াৎ স্তুত্তস্ক্রমনসঃ সমাজগ্নুস্তৃত্ততঃ,। মুক্তকেশা ব্যদৃশান্ত স্থিতাঃ প্রাঞ্জলবস্থদা ॥ এ॥ কুংপিপাসাপরিশ্রান্তঃ বিদেশস্থা বিচেত্সঃ। উচুঃ প্রাণম্য মন্ত্রান্তাঃ পার্থং কিৎ করবামহে ॥ ৪॥

অৰ্জুন উন্চ।

স্বস্তি ব্ৰজত ভক্ত^ বে) ন ভেত্ৰতাং কথঞ্চন। ,
নাহমাৰ্ত্তান্ জিঘাংসামি ভূশমাশাস্থামি বং॥ ৫॥
বৈশাশায়ন উৰাচ। ,

তক্ত তামভয়াং বাচং প্রুত্বা যৌধাং সমাগতাং। আয়ুঃকীর্ত্তিযশোদাভিরাশীর্ভিজনন্দুয়ন্॥ ৬॥

ততোহজু নি নাগ্যিব প্রভিন্ন,

মুৎস্জ্য শক্ত্ন বিনিবর্ত্তমানম্। বিরাটরাপ্রাভিম্বং প্রযান্তং,

नामक वरला क्रिकाश्वाक्ष ॥ १॥

* ততঃ স তন্মেঘ সিবাপতন্ত^,

বিদ্রাব্য পার্থঃ কুরুমেষ্ সৈন্যং।
তং সৎস্থাপুত্রং দ্বিষ্ঠাং নিহ্না,
বচোহত্রবীৎ সংপ্রিগৃহ্য ভূরঃ॥ ৮॥,

ত।৪।৫।৬।৭। আপততং গুং শুমাৰ্বং।৮।

^{*} ততঃ স ত্রেঘমিবাপততঃ বিজ্ঞাব্যপার্গঃ কুরু মেঘদৈন মিতাত্র ততে। মহাবাত ইবাত ধুন্দং বিজ্ঞাব্য প্লার্থঃ কুরু সেন্ন্য হৃদ্দ মিতি পাঠঃ ক প্রতকে।

পিতৃঃ সকাশে তব তাত সংক্রিন বসন্তি পার্থা বিদিত্ব তবৈব। ব তালা প্রশংসের্নগর্ন প্রবিশ্যন, ভীতঃ প্রথখেদ্ধি স মহস্তরাজঃ ॥ ৯ ॥ ময়া জিতা সা ধ্বজিনী কুরাণাং, ময়া চ গাবো বিজিতা দ্বিষদ্ধাঃ। *'পিতৃঃসকাশং নগর্ব প্রবিশ্যন, স্থাল্যনা কর্মা, কুতং ব্রবীহি॥ ১০॥ উত্তর উনাত।

যতে ক্তে কর্মান পার্থীরং,
তৎ কর্মা কর্তুং মম নান্তি শক্তিঃ।
ন আং প্রক্ষ্যামি পিতৃঃ স্কাশে,
যাবন্ন মাং কক্ষ্যাসি স্ব্যুসাচিন্ ॥ ১১ ॥
বৈশ্পীয়ন উবাচু।

স শক্রসেনামভিজিত্য জিঞু,
রাচ্চিদ্য সর্বঞ্চ ধন^ কুরুভাঃ।
শাশানমাগত্য পুন্ঃ শমীং তা,
মভোত্য তত্তো শর্বিক্ষতাক্ষঃ॥ ১২ ॥

^{1 1 25 11 25 11 25 11}

^{*} পিছু: দকাণ মিত্যত্র প্রীতস্ত্র কাম মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ততঃ দ বক্লিপ্রতিমো মহাকপিঃ, সহৈব ভূতৈ ৰ্দ্দবমুৎপণাত। তথৈব * মায়ান্তরিতা বভুব, शक्ष टेमर्इर सुगुरक तर्थ श्रुनः ॥ ১०॥ নিধায় ভচ্চাযুধমাজিবর্দ্ধনং, कुबखमानाभिषुधीः मद्रा रख्या। প্রায়াৎ স মৎস্যো নগর প্রহৃষ্টঃ, কিরীটিনা সার্থিনা মহাত্মনা ॥ ১৪॥ পার্থস্ত কুত্বা পরমার্য্যকর্মা, নিহত্য শতূন দ্বিতাং নিহ্না। চকার বেণীক্ষ তথৈব ভূয়ো, ' জগ্রাহ রশ্মীন্ পুনরুত্তর দাঁয়। বিবৈশ হৃষ্টো নগরং মহাত্মা, র্হন্নলাৰপমুপেত্য সার্থিঃ॥ ১৫॥ রৈশস্থায়ন উনাচ। ততো নিরুত্তাঃ কুরবঃ প্রভগ্ন। বশমান্থিতাঃ। হস্তিনাপুরমুদ্দিশ্য সর্বে দীনা যযুস্তদা ॥ ১৬॥ পন্থানমুপদংগম্য ফাল্কনো-বাক্যমত্রবীং ॥ ১৭ ॥

রাজপুত্র প্রত্যবেক্ষ্য সমানীতানি সর্বশः।

গোকুলানি মহাবাহো বীর গোপালকৈ: সহ। ১৮।

সৈংহংধজং বিরাটীয়ং পূর্বন্তিও স্থাপিতং ॥১০॥ নিধায় যথাবং স্থাপয়িতা ॥১৪॥ ১৫॥ বশং পরবশতাং আস্থিতাঃ প্রাপ্তাঃ ॥১৮॥ ১৭ ।

^{*} মায়ান্তরিতে তাত্ত্র মায়া বিছিতেতি পাঠঃ থ প্রস্তকে।

ততোহপরাক্নে যাস্যামে বিরাটনগর প্রতি।
আশাস্য পার্যিতাপঃ প্রিপ্লাব্য চ কাজিনঃ ॥ ১৯॥
গক্ষম্ভ ত্রিতাশৈচব গোপালাঃ প্রেযিতান্ত্র্যা।
নগরে প্রিমাখ্যাতুং ঘোষরস্ভ চ তে জয়ম্॥ ২০॥
বৈশ্লায়ন উব্যুচ।

অথোত্রস্তর্মাণঃ স দূতা,

नः । जाशक्षेत्र प्रकार ।

আচক্ষমং বিজয়ং পার্থিক্স,

ভগ্না: পরে বিজিতাকৈর গাঁবঃ ॥ ২১॥

ইত্যেবন্তো ভারতমৎস্থপুজৌ,

সংমন্ত্র্য সৎগম্য ততঃ শ্মীৎ তাব।

অভ্যেত্য ভূয়ে৷ বিজয়েন তৃপ্তা,

বুৎস্ফ নারোপরতাং স্ব ভাগুন্। ২২ ॥

স শক্রসেনামভিভূয় সর্বা,

মাচ্ছিদ্য সর্বাঞ্চ ধনৎ করুভাঃ।

বৈরাটিরায়ানগরণ প্রতীতো,

রহন্নলাসার্থিনেকবীরঃ॥২৩॥

ইতি বিরাটপারেণি গোহরণপার্বাণ উত্তরাগমনে

সপ্ত যফিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৭॥

'॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ বিজয়েত তৃপ্তো ইতোপ্যধিকং যুদ্ধং প্রার্থনো বৃদ্ধা জয়েন স্বীয়েন তৃপ্তো আনন্দিনো স্বদ্যভাণ্ডং অলঙ্কারাদিকং যৎপূর্ব নুৎসৃষ্ঠং তত্ত্তথিব শরীরে রণ্ণেচ্ আন্ধ্রোপয়তাং আরোপিও বত্তো॥ ২২॥ বন্ধ গোধনং প্রতীতোহ্নষ্টঃ॥ ২৩॥

> ইতি বিরাটপর্বাণ নৈল্কগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্ত-শ্বিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৭॥

বৈশপ্পায়ন উবাচ।

ধনঞাপি বিজিত্যাশু বিরাটো বাহিনীপতি:। বিবেশনগরং হৃষ্টশ্চ চুর্ভিঃ পাপ্তবৈঃ সহ।। ১।। জিলা ত্রিগর্ভান সংগ্রামে গালৈকাদায় সর্ক্ষাঃ। অশোভত মহারাজ সহপার্থ: শ্রিয়া রুতঃ ॥ ২ ॥ তমাসনগতং বীরং স্ক্রনাং প্রীতিবর্দ্ধনম। উপাসাংচক্রিরেদর্কে মহ পার্থিঃ পরন্তপাঃ॥ ७॥ উপতস্থঃ 🦠 প্রকৃত্য সমস্থা ত্রান্সণৈঃ সহু 🖟 সভাজিতঃ সদৈনাস্ত প্রতিনন্দ্যাথ মৎসারীট্র ৪॥ বিদৰ্জনামান তদা দ্বিজাংশ্চ প্রকৃতীস্তথা। ততঃ স রাজা মৎস্যানাং বিরাটো গাহিনীপতিঃ॥ ৫ ।। উত্তর^ পরিপপ্রচ্ছ ক যাত ইতি চাত্রবীৎ। আচখ্যস্তদ্য তৎসর্বাং 🕆 স্ত্রিয়ঃ কুন্যাশ্চ বেশ্বানি॥ ৬.॥ অন্তঃপুরচরাশৈতব কুরুভির্বোধনং হতম। বিজেত্মভিসংরক্ষ এক্ এবাতিসাই সাৎ। ় বুহ্নলাসহায়•চ নির্যাতঃ পৃথিবীঞ্জয়ঃ ॥ ৭ ॥ উপায়াতানতিরথান দ্রোণং শান্তনবং ক্লপম। कर्न प्रद्याधनरिक्षव क्वानशुक्कक वर्ष यान् ॥ ৮॥

• দক্ষিণ গোগ্ৰহ রভান্ত মাহ ধনক্ষেতি॥১॥২॥৩॥সভাজিতঃ পূজিতঃ । ॥৪॥৫॥৬॥,৭॥৮॥

^{*} উপতস্থারতাসা প্রাক্ উপাসামিতি চরণদ্বং ক পুস্তকে নাস্তি। ক তৎসর্ক মিতাত সংহষ্ঠা ইতি পাচঃ ক পুস্তকে।

বৈশস্থায়ন উবাচ।

রাজা বিরাটোঃখ ভূশাভিতপ্তঃ,

শ্রুতঃ হেকরথেন যাত্র্। রহন্নলাসারথিমাজিবর্দ্ধন ,

প্রোবাচ সর্বানথ মন্ত্রিমুখ্যান্ ॥ ৯॥ সর্বথা কুরবস্তে হি যে চান্যে বস্তুধাধিপাঃ।
ত্রিগতানিজিতান্ শ্রুত্বা ন স্থাসান্তি কদাচন ॥ ১০
তত্মালাছন্ত মে যোধা,বলেন মহতার্তাঃ।
উত্তরম্য প্রীক্ষার্থক যে ত্রিগ্রেরবিক্ষতাঃ ॥ ১১॥
হয়াংশ্চ নাগাংশ্চ রথাংশ্চ শীঘ্র,

পদাতিসংঘান্ পুরুষপ্রবীরান্। প্রস্থাপয়ামাস স্কুতস্য হেতেঃ,

র্বিচিত্র * বস্ত্রাভরদোপপন্নান্ ॥ ১২ ॥
এবং স রাজা মৎস্যানাং বিরাটে। বাহিনী পতিঃ
ব্যাদিদেশাথ তাং ক্ষিপ্রং বাহিনীং চতুরক্ষিনীম্ ॥ ১৩ ॥
কুমারমাশু জানীত যদি জীবতি বা ন বা।
যস্য যন্তা গতঃ ষণ্ডো মন্যেহহৎ স ন জীবতি ॥ ১৪ ॥

, বৈশন্পায়ন উবাচ।

তমত্রবীদ্বর্শারাজ্যে বিহ্ন্য,

বিরাটরাজন্ত ভূশাভিতপ্তম। রহন্নলা সারথিশেন্বরেক্ত্র,

গরে ন নেষ্যন্তি তরাদা গান্তা: ॥ ১৫ ॥

11 25 11 25 11 25 11 25 11 26 11 26 11 26 11

^{*} বস্ত্রেত্যত্র শস্ত্রেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

স্কান্ মহাপান্ সহিতাত্ কুৰংশ্চ,
তথৈব দেবাসুর নিদ্ধাকান্।
তলং বিজেভুং সময়ে স্তত্তে,
সুরক্ষিতঃ সার্থিনা হি তেন॥ ১৬॥

বৈশস্থায়ন উবাচ।

অথোত্তরেণ প্রহিতা দূতাতে শীঘ্রগামিন:।
বিরাটনগরং প্রাপ্য বিজয়ৎ সমরেদরন্ ॥ ১৭ ॥
রাজ্ঞন্তৎ সর্বিমাচখাৌ মন্ত্রী বিজয়মুত্তমঁম্ । ৫,
পরাজয়ং কুরনাঞাপুপোয়ান্ত> তথোত্তরমূ ॥ ১৮,॥
সর্বো বিনিজি'তা গাবং কুরবশ্চ প্রাপ্তিতাং।
উত্তরঃ সহ স্থাতেন কুশলী তে পারত্তপ ॥ ১৯ ॥
য়্বিষ্ঠির উব্যাচ।

দিন্টা। বিনিজি তা গারঃ কুরবশ্চ পঁলায়িতাঃ। নাছুত প্রেব মন্যেহহং যতে পুজেহিজয়ং কুরন্ । ২০॥ ধ্ব এব জয়স্তম্য যায় যায়। বৃহন্নলা।

বৈশস্পায়ন উব্চ।

ততো বিরাটো নৃপতিঃ সংপ্রৃক্ষতনূর্করে ॥ ২১॥
শ্রুবা তু বিজয়ং তস্য কুমারস্যানিতৌজসঃ।
আচ্ছাদ্মিরা দূতাংস্তানান্ত্রিণ সোহভাচোদয়ৎ॥ ২২॥
রাজমার্গাঃ ক্রিয়ন্তাং যে পতাকাভিরলক্ষ্তাঃ
পুপ্পোপহারের্ক্যন্তাৎ দেবভাশ্চাধি শর্কশ॥ ২৩॥

॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৯ ॥ ২০"॥ ২১ ॥ জীক্ছাদরিহা। বক্তাদিভিরভ্যচর্ত্র ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ কুমারা যোধমুখ্যাশ্চ গণিকাশ্চ অলক্ষ্ডাঃ।
বাদিত্রাণি চ সর্বাণি প্রভ্রান্তান্ত স্তবং মম ॥ ২৪॥
ঘণ্টাবান্মানবঃ শীঘ্রং মন্তমারুহ্ম বারণম্।
শৃক্ষাটকেম্ব সর্বেম্ব সমাখ্যাভু জয়ং মম ॥ ২৫॥
উত্তরা চ কুমারীভিক্ষ্রীভিরভিন্নত্রতা।
শৃক্ষার্বেশ্ভরণা প্রভ্রান্ত শ্বহন্নান্॥ ২৬॥
শ্রুত্বিত্তিনং নূপায়,

সর্বাৎ পুরং নৃত্তিকপানি ভূতৎ। ভেষ্যান্চ ভূষ্যানি চ বারিজ্ঞান্ড,

বেশৈঃ পরার্দ্ধ্যঃ প্রমৃদাঃ শুভাশ্চ ॥২৭॥ তথ্যে স্থাতঃ সং মার্গাধিশ্চ

नान्नोदानग्रः शन्यासुर्योवानग्रः।

পুরাদ্বিধাটস্য মহবেলস্য,

প্রত্যুদ্ধযুঃ পুত্রমন্তবীর্য্য ॥ ২৮ ॥

रेनमञ्जाशम छेना ।

প্রস্থাপ্য সেনা> কন্যাশ্চ গণিকাশ্চ স্বলঙ্ক্তাঃ। মৎস্যরাজো মহারাজ্জঃ প্রহৃষ্ট ইদমব্রবীং॥ ২৯॥

, ॥ ২৪ ॥ শৃন্ধাটকের চতুস্পথের শৃন্ধাটকংদ্বারি কণ্টকেচ চতুপ্পথে ইতি
,মেদিনী ॥ ২৫ ॥ শৃদ্ধারবেশা ভরণা নাট্যরস বেশাভরণা শৃন্ধারঃ স্থরতে
'নাট্য ইতি, মেদিনী ॥ ২৬ ॥ স্বন্ধিকং, মন্দলা রাত্তি কাদি দ্ধি দুর্ব্বাদি চ পাণো যায় তৎস্বস্তিক পাণি ভূতং ঋসিমৎ বারিজাঃ শংখাঃ ॥ ২৭ ॥ নান্ধাবাদায়ঃ মন্ধ্বাদ্যানি ভূগ্য বাদ্যা জয় বাদ্যানি ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥

^{*} ব্রহরলামিতাত্র স্তুতং মুমেতি পাঠঃ খ পুস্তুকে।

অকানাহর সৈরক্সি, কক্ষ দ্যতং প্রবর্ত্তকাম।
তং তথাবাদিনং * হৃদ্দিন পাগুবঃ প্রত্যভানত।। ৩০।
ন দেবিতব্যং হৃষ্টেন কিতবেনেতি নঃ প্রান্তম্।
† স স্বসদ্য মুদা যুক্তো নাহন দেবিতুমুৎসহে।
প্রিয়ন্ত তে চিকীর্বামি বর্ত্ততাং যদি মন্যসে।। ৩১॥

विद्राहे छेनाह ।

স্ত্রিয়ো গাবো হিরণ্যক্ষ যচ্চান্যদ্বস্থ কিঞ্চন। ন মে কিঞ্চিত্ত্বয়া রক্ষ্যমন্তরেণাপি দেবিভূক্ষ্ম, ৩২॥ কঙ্ক উবাচ।

কিন্তে দূতেন রাজেন্ত্র বহুদোবেশ স্থানদ।

দেবনে বহুবো দোষাস্তমান্তং পুরিবর্জ রেছ ॥ ৩৩ ॥

শুতত্তে যদি বা দৃষ্টঃ পাগুবো বৈ যুধিষ্ঠিরঃ।

গারাজ্যং স্কুমহংক্ষীতু ভাতৃংশ্চ ত্রিদশোপমানু॥ ৩৪ ॥

দূতে ‡ হারিতবান সাধং তক্ষাদ্ধূতি ন রোচমে।

অথ বা মন্যাসে রাজন্ দীবাবো যদি রোচতে ॥ ৩৫ ॥

বৈশ্পায়ন উবাচ।

প্রবর্ত্তরানে দ্যুতে ভু মৎস্যঃ পাপ্তবসত্ত্রবীৎ। পশ্য পুজেন মে যুদ্ধে তাদৃশাঃ কুরবো জি্তাঃ॥ ৩৬॥

.॥ ৩০॥ স্কটেন জ্যাসহ কিতবেন ময়ান দেবিতব্য॥ ৩০॥ অভরেণ বিনা পিদৃতেং॥ ৩২,॥ ৩৩ ॥ ৩৪॥ ৩৫॥, ৫৬॥

[া] হাজ মিতাত দৃষ্ট্য ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
কু সহমদ্যমুদা মুক্ত ইতাত তংহামদ্যমুদাহুক্ত ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
টু দূতে ইতাত হাজায়মতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

তভোহত্রবীমংসারাদে ধর্মপুজাে মুখিটিরে । ব্রন্ধা যায় যন্তা † কথং ন স বিজেষাতে ॥ ৩৭॥
ইত্যুক্তঃ কুপিতো রাজা মংস্যঃ পাগুৰমত্রবীং !
সমণ পুজেল মে ষণ্ডশ ব্রহ্মবদ্ধা প্রশণসঙ্গি॥ ৩৮॥
বাচাবিচাং ন জানীষে ভূনণ মামবমনাসে।
ভীমার্টোণমুখান সর্বান্য কথণ যথাে বিজেষাতে ॥ ৩৯॥
ব্যুস্থাত্ত ব্রহ্মনপ্রাধন্মং কমে।
নেদৃশত্তে পুনর্বাচাং যদি জীবেতুমিছেসি॥ ৪০॥

মুখিন্তির উবাচ।

যত্র জোণস্তথা ভীমো জৌনিবৈবিকর্তনঃ কুপঃ।
ছুর্য্যোধনশ্চ রাজেন্দ্র তথৈবানো মহারথাঃ॥৪১॥
নরুদ্যানৈঃ পরিরতঃ সাক্ষাদপি ** শতক্রতুঃ।
কোহর্ন্যো বৃহন্নলাযান্তান্ এতিমুধ্যেত সঙ্গতান্॥৪২॥

যক্ত বাহুবলে তুলো ন ভূতো ন ভবিষ্যতি।
অতীব সমরং দৃষ্ট্যা হর্ষো যক্তোপজানতে॥৪৩॥

া ৩৭॥ ব্ৰহ্মবন্ধে বাধিনাধ্য ॥ ৩৮॥ ৩৯॥ বয়স্ত্ৰে স্থার্থি ॥ ৪০॥ ৪১॥ ॥ ৪২॥ ৪৩॥

^{*} ততো এবীমাৎস্য রাজং ধর্ম পুলো যুধিষ্ঠির ইত্যত্র ততো এবী মহাস্থা নং স এনং রাজা মুধিষ্ঠির ইতি পাচিঃ খ পুস্তকে।

^{&#}x27; † কখং নু স বিজেষাতে ইতাত্ত কথং সমজারেদ্যুধীতি পাচঃ থ

[্]ৰিকথং বভোগিজেষাতে ইতাত্ত কন্মান্ত সাহিত্য তীতি পাচিঃ খ পুস্তকে।

[🐃] শতক্রতু রিত্যত্ত মৰুৎপতি বিভি পাঠঃ খ গুস্তকে।

যো জয়েৎ সঙ্গতান্ সর্বান্ন স্থ্রাস্থ্রমহোরগান্। তাদুশেন সহায়েন কথ ্ন স বিজেষ্যতে ॥ ,৪৪ ॥ বিষ্টি উবাচ।

ব্ছশঃ প্রতিসিদ্ধে হিসি ন চ বাচং নিযক্ষসি। নিযন্তা চেল্ল বিন্যৈত ন কশ্চিদ্ধর্ম্মাচরেৎ॥ ৪৫॥ বৈশ্লায়ন উবাচ।

ততঃ প্রকৃপিতো রাজা তমকেণাহনদ্টন্।
মুখে যুধিষ্ঠিরং কোপালৈরমিতোর ভূৎ স্রন্॥ ৪৬॥
বলবৎ প্রতিভিন্নন্ত নস্তঃ শোন্তিমাগতন্।,
তদপ্রাপ্ত মহীশ পার্থা পোনিভামপ্রহীন্তনা॥ ৪৭॥
অবৈক্ষত সধর্মাত্মা দৌপদীশ পার্ম্ব তঃ স্থিতাম্।
সাজ্জাত্মা তমভিপ্রায়ং ভর্তুকিন্তবশান্ত্রগা॥ ৪৮॥
পাত্রং গৃহীত্বা সৌবর্ণং জলপূর্ণম্নিক্তিগ।
তাজ্যোণিতং প্রত্যুক্তাৎ যথ প্রস্ত্রাব নস্ততঃ দা ৪৯॥
অথোত্তরং শুটেগ কৈর্মালিক বিবিধন্তথা।
আকীর্যমানঃ সংক্রেটা নগরং বৈরমাগতঃ॥ ৫০॥
সভাজ্যমানঃ পৌরেক্ত স্ত্রীভিজ্জানপদৈন্তনা।
আসাদ্য ভবন্দ্ররং পিত্রে সংপ্রত্যবেদ্মুৎ॥ ৫১॥

়॥ ৪৪॥ নিবচ্ছসি নিগৃহ্লাসি ।॥ ৪৫॥ নৈবং বাচামিতি ॥ ৪৬॥ নস্তঃ নাসিকাতঃ । ৪৭॥ ৪৮॥ নস্ততঃ নাসিকা নাডীতঃ তনোতি দেহং
প্রথয়তীতি ভচ্চকো নাডী বচনঃ পুরীততি শেতে ইত্যাদি প্রয়োগ দর্শনাৎ
॥ ৪৯॥ ৫০॥ ৫১॥

^{*} নম্ভত ইত্যত্ত পাণ্ডবাদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ততা দাংস্থা প্রবিশ্ব বিরাটমিদমন্ত্রীৎ।
বৃহন্নলাসহায়ন্তে পুল্লো দ্বায়ু ্যন্তরঃ স্থিতঃ ॥ ৫২ ॥
ততা হৃষ্টো মৎস্তরাজঃ ক্ষন্তারমিদমন্ত্রীৎ।
প্রবেশ্যতামুভৌশীঘ্রং দর্শনেপ্রবৃহৎ তয়োঃ ॥ ৫৩ ॥
ক্ষন্তারং ধর্মারাজস্ত সনৈঃ কর্ণ মুপাজপৎ।
উত্তরঃ শ্রবিশ্বেকো ন প্রবেশ্যা বৃহন্নলা ॥ ৫৪ ॥
এতক্ত হি মহাবাহো ত্রতমেতৎ সমাহিত্য।
যো মমাস্পে ব্রং কুর্য্যাক্তোনিতং বাপি দর্শরেৎ।
আন্তর সংগ্রামগতার স জীকেন্সংশ্রম্ ॥ ৫৫ ॥
ন মুষ্যাৎ ভূশসংকুদ্ধে! মাৎ দৃকৈব সশোণিত্য।
বিরাটমিহ সামাত্যং হ্নাছি স্যলবাহ্নম্ ॥ ৫৬ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততো রাজ্ঞঃ স্থতো জ্যেষ্ঠঃ প্রাবিশৎ পৃথিবীঞ্জয়ঃ।
সোহভিবাদ্য পিতুঃ পাদৌ ও ধর্মরাজমপশ্যত ॥ ৫৭॥
ততো রুধির সংযুক্তমনেক্াগ্রমনাগদ্য।
ভূমাবাদীনমেকান্তে সৈরস্ক্যা প্রভূপস্থিতম্ ॥ ৫৮॥
ততঃ পপ্রচ্ছ পিতরং ত্বরমান ইবোজরঃ।
কেনায়ং তাড়িতো রাজন্ কেন পাপমিদং কৃতম্॥ ৫৯॥
বিরাট উবাচ।

ময়ায়ণ ভাড়িত জিকো ন চাপ্যেতাবদ≨তি। প্রশংস্থামানে যং শুরে ত্বয়ি মৃঞ্ংুপ্রশংসতি ॥৬০ৢ॥

।। ৫২॥ ৫৩॥ কুকরাজঃ মুধিষ্ঠিরঃ কর্বং কর্বে উপাজয়ৎ উপাংশু উক্তবান্ ॥ ৫৪॥ ৫৫॥ ৫৬॥॥ ৫৭॥ অনেকাগ্রং ব্যগ্রং॥ ৫৮॥ ৫৯॥ ৬০॥

^{*} ধর্মরাজ মপশাতে তাত্র কঙ্কং চাপ্যাপতিষ্ঠতেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

উত্তর উবাচ।

অকার্য্য তে কৃতং রাজুন্ কিপ্রমেষ্ প্রসাদ্যতাম্। মা ত্বাং ব্রন্ধবিষ ঘোরং সমূলমপি নির্দ্ধিং ॥ ৬১॥ বিশস্থায়ন উবাচ।

স পুজ্সা বচং শ্রুবা বিরাটো রাষ্ট্রবর্জনং
ক্ষমরামাস কৌরব্যং ভক্ষজ্জনমিবানলম্॥ ৬২ ॥
ক্ষমরন্তন্ত রাজানপ পা গুবং প্রত্যভাষত।
চিরং ক্ষান্তনিদং রাজন্ ন মন্ত্যুবিদিয়তে মৃম ॥ ৬৩ ॥
বদি হোতৎ পতেদুমৌ ক্ষিরং মন নস্তর্হী।
সরাষ্ট্রস্থ মহাবাহো বিনশ্যেথা ন সংশয়ং ॥ ৬৪ ॥
ন দূষ্যামি তে রাজন্ যদৈ হন্যাদিদ্ধকম্।
বলবন্তপ প্রভুগ রাজন্ ক্ষিপ্রশাসাম্যাৎ ॥ ৬৫ ॥

देवमञ्जाशिम छेवाह।

শোণিতে তু ব্যতিক্রান্তে প্রবিবেশ রহন্নলা।
অভিবাদ্য বিরাটপ কক্ষণাপুগেতিষ্ঠত ॥ ৬৬ ॥
ক্ষাময়িত্বা চ কৌরব্য > রণাত্ত্তরমাগত্য ।
প্রশাশংস ততো মংস্যঃ স্ণ্ তঃ সব্যসাচিনঃ ॥ ৬৭ ॥
ত্বয়া দায়াদ্বানন্মি কৈকেয়ীন্ন্বির্দ্ধন । ^
ত্বয়া মে সদৃশঃ পুজো ন ভূতো ন ভবিষ্যতি ॥ ৬৮ ॥

॥ ৬১ ॥ ৬২ ॥ ৬৩ ॥ ৬৪॥ হে রাজন তুত্তত তৎকর্ম ন দ্যরামি যৎ অদ্যকং,
পরাপবাদ হীনং হনা দন্যারি তৎ দ্যামিপ ন দ্যরামি যতঃ বলবতং,
প্রভুথ ক্ষিপ্রথ শীস্ত্রং দাক্ষণং নৃশংসং কর্মপ্রাপ্রেরাদেবছটো দ্পাতি
ভ্রের ধর্মমতিক্রামতীতি স্ত্রেঃ কলরত মিতি পাঠে জানত্মপি॥ ৬৫॥
॥ ৬৬॥ ৬৭॥ দারাদ্বান্ প্রবান্॥ ৬৮॥

পদং পদসহত্রেণ যশ্চরনাপরাধ্যাৎ।
তেন কর্ণেন তে তাত কৃথমাসীৎ সমাগমঃ॥ ৬৯॥
মন্তব্যলোকে সকলে যসা তুলোন বিদ্যুতে।
যঃ সমুদ্র ইবাক্ষোভাঃ কালাগ্লিরিব তুঃসহ।
* তেন ভীয়েন তে তাত কথমাসীৎ সমাগমঃ॥ ৭০॥
আচার্যো রুফিবীরাণাং কৌরবাণাঞ্চ যো দিজঃ।
সার্ককিত্রস্য চাচার্য্যঃ সর্কশস্তভাষরঃ।
তেন দ্রোণেন তে,তাভ কথমাসীৎ সমাগমঃ॥ ৭১॥
আচার্যপুত্রোয়ঃ শ্রঃ স্কশস্তভাষরঃ।
অস্থামেতি বিখ্যাতঃ গু কথং তেন সমাগমঃ॥ ৭২॥
রণে যং প্রেক্য সীদান্ত হৃতস্যা বণিজো যথা।
কুপেণ তেন তে তাত কথমাসীৎ সমাগমঃ॥ ৭৩॥

পদমিতি পদং বাণ নিপাত স্থানং পদ সহজেণ লক্ষ্য সহ আর্থং হেরপে তৃতীয়া সহস্রলক্ষ্যানিবেদ্ধুনিতার্থঃ চরন্ বালৈঃ প্রচরন্ একম পিস্থানং নাপরাধ্যাং নরিক্তং কুর্যাৎ যুগপল্লক্ষ্য সহস্র মুদ্ধিশা: বালিক্ষরন্নে কমপিলক্ষ্যং নজহ্যাদিতার্থঃ পদংপদ মিতিপাঠে সর্বাং পদং নাপরাধ্যাং সহজেণ চরনিতার্থাং পদ সহজ্যো দেশেনেতি বোধ্যং সমাগমঃ সংগ্রামঃ । ৬৯॥ ৭০॥ ৭১॥ ৭২॥ হৃতস্বাঃ হৃতধনাঃ বনিজইব-সীদন্তি শুরাইতিশেষঃ॥ ৭৩॥ •

^{*} তেনে তাস্য প্রাক্ যঃসমুদ্রইবা ক্লোভ্যঃ কালাগ্লিরিবজ্ঃসহেতি পাঠঃ কৈ পুস্তকৈ।

ণ কথং তেন, সমাগ্রমইত্যত্ত তেনামীৎসদরঃ কথমিতি পাঠঃ খ প্রস্তাক।

পর্বতং যোহভিবিধ্যেত রাজপুলো মদেষুভি:।
ছুর্যোধনেন তে তাত কথমাসীং সমাগ্রম:॥ 48॥
অবগাতা দ্বিত্যো মে স্থাথো বাতোহভিবাতি মাম্।
যস্ত্রং মে ধনমারেনীঃ কুরুভিপ্রাস্ত্রমাহবে॥ ৭৫॥
তেষাং ভয়াভিপনানা সর্বোধ্যাং বলশালিনাং।
নুনং প্রকাল্য তান্ সর্বান্ ত্রা যুদ্ধে নর্বভান্।
আচ্ছিনং গোধনং সর্বাং শার্দ্ধ লানানিবানিষম্॥ ৭৬॥
ইতি বিরাটপ্রবিণি গোহরণ প্রবিণি থিকাটোভির সং-বাদে হৃত্যুষ্টিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৮॥

উত্তর উপাত।

৭৪॥ অবগাদ্যে পরাভূতাঃ॥ ৭৫॥ প্রকাল্য নির্জিতা॥ ৭৬॥ ইতি বিরাটপর্ঝনি নৈলকগীয়ে ভারত ভার্বদীপে অফ ষ্টিতমোহ্ধ্যায়ঃ॥ ৬৮॥

ন ময়েতি॥১॥২॥

^{*} কৃতঞ্চ কর্ম তৎসর্ক মিতাত্র কৃতঃ তৎ সকলং,তেনেতি পাঠঃ খ প্তকে।

তেন তা বিজিতা গাঁঘস্তেন * তেঁ কুরবো জিতাঃ ৷ ত্য্য তৎ কর্মা ধীরস্য'ন ময়া তাত তৎ ক্রতম্।। ৩॥ স হি শারদ্বতং জোনং জোনপুত্রার † বীর্যাবান । স্তপুত্রপ ভীষ্প চকার বিমুখান্ শরৈঃ॥ ৪॥ ष्ट्राधायन विकर्भ म नागमित सूथभग्। প্ৰেম্মৱবীজীতং দেবপুলো মহাবলঃ॥ ৫॥ নঁ হাস্তিনপুরে তাণং তব পৃশ্যামি কিঞ্চন। ব্যায়ামেন পরীপেষু জীবিতং কৌরবাত্মজ॥৬॥ न भाकारिम प्रनाशः खु ९ ताकन् यूथि मनः कूङ । পৃথিবীং ভোক্ষাদে জিল্বা হতো বা স্বর্গমাক্ষ্যদি ॥ ৭॥ म निवृत्त्वा नववारिया मूक्षन् देखानि । স্চিবেঃ সংর্তো রাজা। রথে নাগইব শ্বসন্ । ৮ ॥ ত^ দৃষ্ট্রা রোমহর্ষোহভূদুক্ষকপ্পশ্চ মারিব। স তত্র সিংহসঙ্কাশমনীক ্ব্যধমচ্চ রৈঃ। ৯। তৎপ্রাপ্ত বিশ্বাসীকং সিশ্হসশ্বননে। যুবা। कुबर्छान् ध्रमन्। जन् । वामारमा शहरवनो ॥ ১०॥

॥৩॥৪॥৫॥ ব্যায়ামেন নিতাং দৈশান্তর সঞ্চারেণ এতেন ন দেব পুত্তেস্বাং অগ্রেপি নাশং করিষাতীতি স্কৃতিং ॥৬॥৮॥৮॥ রোম হংগভূমমেতি শেষঃ॥৯॥১০॥

^{*} তেন তে কুরবো জিতা ^{*}ইত্যুত্ত কুরব**শ্চ পরাজিত। ই.ভি পাচঃ খ** ^{*}পুস্তকে।

[†] বীষ্ট্ৰানিত্যত্ত্ব যভূথানিতি পাঠঃ খ প্ৰস্তকে। ্ৰঃ বাসংস্থাপাহরদলীতাত্ত সংস্থিতান্ হতবাসস ইতি পাঠঃ খ প্ৰস্তকে।

একেন তেন বীরেণ ষভুথা: পরিনিজ্জিতা:।
শার্দ্দ্লেনেব মন্তেন যথা বনচরা মৃগ্রা । ১১॥
বিরাট উবাচ।

ক স বীরো মহারাছর্দ্দেবপুজ্রো মহাবলঃ।
বো মে গোধনমাজৈষীৎ কুরুভিপ্র'ন্তনাহবে॥.১২;
ইচ্ছামি তমহং দ্রুফু মহিবলম্।
যেন মে স্বঞ্চ গাবিশ্চ রক্ষিতা দেবসুরুনা॥ ১৩॥
উদ্ধর উবাচ নি

অন্তর্জানং গতন্তত্ত দেবপুত্তঃ মহাবলঃ। সতু শ্বো বা পরশ্বো বা মন্যে প্রা চুর্ভবিষ্যতি॥ ১৪॥ বৈশন্দায়ন উবাহ।

এব্যাখ্যার সানং তং ছন্ন সত্তেণ পাপ্তবম্।
বর্গত তত্ত নাজ্ঞাসীদ্বিরাট: * প। ধ্রুজ্জুনম্॥ ১৫॥
ততঃ পার্থে, হভারুজ্ঞাতো বিরাটেন মহাল্মনা।
প্রদদৌ তানি বাসাংসি বিরাটক্হিছু: স্বয়ম্॥ ১৬॥
উত্তরা তু মহা≨াণি বিবিধানি † নবানি চ।
প্রত্যগৃহ্ছাত্তঃ প্রীতা তানি বাসাংসি ভামিনী॥ ১৭॥

॥ २२ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ मटबन न संस्थल ॥ ५५ ॥ २० ॥

* পার্থমজ্জুনমি তান বাহিনীপতি রিতিপাচঃ খ পুতকে,।

† নবানীতাত্র তত্ত্বীতিপাচঃ খ পুতকে।

মন্ত্ররিত্বা তু কৌতের উত্তরেণ রহস্তদা *।
ইতিকর্ত্রিতা শব্দাং বাজন্ পার্থে মুধিন্তিরে ॥ ১৮ ॥
তত্ত্বথা তদ্ব্যদ্ধাদ্দ্ধাবদ্ধরতর্ষভঃ।
হাহ পুজেণ মৎস্যাস্য সংগ্রহৃত্থো নর্ম্বভ ॥ ১৯ ॥
ইতি বিরাটপর্কণি গোহরণপর্কণি বিরাটোত্তরসংবাদ্ একোন সপ্ততি তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬৯ ॥
সমাপ্তক্ষ গোহরণপর্ক।

অথ বৈবাহিকপর্বা ॥ ৪ ॥ বেশুপ্যায়ন উবাস।

তত্ত্তীয়ে দিবসে জাতরঃ প্রফ পাগুবাঃ।
স্লাতাঃ শুক্লায়রধরাঃ সময়ে চরিতন্ততাঃ॥ >॥
যুধিন্তিরং পুরদ্তা সকাভ্যাণভূষিতাঃ।
প্রতিপালা মুখা নাগা জাজীমানা মহারখাঃ॥ ২॥

মন্ত্রিকোত রুধিষ্ঠিরে রুধিষ্ঠির বিধয়ে ইতি কর্ত্রতাং অত্যেকর্জি ফাং ভদাদনে রাজ্ঞ উপবেশনাদি রূপাং ক্রিয়াং উত্তরেণ সহমন্ত্রিয়া তথা যথামন্ত্রং তৎতাং বংদ্ধাদিত্বা ভরোরবলঃ হেরাজন্ জনমেজয়॥১৮॥ প্রহৃষ্ঠা অভূব ন্নিতিশেষঃ॥১৯॥

> ইতি বিরাট পর্ব্ধনি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে একে:ন সপ্ততি তমোক্লগুনুয় ॥ ৬১ ॥

ं उउई उंग १ ॥ २॥

^{*} বহস্তদা ইতাত্ত মহাঅনাই তি পাঠঃ খ পুস্তকে।

বিরাটিস্য সভাং গত্বা ভূমিপালাসনেম্বর।
নিষেত্রং পাবকপ্রথার মর্কে বিষ্ণ্যে দ্বিগ্রয়র । ৩ ॥
তেষু তত্রাপবিষ্টেম্ব বিরাটঃ পৃথিবীপতির ।
আজগাম সভাক কর্তুক রাজকার্য্যানি সর্কাশ ॥ ৪ ॥
শীমতঃ পাগুবান দৃষ্ট্বা জলতঃ পাবকানিব ।
মুহূর্ত্তমিব চ ধ্যাত্বা সরোষঃ পৃথিবীপতির ॥ ৫ ॥
অথ মংস্যোহত্রবীৎ কঙ্কং দেবৰূপম্বস্থিত্য । ৫ ॥
মক্রন্সানৈক্রপাসীনং ত্রিদ্রানামিবেশর্ম্ ॥ ৬ ॥
স কিলাক্ষাতিবাপস্ত্রং সভাস্তারো মর্মী রুতঃ ।
অথ রাজাসনে কন্মাত্রপবিষ্টস্ত লহ্ক্,তঃ ॥ ৭ ॥
বিশল্পান উর্গ্রা
পরিহাসেশয়া বাকাং বিরাটপ্র নিশ্বর তং ।
স্মান্মানোহর্জুনো রাজনিদং বচন্মত্রবীৎ ॥ ৮ ॥
ত্র্জুন উবার।

ইন্দ্রগার্দ্ধাদনং রাজন্ম দারোচুম ईতি।
ব্রহ্মণার্দ্ধাদনং রাজন্ম দারোচুম ईতি।
ব্রহ্মণাঃ প্রত্বা শুরা এই বীর্যাবত মুরঃ।
এই বুদ্ধ্যাধিকো লোকে তপ্রাঞ্চ পরায়শ্বঃ ॥ ১০ ॥
अ এই বিদ্ধান্দ্র বিদ্ধান্দ্র বৈত্তি ন বৈৎস্যতি কদাচন ॥ ১১ ॥
বৈষ্ঠ্যার পুষান্বেন্তি ন বেৎস্যতি কদাচন ॥ ১১ ॥

ধিষ্টেয়ু আয়তনের ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ আক্ষাতিবাপঃ আকান্ অতি ৰপতীতি, তথাদূতেকারী ॥ ৭ ॥ পরিহাসেপ্রাং সমিন্দোপালন্ত মপেক্ষা যদিরাটদা বাকাং তল্লিশমা ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥

^{*} এমেহস্ত্রবিদ্বান্ সংগ্রামে ইত্যত্র এবৈস্ত্রিং বিবিধং বেক্তীতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

ন দৈবা নাস্থরাঃ কেচিন্ন মনুষ্যা ন রাক্ষসাঃ। গল্পক্ষিকপ্রবরাঃ, স কিন্ধুরা মহোরগাঃ॥ ১২॥ দীর্ঘদর্শী মহাতেজাঃ পৌরজানপদপ্রিয়ঃ। পাণ্ডবানামতিরথো যন্ত্রা ধর্মাপরো বশী॥ ১৩॥

নাভবন্দানতর্বে বিশ্বা বিদ্যালয় বিশালয় ।

নহর্ষিকপোরাজর্ষিঃ সর্বলোকেয়ু বিশ্বতঃ।
বলবানুপুতিমান দক্ষঃ সত্যবাদী জিতেন্দ্রিয়ঃ।
ধনৈশ্বতিমান দক্ষঃ সত্যবাদী জিতেন্দ্রিয়ঃ।
বথা মনুর্মাহাতেজা লোকানাং পরির্ক্ষিতা।
এবমেষ মহাতেজাঃ প্রজানুগ্রহ্কারকঃ॥ ১৫॥
অয়ঃ কুরুণাম্বভঃ কুন্তীপুল্লো যুধিষ্ঠিরঃ।
অস্য জোকে স্থিতা কীর্ত্তিঃ স্থ্যুস্সের দিবি প্রভা॥ ১৬॥
সংসরন্তি দিশঃ সর্বাঃ যশসোইস্য ইবাংশবঃ।
উদিত্দের স্থ্যুস্য তেজস্যেহনুগভন্তয়ঃ॥ ১৭॥
এনং দশ সহ্লানি কুপ্ররাণাং তর্ম্বিনাম্।
অনুরুং পৃষ্ঠতো রাজন্ যাবদ্ধ্যাবস্থ কুরুন্॥ ১৮॥
ত্রিশ্বেদ্বং সহলানি র্থাঃ কাঞ্চনমালিনঃ।
সদক্ষৈরূপসংপ্রাঃ পৃষ্ঠতোহনুযুমুং সদা॥ ১৯॥
এনমন্ত্রীলাঃ স্তাঃ স্থাতাহিনুযুমুং সদা॥ ১৯॥
এনমন্ত্রীলাঃ স্তাঃ স্থাতাহিনুযুমুং সদা॥ ১৯॥
এনমন্ত্রীলাঃ স্তাঃ স্থাতাহিনুম্বুঃ সদা॥ ১৯॥
এনমন্ত্রীলাঃ স্তাঃ স্থানিকুপ্রলাঃ।
অব্রুমাগধিঃ সার্জং পুরা শক্রমিবর্ষয়ঃ॥ ২০॥

ি। ১২ ॥ ১৯ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ অসাইবেতাত্ত্ব সন্ধি রবিবক্ষিতঃ উপমের দ্বাস্যোগ পামুদ্বির স্থানং একেন[পি ইবশব্দেন কবিতি তথাপ্যত্ত্ব স্থানিধং প্রাবিব গ্রহণং ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ অক্রবন্ অস্ত্রন্ ॥ ২০ ॥ এন< নিত্যমুপাদন্ত কুর[্] কিঙ্করা **য**থা। সর্কোচ রাজনুরাজানো,ধনেশ্রমিব্সরঃঃ॥২১। এষ সর্বামহীপালান্ * করমাহারযন্তদা। বৈশ্যানিব মহারাজো বিবশান্ স্বশানপি॥ ২২॥ অন্তাশীতিসহস্রাণি স্নাতকানাং মহাত্মনাম্। উপজীবন্তি রাজানমেন^ স্কুচরিতত্রতম্। ২০॥ এষ বৃদ্ধাননাথা শচ পঙ্গুনন্ধাংশ মানুবান। পুত্রবৎ পালয়ামাস প্রজাধর্মেন বৈশিছু: ॥ २८॥ এষ ধর্ম্মে দনে চৈব ক্রোধে চাপি জিতার্তীতঃ। মহাপ্রসাদে। ত্রহ্মণাঃ সত্যবাদী চ পার্থিবঃ॥ ২৫॥ † শীঘ্রংতাপেন চৈবাস্য তপাতে গ শ্বযোধনঃ। সগণঃ সহ কর্ণেন সৌবলেন ভ'থা বিভো॥ ২৬॥ নশকাত্তেই সা চ গুণাঃ প্রসংখ্যাতুং নরেশ্বর। এষ ধর্মপরো নিত্যখনুং শদশ্চ পাগুবঃ ॥ ২৭॥ এবং যুক্তো মহারাজ পৃত্তেবঃ পুরুষর্বভ:। ক্থ্ম নাইতি রাজাইমাসনং পৃথিবীপতিঃ॥ ২৮॥ ইতি বিরাটপর্বাণি বৈবাহিকপর্বাণি পাগুবপ্রকাশে সপ্ততি তমে ইধার:॥ ५०॥

২১॥ ২২॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ শীব্রং তীব্রং ॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ ইতি বিরাটপর্বানি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে • সপ্ততি তমৌহধ্যায় ৫৭০॥

করমাহারয়ন্তদা ইত্যালাকরদান্ সমকার য়িদতি পাঠঃ এ পুস্তকে।
 † শীঘং তাপেনেতাল লীপ্রতাপেনেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

বিরাট উদাচ।

যদ্যের রাজা কৌরব্যঃ, কুন্তী পুজো, যুধিষ্ঠিরঃ।
কতমোহস্যাজ্জুনো ভাতা ভীমশ্চ কতমো বলী॥ ১॥
নকুলঃ সহদেবশ্চ দ্রৌপদী বা যশস্থিনী।
যদা দ্যুতজিতাঃ পার্থান প্রজ্ঞাযন্ত তেক্কচিৎ ॥ ২॥

অর্জ্জন উবাচ। যঁ এষ বল্লে ক্রেড সুন্তব্নরাধিপ। এষ ভীমো মহাব ছে ঐ বিবগপর কেম: ॥ ৪ ॥ এষ ক্রোধবশান হত্ত্বা পর্বেষ্টে গল্পমাদনে। সৌগল্পিকানি দিব্যানি রুখ্ণর্থে সমুপাহর । । ।। शक्तर्सं अय देव इन्छ। की हे का नृष्ट छू दा ज्ञानाय । বাছানৃকান্ বরাহাং 🕉 হতবান্ স্ত্রীপুরে তব ॥ ৫॥ यन्नामीनव्यकारङ नकूला १ यः পর छ । গোসংখ্যঃ সহদেব চ মন্ত্রীপুত্রো মহাবলো ॥ ৬ ॥ শুঙ্গারবেশাভরণৌ ৰূপবস্তৌ যশস্থিনৌ! মহারথসহস্রাণাৎ সমথৌ ভরতর্বভৌ ॥ ৭ ॥ এষা পদ্মপল। শাক্ষী স্থমধা চারুহাসিনী। रेमतञ्जूी দ্রৌপদী রাজন্ যৎক্ততে কীচকাহতাঃ n ৮ n অর্জ্রনোধ্হং মহারাজ রাক্তং তে তোত্রমাগতঃ। ভীমাদবরজঃ পার্থো যুমাভ্যামপি পূর্বেজঃ॥ ৯॥ উষিতাঃ স্মোমহারাজ, স্কুখণ তব নিবেশনে। অজ্ঞাতবাসং নিহিতা গর্ৱবাস ইব প্রজাঃ । ১০ ।

यमीजि। २॥ २॥ ०॥ ८॥ ७॥ ७॥ १॥ ४॥ २॥ ४०॥

रेवमान्याक्रम छेवाइ।

यमार्क्क्त्तन তে বীরাঃ ক্থিতাঃ পাঞ্পাঞ্বাঃ।
তদার্ক্নস্য বৈরাটিঃ কথ্যামাস্বিক্রমং॥ ১১॥
পূন্রেব তু তান্ পার্থান্ দর্শ্যামাস চোত্তরঃ॥১২॥
উত্তর উবাঃ।

য এষ জাস্নদ শুদ্ধীর,

তনুৰ্মাহ।সিংহ ইব প্ৰবৃদ্ধঃ।

প্রচণ্ডঘোণঃ পৃথুদার্ঘনেত্র,

স্তামায়তাস্যঃ কুরুরাজ এবঃ ॥ ১৩না 🔭

वयः পুনর্মন্তগজেন্দ্রগামী,

প্রতপ্তচামীকরশুদ্ধগৌরঃ | 😽 🔻

.পृथ्।यठाःरमा खक्रनीर्यवाद्य,

র্কেদেরঃ পশ্যত পশ্যতৈন্যু । ১৪॥

৾ যত্ত্বৈ পাথে হিসা মহাধরুয়ান,

भारमा यूवा वात्रवयूथरभाभरीः।

मि~ (शंत्र ठा॰ तमा * भ करें ता जगायी, '

' পদাযতাক্ষেত্র জ্জুন এয বীরঃ॥ ১৫॥

. दाड्डः मगील शुक्रावाखागीया,

বেতৌ যমৌ বিষ্ণু মছেক্রকপ্পৌ। মনুষ্যলোকে সকলে সমোহস্তি, '

याया, मंबारण न † याल न भी ला ॥ २७॥

॥ ১১॥ ১২॥ প্রত্তীবাণঃ পৃথুনাসিকঃ গোণী কন্ধরেত্যপি॥ ১০॥ ১৪॥

গ গজ রাজ গামীতাদ্র গজবেল গামীতি পাঠঃ থ পুরুকে। শবলে ইত্তা কলে ইতিপঠঃ কপুন্তকে। আভ্যান্ত পাখে কনকোত্তমাঞ্চী বৈষা প্রভা মুর্বীর্মন্তীব গৌরী। নীলোৎপল।ভা * পুরদেবতেব,

'কুঞা স্থিতা মূৰ্জীমতীব লক্ষীঃ॥ ১৭॥

বৈশব্দায়ন উপাচ।

এবং মিবেদাতান পার্থান পাগুবান্পঞ্চ ভূপতে:। ততে। হৰ্জুনগ্য বৈরাটিঃ, কথ্যামাস বিক্রমম্ ১৮।

ভ্রমণ স হিষ্টাইন্ড। হয়। মুগাণামিব কেশরী। ব্যুহরদ্রথরুন্দেষু নিল্পস্তাণ্ডান্ বরান্ রথ'ন্ ॥ ১৯॥ অনের বিদ্ধো মাত্তকা মহানেকেষুণা হতঃ। हित्र । कित्र कि स्थाप । कित्र । विश्व विष्य विश्व विष অনেন বৈজিতা গাবে। জিতা শুকুরবো যুধি। অস্য শত্থপ্রণাদেন কণৌ, মে বধিরীক্লুতৌ ॥ ২১ ॥ বৈশিষ্পায়ন উপচ।

তস্য তত্বচনং শ্রুত্বা মৎস্যাক্তঃ প্রতাপবান্। উত্তরং প্রত্যুবাচেদং অভিপন্নো যুধিষ্ঠিরে॥ ২২॥ প্রসাদন পা ওবদ্য প্রাপ্তকালং হি রোচ্যে। উত্তরাঞ্ব প্রদাস্থামি পার্থায় যদি তে মতস্ব। ২৩॥

.। ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০২১॥ অভিপল্লোই পরাধং কৃতবান্॥২২॥,

^{, *} পুরদেবতা ইত্যবস্থরদেবতা ইতিপাঠঃ খপুস্তকে। 🕆 উত্তরউবাচ ইতা সাপ্রাক্ষ্রেন্দ্র কম্পাস্য অদাসং প্রহাইতন্কহঃ ইতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

উত্তর উবাচ ৷

আর্যাঃ পূজাশ্চ মান্যাক্ষ প্রাপ্তকালপ্প মে মত্য। পূজান্তাং পূজনার্হাশ্চ মহাভাগাশ্চ পাওবাং॥ ২৪॥
বিরাট উবাচ।

অহং থল্প সং গ্রামে শত্রণং বশমাগতঃ।
রিক্ষিতো ভীমসেনেন গাবশ্চাপি জিতান্তথা ২৫।
এতেষাং বাছবীর্যোণ অস্মাকং বিজ্ঞামুধে॥
ব্যং সর্ব্বে সহামাত্যাঃ কুন্তিপুল্লং যুধিন্তিবৃদ্।
প্রসাদ্যামো ভত্তং তে সামুজংপা গুরুষভূম্ র ২৬॥
যদস্মাভিরজানভিঃ কিঞ্জিত্তো ন্যাধিপঃ।
ক্তুমইতি তৎ সর্বং ধর্মাত্মা হেষ পাণ্ডিবঃ॥ ২৭
বৈশপায়ন উবাচন

তাবুতা বিরাটঃ পরমপ্রক্ষীঃ।

সমেত্য রাজ্ঞা পম্ম চকার;
রাজ্যঞ্চ সর্বান্ধ বিসমর্জ ত্রৈ কৈ

সদগুকোর * সপুরং মহাত্মা ॥ ২৮ ॥
পাপ্তবাং স্ত ততঃ সর্বান্ মহদ্যরাজঃ প্রতাপবান্।
ধনঞ্জয়ং পুরস্কৃত্য দিন্ট্যা দিন্ট্যেতি চাত্রবীং ॥ ২৯ ॥
সমুপান্দ্রায় মূর্দ্ধান সং শ্লিষ্য চ পুনঃ পুনঃ।
যুধিষ্ঠিরঞ্জ ভীমঞ্চ মাদ্রীপুজৌ চ পাপ্তবৌ ॥ ৩০ ॥

॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ সমত্য পুরেল সহ'সমরং নিশ্চরং চক্রিবিসসর্জ্ঞ দদে ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥

[🌞] কোষমিতাত্র কোশমিতিতাল ব্যান্ত পাঠঃ খ গস্তকে।

নীতৃপ্যদর্শনে তেষাং বিরাটো আহিনীপতিঃ!
স প্রীয়মাণো রাজানং মুধিন্তিরমথাক্রবীৎ॥ ৩১॥
দিন্ট্যা ভবন্তঃ সংপ্রাপ্তাঃ সর্বে কুশলিনো বনাৎ।
দিন্ট্যা চ পালিত কচ্ছু সজ্ঞাতং বৈ ত্রাত্মভিঃ॥ ৩২॥
ইদং চ রাজ্যং পার্থায় ষচ্চান্যদপি কিঞ্চন।
* প্রত্যুক্ত তৎ সর্বাং পাত্তবা অবিশক্ষ্যা॥ ৩৩॥
উরাং প্রতিমূহাতু সব্যুগাচী ধনপ্তমঃ।
অযং হ্যৌ পরিকো ভর্ত্মীত্স্যাঃ পুরুষসন্তমঃ॥ ৩৪॥
এবমুক্তো ধন্মরাজঃ পার্থিমেক্ষ্মনপ্তমঃ॥ ৩৪॥
প্রত্যুক্ত দার্ক্সকিল ভাত্রা মুধ্যুত বচনমন্ত্রবীৎ॥ ৩৫॥
প্রতিমূহ্যামাহমিমাত স্মুক্তিরত তব।
† যুক্ত এবাব্যোরেষ সম্বন্ধঃ কুরুমৎস্যুয়োঃ॥ ৩৬॥
ইতি বিরাটপ্রবিণি বৈবাহিকপ্রাণি উত্তরাবিবাহ প্রস্তানে
এক সপ্রতিত্মোহ্য্যায়ঃ॥ ৭১॥

* প্রতি, গৃহস্ত তৎসর্বং পাঁওব। অবিশঙ্কা ইত্যক্ত যাত বন্ধ্যামি
তৎ কার্যামর্জনেনাবিশঙ্করা ইতি পাঠিঃ ক পুস্তকে।

† যুক্ত এবা ব্যোৱেষ সম্বন্ধঃ কুৰুমৎস্যায়ে।বিত্যুক্ত যুক্তশ্চাবাংছি সম্বন্ধো
মৎস্যভারতবোর পীতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

বিরাষ্ট উবাচ্য। ,
কিমর্থং পাণ্ডবশ্রেষ্ঠ ভার্য্যাং তুহিতরং মম।
প্রতিগ্রহীতুং নেমাং ত্বং মধা দ্তামিহেচ্ছসি॥ ১॥
অর্জন উবাচ।

অন্তঃপুরেহ হয়ুষিতঃ সদা পশ্যন্ স্থতাং তব।
রহস্যঞ্চ প্রকাশঞ্চ বিশ্বস্তা>পিতৃবয়ি ॥ ২ ॥
প্রিয়ো বছমতশ্চাস নর্তকো গীতফোবিদঃ।
আচার্যবচ্চ মাং নিতাং মন্যতে ছুগিতা তব ॥ ৩ ॥
ক্ষ বযস্থা তয়া রাজন্ সহ সংকং সরে। বিভা ॥
তন্মানিমন্ত্রযেহ হতে ছুহিতা মনুক্রাধিপ। ৪
শুনো জিতেন্দ্রিয়ো দান্তস্তস্যাঃ শুদ্ধিঃ কৃতা ম্যা॥ ৫ ॥
ক্রাথাং ছুহিতরিবাপুত্রে চাল্লনি বা পুনঃ।
আভিশঙ্কা ন পশ্যাম তেন শুদ্ধিবিব্যতি ॥ ৬ ॥
আভিশাপাদহং ভীতে৷ মিথ্যাবাদাৎ পরন্তপ।
স্বার্যমুক্তরাং রাজন্ প্রতিগ্রহামি তেম্প্রতাম্॥ ৭ ॥

ি কমর্থমিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ যা শক্ষা ভবেৎ সাস্থানে উচিতা অয়মহং
তে তক ছহিতাং নিমন্ত্রয়ে সুখারেন যাচে ছহিতা ছহিতা দুরে হিতে
তিয়াকেনঃনিকজ্বাং বর্ণ বিকারেণ ছহিতাশন আকারাতে পান্তি॥ ৪ ॥

• এবঞ্চ সুখারেন এনাং বর্য়তো মের্মাচর্য্য শুদ্ধরিপি ভবিষ্যতীত্যাহ ।

শুদ্ধ ইতি॥ ৫ ॥ ৬ ॥ অতিশাপাং ক্লিফা ত্রিত্রহে ২ নয়োঃ প্রাণে সখন্ধ আনীদিতি কপ্যতোলোকস্য ছুর্কাক্যা ভয়াং ॥ ৭ ॥

^{*} বয়স্থা তথা বাজন সহসংবৎস্বোধিত ইত্যত্ত বয়স্থা) তয়ারাজ লহং সম্বংসবোধিত ইতি পাঠিঃ ক পুস্তকে।

ষ্ঠাঁবা বাস্থদেবস্য দাক্ষাদেবলিশুর্যথা। দয়িতশ্চক্রহস্তম্য ঈ বাল এবাস্ত্রকোবিদঃ ॥ ৮॥ অভিমন্ত্রার্মহারাজ মম পুরো বিশাম্পতে। জামাতা তব যুক্তোহমৌ ভর্তা চ ছহিতুম্বব ॥ ৯॥

বিরাট উবাচ।

উপপন্ন শকুরু শ্রেষ্ঠে কুন্তীপুত্রে ধনঞ্জযে।

য এ বি ধর্মানিষ্ঠ শ্চ জাতজানশ্চ পা গুবং ॥ ১০॥

যৎ কুত্যং মন্যদে পুর্ব শক্রিয়তাং তেদনন্তরম্।

সর্বে কামাঃ সমূদ্ধী মৈ সম্বন্ধী যস্য চার্জ্জুনঃ ॥ ১১॥

द्वम् भारतम छेवाह।

এবং ক্রবতি রাজেন্দ্রে কুন্তীপুর্ট্রো যুধিষ্ঠিরঃ।
অন্তঃশান্ত্র সমং যোগং সমযে মৎস্যপার্থযোঃ॥ ১২॥
ততাে মিত্রেষু সর্বেষু † বৃদ্ধিদেবে চ পার্থিবঃ।
প্রেষধামাস কৌন্তেযাে বিরাইশ্চ মহীপতিঃ॥ ১৩॥
ততক্রযোদশে বর্ষে নির্ক্তেত্র পাপ্তবাঃ।
উপপ্লব্যং বিরাটস্য সমপদ্যন্ত স্বশাঃ॥ ১৪॥

॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ অথশাসৎ আজ্ঞাপিতবান্ সংযোগং বিবাহ সম্বন্ধং ॥ ১২ ॥ তথ্যস্থা মাস আহ্বানার্থং দুতানিতিশেষঃ ॥ ১৩ ॥ উপপ্লব্যং বিরাট নগ্র সমীপস্থ নগরভিরং ॥ ১৪ ॥

^{*} বাল এখাস্ত্রকোবিদ ইত্যত্ত সর্ব্বাস্তেম্কোবিদ ইতি পাঁঠঃ থ পুস্তকে।

ক বাস্থদেবে চ পার্থিব ইত্যত্ত বাস্থদেবঞ্চ ভারতেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

🐡 তিমান বসন্ স বীভৎস্কুর। নিনায জনার্দ্দনম্। আনত্তেরো হি দাশাধানভিমন্যুঞ্পাপ্তবং॥ ১৫॥ काश्विताक रू देगवार श्रीयमार्ग युविष्ठिरत । অকৌহিণীভ্যা^ সহিতাবাগতৌ পৃথিবীপতী ॥ ১৬ ॥ ज्याकोहिना। ह एटज्यो यक्ताराना महावनः ! দৌপদ্যাশ্চ স্থতা বীরাং শিখণ্ডী চাপরাজিতঃ। ধৃষ্টপুরুষ্ণ ছুধ ৰ্ষঃ সর্বশস্ত্রভূতায়রঃ ॥ ১৭ ॥ ममखारकोहिनीभाना यजारना जुतिर्दिकनाः। বেদাধ্যরনসম্পন্নাঃ সর্কে শূরী সমুত্যজন হৈ ॥ তানাগতানভিপ্রেক্ষ্য মৎস্যো ধ্র্যক্তুতাম্বর:। পূজযামাদ বিধিবৎ সভ্ত্যবল্বাহন্ট্ৰ। প্রীত্যেহভবদ হিতরং দন্ত্য ভাষভিষন্যবে। ততঃ প্রভাগবাতেরু পার্থিবেরু ভুতুত্ততঃ ॥ ২০॥ তত্রগিচ্ছদাস্থদেবো খনমালীহলাযুদ্ধঃ॥ ক্লতবর্মা চ হান্দিক্যোষুষুধানশ্চসাত্যকিঃ। ২১॥ অনাধ্যক্তিতথক্তে রঃ শাস্থে নিশঠ এব চ। অভিমন্ত্রসুপাদায়সহমাত। পরন্তপাঃ ॥ ২২ ॥

॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ বেদ্ধিয়ন সম্প্রা ইত্যপি পাঠঃ॥ ১৮॥ ১৯॥ ॥ ॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥

^{*} তার্নি ব্নন্দ বীভংস্রিতাত অভিমন্থ বীভং স্রিতি পাঠঃ খ পুস্তে ।

ণ তেজস্বীতা ত্রসহিতঃইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

হিন্দ্রদেনাদয়দৈতের রথৈতৈঃ স্কুদ্রমাহিতৈঃ। ভাষেয়ুঃ সহিকাঃ সর্বে পরিসম্বংসরোষিতাঃ ॥ ২৩॥ দশনাগসহস্রাণি রথানাঞ্চ তথাযুত্য। र्यानां प्रस्तु पर भूगेर निश्चर्यक भवाजिनाम्॥ २८॥ বৃষ্ণান্ধকাশ্চ শতশো ভোজাশ্চ প্রমৌজসং। ञत्रयूक् किनामि, नः वास्रामवः कनामिनम् ॥ २०॥ श्वातिपर्दे परमोक्ष्यः भा खवाना महाज्ञनाम् । ক্রিরে। রত্নানি বায়াং ট্রাপৃথক্পৃথগনেকশং ॥ ততো বিবাহে∤, বিশিবদার্ধে শ্লংস্যপার্থযোঃ॥ ২৬॥ তক্তঃ শঙ্খাশ্চ ভেষ্যাশ্চ পূর্বুঃনকগোমুখাঃ। পার্টর্থ:সংযুজ্যমানদা নেন্ত্রুর্দ্মহ্যাদ্য বেশ্বানি ॥ ২৭ ॥ উচ্চবেচান মৃগান্ জন্মুংশ্ৰীধ্যা শেচ শতশঃ পশ্ন। স্থরটিমরেয়পানানি প্রভূত্বান্ড্যহারয়ন্। ২৮॥ গায়নাখ্যানুশীলাশ্চ নটা বৈতালিকান্ত্রধা। স্তবত্ত নামুপাতিষ্ঠন্ সূতা দঁচ সহ মাগ্ধৈঃ ॥ ২৯ ॥ स्रुटम्काक পুরস্কৃত্য মৎদ্যীনক্ষে বর্ত্তিय। আজগা, শ্চারুসকাঙ্গাঃ স্থয়উমণিকু গুলা॥ ৩০॥ বৰ্ণোপপন্নাস্তা নাৰ্যো ৰূপবতাঃ খলস্কৃতাঃ। সৰ্ব্বাশ্চাভ্যভবৎ কৃষ্ণা ৰূপেণ যশসা প্ৰিয়া॥ ৩১॥

॥২৩॥२६॥१৫॥२७॥२१॥ স্বা নানা দ্রবাদার রূপং মদাং মেরেরং বৃক্ষ বসরপং মদাং॥ ২৮॥ ২১॥ ৩ ॥ অভ্যভবন্ অভিভূতাঃ॥ ॥৩১॥ পরিবার্যোত্তর তান্ত রাজপুত্রীমলস্ক তাম্। প্রতামির মহেন্দ্রস্থারস্কৃত্যোপতস্থিরে । ৩২ ॥ তা॰ প্রত্যসূহ্র্যুৎ কৌন্তেষঃ স্কুত্রস্যার্থে ধনপ্রয়ঃ। সৌভদ্রস্যানবদ্যাক্ষ্যং বিরাটতনযাং তদা। ৩৩। ততাতিষ্ঠন হাজ। রূপমিন্দ্র স্থার্যন্। স্যাং তাং প্রতিজ্ঞাহ কুন্তীপুজো যুধিষ্ঠির:॥ ৩৪ । প্রতিগৃহ তু তাৎ পার্যঃ পুরস্তা জন দিন্য। বিবাহণ কার্যামাস সৌভ্দুস্ মহাত্রিঃ ॥ ৩৫ । **७८ेगा मश्र महञ्जानि इयानाः वाकृतः इमाग्। (** ৰে চ নাগশতে মুখ্যে প্ৰাদাৰহুব ্ৰিতথা ॥ ৩৬॥ छ्या मगुक् मिक्राधम्छियदाः विक्रितः । রাজ্য বলঞ্চ কোয়ঞ্চ সর্ব্বমাত্মনিমেবছ। ৩৭॥ 👫 ক্লতে বিবাহে তু তদা ধর্মপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ। ব্রাহ্মণেভ্যো দদে বিক্তং যতুপাহর্দচ্যতঃ। ৩৮ ॥ গোসহসু। বি রক্নানি বাসা পদিবিবিধানি চ। ভূষণানি চমুখ্যানি বানানি শ্যনানি চ। ৩৯ ॥

॥ ৩২॥ ৩০॥ ৩৪॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ আত্মানমেবচ প্রাদাদিতি পূর্বেবিধার্যঃ। ॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩৯॥

^{*} কতে বিবাহে ইতাদাপ্রাক্ নাবেদন্থ পাওবেভা। বিরাট প্রতি
মাংস্তদাইতি পাঠঃ ক প্রস্তক।

ভাজনানি চ ক্ল্যানিপানানিবিধিধানিচ তন্মহোৎসবসধ্বশ । ইন্টপুষ্টজনাকুলম। নগরং মৎস্যরাজম্য শুশুভে ভরতর্ষভ ॥ ৪০॥ ইতি শ্রীমহাভারতেশতসাহস্র্যাৎ সংহিতামাৎ বৈয়াসিক্যাং ুবিরাটপর্বাণি বৈবাহিকপর্বণ উত্তরাবিবাহে विमुख्िउरमाह्यायः ॥ १२॥

> সমাপ্তং বৈবাহিকপর্বা। সুমুঠি হিরাটপর্ব।

1 80 1

ইত্রি এমং পদ বাকা প্রমাণ মর্যাদা ধুরন্ধর চতুধর বংশাবতংশগোবিন্দ প্রিস্নো নীলকণ্ঠস্যা কুন্তে ভারতভাবদীপে বিরাটপর্কার্থ \ ় প্রকাশে দিসপ্তিতি তমেহিশায়ঃ॥ ৭২॥

> সমাপ্তেরং বিরাটপর্কটীক।। भकाकाः ५०००

শ্রীযুক্ত উমেশচূলে বিশ্বারত্ব ভট্টাচার্ব্যেন সৎশোধিত্য প্রকাশিত্য সর্বাৎ পর্যাবেক্ষিতঞ্চ।